वेद प्रकाश शर्मा

विश्वासघात

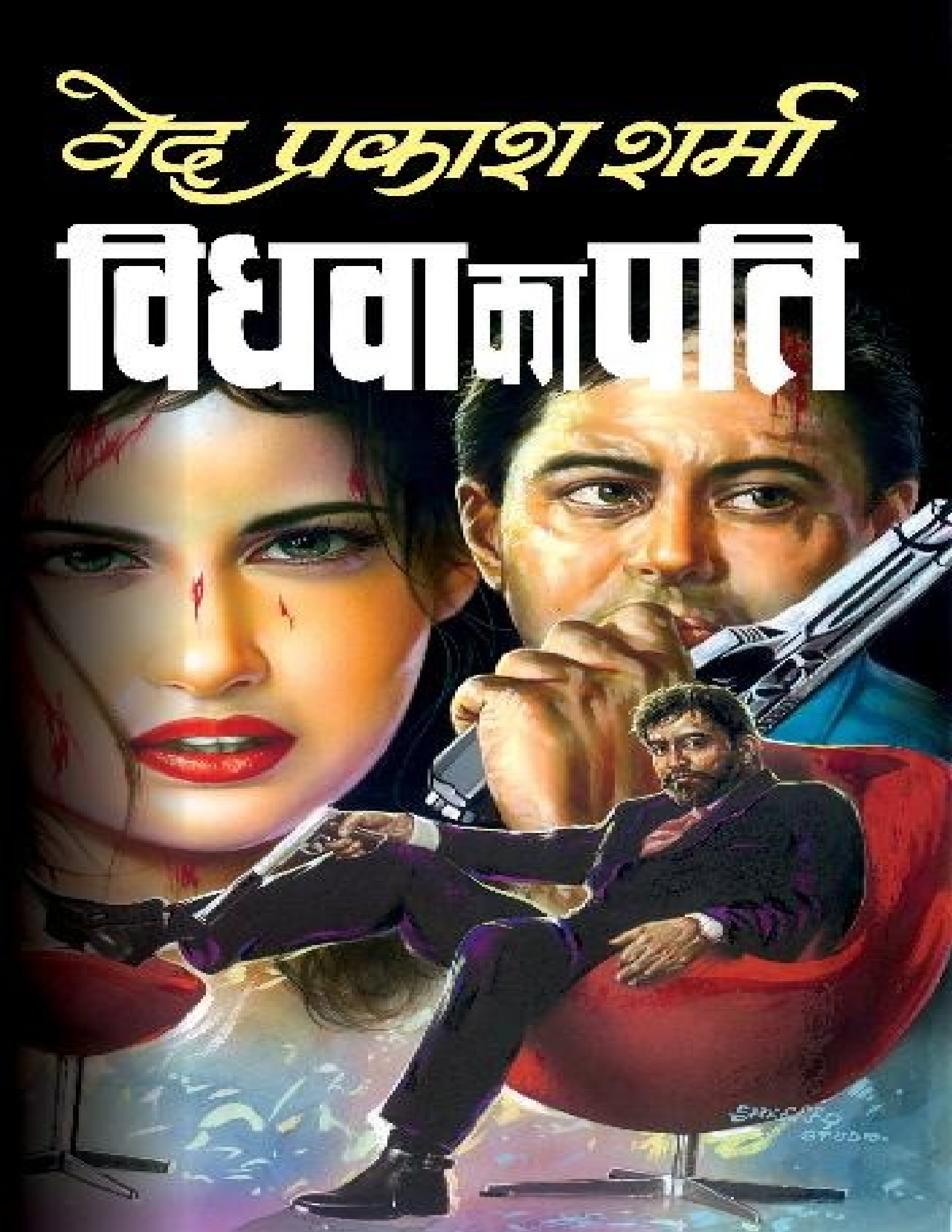

विधवा का पति

वेद प्रकाश शर्मा
रवि पॉकेट बुक्स

उपन्यास : विधवा का पति
लेखक : वेद प्रकाश शर्मा
© : प्रकाशकाधीन

यह उपन्यास पूर्णतया काल्पनिक है। समानता संयोग से हो सकती है। प्रूफ संशोधन कार्य यद्यपि पूर्ण योग्यता से किया गया है, तथापि मानवीय त्रुटिवश, तथ्य सम्बन्धी गलती रह सकती है। जिसके लिए लेखक, मुद्रक व प्रकाशक उत्तरदायी नहीं होंगे। किसी भी प्रकार के विवाद के लिये न्यायक्षेत्र मेरठ होगा।

विधवा का पति

"आह.....आह.....मैं कहां हूं.....म.....मैं कौन हूं?" मेडिकल इंस्टीट्यूट के एक बेड पर पड़ा मरीज धीरे-धीरे कराह रहा था। तीन नर्सें और एक डॉक्टर उसे चकित भाव से देखने लगे।

जहां उनकी आंखों में उसे होश में आता देखकर चमक उभरी थी, वहीं हल्की-सी हैरत के भाव भी उभर आए। वे ध्यान से गोरे-चिट्टे गोल चेहरे और घुंघराले बालों वाले युवक को देखने लगे, जिसकी आयु तीस के आस-पास थी। वह हृष्ट-पुष्ट और करीब छः फुट लम्बा था। उसके जिस्म पर हल्के नीले रंग का शानदार सूट था। सूट के नीचे सफेद शर्ट।

कराहते हुए उसने धीरे-धीरे आंखें खोल दीं, कुछ देर तक चकित-सा अपने चारों तरफ का नजारा देखता रहा। चेहरे पर ऐसे भाव थे जैसे कुछ समझ न पा रहा हो। कमरे के हर कोने में घूमकर आने के बाद उसकी नजर डॉक्टर पर स्थिर हो गई। एक झटके से उठ बैठा वह।

एक नर्स ने आगे बढ़कर जल्दी से उसे संभाला, बोली—"प...प्लीज, लेटे रहिए आपके सिर में बहुत गम्भीर चोट लगी है।"

"म...मगर कैसे... क्या हुआ था?"

आगे बढ़ते हुए डॉक्टर ने कहा—"आपका एक्सीडेण्ट हुआ था मिस्टर, क्या आपको याद नहीं?"

"एक्सीडेण्ट, मगर किस चीज से?"

"ट्रक से, आप कार चला रहे थे।"

"क...कार...मगर, क्या मेरे पास कार भी है?"

"जी हां, वह कार शायद आप ही की होगी।" हल्की-सी मुस्कान के साथ डॉक्टर ने कहा—"क्योंकि कपड़ों से आप कम-से-कम किसी तरह से लोफर तो नहीं लगते हैं!"

युवक ने चौंककर जल्दी से अपने कपड़ों की तरफ देखा। अपने ही कपड़ों को पहचान नहीं सका वह। फिर अपने हाथों को अजनबी-सी दृष्टि से देखने लगा। दाएं हाथ की तर्जनी में हीरे की एक कीमती अंगूठी थी। बाईं कलाई में विदेशी घड़ी। अजीब-सी दुविधा में पड़ गया वह। अचानक ही चेहरा उठाकर उसने सवाल किया—"मैं इस वक्त कहां हूं? और आप लोग कौन हैं?"

"आप इस वक्त देहली के मेडिकल इंस्टीटच्यूट में हैं, ये तीनों नर्सें हैं और मैं डाक्टर भारद्वाज, आपका इलाज कर रहा हूं।"

"म....मगर....क....म....मैं....कौन हूं?"

"क्या मतलब?" बुरी तरह चौंकते हुए डॉक्टर भारद्वाज ने अपने दोनों हाथ बेड के कोने पर रखे और उसकी तरफ झुकता हुआ बोला—"क्या आपको मालूम नहीं है कि आप कौन हैं?"

"म...मैं...मैं...!"

असमंजस में फंसा युवक केवल मिमियाता ही रहा। ऐसा एक शब्द भी न कह सका, जिससे उसके परिचय का आभास होता। डॉक्टर ने नर्सों की तरफ देखा, वे पहले ही उसकी तरफ चकित भाव से देख रही थीं। एकाएक ही डॉक्टर ने अपनी आंखें युवक के चेहरे पर गड़ा दीं बोला—"याद कीजिए मिस्टर, आपको जरूर याद है कि आप कौन हैं, दिमाग पर जोर डालिए, प्लीज याद कीजिए मिस्टर कि अपनी कार को खुद ड्राइव करते हुए रोहतक रोड से होकर आप कहां जा रहे थे?"

"रोहतक रोड?"

"हां, इसी रोड पर एक ट्रक से आपका एक्सीडेण्ट हो गया था।"

युवक चेहरा उठाए सूनी-सूनी आंखों से डॉक्टर को देखता रहा....भावों से ही जाहिर था कि वह डॉक्टर के किसी वाक्य का अर्थ नहीं समझ सका है। अजीब-सी कशमकश और दुविधा में फंसा महसूस होता वह बोला—"म.....मुझे कुछ भी याद नहीं है डॉक्टर, क्यों डॉक्टर, मुझे कुछ भी याद क्यों नहीं आ रहा है?"

डॉक्टर के केवल चेहरे पर ही नहीं, बल्कि सारे जिस्म पर पसीना छलछला आया था। हथेलियां तक गीली हो गईं उसकी। अभी वह कुछ बोल भी नहीं पाया था कि युवक ने चीखकर पूछा था—"प्लीज डॉक्टर, तुम्हीं बताओ कि मैं कौन हूं?"

"जब आप ही अपने बारे में कुछ नहीं बता सकते तो भला हमें क्या मालूम कि आप कौन हैं?"

"मुझे कौन लाया है यहां, उसे बुलाओ, वह शायद मुझे मेरा नाम बता सके!"

"आपको यहां पुलिस लाई है।"

“प.....पुलिस?”

"जी हां, दुर्घटनास्थल पर भीड़ इकट्ठी हो गई थी। फिर उस भीड़ में से किसी ने पुलिस को फोन कर दिया। ट्रक चालक भाग चुका था। आप बेहोश थे, जख्मी, इसीलिए पुलिस आपको यहां ले आई। इस कमरे के बाहर गैलरी में इस वक्त भी इंस्पेक्टर दीवान मौजूद हैं। वे शायद आपका बयान लेना चाहते हैं, और मेरे ख्याल से आपसे उनका सबसे पहला सवाल यही होगा कि आप कौन हैं।"

"म...मगर मुझे तो आपना नाम भी नहीं पता।" उसकी तरफ देखते हुए बौखलाए-से युवक ने कहा, जबकि डॉक्टर ने तीन में से एक नर्स को गुप्त संकेत कर दिया था। उस नर्स ने सिरिंज में एक इंजेक्शन भरा। डॉक्टर युवक को बातों में उलझाए हुए था, जबकि नर्स ने उसे इंजेक्शन लगा दिया।

कुछ देर बाद बार-बार यही पूछते हुए युवक बेहोश हो गया—"मैं कौन हूं.....मैं कौन हूं.....मैँ कौन हूं?"

¶¶

हाथ में रूल लिए इंस्पेक्टर दीवान गैलरी में बेचैनी से टहल रहा था।

एक तरफ दो सिपाही सावधान की मुद्रा में खड़े थे।

कमरे का दरवाजा खुला और डॉक्टर भारद्वाज के बाहर निकलते ही उसकी तरफ दीवान झपट-सा पड़ा, बोला—"क्या रहा डॉक्टर?"

"उसे होश तो आ गया था, लेकिन...।"

"लेकिन?"

“मैंने इंजेक्शन लगाकर पुन: बेहोश कर दिया है।”

"म...मगर क्यों? क्या आपको मालूम नहीं था कि यहां मैं खड़ा हूं? आपको सोचना चाहिए था डॉक्टर कि उसका बयान कितना जरूरी है।"

"मेरा ख्याल है कि वह अब आपके किसी काम का नहीं रहा है?"

“क्यों?”

"वह शायद अपनी याददाश्त गंवा बैठा है, अपना नाम तक मालूम नहीं है उसे।"

"डॉक्टर?"

"अब आप खुद ही सोचिए कि एक्सीडेण्ट के बारे में वह आपको क्या बता सकता था? वह तो खुद पागलों की तरह बार-बार अपना नाम पूछ रहा था। दिमाग पर और ज्यादा जोर न पड़े, इसीलिए हमने उसे बेहोश कर दिया। दो-तीन घण्टे बाद यह पुन: होश में आ जाएगा और होश में आते ही शायद पुन: अपना नाम पूछेगा। उसकी बेहतरी के लिए उसके सवालों का जवाब देना जरूरी है मिस्टर दीवान, इसीलिए अच्छा तो यह होगा कि इस बीच आप उसके बारे में कुछ पता लगाएं।"

दीवान के चेहरे पर उलझन के अजीब-से भाव उभर आए। मोटी भवें सिकुड़-सी गईं, बोला—"कहीँ यह एक्टिंग तो नहीं कर रहा है डॉक्टर?"

"क्या मतलब?" भारद्वाज चौंक पड़ा।

"क्या ऐसा नहीं हो सकता कि एक्सीडेण्ट की वजह से वह घबरा गया हो, पुलिस के सवालों और मिलने वाली सजा से बचने के लिए...।"

"एक्टिंग सिर्फ चेतन अवस्था में ही की जा सकती है—अचेतन अवस्था में नहीं। और वह बेहोशी की अवस्था में भी यही बड़बड़ाए जा रहा था कि में कौन हूं, इस मामले में अगर आप अपने पुलिस वाले ढंग से न सोचें तो बेहतर होगा, क्योंकि वह सचमुच अपनी याददाश्त गंवा बैठा है।"

"हो सकता है!" कहकर दीवान उनसे दूर हट गया, फिर वह गैलरी में चहलकदमी करता हुआ सोचने लगा कि इस युवक के बारे में कुछ पता लगाने के लिए उसे क्या करना चाहिए। दाएं हाथ में दबे रूल का अंतिम सिरा वह बार-बार अपनी बाईं हथेली पर मारता जा रहा था। एकाएक ही वह गैलरी में दौड़ पड़ा—दौड़ता हुआ ऑफिस में पहुंचा।

फोन पर एक नम्बर रिंग किया।

जिस समय दूसरी तरफ बैल बज रही थी, उस समय दीवान ने अपनी जेब से पॉकेट डायरी निकाली और एक नम्बर को ढूंढने लगा, जो उस गाड़ी का नम्बर था, जिसमें से बेहोश अवस्था में युवक उसे मिला था।

दूसरी तरफ से रिसीवर के उठते ही उसने कहा—"हेलो, मैं इंस्पेक्टर दीवान बोल रहा हूं—एक फियेट का नम्बर नोट कीजिए, आरoटीoओo ऑफिस से जल्दी-से-जल्दी पता लगाकर मुझे बताइए कि यह गाड़ी किसकी है?"

"नम्बर प्लीज।" दूसरी तरफ से कहा गया।

"डीoवाईo एक्स-तिरेपन-चव्वन।" नम्बर बताने के बाद दीवान ने कहा—"मैं इस वक्त मेडिकल इंस्टीटचूट में हूं, अत: यहीं फोन करके मुझे सूचित कर दें।" कहने के बाद उसने इंस्टीटचूट का नम्बर भी लिखवा दिया।

रिसीवर रखकर वह तेजी के साथ ऑफिस से बाहर निकला और फिर दो मिनट बाद ही वह डॉक्टर भारद्वाज के कमरे में उनके सामने बैठा कह रहा था—“मैं एक नजर उसे देखना चाहता हूं डॉक्टर।”

"आपसे कहा तो था, उसे देखने से क्या मिलेगा?"

"मैं उसकी तलाशी लेना चाहता हूं—ज्यादातर लोगों की जेब से उनका परिचय निकल आता है।"

"ओह, गुड!" डॉक्टर को दीवान की बात जंची। एक क्षण भी व्यर्थ किए बिना वे खड़े हो गए और फिर कदम-से-कदम मिलाते उसी कमरे में पहुंच गए—जहां युवक अभी तक बेहोश पड़ा था।

दीवान ने बहुत ध्यान से युवक को देखा।

फिर आगे बढ़कर उसने बेहोश पड़े युवक की जेबें टटोल डाली, मगर हाथ में केवल दो चीजें लगीं—उसका पर्स और सोने का बना एक नेकलेस।

इस नेकलेस में एक बड़ा-सा हीरा जड़ा था।

दीवान बहुत ध्यान से नेकलेस को देखता रहा, बोला—"इसके पास कार थी, जिस्म पर मौजूद कपड़े, घड़ी, अंगूठी और यह नेकलेस स्पष्ट करते हैं कि युवक काफी सम्पन्न है।”

"यह नेकलेस शायद इसने किसी युवती को उपहार स्वरूप देने के लिए खरीदा था, वह इसकी पत्नी भी हो सकती है और प्रेमिका भी।" थोड़ी-बहुत जासूसी झाड़ने की कोशिश डॉक्टर ने भी की।

“प्रेमिका होने के चांस ही ज्यादा हैं।"

“ऐसा क्यों?"

"आजकल के युवक पत्नी को नहीं, प्रेमिका को उपहार देते हैं और पत्नी को देते भी हैं तो वह इतना महंगा नहीं होता।"

डॉक्टर भारद्वाज और कमरे में मौजूद नर्सें धीमे से मुस्कराकर रह गईं।

"यदि नेकलेस इसने आज ही खरीदा है तो इसकी रसीद भी होनी चाहिए!" कहने के साथ ही दीवान ने उसका पर्स खोला। पर्स की पारदर्शी जेब में मौजूद एक फोटो पर दीवान की नजर टिक गई—वह किसी युवती का फोटो था। युवती खूबसूरत थी।

दीवान ने फोटो बाहर निकालते हुए कहा—"ये लो डॉक्टर, उसका फोटो तो शायद मिल गया है, जिसके लिए इसने नेकलेस खरीदा होगा।"

कन्धे उचकाकर डॉक्टर ने भी फोटो को देखा। दीवान ने उलटकर फोटो की पीठ देखी, किन्तु हाथ निराशा ही लगी—शायद उसने यह उम्मीद की थी कि पीठ पर कुछ लिखा होगा, मगर ऐसा कुछ नहीं था।

दीवान उलट-पुलटकर बहुत देर तक फोटो को देखता रहा। जब वह उससे ज्यादा कोई अर्थ नहीं निकाल सका, जितना समझ चुका था तो शेष पर्स को टटोल डाला। बाइस हजार रुपए और कुछ खरीज के अलावा उसके हाथ कुछ नहीं लगा। नेकलेस से सम्बन्धित रसीद भी नहीं।

अंत में एक बार फिर युवती का फोटो उठाकर उसने ध्यान से देखा। अभी दीवान यह सोच ही रहा था कि इस फोटो के जरिए वह इस युवक के विषय में कुछ जान सकता है कि ऑफिस से आने वाली एक नर्स ने कहा—"ऑफिस में आपके लिए फोन है इंस्पेक्टर।"

सुनते ही दीवान रिवॉल्वर से निकली गोली की तरह कमरे से बाहर निकल गया।

¶¶

अपने कमरे में पहुंचकर डॉक्टर भारद्वाज ने उस युवक के केस के सम्बन्ध में ही अपने तीन सहयोगी डॉक्टरों से फोन पर बात की—बल्कि कहना चाहिए कि इस केस पर विचार-विमर्श करने के लिए उन्होंने इसी समय तीनों को अपने कमरे में आमंत्रित किया था। तीसरे डॉक्टर से सम्बन्ध विच्छेद करके उन्होंने रिसीवर अभी क्रेडिल पर रखा ही था कि धड़धड़ाता हुआ दीवान अन्दर दाखिल हुआ।

इस वक्त पहले की अपेक्षा वह कुछ ज्यादा बौखलाया हुआ था।

"क्या बात है इंस्पेक्टर, कुछ पता लगा?"

"नहीं!" कहने के साथ ही दीवान 'धम्म' से कुर्सी पर गिर गया। डॉक्टर भारद्वाज ने उसे ध्यान से देखा—सचमुच यह बुरी तरह बेचैन, उलझा हुआ और निरुत्साहित-सा नजर आ रहा था। उसे ऐसी अवस्था में देखकर भारद्वाज ने पूछा—"क्या बात है इंस्पेक्टर? फोन सुनने के लिए जाते वक्त तो तुम इतने थके हुए नहीं थे?"

"एसoपीo साहब का फोन था।"

"फिर?"

"इस युवक की कार जिस ट्रक से भिड़ी थी, उस ट्रक के बारे में छानबीन करने पर पता लगा है कि वह ट्रक स्मगलर्स का है।"

"ओह!"

"सारा ट्रक स्मगलिंग के सामान से भरा पड़ा था और उस पर इस्तेमाल की गई

नम्बर प्लेट भी जाली थी—इससे भी ज्यादा भयंकर बात यह पता लगी है कि इस युवक की कार से टकराने से पहले रोहतक में यह ट्रक एक बारह वर्षीय बच्चे को कुचल चुका था।"

"ओह, माई गॉड।"

"इस ट्रक पर लगी नम्बर प्लेट वाला नम्बर बताते हुए हरियाणा पुलिस ने वायरलेस पर सूचना दी है कि उस बारह वर्षीय खूबसूरत बच्चे की लाश अभी तक सड़क पर ही पड़ी है, वह ट्रक उसके सिर को पूरी तरह कुचलकर वहां से भागा था।"

"कैसा जालिम ड्राइवर था वह?"

"क्या तुम समझ रहे हो डॉक्टर कि यह सब मैं तुम्हें क्यों बता रहा हूं?"

"क्यों?"

"ताकि तुम एहसास कर सको कि इस युवक की याददाश्त समाज, पुलिस और कानून के लिए कितनी जरूरी है—ट्रक में कागजात नहीं हैं, यानि पता नहीं लग सका कि वह किसका है, यदि उसके ड्राइवर का पता लग जाए तो निश्चित रूप से हम उसके मालिक तक पहुंच जाएंगे, और उस ड्राइवर को केवल एक ही शख्स पहचान सकता है, वह युवक।"

"तुम इतने विश्वासपूर्वक कैसे कह सकते हो?"

"हमारे एसoपीo साहब की यही राय है, खुद मेरी भी और हमारी यह राय निराधार नहीं है। उसका आधार है, एक्सीडेण्ट की सिचुएशन, युवक की कार और ट्रक की भिड़न्त बिल्कुल आमने-सामने से हुई है। एक्सीडेण्ट होने से पहले इस युवक ने ट्रक ड्राइवर को बिल्कुल साफ देखा होगा या उसे पहचान सकता है। डॉक्टर, अगर तुम यह न कहो कि उसकी याददाश्त गुम हो गई है तो मैं स्मगलर्स से सम्बन्धित समझे जाने वाले सभी ड्राइवरों के फोटो युवक के सामने डाल दूंगा।"

"म...मगर दिक्कत तो यह है इंस्पेक्टर कि युवक की याददाश्त वाकई गुम हो गई है, तुम ट्रक ड्राइवर की शक्ल की बात करते हो—एक्सीडेण्ट की बात करते हो। उसे तो यह भी याद नहीं है कि उसके पास कोई कार भी थी।"

"उसे ठीक करना होगा, उसकी याददाश्त वापस आने के लिए अपनी एड़ी से चोटी तक का जोर लगाना होगा तुम्हें, यह बहुत जरूरी है। वह स्मगलर ही नहीं, एक ग्यारह वर्षीय मासूम बच्चे का हत्यारा भी है।"

"समझ रहा हूं इंस्पेक्टर। मैं तो खुद ही कोशिश कर रहा हूं। इसी केस पर विचार-विमर्श करने के लिए मैंने अपने तीन सहयोगी डॉक्टर्स को यहां बुलाया है, वे आते ही

होंगे।”

कुछ कहने के लिए दीवान ने अभी मुंह खोला ही था कि एक नर्स ने आकर सूचना दी—“एक बार फिर आपका फोन है इंस्पेक्टर।”

बिना किसी प्रकार की औपचारिकता निभाए दीवान वहां से तीर की तरह निकल गया। दौड़कर उसने गैलरी पार की—ऑफिस में पहुंचा-क्रेडिल के पास ही रखे रिसीवर को उठाकर बोला—"इंस्पेक्टर दीवान हियर।"

"वांछित नम्बर की कार का पता लग गया है।"

दीवान ने धड़कते दिल से पूछा—“क्या है उसका नाम?"

"अमीचन्द जैन—यमुना पार, प्रीत विहार में रहते हैं।"

"ओह।"

"मगर प्रीत विहार पुलिस स्टेशन से पता लगा है कि आज सुबह ही मिस्टर अमीचन्द जैन ने अपनी गाड़ी चोरी हो जाने की रपट लिखवाई थी।”

"क...क्या?” दीवान का दिमाग झन्नाकर रह गया।

“रपट के मुताबिक अमीचन्द ने रात ग्यारह बजे लायन्स क्लब की मीटिंग से लौटकर अपनी गाड़ी अच्छी-भली गैराज में खड़ी की थी, मगर सुबह जाने पर देखा कि गैराज का ताला टूटा पड़ा है और गाड़ी उसके अन्दर से गायब है।"

"यानि गाड़ी रात के ग्यारह के बाद किसी समय चुराई गई?"

“जी हां।"

कहने के लिए दीवान को एकदम से कुछ नहीं सूझा। उसका दिल ढेर सारे सवाल करने के लिए मचल रहा था, मगर स्वयं ही समझ नहीं पा रहा था कि वह जानना क्या चाहता है। अत: कुछ देर तक लाइन पर खामोशी रही—फिर दीवान ने कहा—"तुम वायरलेस पर प्रीत विहार पुलिस स्टेशन को सूचना दे दो कि वे अमीचन्द से यह कहकर कि उसकी कार मिल गई है, उसे मेडिकल इंस्टीटच्यूट भेज दें।"

“ओoकेo।" कहकर दूसरी तरफ से कनेक्शन ऑफ कर दिया गया। दीवान हाथ में रिसीवर लिए किसी मूर्ति के समान खड़ा था—किर्रर...किर्रर्र की अवाज उसके कान के पर्दे को झनझना रही थी। वहीं खड़ा वह सोच रहा था कि युवक के बारे में कुछ जानने का यह 'क्लू' भी बिल्कुल फुसफुसा साबित हुआ है-कार चोरी की थी। क्या वह युवक चोर है?

यह विचार उसके कण्ठ से नीचे नहीं उतर सका, क्योंकि आंखों के सामने शानदार सूट, हीरे की अंगूठी, विदेशी घड़ी, बाईस हजार रुपये और हीरा जड़ित वह सोने का

नेकलेस नाच उठा।

¶¶

उस वक्त तक युवक बेहोश ही था, जब अमीचन्द जैन वहां पहुंच गया—हालांकि इंस्पेक्टर दीवान को ऐसी कोई उम्मीद नहीं थी कि अमीचन्द जैन युवक के बारे में कुछ बता सकेगा। फिर भी एक नजर उसने अमीचन्द से युवक को देख लेने के लिए कहा।

वही हुआ जो दीवान पहले से जानता था।

यानि अमीचन्द ने कहा—"यह युवक मेरे लिए नितान्त अपरिचित है।"

डॉक्टर भारद्वाज के तीनों सहयोगी डॉक्टर आ चुके थे और अब वे चारों एक बन्द कमरे में उस केस के सम्बन्ध में विचार-विमर्श कर रहे थे। नर्स को निर्देश दे दिया गया था कि युवक के होश में आते ही उन्हें सूचना दे दी जाए।

उस वक्त करीब एक बजा था, जब नर्स ने उन्हें सूचना दी।

वे चारों ही उस कमरे में चले गए, जिसमें युवक था। गैलरी के बाहर बेचैन-सा टहलता हुआ दीवान उत्सुकतापूर्वक उनके बाहर निकलने की प्रतीक्षा कर रहा था। इस वक्त उसके दिमाग में भी केवल एक ही सवाल चकरा रहा था कि वह युवक कौन है?

पता लगाने का कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा था उसे।

दरवाजा खुला, चारों डॉक्टर बाहर निकले और दीवान लपककर उनके समीप पहुंच गया। बोला—"क्या रहा डॉक्टर?"

"उसे कुछ भी याद नहीं आ रहा है।" डाक्टर भारद्वाज ने बताया।

"उसके ठीक होने के बारे में आपकी क्या राय है?"

एक अन्य डॉक्टर ने कहा—"अगर ठीक होने से आपका तात्पर्य उसकी याददाश्त वापस आने से है तो हम यह कहेंगे कि उसमें चिकित्सा विज्ञान कुछ नहीं कर सकता।"

"क्या मतलब?" दीवान का चेहरा फक्क पड़ गया था।

अचानक ही डॉक्टर भारद्वाज ने पूछा—"क्या तुमने कभी कोई खराब घड़ी देखी है इंस्पेक्टर? खराब से तात्पर्य है ऐसी घड़ी देखी है, जो बन्द पड़ी हो अथवा कम या ज्यादा समय दे रही हो?"

"य...ये घड़ी बीच में कहां से आ गई?"

"इस वक्त उस युवक का मस्तिष्क नाजुक घड़ी के समान है। कमानी और घड़ी का संतुलन ही वे मुख्य चीजें हैं, जिनसे घड़ी सही समय देती है, अगर संतुलन ठीक नहीं है तो

घड़ी धीमी चलेगी या तेज, जबकि इस युवक के दिमाग रूपी घड़ी की दोनों चीजें खराब हैं साधारण अव्यवस्था होने पर ये सारी चीजें ठीक काम करने लगेंगी, कई बार यह सम्भव होता है कि ऐसी घड़ी साधारण झटके से सही चलने लगती है, मगर ध्यान रहे—यदि झटका आवश्यकता से जरा भी तेज लग जाए तो परिणाम उल्टे और भयानक ही निकलते हैं। यह पागल हो सकता है, अत: उतना संतुलित झटका देना किसी डॉक्टर के वश में नहीं है—वह तो स्वयं ही होगा।"

"कब?"

"जब प्रकृति चाहे। ऐसा एक क्षण में ही होगा, वह क्षण भविष्य की कितनी पर्तों के नीचे दबा है—या भला कोई डॉक्टर कैसे बता सकता है?"

"म...मेरा मतलब यह झटका उसे किन अवस्थाओं में लगने की सम्भावना है?"

"विश्वासपूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता है, यदि अचानक ही उसके सामने कोई उसका बहुत ही प्रिय व्यक्ति आ जाए तो संभव है।"

इंस्पेक्टर दीवान की आंखों के सामने युवक के पर्स से निकला युवती का फोटो नाच उठा। कुछ देर तक जाने वह किन ख्यालों में गुम रहा—फिर बोला—"क्या मैं उससे बात कर सकता हूं, डॉक्टर?"

"प्रत्यक्ष में उसे बहुत ज्यादा चोट नहीं लगी है, बयान ले सकते हो, मगर हम एक बार फिर कहेंगे—प्लीज, उसकी याददाश्त के सम्बन्ध में अपने पुलिसिया ढंग से न सोचें, ऐसी कोई बात न करें, जिससे उसके मस्तिक को वह झटका लगे, जिससे वह पागल हो सकता है।"

"थैंक्यू डॉक्टर, मैं ध्यान रखूंगा।" कहकर इंस्पेक्टर दीवान फिरकनी की तरह एड़ी पर घूम गया और अगले ही पल आहिस्ता से दरवाजा खोलकर यह कमरे के अन्दर था।

युवक बेड पर रखे तकिए पर पीठ टिकाए अधलेटी-सी अवस्था में बैठा था। उसके समीप ही स्टूल पर एक नर्स बैठी थी, जो दीवान को देखते ही उठकर खड़ी हो गई। युवक उलझी हुई-सी नजरों से दीवान को देख रहा था।

"हैलो मिस्टर।" उसके पास पहुंचकर दीवान ने धीमे से कहा।

युवक कुछ नहीं बोला, ध्यान से दीवान को केवल देखता रहा।

दीवान स्टूल पर बैठता हुआ बोला—"क्या तुम बोल नहीं सकते?"

"आप वही इंस्पेक्टर हैं न, जो मेरे बारे में पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं?"

"जी हां, मेरा नाम दीवान है।"

युवक ने उत्सुकतापूर्वक पूछा—"कुछ पता लगा?"

"तुम्हें कैसे मालूम कि मैं...।"

"डॉक्टर ने बताया था, मैं बार-बार उससे पूछ रहा था, उसने कहा कि एक पुलिस इंस्पेक्टर मेरे बारे में पता लगाने के लिए इनवेस्टिगेशन कर रहा है।"

दीवान निश्चय नहीं कर पा रहा था कि युवक को वह कड़ी दृष्टि से घूरे अथवा सामान्य भाव से, कुछ देर तक शान्त रहने के बाद बोला—"देखो, यदि तुम होने वाले एक्सीडेण्ट, पुलिस की पूछताछ या मिलने वाली सजा से आतंकित हो तो मैं स्पष्ट किए देता हूँ कि उस एक्सीडेण्ट में तुम्हारी कोई गलती नहीं थी। तुम अपनी साइड पर ड्राइविंग कर रहे थे, हवा से बातें करते उस ट्रक ने रांग साइड़ में आकर तुम्हारी कार में टक्कर मारी, अत: तुम्हारे लिए डरने जैसी कोई बात नहीं है।"

"मैं विश्वास नहीं कर पा रहा हूं कि एक्सीडेण्ट हुआ था, मैं यहां हूं, सिर में चोट है, पिछली एक भी बात याद नहीं कर पा रहा हूं, डॉक्टर्स, नर्स और तुम भी कह रहे हो कि मेरा एक्सीडेण्ट हुआ था, इसीलिए मानना पड़ रहा है कि जरूर हुआ होगा।"

"क्या तुम्हें कुछ भी याद नहीं है? अपना नाम भी?"

"मैं खुद परेशान हूं।"

"क्या तुम इन चीजों को पहचानते हो?" सवाल करते हुए दीवान ने पर्स और नेकलेस निकालकर उसकी गोद में डाल दिए।

उन्हें देखने के बाद युवक ने इन्कार में गर्दन हिलाई।

अब दीवान ने जेब से युवती का फोटो निकाला और उसे दिखाता हुआ बोला —"क्या तुम इस युवती को भी नहीं पहचानते?"

कुछ देर तक युवक ध्यान से फोटो को देखता रहा। दीवान बहुत ही पैनी निगाहों से उसके चेहरे पर उत्पन्न होने वाले भावों को पढ़ रहा था, किन्तु कोई ऐसा भाव वह नहीं खोज सका, जो उसके लिए आशाजनक हो। युवक ने इन्कार में गर्दन हिलाते हुए कहा —"कौन है ये?"

"फिलहाल इसका नाम तो मैं भी नहीं जानता, मगर यह फोटो आपके पर्स से निकली है।"

"मेरे पर्स से?"

"जी हां। यह पर्स आप ही की जेब से निकला है और नेकलेस भी।"

युवक चकित भाव से इन तीनों चीजों को देखने लगा। आंखों में उलझन-सी थी,

बोला—"अजीब बात है, इंस्पेक्टर! मैं खुद ही से खो गया हूं।"

अचानक ही दीवान की आंखों में सख्त भाव उभर आए, चेहरा कठोर हो गया और वह युवक की आंखों में झांकता हुआ गुर्राया—"तुम्हारा यह नाटक डॉक्टर्स के सामने चल गया मिस्टर, पुलिस के सामने नहीं...।"

युवक ने चौंकते हुए पूछा—"क्या मतलब?"

"तुमने अमीचन्द के गैराज से गाड़ी चुराई—रात के समय कोई संगीन अपराध किया और फिर सुबह दुर्भाग्य से एक्सीडेण्ट हो गया—तुम चोरी और रात में किए अपने किसी अपराध से बचने के लिए नाटक कर रहे हो।"

"म...मैँ समझ नहीं रहा हूं इंस्पेक्टर? कैसी चोरी? कैसा अपराध और यह अमीचन्द कौन है?"

"वही, जिसकी तुमने गाड़ी चुराई थी।"

"अजीब बात कर रहे हैं आप!"

"जिस ट्रक से तुम्हारी टक्कर हुई थी, उसमें स्मगलिंग का सामान था, वह ट्रक ड्राइवर एक मासूम बच्चे का हत्यारा है—उसे केवल तुम्हीं ने देखा है मिस्टर, सिर्फ तुम ही उसे पहचान सकते हो, उस तक पहुंचने में यदि तुम मेरी मदद करो तो कार चुराने जैसे छोटे जुर्म से मैं तुम्हें बरी करा सकता हूं।"

"मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है, कैसा ट्रक? कैसा ड्राइवर?"

"उफ्फ।" झुंझलाकर दांत पीसते हुए दीवान ने मोटा रूल अपने बाएं हाथ पर जोर से मारा। यह झुंझलाहट उस पर इसीलिए हावी हुई थी, क्योंकि अब वह इस नतीजे पर पहुंच गया था कि युवक की याददाश्त वाकई गुम है।

¶¶

रात के करीब दस का समय था।

हर तरफ खामोशी छाई हुई थी। युवक अधलेटी अवस्था में ही बेड पर पड़ा था और उसके पांयते स्टूल पर बैठी नर्स कोई उपन्यास पढ़ने में व्यस्त थी।

युवक का दिमाग आज दिन भर की घटनाओं में भटक रहा था—ऐसा उसे कोई नहीं मिला था, जो यह बता सके कि वह कौन है?

यह सोच-सोचकर वह पागल हुआ जा रहा था कि आखिर मैं हूं कौन?

इसी सवाल की तलाश में भटकते हुए युवक की दृष्टि नर्स पर ठिठक गई—वह

उपन्यास पढ़ने में तल्लीन थी, खूबसूरत थी। बेदाग सफेद लिबास में वो कुछ ज्यादा ही खूबसूरत लग रही थी। युवक की नजर उसके जिस्म पर थिरकने लगी—दृष्टि वक्षस्थल पर स्थिर हो गई।

एकाएक ही जाने कहां से आकर युवक के दिमाग में यह विचार टकराया कि यदि इस नर्स के तन से सारे कपड़े उतार दिए जाएं तो यह कैसी लगेगी?

एक नग्न युवती उसके सामने जा खड़ी हुई।

युवक रोमांचित-सा होने लगा।

उसके मन में उठ रहे भावों से बिल्कुल अनभिज्ञ नर्स उपन्यास में डूबी धीमे-धीमे मुस्करा रही थी—शायद वह उपन्यास के किसी कॉमेडी दृश्य पर थी—युवक ने जब उसके होंठों पर मुस्कान देखी तो जाने क्यों उसकी मुट्ठियां कस गईं।

दृष्टि उसके वक्षस्थल से हटकर ऊपर की तरफ चढ़ी।

गर्दन पर ठहर गई।

नर्स की गर्दन गोरी, लम्बी और पतली थी।

युवक के दिमाग में अचानक ही विचार उठा कि अगर मैं इस नर्स की गर्दन दबा दूं तो क्या होगा?

'यह मर जाएगी।'

'पहले इसका चेहरा लाल-सुर्ख होगा, बन्धनों से निकलने के लिए छटपटाएगी—मगर मैं इसे छोड़ूंगा नहीं—इसके मुंह से 'गूं-गूं' की आवाज निकलने लगेगी—इसकी आंखें और जीभ बाहर निकल आएंगीं—कुतिया की तरह जीभ बाहर लटका देगी यह।'

'तब, मैं इसकी गर्दन और जोर से दबा दूंगा।'

'मुश्किल से दो ही मिनट में यह फर्श पर गिर पड़ेगी—इसकी जीभ उस वक्त भी मरी हुई कुतिया की तरह निकली हुई होगी, आंखें उबली पड़ी होंगी, चेहरा बिल्कुल निस्तेज होगा—सफेद कागज-सा—उस अवस्था में कितनी खूबसूरत लगेगी यह हां! इसे मार ही डालना चाहिए।'

युवक के दिमाग में रह-रहकर यही वाक्य टकराने लगा—'इसे मार डालो—मरने के बाद फर्श पर पड़ी यह बहुत खूबसूरत लगेगी—इसकी गर्दन दबा दो।'

युवक की आंखों में बड़े ही हिंसक भाव उभर आए, चेहरा खून पीने के लिए तैयार किसी आदमखोर पशु के समान क्रूर और वीभत्स हो गया, आंखें सुर्ख हो उठीं। जाने क्या और कैसे अजीब-सा जुनून सवार हो गया था उस पर, उसका सारा जिस्म कांप रहा था।

मुंह खून के प्यासे भेड़िए की तरह खुल गया, लार टपकने लगी—बेड पर बैठा वह धीरे-धीरे कांपने लगा—जिस्म में स्वयं ही अजीब-सा तनाव उत्पन्न होता चला गया।

बहुत ही डरावना नजर आने लगा वह।

नर्स बिल्कुल बेखबर उपन्यास पढ़ रही थी।

धीरे-धीरे यह उठकर बैठ गया।

बेड के चरमराने से नर्स का ध्यान भंग हुआ।

उसने पलटकर युवक की तरफ देखा और उसे देखकर नर्स के कण्ठ से अनायास ही चीख निकल गई—उपन्यास फर्श पर गिर गया—चीखने के साथ ही वह कुछ इस तरह हड़बड़ाकर उठी थी कि स्टूल गिर पड़ा।

युवक के मुंह से पंक्चर हुए टायर की-सी आवाज निकली।

एक बार पुन: चीखकर आतंकित नर्स दरवाजे की तरफ दौड़ी, मगर अभी वह दरवाजे तक पहुंची भी नहीं थी कि युवक ने बेड ही से किसी बाज की तरह उस पर जम्प लगाई और नर्स को साथ लिए फर्श पर गिरा।

अब, नर्स फर्श पर पड़ी थी और युवक उसके ऊपर सवार उसका गला दबा रहा था—नर्स चीख रही थी—युवक के खुले हुए मुंह से लार नर्स के चेहरे पर गिर रही थी—बुरी तरह आतंकित नर्स छटपटा रही थी।

तभी गैलरी में भागते कदमों की आवाज गूंजी। दरवाजा 'भड़ाक'-से खुला।

हड़बड़ाए-से एक साथ कई नर्सें और डॉक्टर्स कमरे में दाखिल हो गए। कमरे का दृश्य देखते ही वे चौंक पड़े, और फिर इससे पहले कि युवक की गिरफ्त में फंसी नर्स की श्वांस-क्रिया रुके—उन्होंने युवक को पकड़कर अलग कर दिया।

उनके बन्धनों से मुक्त होने के लिए युवक बुरी तरह मचल रहा था और साथ ही हलक फाड़कर चीख रहा था—"छोड़ो मुझे, मुझे छोड़ दो, मैं इसे मार डालूंगा—मरी हुई यह बहुत खूबसूरत लगेगी—मुझे छोड़ दो।"

¶¶

"कुछ तो हुआ होगा—ऐसी कोई बात तो हुई होगी, जिसकी वजह से उसे इतना गुस्सा आ गया—इतना ज्यादा कि वह तुम्हारा मर्डर करने पर आमादा हो गया?"

"कुछ नहीं हुआ था। आप मेरा यकीन कीजिए—मैं बिल्कुल खामोश थी—उपन्यास पढ़ने में तल्लीन—उसकी तरफ देखा तक नहीं था मैंने।" लगभग रो पड़ने की-

सी अवस्था में नर्स ने चीखकर बताया।

डॉक्टर्स में से एक ने पुन: पूछा—"फिर यह इतने गुस्से में क्यों था?"

"मैं नहीं जानती।"

"अजीब बात है!" बड़बड़ाते हुए भारद्वाज ने अपने अन्य साथियों की तरफ देखा। सभी के चेहरे अजीब उलझन और असमंजस में डूबे थे—डॉक्टर भारद्वाज समेत उस कमरे में पांच डॉक्टर थे—सात नर्सें।

इस कमरे में एक प्रकार से उनकी मीटिंग हो रही थी।

अचानक ही एक नर्स ने डॉक्टर्स से पूछा—"आप लोग उसके दिमाग के बारे में यह घड़ी वाली बात कह रहे थे न?"

"हाँ।"

"कहीं यह पागल ही तो नहीं हो गया है?"

इस वाक्य के जवाब में वहां खामोशी छा गई। फिर डॉक्टर भारद्वाज बोले —"उसकी यह हरकत नि:सन्देह पागल जैसी थी और जिस वक्त हमने उसे पकड़ा था, उस वक्त नि:संदेह उसके जिस्म में वही विशेष शक्ति थी, जैसी किसी पागलों में आ जाती है, मगर उसके इस अवस्था में पहुंचने के लिए झटका लगना जरूरी था और अभी तक शायद ऐसी कोई घटना नहीं हुई है।"

"मेरे ख्याल से इस सम्बन्ध में किसी मनोचिकित्सक की राय महत्वपूर्ण होगी।" एक डॉक्टर ने सलाह दी।

"मैं भी यही सोच रहा था।" कहकर भारद्वाज ने मेज पर रखे फोन से रिसीवर उठाया और ब्रिगेंजा नामक डॉक्टर के नम्बर रिंग किए। सम्बन्ध स्थापित होने पर उसने कहा—"मैं डॉक्टर भारद्वाज बोल रहा हूं ब्रिगेंजा। मेरे पास तुम्हारे लिए एक बहुत ही दिलचस्प केस है, क्या तुम इसी समय यहां आ सकते हो?"

“क्या केस है?"

"विस्तार से तो फोन पर नहीं बता सकता, क्योंकि कहानी लम्बी है। ठीक है—इतना कह सकता हूं कि मरीज ने बिना किसी वजह के ही एक नर्स की गर्दन दबानी शुरू कर दी.....उसकी चीख सुनकर यदि हम सब सही समय पर वहाँ न पहुंच जाते तो निश्चित रूप से वह नर्स का मर्डर कर चुका था, हम सभी अब तक उससे आतंकित हैं।"

"इस वक्त वह किस अवस्था में है?"

“हम सबने मिलकर बड़ी मुश्किल से उसे बेहोश किया है।"

दूसरी तरफ से पूछा गया—"जब तुमने उसे नर्स से अलग किया, क्या उस समय तुम्हारी गिरफ्त से निकलने की कोशिश करते वक्त उसने कुछ कहा था?"

"हां।"

"क्या?"

भारद्वाज ने वे शब्द बता दिए। सुनकर दूसरी तरफ से हंसी की-सी आवाज आई। फिर पूछा गया—"क्या वह वाकई यह कह रहा था कि मरने के बाद नर्स बहुत ज्यादा खूबसूरत लगेगी?"

"हां—उसने बिल्कुल यही कहा था।"

"केस वाकई दिलचस्प मालूम पड़ता है, भारद्वाज। मैं आ रहा हूं।"

¶¶

नर्स के चुप होने पर कमरे में खामोशी छा गई। वहीं उत्सुक निगाहों से सभी ब्रिगेंजा की तरफ देख रहे थे। काफी प्रतीक्षा के बाद भी जब मिस्टर ब्रिगेंजा कुछ नहीं बोले तो भारद्वाज ने पूछा—"किसी नतीजे पर पहुंचे डॉक्टर?"

"मरीज से बात करने के बाद ही शायद किसी नतीजे पर पहुंचा जा सकता है।"

तभी भागकर एक नर्स कमरे में आई। उसकी सांस फूली हुई थी। हड़बड़ाई-सी बोली—"उसे होश आ रहा है, डॉक्टर?"

"चलो!" डॉक्टर ब्रिगेंजा उठकर खड़े हो गए—मगर उस नर्स से बोले—"तुम तब तक उसके कमरे में नहीं जाओगी, जब तक हम न बुलाएं, किसी अन्य के लिए उसके सामने जाने में कोई परहेज नहीं है।"

एक मिनट बाद दो डॉक्टर्स और दो नर्सों के साथ डॉक्टर ब्रिगेंजा युवक वाले कमरे में दाखिल हुए—बिस्तर पर अधलेटी अवस्था में पड़ा युवक इस वक्त शान्त था—उन सबको कमरे में दाखिल होते देखते ही वह सीधा होकर बैठ गया।

उसके चेहरे पर उलझन, हैरत और पश्चाताप के संयुक्त भाव थे।

भारद्वाज और उसके साथी दूर ही ठिठक गए। भयाक्रांत-से वे सभी युवक को देख रहे थे। उसे, जो इस वक्त नि:सन्देह किसी बच्चे जैसा मासूम और आकर्षक लग रहा था।

उसके समीप पहुंचते हुए ब्रिगेंजा ने कहा—"हैलो मिस्टर!"

"हैलो!" युवक ने फंसी-सी आवाज में कहा।

ब्रिगेंजा ने उसकी तरफ हाथ बढ़ाते हुए कहा—"मेरा नाम ब्रिगेंजा है।"

अवाक्-से युवक ने उससे हाथ मिला लिया। उस वक्त ब्रिगेंजा ने बड़े प्यार से पूछा —"तुमने अपना नाम नहीं बताया?"

"म.....मुझे अपना नाम नहीं पता है।" बहुत ही मासूम अन्दाज था उसका।

"अजीब बात है! क्यों?"

"सब लोग कहते हैं कि मेरा एक्सीडेण्ट हो गया था—तब से मुझे कुछ याद नहीं आ रहा है—मगर वह नर्स कहां गई डॉक्टर भारद्वाज?"

अन्तिम शब्द उसने अचानक ही डॉक्टर भारद्वाज से मुखातिब होकर कहे थे, जिसके कारण भारद्वाज एक बार को तो बौखला गया, फिर शीघ्र ही संभलकर बोला—"वह तुम्हारे साथ रहने के लिए तैयार नहीं है।"

"शायद मेरे व्यवहार के कारण?"

ब्रिगेंजा ने पूछा—"क्या तुम्हें मालूम है कि उसके साथ तुमने क्या किया था?"

"मैं बहुत शर्मिन्दा हूं, डॉक्टर, प्लीज—उसे बुलाइए—वह मेरी बहन जैसी है—मैं उससे अपने व्यवहार की क्षमा मांगना चाहता हूं।"

"अगर ऐसा है तो तुमने वह सब किया ही क्यों था?"

"म...मैं समझ नहीं पा रहा हूं, मुझे बेहद दु:ख है—चकित हूं.....जाने मैं यह सब क्यों करने लगा, शायद मुझसे ऐसा करने के लिए किसी ने कहा था।"

"किसने?"

"मैं नहीं बता सकता, मगर उस वक्त यहां मेरे और उस नर्स के अलावा कोई था ही नहीं, फिर जाने वह कौन था, जिसने मेरे कान में, दिलो-दिमाग में चीखकर यह कहा कि उसे मार दे—मरने के बाद वह बेहद खूबसूरत लगेगी।"

"क्या तुम्हें खूबसूरत चीजें पसंद हैं?"

"खूबसूरत चीजें भला किसे पसंद न होंगी?"

"क्या वह नर्स जीवित अवस्था में खूबसूरत नहीं लग रही थी?"

"ल...लग रही थी।"

"फिर तुमने उसे मारने की कोशिश क्यों की?"

इस प्रकार ब्रिगेंजा ने कुरेद-कुरेदकर उससे सवाल किए। वह बेहिचक सभी बातों

का जवाब देता चला गया...कुछ देर बाद उस कमरे में मौजूद सभी व्यक्ति जान चुके थे कि युवक ने किन विचारों और भावनाओं के झंझावात में फंसकर नर्स को मार डालने की कोशिश की थी। सुनने के बाद ब्रिगेंजा ने पूछा—"तो शुरू में आपकी यह इच्छा हुई कि वह नर्स बिना कपड़ों के ज्यादा सुन्दर लगेगी?"

"ओह नो...मैं शर्मिन्दा हूं, डॉक्टर। बेहद शर्मिन्दा हूं।" चीखते हुए उसने अपने दोनों हाथों से चेहरा ढ़ाप लिया, निश्चय ही इस वक्त शर्म के कारण उसका बुरा हाल था। ब्रिगेंजा ने कहा—"तुम उन्हीं विचारों पर अमल करते चले गए, जो तुम्हारे दिमाग में उठे?"

"हां।"

"कल अगर तुम्हारे दिमाग में यह विचार उठा कि तुम्हें कुएं में कूद जाना चाहिए तो?"

"म....मैं शायद कूद पड़ूंगा, आप यकीन कीजिए, मेरे अपने ही दिमाग पर मेरा कोई नियन्त्रण नहीं रह गया था। उफ् भगवान! ये मुझे क्या हो गया है? मुझे याद क्यों नहीं आता कि मैं कौन हूं, इतने गन्दे, इतने भयानक विचार मेरे दिमाग में आए ही क्यों? मैं क्या करूं, मैं क्या करूं भगवान?" चीखने के बाद वह अपने घुटनों में सिर छुपाकर जोर-जोर से रोने लगा।

सभी को सहानुभूति-सी होने लगी उससे।

¶¶

भारद्वाज के कमरे में बैठे डॉक्टर ब्रिगेंजा ने कहा—"वह पागल नहीं है।"

"फिर?"

"एक किस्म का जुनून कहा जा सकता है उसे, जुनून-सा सवार हुआ था उस पर... मुझे लगता है कि अपनी पिछली जिन्दगी में उसने कहीं किसी लड़की की लाश देखी है।"

"उसकी पिछली जिन्दगी ही तो नहीं मिल रही है।"

"यह पता लग चुका है कि वह हिन्दू है।"

डॉक्टर भारद्वाज ने कहा—"शायद आप उसके भगवान कहने पर ऐसा सोच रहे हैं?"

"हां, वह शब्द उसके मुंह से बड़े ही स्वाभाविक ढंग से निकला था।"

एक अन्य डॉक्टर ने कहा—"मान लिया कि उस पर जुनून सवार हुआ था, मगर इस अवस्था में उसके पास अकेला रहने की हिम्मत कौन करेगा, डाक्टर? जाने कब उस पर जुनून सवार हो जाए और सामने वाले की गर्दन दबा दे?"

हंसते हुए ब्रिगेंजा ने कहा..."ऐसा नहीं होगा।"

"क्या गारन्टी है?"

"उसके पास किसी लेडीज नर्स को नहीं, पुरुष को छोड़ दो—उसके लिए युवक के जेहन में वैसा कोई विचार नहीं उठेगा, जैसा नर्स के लिए उठा था, वैसे मेरा ख्याल है कि यह जुनून उसे जिन्दगी में पहली बार ही उठा था।"

"क्या गारन्टी है?"

"मेरा अनुभव।" ब्रिगेंजा ने तपाक से कहा—"ऐसा उसके साथ केवल इसीलिए हो गया कि इस वक्त उसका दिमाग संतुलित नहीं है—दुर्घटना से पहले संतुलित था।"

"म...मगर भविष्य में तो उसे ऐसा जुनून सवार हो सकता है।"

"पूरा खतरा है।" ब्रिगेंजा ने बताया।

¶¶

'ग्रे' कलर की एक चमचमाती हुई शानदार 'शेवरलेट' थाने के कम्पाउण्ड में रुकी, झटके से आगे वाला दरवाजा खुला। बगुले-सी सफेद वर्दी पहने शोफर बाहर निकला और फिर उसने गाड़ी का पीछे वाला दरवाजा खोल दिया।

पहले एक कीमती छड़ी गाड़ी से बाहर निकलती नजर आई, फिर उस पर झूलता हुआ अधेड़ आयु का एक व्यक्ति—वह अधेड़ जरूर था परन्तु चेहरे पर तेज था, उसके अंग-प्रत्यंग से दौलत की खुशबू टपकती-सी महसूस होती थी, चेहरा लाल-सुर्ख था उसका—आँखों पर सुनहरी फ्रेम का सफेद लैंस वाला चश्मा, बालों को शायद खिजाब से काला किया गया था।

हालांकि चलने के लिए उसे सहारे की जरूरत नहीं थी, फिर भी, सोने की मूठ वाली छड़ी को टेकता हुआ वह ऑफिस की तरफ बढ़ गया।

एक मिनट बाद अपना हाथ इंस्पेक्टर दीवान की तरफ बढ़ाए वह कह रहा था —"हमें न्यादर अली कहा जाता है। लारेंस रोड पर हमारा बंगला है।"

"बैठिए।" दीवान उससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका।

"आज के अखबार में आपने दो फोटो छपवाए हैं। एक युवक का, दूसरा युवती का —उन फोटुओं के समीप लिखे विवरण के अनुसार वह युवक अपनी याददाश्त गंवा बैठा है, और युवती का फोटो उसके पर्स की जेब से निकला है?"

जाने क्यों दीवान का दिल धड़क उठा, बोला—"जी.....जी हां।"

"वह युवक हमारा बेटा है।"

"आपका बेटा?"

"जी हां...और वह युवती हमारी बेटी।"

"ब...बेटी?" दीवान के मुंह से अनायास निकल पड़ा—"यानि वह युवक की बहन है?"

"हां, सिकन्दर सायरा से बहुत प्यार करता था—दुर्भाग्य ने सायरा को हमसे छीन दिया और सिकन्दर तभी से अपने पर्स में सायरा का फोटो लिए घूमता है।"

"क्या यह लड़की अब इस दुनिया में नहीं है?"

"एक साल पहले वह...।" न्यादर अली की आवाज भर्रा गई।

"स...सॉरी...मगर क्या नाम ले रहे थे आप, सिकन्दर—क्या उस युवक का यही नाम है?"

"हां इंस्पेक्टर, हमारी एक छोटी-सी कपड़ा मिल है—एक साल पहले तक सिकन्दर हमारे ही व्यापार में हमारी मदद किया करता था, किन्तु सायरा की मृत्यु के बाद जाने क्यों उसे अपना एक अलग बिजनेस करने की धुन सवार हो गई....हमने उसे एक गत्ता मिल लगवा दी—पिछले करीब एक वर्ष से यह प्रतिदिन सुबह नौ बजे ऑफिस जाता और रात आठ बजे लौट आता था—कल रात नहीं लौटा, हम दस बजे तक उसका इन्तजार करते रहे.....जब वह नहीं आया तो हमने गत्ता मिल के मैनेजर को फोन किया—उसके मुंह से यह सुनकर हम चकित रह गए कि सिकन्दर आज ऑफिस ही नहीं पहुंचा था—हम चिंतित हो उठे—उसके और अपने हर परिचित के यहां फोन करके हमने मालूम किया—सिकन्दर कल किसी से नहीं मिला था—बेचैनी और चिंताग्रस्त स्थिति में हमने सारी रात काट दी—सुबह पेपरों में फोटो देखे तो उछल पड़े और उनके समीप लिखी इबारत तो हमारे सीने पर एक मजबूत घूंसा बनकर लगी—यह सब कैसे हो गया, इंस्पेक्टर? सिकन्दर अपनी याददाश्त कैसे गंवा बैठा?"

"एक ट्रक से उसका एक्सीडेण्ट हुआ था।"

"ए...एक्सीडेण्ट? ज्यादा चोट तो नहीं आई उसे?"

"प्रत्यक्ष में कोई बहुत ज्यादा चोट नहीं लगी है, अपनी याददाश्त जरूर गंवा बैठा है वह.....मगर क्या वह अपने ऑफिस कार से जाता था?"

"हां, उसके पास कैडलॉक है।"

"कैडलॉक?"

"हां।"

"मगर जिस गाड़ी का ट्रक से एक्सीडेण्ट हुआ है, वह फियेट थी।"

"फियेट सिकन्दर के पास कहां से आ गई?"

दीवान ने बताया—"यह जानकर आपको हैरत होगी कि यह फियेट उसने चुराई थी, फियेट के मालिक प्रीत विहार में रहने वाले अमीचन्द जैन हैं।"

"अजीब बात है! सिकन्दर भला किसी की फियेट क्यों चुराएगा और उसकी कैडलॉक कहां चली गई? हमारी समझ में यह पहेली नहीं आ रही है, इंस्पेक्टर?"

"ऐसी कई पहेलियां हैं, जिन्हें केवल एक ही घटना हल कर सकती है—और यह घटना उसकी याददाश्त वापस लौटना होगी।"

"और क्या पहेली है?"

दीवान ने उस ट्रक और ड्राइवर के बारे में कह दिया—उसके बाद दीवान ने नया प्रश्न किया—"क्या सिकन्दर की शादी हो चुकी है?"

"नहीं।"

"क्या उसकी कोई गर्लफ्रेंड है?"

"कम-से-कम हमारी जानकारी में नहीं है।"

दीवान ने दराज खोली, नेकलेस निकालकर मेज पर रखता हुआ बोला—"फिर यह नेकलेस उसने किसके लिए खरीदा था, यह उसकी जेब से निकला है।"

"अजीब बात है!"

"यह एक ऐसी पहेली है, जो उसकी याददाश्त वापस आने पर ही सुलझेगी।"

"हम सिकन्दर से मिलना चाहते हैं, इंस्पेक्टर।"

"सॉरी।" कहकर कुछ पल के लिए चुप रहा दीवान, ध्यान से न्यादर अली की तरफ देखता रहा, फिर बोला—"क्या आपके पास इस बात का कोई सबूत है कि वह आपका बेटा सिकन्दर ही है?"

"स...सबूत—कोई किसी का बेटा है, इस बात का क्या सबूत हो सकता है?"

"क्षमा करें, मिस्टर न्यादर अली। हालात ऐसे हैं कि मैं बिना किसी सबूत के आपकी बात पर यकीन नहीं कर सकता—जरा सोचिए—युवक की याददाश्त गुम है—इस वक्त उसे जो भी परिचय दिया जाएगा, उसे स्वीकार करने के अलावा उसके पास कोई चारा

नहीं है।"

"म...मगर कोई गलत आदमी उसे अपना बेटा क्यों कहेगा?"

"बहुत-से कारण हो सकते हैं।"

"जैसे?"

"मैं इस बहस में नहीं पड़ना चाहता, यदि आपके पास उसे अपना बेटा साबित करने के लिए कोई सबूत है तो प्लीज, पेश कीजिए।"

"अजीब बात कर रहे हैं आप—हमारे नौकर-चाकर और सभी परिचित आपको बता सकते हैं कि सिकन्दर हमारा बेटा है, हमारे साथ उसके अनेक फोटो भी आपको मिल...हां, गुड...उसकी एलबम तो सबूत हो सकती है, इंस्पेक्टर—हमारे पास उसकी एक एलबम है, उसमें सिकन्दर के बचपन से जवानी तक के फोटो हैं।"

"एलबम एक ठोस सबूत है।"

"म...मगर हमें मालूम नहीं था कि यहां सिकन्दर को अपना बेटा साबित करने के लिए भी सबूत की जरूरत पड़ेगी, अत: एलबम साथ नहीं लाये हैं—या जरा ठहरिए, हम अपने नौकर से एलबम मंगा लेते हैं।"

दीवान ने एक सिपाही को आदेश दिया कि वह शोफर को अन्दर भेज दे...तब न्यादर अली ने पूछा—"इस वक्त सिकन्दर कहां है?"

"मेडिकल इंस्टीटयूट में।"

"क्या ऐसा नहीं हो सकता कि हम वहीं चलें और शोफर एलबम लेकर वहां पहुंच जाए?"

"मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं है।" दीवान ने कहा।

¶¶

बहुत ही धैर्यपूर्वक सब कुछ सुनने के बाद डॉक्टर भारद्वाज ने पूछा—"यानि वह युवक आपका बेटा है और उसका नाम सिकन्दर है?"

"हां, डॉक्टर। उसे अपना बेटा साबित करने के लिए हमारे पास सबूत भी हैं—हमारा नौकर एलबम लेकर यहां पहुंचने ही वाला होगा।"

"मैं आपसे यह जानना चाहता था कि क्या सिकन्दर को किसी किस्म का दौरा अक्सर पड़ता है?"

"दौरा?"

"जी हां, हालांकि मनोचिकित्सक उसे दौरा नहीं मानता—जो हुआ था, उसे वह जुनून शब्द देता है, फिर भी मैं आपसे जानना चाहता हूं।"

"क्या जानना चाहते हैं?"

"यह कि क्या सिकन्दर ने कभी किसी लड़की को गला घोंटकर मार डालने की कोशिश की हो?"

बुरी तरह चौंकते हुए न्यादर अली ने कहा—"क्या बात कर रहे हैं आप?"

"इसका मतलब ऐसा कभी नहीं हुआ?"

"क्या हमारा सिकन्दर हत्यारा है, जो...?"

उनकी बात पूरी भी नहीं हुई थी कि दिलचस्पी लेते हुए दीवान ने पूछा—"क्या ऐसा कुछ हुआ था, डॉक्टर?—प्लीज, मुझे बताओ कि क्या हुआ था।"

भारद्वाज ने उसके जुनून के बारे में विस्तार से बता दिया। सुनते हुए दीवान के चेहरे पर जहां उलझन के भाव थे, वहीं न्यादर अली का चेहरा हैरत में डूब गया। भारद्वाज के चुप होने पर उनके मुंह से निकला—"अल्लाह—हमारे बेटे को यह क्या हो गया है—सिकन्दर के बारे में आप यह कैसी बात कर रहे हैं?"

उनके इन शब्दों से भारद्वाज समझ सकता था कि कम-से-कम इनके सामने युवक पर कभी वैसा जुनून सवार नहीं हुआ था। अत: उसने अगला सवाल किया—"अच्छा, यह बताइए कि क्या सिकन्दर ने कभी किसी नग्न युवती की लाश देखी थी?"

"न...नग्न युवती की लाश—मगर आप यह सब क्यों पूछ रहे हैं?"

"आपके सवाल का जवाब मैं बाद में दूंगा—प्लीज, पहले आप मुझे मेरे सवाल का जवाब दीजिए—क्या आपके जीवन में उसने कभी किसी नग्न युवती की लाश देखी है?"

"हां।"

"कब?"

"आज से करीब एक साल पहले।"

"वह लाश किसकी थी?"

"उसकी बहन की—सायरा की लाश थी वह।" बताते हुए न्यादर अली की चश्मे के पीछे छुपी आँखें भर आईं, आवाज भर्रा गई—"सायरा से बहुत प्यार करता था वह—अपनी बहन की लाश से लिपटकर फूट-फूटकर रोया था सिकन्दर।"

"कहीं किसी ने गला घोंटकर तो सायरा को नहीं मारा था?"

"पोस्टमार्टम की रिपोर्ट में यही लिखा था, मगर हम आज तक नहीं समझ सके कि किसी जालिम ने हमारी मासूम बेटी की हत्या क्यों की थी—रात को वह अच्छी—भली, हंसती-खेलती हमसे और सिकन्दर से गुडनाइट करके अपने कमरे में सोने चली गई थी—सुबह हमें कमरे के फर्श पर उसकी लाश पड़ी मिली—उसके जिस्म पर कपड़े का एक रेशा भी नहीं था—पता नहीं उसे किस जालिम ने...।"

भारद्वाज की आंखें अजीब-से जोश में चमक रही थीं—"इसका मतलब यह कि डॉक्टर ब्रिगेंजा ने उस जुनून के पीछे छुपी सही थ्योरी बता दी थी?"

"क्या मतलब?"

डॉक्टर भारद्वाज उन्हें ब्रिगेंजा की थ्योरी के बारे में बताता चला गया और अंतिम शब्द कहते-कहते अचानक ही उसे कुछ ख्याल आया। अचानक ही उसके चेहरे पर चौंकने के भाव उभरे, बोला—"म...मगर आप तो मुसलमान हैं मिस्टर न्यादर अली, जबकि उस युवक को हिन्दू होना चाहिए—डॉक्टर ब्रिगेंजा और खुद मैं भी यही सोचता हूं।"

"क्या मतलब?"

"यदि मैं बिना कोई चेतावनी दिए अचानक ही आपके चेहरे पर बहुत जोर से घूंसा मार दूं और मुसीबत के ऐसे क्षण में आपको अपने गॉड को याद करना पड़े तो आपके मुंह से क्या निकलेगा?"

"या अल्लाह।"

"जबकि ऐसे ही एक क्षण उसके मुंह से...।"

उसकी बात बीच में ही काटकर न्यादर अली ने कहा—"भगवान निकला होगा?"

"जी...जी हां—मगर—क्या मतलब?"

न्यादर अली के होंठों पर हल्की-सी मुस्कान उभर आई, बोले—"ऐसा होने पर आपने यह अनुमान लगा लिया कि वह हिन्दू है—हालांकि आपका सोचना स्वाभाविक ही था, फिर भी इस मामले में आप चूक गए—वैसे हम खुद भी चकित हैं—पिछले सात-आठ महीने से वह जाने क्यों बहुत ज्यादा हिन्दी बोलने लगा है—अल्लाह के स्थान पर भी वह भगवान ही कहता है—इस बारे में पूछने पर उसने हमेशा यही कहा कि हम खुदा कहें या भगवान, आखिर पुकारते एक ही शक्ति को हैं।"

"बात तो ठीक है।" डॉक्टर भारद्वाज ठहाका लगा उठा, जबकि दीवान सोच रहा था कि अखबार में फोटुओं का प्रकाशन कराकर उसने युवक को भले ही खोज निकाला हो, किन्तु उसकी अपनी समस्या हल नहीं हुई है—यानि सिकन्दर उस ट्रक ड्राइवर को अब भी नहीं पहचान सकेगा।

कुछ ही देर बाद एक कीमती एलबम लिए न्यादर अली का शोफर वहां पहुंच गया और उस एलबम को देखने के बाद कोई नहीं कह सकता था कि न्यादर अली झूठ बोल रहा है—उसमें सचमुच उस युवक के बचपन से युवावस्था तक के फोटो क्रम से लगे हुए थे—कई फोटुओं में वह सायरा और न्यादर अली के साथ भी था।

¶¶

युवक सुबह आठ बजे सोकर उठा।

वह वार्ड-ब्वॉय तब भी कमरे में था, जिसे रात की घटना के बाद यहां उसकी देखभाल करने के लिए छोड़ दिया गया था—उस वार्ड-ब्वॉय को देखकर एक पल के लिए भी उसके दिमाग में कोई बुरा ख्याल नहीं आया था।

उस वक्त साढ़े नौ बजे थे, जब यह बेड पर पड़ा आज के अखबार में डूबा हुआ था। उसने अभी-अभी अपने तथा अपने पर्स से मिली युवती के फोटो के समीप लिखी इबारत पढ़ी थी।

क्या इस विज्ञापन को पढ़कर मेरा कोई अपना मुझे लेने आएगा?

यह विचार अभी उसके दिमाग में उभरा ही था कि उसके कान में किसी की आवाज पड़ी। किसी ने जाने किसको 'सिकन्दर' कहकर पुकारा था।

उसने अखबार एक तरफ हटाकर कमरे के दरवाजे की तरफ देखा, क्योंकि आवाज उसी दिशा से आई थी—वहां एक बहुत अमीर नजर आने वाला अधेड़ व्यक्ति खड़ा था।

उसके दाएं-बाएं इंस्पेक्टर दीवान और भारद्वाज भी थे।

अधेड़ के चेहरे पर वेदना थी, आंखों में वात्सल्य का सागर।

युवक प्रश्नवाचक नजरों से उनकी तरफ देखने लगा, जबकि अधीरतापूर्वक उसकी ओर लपकते-से अधेड़ ने कहा—"तुझे क्या हो गया है बेटे?"

युवक के चेहरे पर उलझन के भाव उभर आए।

न्यादर अली ने बांहों में भरकर उसे अपने सीने से चिपटा लिया था। हालांकि युवक की समझ में कुछ नहीं आ रहा था, मगर उसे देखते ही न्यादर अली के धैर्य का बांध मानो टूट पड़ा। फफक-फफककर रोते हुए उन्होंने कहा—"यह सब कैसे हो गया, सिकन्दर? तू कल मिल क्यों नहीं गया था, बेटे? तेरी कैडलॉक कहां है, किसी अमीचन्द की फियेट भला तेरे पास कहां से आ गई, जिससे बाद में एक्सीडेण्ट?"

इस प्रकार भावुकता में डूबे मिस्टर न्यादर अली जाने क्या-क्या कहते चले गए, जबकि प्लास्टिक के बने किसी बेजान खिलौने की तरह युवक खामोश रहा। उसके चेहरे

और आंखों मेँ एक ही भाव था—उलझन!

सवालिया निशान।

चश्मा उतारकर न्यादर अली ने आंसू पौंछे, चश्मा पुनः पहना और खुद को थोड़ा संभालकर बोले—"क्या तुमने हमें भी नहीं पहचाना बेटे?"

अपनी सूनी आंखों से उन्हें देखते हुए युवक ने इन्कार में गर्दन हिलाई।

"क्या कह रहा है, बेटे?" न्यादर अली के लहजे में तड़प थी—"क्या हो गया है तुझे? क्या तू हमें भी नहीं पहचानता, हम तेरे अब्बा हैं!"

"अ.....अब्बा?"

"हां, याद करने की कोशिश कर—तेरा नाम सिकन्दर है, तेरी बहन का नाम सायरा था—तेरी एक गत्ता मिल है—तेरे पास कैडलॉक गाड़ी थी।"

"म...मुझे कुछ याद नहीं आ रहा है।"

"तू.....तू फिक्र मत कर, सब याद आ जाएगा—तू ठीक हो जाएगा बेटे—तेरे इलाज के लिए डॉक्टरों की लाइन लगा देंगे हम, अगर जरूरत पड़ी तो हम तुझे विदेश...।"

"म.....मगर....?"

"हां-हां—बोल, क्या बात है?"

"मैँ कैसे विश्वास करूं कि आप ही मेरे पिता हैं?"

एक बार फिर फूट-फूटकर रो पड़े मिस्टर न्यादर अली, बोले—"कैसे अभागे बाप हैं हम कि कदम-कदम पर तुम्हें अपना बेटा साबित करना पड़ रहा है—खैर, हमारे पास सबूत है, बेटे। यह एलबम देखो—तुम्हारे फोटुओं से भरी पड़ी है यह।"

युवक एलबम को देखने लगा।

उस एलबम की मौजूदगी में उसे मानना पड़ा कि वह वही है जो यह बूढ़ा कह रहा है, मगर उलझन के ढेर सारे भाव युवक के चेहरे पर अब भी थे।

¶¶

"मैं सिकन्दर को यहां से ले जाना चाहता हूं, डॉक्टर।"

"वैसे तो वही होगा, जो आप चाहते हैं, मगर मेरा ख्याल था कि यदि वह हफ्ता-दस दिन यहीं रहता तो उचित था—शायद इलाज से अपनी सामान्य स्थिति में आ

सके।"

"मैं उसका इलाज अपनी कोठी पर ही कराना चाहता हूं।"

कन्धे उचकाकर डॉक्टर भारद्वाज ने कह दिया—"जैसी आपकी मर्जी।"

"क्षमा कीजिए, मिस्टर न्यादर अली।" इंस्पेक्टर दीवान ने कहा—"फिलहाल वह पुलिस कस्टडी में है, एक्सीडेण्ट करने और कार चुराने के जुर्म में, अत: उसे घर ले जाने के लिए पहले आपको उसकी जमानत करानी होगी।"

"मैं जमानत कराने के लिए तैयार हूं।"

¶¶

जब चारों तरफ छाई खामोशी युवक को बहुत ज्यादा चुभने लगी तो एक नजर उसने अपने पांयते पड़ी गद्देदार कुर्सी में धंसे सांवले रंग के परन्तु आकर्षक युवक को देखा।

वह उपन्यास पढ़ने में मशगूल था। एकाएक युवक ने उसे पुकारा—"सुनो।"

आवाज सुनते ही वह चौंक पड़ा, न केवल उपन्यास बन्द कर दिया उसने, बल्कि एकदम से खड़ा होकर ससम्मान बोला—"जी, हुक्म कीजिए।"

"क्या नाम है तुम्हारा?" युवक ने पूछा।

"रू.....रूपेश, सर।"

"क्या तुम्हें हमेशा चुप रहना अच्छा लगता है?"

"ज.....,जी मैं समझा नहीं, सर?"

"मुझे यहां आए चार दिन गुजर गए हैं और तुम्हें मेरे पास तीन दिन—लगभग चौबीस घंटे यहां मेरे पास रहते हो गए, लेकिन तुमने कभी कोई बात नहीं की—यहां तक कि तुम्हारा नाम भी मैं पिछले ही क्षण जान सका हूं।"

"म.....मुझे सेठजी ने आपकी सेवा के लिए रखा है।"

"कब?"

"तीन दिन पहले ही, अखबार में उन्होंने इस आशय का विज्ञापन दिया था कि एक मरीज की सेवा करने के लिए ऐसे पढ़े-लिखे युवक की जरूरत है, जो कम-से-कम बीस घंटे की ड्यूटी दे सके।"

"क्या तुम मेरे बारे में कुछ जानते हो?"

"सिर्फ इतना ही कि आपका नाम सिकन्दर बाबू है, आप सेठ जी के लड़के हैं—एक एक्सीडेण्ट में आपकी याददाश्त गुम हो गई है और सेठ जी उसे वापस लाने के लिए धरती-आकाश एक किए हुए हैं।"

"यह सब तुमसे किसने कहा?"

"सेठ जी और यहां पहले से काम करने वाले नौकरों के अलावा मैं यह भी देखता-सुनता रहता हूं कि आपको देखने बम्बई तक से डाक्टर आ चुके हैं।"

"क्या मेरा कोई दोस्त नहीं है?"

"क्या मतलब सर?"

"अगर मैं सेठ जी का लड़का हूं तो इसका मतलब बहुत ज्यादा धनवान भी हूं—और धनवान आदमी का सामाजिक दायरा कुछ ज्यादा ही बड़ा बन जाता है। क्या यह आश्चर्य की बात नहीं है रूपेश कि मैं चार दिन से यहां पड़ा हूं—मगर मुझे देखने, मेरी खैरियत पूछने कोई नहीं आया है!"

"पता नहीं आप क्या कहना चाहते हैं, सर? सम्भव है कि आपके परिचित आते हों, लेकिन आपकी हालत देखकर बाहर ही से लौटा दिए जाते हों?"

"क्या ऐसा है?"

"मैं भला विश्वासपूर्वक कैसे कह सकता हूं?"

रूपेश के इस जवाब पर कुछ देर तक युवक खामोश रहा। बड़े ध्यान से वह रूपेश को देख रहा था, जैसे सोच रहा हो कि यह आदमी विश्वसनीय है या नहीं, फिर अचानक ही उसने सवाल कर दिया—"क्या मैं तुम पर विश्वास कर सकता हूं, रूपेश?"

"क्यों नहीं, सर।" रूपेश ने एक मुस्तैद नौकर की तरह ही कहा।

"सबसे पहले तुम मुझे 'सर' कहना बन्द करो—मेरे हमउम्र हो तुम और मैं तुमसे दोस्ती करना चाहता हूं।"

रूपेश चाहकर भी कुछ कह नहीं सका—फिर युवक ने आगे कहा—"जानते हो इस वक्त मैं क्यों दोस्त की जरूरत महसूस कर रहा हूं?"

"नहीं, सर।"

"मैं तुम्हें अपने दिल की बात बताना चाहता हूं। सच कहता हूं, रूपेश—एक्सीडेण्ट के बाद जब से होश में आया हूं, तब से सैंकड़ों विचार मेरे दिलो-दिमाग में उठ रहे हैं, मगर एक भी शख्स ऐसा नहीं मिला जिससे उन विचारों पर बात करके अपना मन हल्का कर सकूं—जाने क्यों मुझे लग रहा है कि तुम पर विश्वास किया जा सकता है।"

"जरूर।"

"तुम सेठ न्यादर अली के नौकर हो सकते हो, मेरे नहीं—मेरे केवल दोस्त हो—और इसी दोस्ती की कसम खाकर वादा करो कि मेरे और अपने बीच होने वाली बातों का जिक्र किसी से नहीं करोगे।"

"मैं वादा करता हूं।"

युवक के चेहरे पर पहली बार संतोष के भाव थे—ऐसे, जैसे उसे मनचाही मुराद मिल गई हो, और फिर अचानक ही युवक ने उस पर एक प्रश्न ठोक दिया—"अगर तुम मेरी जगह होते तो क्या करते?"

"मैं समझा नहीं।"

"मेरे साथ जो हो रहा है, मुझे जो भी सुनाया जा रहा है—नहीं जानता कि वह सच है या झूठ—कैसे मान लूं रूपेश कि सच्चाई वही है, जो ये लोग कह रहे हैं—क्या मैं वही हूं जो ये बता रहे हैं या मुझे ऐसा परिचय दिया जा रहा है, जिसका मुझसे दूर-दूर तक भी सम्बन्ध नहीं है।"

"इन बातों का अर्थ तो यह निकलता है कि आपको अपने सिकन्दर होने पर शक है, आप समझते हैं कि आपको एक गलत नाम और परिचय दिया जा रहा है?"

"क्यों नहीं हो सकता?"

"आपको ऐसा क्यों लग रहा है?"

"कुछ सवाल बिल्कुल अनुत्तरित होते हैं।"

"जैसे?"

"यदि मैं सिकन्दर हूं और वहां से कैडलॉक लेकर ऑफिस के लिए निकला था तो मैं फियेट में कैसे मिला? मेरी कैडलॉक कहां गई, और यदि मैं इतना धनवान हूं तो किसी अमीचन्द की गैराज का ताला तोड़कर मुझे फियेट चुराने की क्या जरूरत थी?"

"और?"

"वह नेकलेस मैंने किसके लिए खरीदा था—यदि मैं सिकन्दर हूं तो मेरे दायरे के वे लोग कहां हैं, जो सिकन्दर जैसे व्यक्ति के होने ही चाहिए?"

"आप तो निगेटिव ढंग से सोच रहे हैं—पॉजिटिव ढंग से क्यों नहीं सोचते?"

"पॉजिटिव से तुम्हारा मतलब यही है न कि मैं खुद को सिकन्दर मानकर सोचूं?"

' "मेरे ख्याल से चारों तरफ इस पक्ष में सबूत कुछ ज्यादा ही बिखरे हुए हैं।"

"तुम्हारा इशारा किस किस्म के सबूतों की तरफ है?"

"जैसे वह एलबम, इस कमरे की हर अलमारी में आपके कपड़े, जूते—हर नौकर आपको सिकन्दर बाबू कहकर पुकारता है—जोकि सामान्य अवस्था में लाने के लिए सेठजी सचमुच उस पिता की तरह ही प्रयत्नशील हैं, जैसे एक प्यार करने वाला पिता होता है।"

"यदि मैं सिकन्दर नहीं हूं और मुझे सिकन्दर बनाने की कोशिश की जा रही है तो निश्चय ही इसके पीछे कोई बड़ा मकसद होगा, अपने मकसद को पूरा करने के लिए इन्होंने वे सारे सबूत बिछाए होंगे जिनका तुम जिक्र कर रहे हो, उदाहरण के लिए, एलबम। किसी अन्य के फोटो पर मेरा चेहरा चिपकाकर यानि ट्रिक फोटोग्राफी से तैयार हो सकती है।"

"हो तो सकती है, मगर घूम-फिरकर बात वहीं आ जाती है—हमारे सामने प्रश्न यह खड़ा हो जाता है कि भला आपको सिकन्दर सिद्ध करने से लाभ क्या है?"

"यही तो पता लगाना है।"

"कैसे?"

"उस तरकीब को निकालने के लिए ही तो तुमसे विचार-विमर्श कर रहा हूं।" युवक ने कहा—"हॉस्पिटल से निकालकर मुझे यहां ले आया गया है—लारेंस रोड पर स्थित इस विशाल बंगले में—जहां पचासों कमरे हैं, हॉल हैं, किसी मैदान जैसा लॉन है और कहा जा रहा है यह सब कुछ मेरा है—यह कोई सुनहरा जाल हो सकता है?"

"अब आखिर आप चाहते क्या हैं?"

"अब तक मैंने उस हर बात को स्वीकार किया है, जो डॉक्टर भारद्वाज, इंस्पेक्टर दीवान और सेठ न्यादर अली आदि कहते रहे हैं, मगर अब अपने बारे में थोड़ी-सी खोजबीन मैं खुद करना चाहता हूं।"

"मैं कुछ समझा नहीं?"

"एक अच्छा इन्वेस्टिगेटर वह होता है, जो छोटे-छोटे प्वॉइंट्स के आधार पर आगे बढ़कर किसी गुत्थीदार केस को सुलझाता है-स्वयं मैं ही अपने लिए एक रहस्य बन गया हूं—मेरा लक्ष्य है, यह पता लगाना कि मैं सिकन्दर हूं या नहीं—अगर हूं तो अनुत्तरित सवालों का जवाब खोजना है—य...यदि नहीं हूं तो पता लगाना है कि कौन हूं—और ये लोग मुझे सिकन्दर क्यों सिद्ध करना चाहते हैं? क्या तुम मुझे कोई ऐसा प्वॉइंट बता सकते हो रूपेश, जिसे पकड़कर मैं आगे बढ़ सकूं?"

"आपके जो कपड़े यहां हैं, उन पर टेलर की चिट जरूर लगी होगी, यदि उस टेलर

से पूछताछ की जाए तो?"

"उसे तो इन्होंने उसी तरह पढ़ा रखा होगा, जिस तरह इस घर के हर नौकर को पढ़ा रखा है।"

"वाह!" रूपेश एकदम चुटकी बजा उठा—"दिमाग में बड़ा अच्छा आइडिया आया है, हमें इस कमरे से पता लग सकता है कि आप सिकन्दर हैं कि नहीं।"

"कैसे?" युवक ने अधीरतापूर्वक पूछा।

"वे कपड़े कहां हैं, जो होश में आने पर आपने अपने जिस्म पर देखे थे?"

"उस सेफ में।"

"टेलर की चिट उन पर भी लगी होगी, अगर आप सिकन्दर हैं तो उन पर भी उसी टेलर की चिट होगी, जिसकी इस कमरे में मौजूद आपके ढेर सारे कपड़ों पर है—और अगर टेलर अलग है तो निश्चय ही आप सिकन्दर नहीं हैं।"

"वैरी गुड।" कहने के साथ ही युवक बिस्तर से उछल पड़ा, रूपेश द्वारा बताया गया प्वॉइंट उसे जंचा था। जल्दी से सेफ खोलते हुए उसने कहा—"तुम इस कमरे में मौजूद मेरे ढेर सारे कपड़ों पर लगी चिट देखो, रूपेश। मैं उन कपड़ों पर लगी चिट देखता हूं, जो होश में आने पर मेरे जिस्म पर थे।"

रूपेश ने उसकी आज्ञा का पालन किया।

कपड़े क्योंकि बहुत ज्यादा थे, इसीलिए उसे सभी को संभालने में तीस मिनट लग गए, जबकि गठरी-से बंधे वे कपड़े लेकर युवक पलंग पर आ बैठा था, जो सबसे पहले उसने अपने जिस्म पर देखे थे। रूपेश बोला—"सब एक ही टेलर द्वारा तैयार किए गए कपड़े हैं, कनाट प्लेस पर कोई टेलर है।"

युवक की आंखें अजीब-से अन्दाज में चमकने लगीं। अपने साथ में दबी गठरी की तरफ इशारा करके वह बोला—"ये कपड़े गाजियाबाद के किसी "बॉनटेक्स' नामक टेलर ने तैयार किए हैं।"

¶¶

सुबह के सात बजे थे।

सेठ न्यादर अली नाइट गाउन की डोरी बांधते हुए अपने कमरे से बाहर निकले। उनके दांतों में एक मोटा सिगार दबा हुआ था—पैरों में पड़े स्लीपर्स को घसीटते-से वे उस कमरे की तरफ बढ़े जिसमें सिकन्दर था।

नजदीक पहुंचकर बड़े आराम से उन्होंने बन्द दरवाजे पर दबाव डाला, किन्तु

दरवाजा खुला नहीं—उन्होंने चौंककर दरवाजे को देखा, उनके ख्याल से दरवाजे को केवल उढ़का हुआ होना चाहिए था, अन्दर से बन्द नहीं—उन्होंने इस बार जोर से धकेला—पाया कि दरवाजा अन्दर से बन्द था।

उन्होंने दरवाजे पर दस्तक दी, साथ ही पुकारा—"सिकन्दर बेटे।"

अन्दर कोई प्रतिक्रिया नहीं थी—जब वे दरवाजे को लगभग पीटने लगे और साथ ही चिल्ला-चिल्लाकर सिकन्दर को पुकारने लगे तो वहां उनके ढेर सारे नौकर इकट्ठे हो गए।

अचानक ही सेठ न्यादर अली बहुत विचलित और उत्तेजित नजर आने लगे, चीखकर अपने नौकरों को आदेश दिया—"दरवाजे को तोड़ दो।"

हड़बड़ाये-से नौकर उनके आदेश का पालन करने में जुट गए, जबकि स्वयं सेठ न्यादर अली उसके बराबर वाले कमरे को पीटते हुए चिल्लाए—"रूपेश—मिस्टर रूपेश।"

अजीब हड़कम्प-सा मच गया था वहां।

कुछ ही देर बाद हड़बड़ाए-से रूपेश ने अन्दर से दरवाजा खोला। चीखते हुए न्यादर अली ने सवाल ठोक दिया—"सिकन्दर कहां है?"

"अ.....अपने कमरे में ही होंगे, सेठ जी।" बौखलाए हुए रूपेश ने कहा।

तभी 'भड़ाक' की एक जोरदार आवाज गूंजी.....'सिकन्दर' वाले कमरे का दरवाजा टूट चुका था—न्यादर अली और उनके पीछे भागता हुआ रूपेश भी कमरे में दाखिल हुआ।

कमरा बिल्कुल खाली था।

लॉन की तरफ खुलने वाली खिड़की खुली पड़ी थी। सेठ न्यादर अली उस तरफ लपके—वह कमरा दूसरी मंजिल पर था और खिड़की से लॉन तक कपड़ों से बनाई गई रस्सी लटक रही थी। दांत भींचकर न्यादर अली गुर्रा उठे—"उफ्फ—वह भाग गया है।"

दूसरे नौकरों की तरह रूपेश भी अवाक्-सा खड़ा था।

सेठ न्यादर अली बिजली की-सी फुर्ती से घूमे, रूपेश पर बरस पड़े—"कहां गया वह?"

"म.....मुझे नहीं पता सेठ, जी।"

"तुम्हें क्या झक मारने के लिए रखा था हमने?"

"म...मैँ सुबह चार बजे इस कमरे से गया था सेठ जी—तब वे सो रहे थे—मैंने सोचा

कि थोड़ी देर अपनी कमर मैं भी सीधी कर लूं।"

"उफ्फ—तुम भी हमारे दूसरे नौकरों की तरह बेवकूफ ही निकले—मेरे बेटे की याददाश्त गुम है, पता नहीं उसके दिमाग में क्या है—जाने कहां-कहां भटकता फिरेगा बाहर? पुलिस का नम्बर डायल करो बेवकूफ, जल्दी।"

दो मिनट बाद ही वे पुलिस को अपना बेटा गुम होने की रपट लिखवा रहे थे। काश—वे रूपेश के होंठों पर थिरक रही रहस्यमय मुस्कान को देख सकते।

¶¶

उस वक्त करीब ग्यारह बज रहे थे, जब युवक गाजियाबाद में घण्टाघर के आसपास घूम रहा था—वह बहुत ध्यान से हरेक दुकान के मस्तक पर लगे बोर्ड को पढ़ रहा था। 'बॉनटेक्स' टेलर की दुकान खोजने में उसे कोई विशेष परेशानी नहीं हुई।

मगर दुकान की तरफ बढ़ते समय अचानक ही उसका दिल धड़क उठा। शायद यह सोचकर कि अब अगले ही पल पता लग जाएगा कि मैं कौन हूं?

धड़कते दिल से वह तेजी के साथ दुकान की तरफ बढ़ गया—दुकान का मुख्य दरवाजा पारदर्शी शीशे का था और सजावट की दृष्टि से फर्नीचर भी अच्छा इस्तेमाल किया गया था—युवक ने हैंडिल पकड़कर दरवाजा खोला।

उसने अन्दर कदम रखा ही था कि एक स्वर उसके कानों से पड़ा—"अरे, जॉनी साहब, आप? आइए, बहुत दिन बाद दर्शन दिए?"

युवक के मस्तिष्क को एक तीव्र झटका लगा।

यहां तेजी से उसके दिमाग में यह विचार कौंधा कि क्या उस व्यक्ति ने 'जॉनी' कहकर मुझे ही पुकारा है? क्या मेरा नाम जॉनी है?

अपने सवाल का जवाब पाने के लिए उसने पुकारने वाले की तरफ देखा—नि:सन्देह उपरोक्त वाक्य उसने उसी से कहा था। तेजी के साथ काउंटर के पीछे से निकलकर उसने एक स्टूल साफ करते हुए कहा—"इस पर बैठिए जॉनी साहब।"

अब युवक को कोई शक नहीं रहा कि वह जॉनी कहकर उसे पुकार रहा है—अजीब असमंजस में पड़ा युवक धड़कते दिल से आगे बढ़ा। पूरी खामोशी के साथ वह स्टूल पर बैठ गया। टेलर ने कहा— "क्या इस नाचीज की दुकान का रास्ता बिल्कुल ही भूल गए थे, जॉनी साहब—आज आप पूरे दो महीने में आए हैं।"

टेलर का बार-बार जॉनी साहब कहना, जाने क्यों दिमाग में किसी शूल के समान चुभने लगा, मगर उसने कोई विरोध प्रकट नहीं किया—दुकान के अन्दर पांच-छ: कारीगर अपने काम में व्यस्त थे। युवक को लगा कि जो बातें उसे करनी हैं, वे इन

कारीगरों के सामने करना बहुत विचित्र लगेगा। अभी यह इस समस्या से छुटकारा पाने की कोई तरकीब सोच ही रहा था कि टेलर ने उनमें ते एक को दौड़कर 'कैम्पा' लाने के लिए कहा।

युवक के बार-बार इन्कार करने पर भी वह नहीं माना और अंत में लड़का 'केम्पा' लेने चला गया। तब युवक ने टेलर से कहा—"मैं तुमसे बिल्कुल अकेले में कुछ बातें करना चाहता हूं।"

"आइए, अन्दर वाले केबिन में चलते हैं।" टेलर ने कहा—और फिर कुछ ही देर बाद वे उस छोटे-से केबिन में आमने-सामने स्टूलों पर बैठे थे, जो लेडीज के लिए बनाया गया था—लड़का कैम्पा देकर जा चुका था।

"और सुनाइए जॉनी साहब।" टेलर ने पूरी आत्मीयता के साथ पूछा—"भाभीजी ठीक हैं?"

युवक के दिमाग को बड़ा ही जबरदस्त झटका लगा।

उसके दिमाग में बड़ी तेजी से विचार कौंधा—"क्या मैं शादीशुदा हूं?"

इतने पर भी उसने बहुत धैर्य से काम लिया, फिर उसने पहला सवाल किया—"क्या तुम ही इस दुकान के मालिक हो?"

चौंक पड़ा टेलर, बोला—"कैसी बात कर रहे हैं साहब, आप ही की दुकान है।"

"क्या नाम है तुम्हारा?"

इस बार उछल ही पड़ा वह। पूरी तरह से चौंककर युवक की तरफ देखने लगा, बोला—"कैसी बात कर रहे हैं साहब, कहीं आप मुझसे मजाक तो नहीं कर रहे हैं?"

"नहीं।" युवक ने पूरी गम्भीरता के साथ कहा—"मैं सचमुच तुम्हारा नाम भूल गया हूं और अब उसे जानना चाहता हूं—प्लीज, अपना नाम बताओ।"

"राजाराम है, साहब।" आश्चर्य के सागर में डूबे टेलर ने कहा।

"क्या तुम मुझे जानते हो?"

"म...मैं भला आपको क्यों नहीं जानूंगा?"

"कौन हूं मैं?"

"प...पता नहीं आज आप कैसी बातें कर रहे हैं, साहब?" एकाएक ही राजाराम उसे इस तरह देखने लगा था, जैसे उसके सिर पर सींग निकल आए हों—"आपके सारे ही सवाल बड़े अजीब हैं! भला ये भी कोई बात हुई कि आप कौन हैं! जॉनी साहब हैं आप।"

युवक को लगा कि यदि राजाराम वाकई उसका कोई परिचित है तो निश्चय ही अब तक किए गए उसके हर प्रश्न से न केवल उसे हैरत हुई होगी, बल्कि मानसिक कष्ट भी हुआ होगा और आगे भी वह जो कुछ पूछेगा, वह सब भी ऐसा ही कुछ होगा—हैरत के कारण राजाराम का बुरा हाल हो जाएगा, अत: वह बोला—"देखो राजाराम...।"

"आपको क्या हो गया है, जॉनी साहब?" उसकी बात बीच में ही काटकर परेशान राजाराम कह उठा—"आप मुझे हमेशा 'राजा' कहते हैं, आखिर बात क्या है?"

"बात यह है राजा कि मैं अपनी याददाश्त गंवा बैठा हूं।"

"क...क्या?" राजाराम के कण्ठ से चीख निकल गई। हैरतवश मुंह खुला रह गया था उसका। आंखें तो फट पड़ी थीं, जैसे सामने उसके किसी प्रिय की लाश पड़ी हो।

"मैं कौन हूं—क्या हूं मुझे कुछ याद नहीं है—तुम्हारी या किसी अन्य की बात ही छोड़ो, मुझे अपना नाम तक मालूम नहीं है—पहली बार तुम ही ने मुझे जॉनी कहकर पुकारा है, इसीलिए सोचता हूं कि शायद मेरा नाम जॉनी ही है।"

हैरत के कारण ही राजाराम का बुरा हाल था—उसे लग रहा था कि जो कुछ यह देख-सुन रहा है, वह सब ख्वाब की बात है—हकीकत नहीं हो सकती। बड़ी मुश्किल से खुद को नियंत्रित करके उसने पूछा—"आपको कुछ भी याद नहीं है?"

"नहीं राजा, मेरा एक्सीडेण्ट हुआ था, जिसके परिणामस्वरूप मैं अपनी याददाश्त गंवा बैठा। अपने बारे में मालूम करने अस्पताल से सीधा यहां आया हूं।"

"जब आपको कुछ भी याद नहीं है तो मेरी दुकान...।"

"अपने कपड़ों पर लगी तुम्हारी दुकान की चिट पढ़कर यहां आया हूं—यह सोचकर कि शायद तुम मुझे जानते हो?"

"मैं आपको अच्छी तरह जानता हूं, साहब—आप जॉनी साहब हैं, मगर आपका एक्सीडेण्ट कब और कैसे हो गया—मुझे तो आपकी बातें बड़ी अजीब लग रही हैं।"

"उन्हें छोड़ो राजा। यह बताओ कि मेरे नाम से ज्यादा तुम मेरे बारे में क्या जानते हो?"

"मैं समझ नहीं पा रहा हूं साहब कि क्या बताऊं? क्या आपको भाभीजी के बारे में भी कुछ याद नहीं है?"

"क्या मैं शादीशुदा हूं?"

चकित दृष्टि से उसे देखते हुए टेलर ने कहा—"जी हां, भाभी जी का नाम रूबी है।"

"क्या मेरे बच्चे भी हैं?"

"जी नहीं, आपकी शादी को छः महीने ही तो हुए हैं।"

"कहां रहता हूं मैं—क्या तुम्हें मेरा घर भी मालूम है?"

"क्यों नहीं साहब, भाभीजी का नाप लेने कई बार जा चुका हूं—आप भगवतपुरे में रहते हैं, अच्छा-खासा मकान है आपका।"

"क्या तुम मुझे वहां ले चल सकते हो?"

"क्यों नहीं, जॉनी साहब! अब मैं आपको अकेला नहीं छोड़ूंगा—वह तो अच्छा हुआ कि मेरी चिट देखकर आप यहां चले आए, वरना इस अवस्था में तो जाने आप कहां-कहां भटकते रहते, आपको तो सचमुच ही कुछ याद नहीं है।"

¶¶

'भगवतपुरा' में स्थित वह मकान न बहुत ज्यादा बड़ा था, न छोटा—जिसके बन्द दरवाजे पर राजाराम ठिठका, चौखट के ऊपरी भाग पर दाईं तरफ साइड में कॉलबेल का बटन लगा था और राजाराम ने उसी बटन पर उंगली रख दी।

तभी एक आवाज ने उसकी विचार शृंखला भंग की। बहुत निकट से उभरने वाली इस आवाज ने कहा—"हैलो जॉनी...बहुत दिन बाद नजर आए—कहां थे?"

बौखलाकर युवक ने उसकी तरफ देखा।

वह उसी की आयु का एक युवक था। हाथ मिलाने के लिए उसने अपना हाथ आगे बढ़ा रखा था। हड़बड़ाकर जल्दी से हाथ मिलाते हुए उसने कहा—"जरा बाहर गया था.....।"

"अब तो आ गए हो?" उसने आंख मारकर पूछा।

"हां।" युवक का बुरा हाल था।

बड़ी कातर दृष्टि से देखते हुए उसने पूछा—"फिर कब जम रहे हो?"

युवक का दिल चाहा कि उससे इस बात का मतलब पूछ ले मगर फिर यह सोचकर रुक गया कि मतलब पूछना बड़ा अटपटा लगेगा। इसकी बातों से लग रहा है कि यह मेरा कोई घनिष्ट है, अतः उसने यूं ही कह दिया—"अभी तो आया हूं यार, जम जाएंगे।"

"आज शाम को हो जाए?"

"हां।" युवक ने बिना सोचे-समझे कह दिया।

"ओ०के०।" कहने के साथ ही उसने अपनी उंगली से युवक की हथेली खुजलाई और आगे बढ़ गया। युवक कुछ देर तक तो दूर जाते उस व्यक्ति को देखता रहा, फिर उसने राजाराम से पूछा—"यह कौन था, राजा?"

"मैं नहीं जानता साहब, आपका कोई दोस्त होगा।"

"मालूम पड़ता है कि यह मेरा कोई बहुत घनिष्ट दोस्त है, पता नहीं किस चीज के लिए 'जमने' को कह रहा था?"

और ऐसा पहली बार नहीं हुआ था।

घण्टाघर से यहां तक वह राजाराम के साथ रिक्शा में आया था—रास्ते में बहुत-से लोगों ने उससे नमस्कार की थी—हालांकि उसके लिए हर चेहरा अजनबी था, मगर फिर भी वह सबकी नमस्कार कबूल करता गया था—भगवतपुरे में दाखिल होने के बाद नमस्कारों का दौर कुछ ज्यादा ही बढ़ गया था।

कई ने उसे दूर से हाथ हिलाकर कहा था—"हैलो जॉनी, हाऊ आर यू?"

उलझे हुए युवक ने उन सभी को जवाब दिया था।

"शायद सो रहीं हैं, भाभीजी।" बड़बड़ाते हुए राजाराम ने पुनः कॉलबेल दबा दी—युवक पुनः चौंककर दरवाजे की तरफ देखने लगा, एकाएक ही यह सोचकर उसका दिल असामान्य गति से धड़कने लगा कि अब—अगले किसी भी क्षण दरवाजा खुलेगा।

एक स्त्री उसके सामने होगी।

यह उसे अपना पति कहेगी।

मगर क्या मैं सचमुच उसका पति हूं...क्या मैं जॉनी हूं?

क्या में न्यादर अली का लड़का सिकन्दर नहीं हूं—यदि यह बात है तो फिर मुझे सिकन्दर साबित करके वह अपने किसी उद्देश्य की पूर्ति करना चाहता था...और यदि मैं सिकन्दर हूं तो फिर यहां लोग मुझे 'जॉनी' क्यों कह रहे हैं?

अगर यह षडयन्त्र है तो क्या?

दरवाजे के दूसरी तरफ से किसी के चलने की आवाज ने युवक की विचार शृंखला भंग की, वह सतर्क हो गया, जिस्म में जाने क्यों स्वयं ही तनाव उत्पन्न हो गया, मगर 'धक्-धक्' करता हुआ दिल अब किसी हथौड़े की तरह पसलियों पर चोट कर रहा था।

दूसरी तरफ से सांकल खुलने की आवाज उभरी। युवक के मस्तक पर पसीना उभर आया।

दरवाजा खुला—'धक्' की एक जोरदार आवाज के बाद मानो दिल ने धड़कना बंद कर दिया।

एक नारी की आवाज—"अरे राजा भईया, तुम आए हो?"

"हां भाभी, और देखो, किसे लाया हूं।" कहने के साथ ही राजाराम ने युवक की बांह पकड़कर उसे दरवाजे के सामने कर दिया। उस पर नजर पड़ते ही युवती के मुंह से चीख-सी निकल पड़ी—"अ...आप?"

युवक कुछ बोल नहीं सका। उसके चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं—और वह युवती जिसका नाम रूबी था, अवाक-सी उसे देख रही थी। उसके चेहरे पर वेदना थी—आंखें सूजी हुई थीं उसकी—जैसे पिछले हफ्ते से लगातार रोई हो।

वह सुन्दर थी—थोड़ा सांवला रंग, तीखे और आकर्षक नाक-नक्श वाली रूबी के उलझे हुए बालों के बीच सिन्दूर की रेखा नजर आ रही थी—छोटी-सी नथ पहने थी वह और इस नथ ने उसके सौन्दर्य को कुछ ज्यादा ही निखार दिया था।

"अ.....आ गए आप?" उसने फंसी-सी आवाज में कहा था।

युवक किंकर्तव्यविमूढ़-सा खड़ा रहा।

अचानक ही उस वक्त वह बुरी तरह बौखला गया, जब रूबी ने बिजली की-सी तेजी से झुककर उसके चरण स्पर्श किए और फिर उसी तेजी के साथ फूट-फूटकर रोती हुई अन्दर की तरफ भाग गई—राजाराम ने युवक की तरफ देखा, युवक के चेहरे पर हैरत का सैलाब-सा उमड़ा पड़ा था। हक्का-बक्का-सा उसने राजाराम से पूछा—"ये क्या बात हुई?"

"भाभी शायद आपसे नाराज हैं।"

"म...मगर क्यों?"

"यह भला मैं कैसे जान सकता हूं, साहब, मगर आपके एक दोस्त ने कुछ ही देर पहले जो कुछ कहा था, उससे लगता है कि आप यहां बहुत दिन बाद आए हैं, भाभी शायद इतने दिन यहां से आपके दूर रहने की वजह से नाराज हैं।"

युवक कुछ बोला नहीं, उसे भी यही बात महसूस हो रही थी।

राजाराम ने कहा—"जाइए।"

"तुम नहीं चलोगे?" चौंकते हुए युवक ने पूछा।

"मैं आप पति-पत्नी के बीच क्या करूँगा?"

"न...नहीं, राजा।" घबराकर युवक ने एकदम से उसकी बांह पकड़ ली और बोला —"तुम भी मेरे साथ अन्दर चलो, उसे मेरे साथ हुई दुर्घटना के बारे में बताना।"

"ओह, अच्छा चलिए।" हालात की आवश्यकता को समझते हुए राजाराम ने कहा, और फिर वे दोनों एक साथ ही अन्दर दाखिल हो गए। एक छोटी-सी गैलरी को पार करके वे आंगन में पहुंचे—आंगन के ऊपर लोहे का मजबूत जाल पड़ा हुआ था।

एक तरफ बाथरूम और टायलेट था—दूसरी तरफ किचन।

एक कमरे के अन्दर से रूबी के हिचकियां ले-लेकर रोने की आवाज आ रही थी— युवक के दिल की हालत बड़ी अजीब हो गई—अपने हाथ-पैर सुन्न-से पड़ते महसूस हो रहे थे उसे। उसकी बांह पकड़े राजाराम कमरे में दाखिल हो गया।

डबलबेड पर उल्टी पड़ी रूबी रो रही थी।

युवक की दृष्टि डबलबेड की साइड ड्राज के ऊपर रखे पोस्टकार्ड साइज के एक फोटो पर चिपककर रह गई। खूबसूरत फ्रेम में जड़े उस फोटो में रूबी के साथ वह खुद भी था।

रूबी पूरे शृंगार में थी।

युवक का दिमाग जाम-सा हो गया।

वह समझ नहीं सका कि अपने आपको सिकन्दर माने या जॉनी—सच्चाई वह है जो यहां नजर आ रही है अथवा वह जो न्यादर अली के बंगले में थी?

"भाभीजी.....भाभाजी।" राजाराम रह-रहकर रूबी को पुकार रहा था—"सुनिए तो सही...प्लीज, आपको एक बहुत जरूरी बात बतानी है।"

अचानक ही वह बिजली की तरह चमककर उठी। आंसुओं से सारा चेहरा तर था— बोली—"इनसे पूछो राजा भईया, मुझ अभागिन की याद कैसे आ गई इन्हें?"

"ओफ्फो भाभी, तुम समझ नहीं रही हो।"

"मैं सब समझती हूं—ये मुझसे शादी करके पछता रहे हैं, तभी तो इस तरह मुझे बिना बताए गुम हो गए, आज दो महीने बाद ही मेरी याद क्यों आई है?"

"मैं...मैं कहां गुम हो गया था?" बौखलाए-से युवक ने पूछा।

"मैं क्या जानूं? अब मालूम पड़ा कि आप मुझे कितना प्यार करते हैं?"

युवक एकदम राजाराम की तरफ घूमकर बोला—"प्लीज राजा, इसे किसी दूसरे कमरे में ले जाओ और बताओ कि मैं किस अवस्था में हूं?"

रूबी रोती रही।

"यह लड़ने का वक्त नहीं है भाभी। जॉनी साहब के साथ एक बड़ी दुर्घटना घट गई है।" राजाराम ने रूबी की कलाई पकड़कर उसे एक अन्य कमरे में ले जाते हुए कहा —"मेरी बात सुन लीजिए, उसके बाद यदि आप चाहें तो इनसे जी भरकर लड़ लेना।"

वे अन्दर वाले कमरे में चले गए।

युवक ने झपटकर खूबसूरत फ्रेम में जड़ा फोटो उठाया और उसे ध्यान से देखने लगा।

¶¶

काफी कोशिश के बावजूद भी वह फोटो में ऐसी कोई कमी तलाश नहीं कर पाया था, जिससे इस नतीजे पर पहुंचता कि फोटो ट्रिक फोटोग्राफी से तैयार किया गया है— उसे वापस दराज में रखते हुए उसने एक नजर उस कमरे पर डाली, जिसके अन्दर रूबी और राजाराम गए थे—फिर उसने जल्दी से ड्राज खोली।

ड्राज में अन्य घरेलू सामान के अतिरिक्त एक बैंक की पासबुक पड़ी थी। युवक ने फुर्ती से पढ़ा—वह मेरठ रोड पर स्थित पंजाब नेशनल बैंक की पासबुक थी और एकाउंट नम्बर था—सत्तावन सौ नौ। पढ़ने के बाद फुर्ती से उसने पासबुक ड्राज में रख दी—एक नजर पुन: उस कमरे की तरफ डालने के बाद कमरे के एक कोने में खड़ी सेफ की तरफ बढ़ा। सेफ की चाबी उसमें लगी हुई थी—युवक ने जल्दी से लॉक खोला।

फिर उसने देखा कि सेफ में जितने भी कपड़े थे, सब पर 'बॉनटेक्स' की चिटें थीं— अभी वह सेफ को ही खंगाल रहा था कि रूबी और राजाराम उस कमरे में दाखिल हुए— युवक हड़बड़ाकर सेफ के नजदीक से हटा और उनकी तरफ देखने लगा।

चुपचाप, अवाक्-सी खड़ी रूबी उसे विचित्र दृष्टि से देख रही थी—उसके मुखड़े पर उलझन, आश्चर्य, अविश्वास और वेदना के संयुक्त भाव थे—वह एकटक युवक को देखे जा रही थी। युवक की दृष्टि भी सिर्फ उसी पर स्थिर हो गई।

"मैं चलता हूं, साहब।" एकाएक राजाराम ने कहा।

युवक की तन्द्रा भंग हुई, उसने जल्दी से कहा—"स.....सुनो राजा...तुम किसी से भी मेरे और मेरी अवस्था के बारे में जिक्र मत करना—शाम तक दुकान पर रूपेश नाम का एक युवक आएगा, उसे यहां भेज देना।"

"र...रूपेश कौन है, साहब?"

"वह मेरा एक नया दोस्त है, दुकान पर आकर वह तुमसे केवल एक ही वाक्य कहेगा, यह कि मेरा नाम रूपेश है।"

"ठीक है, साहब।" कहकर राजाराम कमरे से बाहर निकल गया। रूबी भी उसके पीछे ही चली गई थी—युवक अवाक्-सा वहीं खड़ा रहा—कुछ देर बाद उसने मकान के मुख्य द्वार की सांकल अन्दर से बन्द होने की आवाज सुनी।

वह समझ सकता था कि राजाराम जा चुका है। दरवाजा बन्द करके रूबी अब यहीं आने वाली है। युवक रूबी का सामना करने और उससे बात करने के लिए खुद को तैयार करने लगा। अब यह विचार उसके दिमाग में हथौड़े की तरह चोट कर रहा था कि इस मकान में रूबी के साथ वह अकेला है।

क्या रूबी सचमुच मेरी पत्नी है?

वह निश्चय ही मेरे साथ वही व्यवहार करेगी, जो एक पत्नी पति के साथ करती है, लेकिन यदि मैं जॉनी न हुआ—यदि वह वास्तव में मेरी पत्नी न हुई तो?

यही सब सोचते-सोचते उसके मस्तक पर पसीना उभर आया और फिर अचानक ही उसके दिमाग में यह ख्याल जा टकराया कि यहां वह अकेली नारी के साथ है।

कहीं वे ही ख्याल दिमाग में न उभर आएं जो हॉस्पिटल के उस कमरे में अकेली नर्स को देखकर उभरे थे—यदि वैसा ही सब कुछ यहां हो गया तो यहां इस बन्द स्थान के अन्दर रूबी को कोई बचाने वाला भी नसीब नहीं होगा।

तो क्या मैं उसे मार डालूंगा?

इन ख्यालों में डूबे युवक के हाथ-पांव सर्द पड़ गए—जिस्म के सभी मसामों ने बर्फ के समान ठण्डा पसीना उगल दिया—अजीब-सी अवस्था में अभी वहीं खड़ा था कि...।

रूबी कमरे के अन्दर दाखिल हुई।

दरवाजे ही पर ठिठक गई वह—मुखड़े पर वही संयुक्त भाव थे—नजरें एक-दूसरे से चिपककर रह गईं—यह सोचकर युवक बुरी तरह घबरा रहा था कि दिलो-दिमाग में कहीं वे ही विचार न उठने लगें। एकाएक उसकी तरफ बढ़ती हुई रूबी ने बड़े प्यार से पूछा —"क्या राजा भाइया ठीक कह रहे थे, जॉनी, तुम्हें कुछ भी याद नहीं है?"

"न...नहीं।" युवक को अपनी ही आवाज फंसी-सी महसूस हुई।

रूबी उसके बहुत नजदीक आकर बोली—"क्या तुम्हें मैं भी याद नहीं हूं?"

इस बार युवक के कण्ठ से आवाज नहीं निकली, इन्कार में गर्दन हिलाकर रह गया वह।

"म....मुझे माफ कर दो, जॉनी।" बड़े प्यार से युवक के सीने पर हाथ रखती हुई रूबी ने कहा—"मुझे कुछ नहीं पता था, आते ही तुमसे लड़ने लगी, मगर क्या करती—मैं

बहुत परेशान थी जॉनी, तुम उस जरा-से झगड़े की वजह से मुझे अचानक ही छोड़ गए।"

"झ.....झगड़ा?"

"हां।"

"कैसा झगड़ा?"

"ओह, तुम्हें तो वह भी याद नहीं है, मगर तुम घबराना नहीं, जॉनी—फिक्र मत करना, मुझे चाहे जो करना पड़े—तुम्हारी याददाश्त वापस लाकर रहूंगी—अब इस दुनिया में ऐसी कोई बीमारी नहीं रही, जिसका इलाज न हो।"

"म.....मगर?"

"आओ, तुम आराम करो।" कहने के साथ ही उसने युवक को बेड की तरफ खींचा —युवक हिचकिचाया, रूबी ने उसकी एक न सुनी और फिर जिद भी उसने कुछ इतने प्यार से, अपनत्व के साथ की थी कि वह इन्कार न कर सका।

एक बहुत प्यार करने वाली पत्नी के समान ही उसने युवक को लिटाया, तकिए लगाए—उसकी अंगुलियों को सहलाती हुई बोली—"कैसे और कहां हो गया तुम्हारा एक्सीडेण्ट?"

"सच्चाई तो यह है कि मैं विश्वासपूर्वक कुछ भी नहीं कह सकता, केवल वही जानता हूं और वही बात बता सकता हूं, जो औरों ने मुझे बताया है।"

"वही बताइए।"

"डॉक्टर और एक पुलिस इंस्पेक्टर ने मेरे होश में आने पर बताया कि मैं फियेट चला रहा था और एक ट्रक से, रोहतक रोड पर मेरी फियेट टकरा गई।"

"फ...फियेट आपके पास कहां से आ गई?"

"पता लगा कि यह प्रीत विहार में रहने वाले किसी अमीचन्द जैन की थी।"

"ओह, इसका मतलब ये कि आपने फिर चोरी की?"

"च...चोरी?" युवक उछल पड़ा—"त...तुम्हें कैसे मालूम कि मैंने चोरी की थी?"

"साफ जाहिर है, कार किसी अमीचन्द की थी—आप उसे चला रहे थे।"

"म...मगर तुमने एकदम से ही यह अनुमान कैसे लगा लिया कि यह कार मैंने चुराई ही होगी, सम्भव है कि अमीचन्द मेरा दोस्त रहा हो—किसी काम के लिए मैंने कार उससे मांगी हो?"

"मैं जानती हूं कि प्रीत विहार में आपका कोई दोस्त नहीं है...और फिर क्या मैं आपकी चोरी की आदत से परिचित नहीं हूं? एक इसी काम में तो आप एक्सपर्ट हैं।"

"क.....क्या मतलब?" युवक की खोपड़ी घूम गई—"क्या मैं चोर हूं?"

"हो नहीं, थे—मगर मुझसे वादा करने के बाद भी चोरी करके आपने अच्छा नहीं किया।"

"म.....मैं कुछ समझ नहीं पा रहा हूं? जाने क्या कह रही हो तुम? क्या ऐसा नहीं हो सकता कि मेरे बारे में तुम मुझे सब कुछ विस्तार से बताओ, हो सकता है रूबी कि उसे सुनते-सुनते मेरी सोई हुई याददाश्त वापस लौट आए?"

"मैं वही कोशिश कर रही हूं।"

"तो बताओ, मैं कौन हूं—क्या हूं?"

"मूल रूप से आप बस्ती जिले के रहने वाले हैं, आपके पिता का नाम जॉनसन है—और वहां आपके पिता की कपड़े की एक फैक्ट्री है, मगर आप बचपन से ही अपने घर से भाग आए थे, उस वक्त आपकी उम्र सिर्फ दस साल थी।"

हैरत में डूबे युवक ने पूछा—"मैँ क्यों भाग आया था?"

"आप बहुत खुद्दार किस्म के और विद्रोही प्रवृत्ति के थे—बचपन में आपका अपने ही छोटे भाई-बहनों से झगड़ा हो गया था—गलती आपकी नहीं थी, जबकि आपके पिता के सामने सारा झगड़ा कुछ इस तरह पेश हुआ था कि उन्होंने आप ही की पिटाई की थी और गुस्से में उसी रात आपने अपना घर छोड़ दिया था और आज तक पलटकर वहां नहीं गए हैं, क्योंकि कच्ची उम्र में ही आप चोर बन चुके थे—शुरू में तो विद्रोही होने के कारण आपने कुछ सोचा ही नहीं और जब यह विचार आपके दिमाग में आया तो अपराध के दलदल में इस कदर फंस चुके थे कि आप अपने घर जाने से कतराने लगे थे।"

"म...मगर मैं चोर कैसे बन गया?"

"एक दस साल का बच्चा घर से भागकर और कर भी क्या सकता है—भूख ने आपको चोर बना दिया था, आप एक ऐसे गिरोह के साथ लग गए थे जो बच्चों से चोरी-चकारी और भीख मांगने का धंधा कराता था—जैसा वातावरण आपको मिला, वही आप बन गए।"

"तब फिर तुम मेरी जिन्दगी में कहां से आ गईं?"

"मैं अपने परिवार के साथ 'इण्डिया गेट' पर घूमने गई थी—वहीं आप भी बोटिंग कर रहे थे—यह आज से दो साल पहले की बात है, वहां मैं आपको देखती रह गई थी और आप मुझे—कहना चाहिए कि वहां हममें प्यार हो गया था—शाम को जब पिकनिक के

बाद मैं अपने परिवार के साथ वहां से विदा हुई थी तो आपने महरौली स्थित हमारे घर तक पीछा किया था, फिर आपने यह भी पता लगा लिया था कि मैं कौन से कॉलेज में पढ़ती हूं—आप हर रोज मुझे मेरे कॉलिज के बाहर खड़े मिलने लगे थे, फिर एक दिन आपने मुझे पत्र दिया था—इस तरह हमारा प्यार परवान चढ़ने लगा था और हम अक्सर मिलने लगे थे।"

"फिर?"

बड़ी उम्मीद के साथ युवक की आंखों में झांकती हुई रूबी ने पूछा—"क्या आपको कुछ याद आ रहा है?"

"न.....नहीं।"

रूबी के मुखड़े पर निराशा के बादल मंडराते नजर आए, फिर भी स्वयं को नियंत्रित करके उसने आगे कहा—"एक दिन मेरे पिता के किसी परिचित ने हमें 'कनॉट प्लेस' में घूमते देख लिया था—घर पर मुझ पर सख्ती की गई थी तो मैंने कह दिया था कि तुम्हीं से शादी करूंगी—उसके बाद तुमसे मिलने पर जब मैंने वे सब बातें बताई थीं तो तुम उदास हो गए थे—मेरे पूछने पर तुमने बताया था कि तुम मुझसे शादी नहीं कर सकते हो—तुमने कहा था कि तुम खुद को मेरे काबिल नहीं समझते—मेरे कारण पूछने पर ही तुमने अपने बचपन से लेकर चोर बनने तक के बारे में बताया था।"

"फिर क्या हुआ?"

"मैं सुनकर अवाक् रह गई थी, जानती थी कि मेरे घर वालों को अगर यह हकीकत पता लग गई तो वे हरगिज भी हमारी शादी नहीं करेंगे, जबकि तुम बहुत उदास और गमगीन हो गए थे। तब तक मैं तुमसे इतना प्यार करने लगी थी कि तुम्हारे बिना जीवित रहने की कल्पना तक नहीं कर सकती थी—सो, उस दिन की हमारी मुलाकात के बाद तय हुआ था कि तुम अपराधियों के उस दल से सम्बन्ध तोड़ लोगे, जिसके सदस्य के रूप में चोरी करते हो—सो तय हुआ कि तुम एक शराफत की जिन्दगी शुरू करोगे—उसी के तहत तुमने देहली से बाहर, यहीं यह मकान खरीदा था—आज से छः महीने पहले मैं अपना घर छोड़ आई थी, गाजियाबाद कोर्ट में हमने शादी की थी और यहां रहने लगे थे—यहां हमारी इस कहानी को कोई नहीं जानता है।"

"म...मैंने यह मकान कैसे खरीद लिया—और जब मैंने चोरी छोड़ दी थी तो छः महीने तक हमारा खर्चा कैसे चला?"

"जब आपने उस गिरोह से सम्बन्ध विच्छेद किया था, तब आपके पास अपने पांच लाख रुपए थे, जिसमें से चार लाख का आपने यह मकान खरीद लिया था और बाकी एक लाख मेरी सलाह से ब्याज पर चला दिया था—हमें प्रति महीने उनसे छः हजार ब्याज प्राप्त होता है, उसमें हमारा खर्च बहुत आराम से चलता है—उस एक लाख में से बीस

इजार तो छः परसेंट पर राजा भाइया पर ही हैं।"

"बाकी अस्सी हजार?"

"इसी तरह बंटा हुआ है, आप फिक्र न करें—मुझे सब मालूम है।"

"क्या उस गिरोह के लोगों ने मेरा पीछा नहीं किया, जिसका मैं सदस्य था?"

"किया होगा, मगर कम-से-कम आज तक वे यहां नहीं पहुंचे हैं।"

"अगर यहां हमारी लाइफ इतनी सैट हो गई थी तो फिर मैं तुम्हें यहां छोड़कर दो महीने पहले भाग क्यों गया था?" युवक ने पूछा।

"मेरी ही बेवकूफी से—मैं अपनी गलती स्वीकार करती हूं, जॉनी।"

चौंकते हुए युवक ने पूछा—"मैं कुछ समझा नहीं?"

"ओह, मैं बार-बार क्यों भूल जाती हूं जॉनी कि तुम्हें कुछ भी याद नहीं आ रहा है—याद करने की कोशिश करो, प्लीज—दिमाग पर जोर डालो—याद करो कि मैंने कितनी मुश्किल से तुम्हें तुम्हारे माता-पिता के घर यानि बस्ती चलने के लिए राजी किया था। तुम तैयार हो गए थे—हम वहां जाने के लिए बाजार में शॉपिंग करने गए—सर्राफे में मेरी नजर एक नेकलेस पर पड़ी।"

"न...नेकलेस?" युवक उछल पड़ा।

"हां, यह कम्बख्त नेकलेस ही तो सारे कलह की जड़ था।"

"कैसे?"

"जाने ऐसा क्या हुआ कि वह नेकलेस मेरे दिमाग पर बहुत ज्यादा चढ़ गया और मैं तुमसे उसे खरीद लेने की जिद करने लगी, उसकी कीमत दो लाख थी—तुमने कहा कि उसे खरीदने की फिलहाल हमारी पोजीशन नहीं है। तुम्हें कुछ याद आ रहा है, जॉनी?"

"फिर क्या हुआ?"

"तुम्हारा इन्कार करना मुझे बुरा लगा था—वहां से तो गुस्से में भरी मैं चुपचाप चली आई थी, मगर यहां आकर झगड़ने लगी थी—तुम मुझे समझाने की कोशिश करने लगे थे, पता नहीं मुझे क्या हो गया था कि तुम्हारी एक न सुनी थी—गुस्से में जाने क्या-क्या कहने लगी थी, अन्त में तुम्हें भी गुस्सा आ गया था और गुस्से में ही तुम यहां से यह कहकर चले गए थे कि अब मुझे तभी शक्ल दिखाओगे जब वह नेकलेस तुम्हारे पास होगा—मेरे दिमाग में तब भी यह बात नहीं आई थी कि जो शख्स दस साल की आयु में एक छोटी-सी बात के कारण घर से ऐसा निकला कि चोर बन गया, मगर घर नहीं लौटा, वह सचमुच मुझे भी छोड़ सकता है—यह बात तो दिमाग में तब आई थी जब उस सारी रात

तुम नहीं आए—फिर ज्यों-ज्यों समय गुजरता गया था, मुझे लगने लगा था कि अब तुम कभी नहीं आओगे, अपने घर वालों ही तरह ही हमेशा के लिए मुझे भी छोड़ गए हो, मगर मैं यहां से निकलकर कहीं जा भी तो नहीं सकती थी, जॉनी—इस उम्मीद में यहीं पड़ी-पड़ी रोती रहती थी कि शायद तुम्हें कभी मेरी याद आए, मुझ पर तरस आए तुम्हें।"

युवक ने जेब से वही नेकलेस निकाला, जो दीवान ने न्यादर अली को और न्यादर अली ने पुनः उसे दे दिया था। बिना कुछ कहे उसने नेकलेस रूबी की तरफ बढ़ा दिया।

"अरे, यह तो वही नेकलेस है—तु.....तुम इसे लेकर ही आए हो?"

"श...शायद।"

"क.....क्या तुम्हें सब कुछ याद आ रहा है, जॉनी? सच बोलो।" बड़ी ही अधीरता के साथ रूबी ने पूछा—"तुम्हें कुछ याद आया है न?"

सपाट और निर्भाव चेहरे वाले युवक ने कहा—"नहीं।"

रूबी का चेहरा एकदम इस तरह फक्क पड़ गया, जैसे उसे कोई जबरदस्त आघात लगा हो। घोर निराशा में डूबे स्वर में उसने कहा—"फ.....फिर यह नेकलेस?"

"शायद इसे तुम्हें देने की धुन में ही मैंने अमीचन्द के गैराज से कार और फिर खरीदने की हैसियत न होने के कारण दुकान से यह नेकलेस चुराया था—वह पुलिस इंस्पेक्टर कहता था कि मेरी जेब में इसे खरीदने से सम्बन्धित कोई रसीद नहीं निकली थी।"

"म...मगर आप रोहतक रोड पर कैसे पहुंच गए?"

"एक चोर कहीं भी पहुंच सकता है।"

"ऐसा मत कहिए, आप चोर नहीं हैं—अब मैं आपको कभी चोरी नहीं करने दूंगी।"

"खैर।" युवक ने गम्भीरतापूर्वक सोचते हुए पूछा—"क्या तुम बता सकती हो रूबी कि जब मैँ यहां से गया था तो मेरी जेब में कितने पैसे थे?"

"तीस हजार के करीब।"

"मगर मेरी जेब में कुल बाइस हजार....ओह, बाकी के रुपए शायद मैं एक्सीडेण्ट होने से पहले खर्च कर चुका था। खैर...क्या मेरी जेब में कोई पर्स रहता था रूबी?"

"हां, वही पर्स जिसमें आपकी मां का फोटो है।"

"म...मां का फोटो?" युवक भौंचक्का रह गया।

"जी हां, कहां है वह पर्स?"

“ले.....लेकिन वह मेरी मां कैसे हो सकती है—वह तो किसी युवती का फोटो है।"

"वह आपका नहीं, आपके पिता का पर्स है—जब आप घर से भागे थे तो उनकी जेब से यह पर्स निकालकर भागे थे—वह आपकी मां की शादी से पहले का फोटो है, उस पर्स को पिता की और फोटो को मां की निशानी समझकर आपने हमेशा अपने साथ रखा, कभी मिस नहीं किया उसे—क्या आपको यह भी याद नहीं है कि आप अक्सर दीवानों की तरह अपनी मां के फोटो से बातें किया करते हैं?"

आश्चर्य के कारण युवक का बुरा हाल था। उसने जेब से पर्स निकाला—खोलकर ध्यान से उस युवती के फोटो को देखने लगा—उस फोटो को जिसे न्यादर अली ने उसकी बहन सायरा का फोटो बताया था, अब—यह रूबी इसी फोटो को उसकी मां का फोटो कह रही है।

बुरी तरह उलझ गया युवक।

उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि सच्चाई क्या है?

सेठ न्यादर अली के बंगले से वह यह सोचकर भागा था कि शायद अपने अतीत की गुत्थी को सुलझा सके—खुद ही को शायद वह तलाश कर सके, मगर यहां आकर तो गुत्थी कुछ और ज्यादा उलझ गई थी। युवक का दिमाग बुरी तरह झनझना रहा था।

"हां, यही पर्स है वह और यही मांजी हैं।" रूबी की आवाज ने उसकी विचार श्रृखंला तोड़ दी, उसने चौंककर रूबी की तरफ देखा—हैरत और उलझन की रस्सियों से बंधा कुछ देर तक वह शान्त भाव से रूबी को देखता रहा, फिर बोला—“यह फोटो और साथ में मेरा फोटो भी पुलिस ने अखबार में छपवाया था, उसे देखकर तुम मेडिकल इंस्टीट्यूट में क्यों नहीं आईं?"

"क.....कौन-से अखबार में, मैंने तो नहीं देखा।"

"नहीं देखा?"

"कैसी बात कर रहे हैं आप? यदि देखा होता तो क्या मैं आती नहीं?"

युवक चुप रह गया, फिर वह अपने दिमाग को संभालने लगा। शायद सोच रहा था कि अब उसे रूबी से क्या पूछना है और एकाएक ही उसने पूछा—"अच्छा, ये बताओ रूबी कि क्या मैंने अपनी पिछली जिन्दगी में कभी किसी नग्न लड़की की लाश देखी है?"

“हां, आपने मुझे बताया था कि उस लाश को आप लाख चेष्टाओं के बावजूद भी कभी भुला नहीं सके—आपको वह लाश ख्वाब में चमक आया करती है—जब भी वह ख्याब आपको चमकता है, आप डर जाते हैं और चीखकर उठ बैठते हैं।"

"किसकी लाश थी वह?"

"आपने बताया था कि एक रात आप सम्बन्धित गिरोह के एक दूसरे चोर के साथ किसी सेठ की तिजोरी साफ करने गए थे। तिजोरी उसके लड़के और बहू के कमरे में थी

आप दोनों कमरे में पहुंच गए थे, सर्दी के दिन थे—डबलबेड पर लिहाफ के अन्दर सेठ का लड़का और उसकी पत्नी, नग्न अवस्था में एक-दूसरे की बांहों में समाए मीठी नींद सो रहे थे—आप अपना काम करने लगे थे—किसी खटके की आवाज से पत्नी की नींद खुल गई थी और वह चीख पड़ी थी—आपके साथी ने झपटकर उसकी गर्दन दबोच ली थी—पत्नी की चीख सुनकर सेठ का लड़का भी जाग गया था, जिसे आपने दबोच लिया था—आपने उसके मुंह पर हाथ रख लिया था—आप उसे दबोचे खड़े थे, जबकि आपके साथी ने बहू की हत्या कर दी थी—उस हत्या का सारा मंजर आपने अपनी आंखों से देखा था, बहू की जीभ और आंखें बाहर उबल पड़ी थीं—उसकी भयानक और निर्वस्त्र लाश कमरे के फर्श पर गिर गई थी—आपकी गिरफ्त में फंसा युवक दहशत के कारण बेहोश हो चुका था—आप और आपका साथी आंखें फाड़े उस नग्न लाश को देखते रहे थे और फिर बिना उनकी सेफ पर हाथ साथ किए ही आप दोनों वहां से भाग खड़े हुए थे।"

सुनते-सुनते युवक को लगा कि उसका जिस्म ही नहीं, बल्कि दिलो-दिमाग तक सुन्न हो गया है। कानों के समीप उसे वैसी ही आवाज गूंजती महसूस हुई, जैसे गहरे सन्नाटे की होती है—सांय-सांय, चेहरा फक्क पड़ गया था उसका, हथेलियां तक ठण्डे पसीने से बुरी तरह भीग गईं, उसे इस अवस्था में देखकर रूबी घबरा गई। उसके दोनों कंधे पकड़कर झंझोड़ती हुई चीखी—"क्या हुआ, क्या हो गया है आपको?"

"म...मतलब ये कि मैं हत्यारा भी हूं।" अपनी ही आवाज उसे किसी अंधकूप से निकलती-सी महसूस हुई।

"न...नहीं।" रूबी ने सख्ती के साथ विरोध किया—"आप भला हत्यारे क्यों होते, हत्या आपके साथी ने की थी।"

"हत्यारे की मदद करने वाला भी हत्यारा होता है रूबी, मैंने अपने साथी की पूरी मदद की थी, यदि मैं उसके पति को छोड़ देता तो वह कभी न मरती।"

"इसी विचार को तो किसी घुन की तरह अपनी जिन्दगी से चिपका लिया है आपने, तभी तो वह सपना आपको आज भी चमकता है, आप सोते-सोते डर जाते हैं—इस वक्त भी आपके विचार बिल्कुल वैसे ही हैं, जैसे याददाश्त गुम हो जाने से पहले थे—आप हमेशा खुद को उसका हत्यारा कहते हैं, जबकि मैं कहती हूं कि आप हत्यारे नहीं हैं—एक भयानक दु:स्वप्न समझकर आप अपनी जिन्दगी से उसे निकाल फेंकिए।"

एकाएक युवक ने उससे उस युवक के बारे में पूछा, जिसने उससे 'जमाने' के लिए कहा था। पहले तो रूबी कुछ समझी ही नहीं—उसने ऐसा कहने वाले का हुलिया पूछा

और जब युवक ने बताया तो रूबी बोली—"ओह, वह शायद गजेन्द्र होगा।"

"गजेन्द्र कौन?"

"भगवतपुरे में बने आपके दोस्तों को मंडली का एक सदस्य।"

"क्या तुम बता सकती हो कि वह क्या जमाने के लिए कह रहा था?"

"शायद जुए की महफिल जमाने के लिए कह रहा हो?"

"ज...जुआ—क्या मैं जुआ भी खेलता हूं?"

"हां, मेरे बार-बार मना करने के बावजूद जब आप उनके बीच फंस जाते हैं तो खेल ही लेते हैं।"

"खैर, धीरे-धीरे आपकी यह लत भी छूट जाएगी।"

युवक ने फीकी-सी मुस्कान के साथ कहा—"दुनिया का शायद एक भी ऐसा बुरा काम नहीं है, जो मैंने न किया हो।"

"ऐसा मत कहिए, जो शाम को लौट आए उसे भूला नहीं कहते—अब आपने सब काम छोड़ दिए हैं, कोई भी गलत काम न करने के लिए आपने मेरी कसम खाई है।" कहने के साथ ही उसने ऐसी हरकत की कि युवक के रोंगटे खड़े हो गए।

बड़े प्यार से, उसके होंठों का चुम्बन लिया था रूबी ने।

युवक सकपका गया।

रूबी का मुखड़ा उसके बेहद करीब था। बड़े प्यार से उसकी आंखों में झांक रही थी वह। रूबी की सांसों की गर्मी युवक ने अपने चेहरे पर महसूस की और अनायास ही उसकी अपनी सांसें भी धौंकनी की तरह चलने लगीं।

दिल बेकाबू होकर धड़कने लगा।

शायद लापरवाही के कारण ही रूबी के वक्षस्थल से साड़ी का पल्लू ढलक गया। वक्ष प्रदेश का ऊपरी भाग युवक को साफ नजर आने लगा। रूबी की सांसों के साथ ही उनमें कम्पन हो रहा था—उस वक्त तो युवक बौखला ही गया जब रूबी ने बड़े प्यार से न केवल उसके गले में बांहें डाल दीं, बल्कि अपना सिर धीमें से उसके सीने पर रखकर बोली —"मुझे तो बस इस बात की खुशी है कि आप आ गए हैं, अब हम बस्ती चलेंगे—सम्भव है कि अपने माता-पिता और छोटे भाई-बहनों से मिलकर बाकी याददाश्त भी वापस आ जाए।"

"म...मगर रूबी।" स्वर बौखलाया हुआ था।

रूबी का प्यार से सराबोर लहजा—"कहिए।"

अब वह कुछ सोचने के लिए एकान्त चाहता था, अत: बोला—"मैं सुबह से भूखा हूं, क्या तुम मुझे कुछ बनाकर खिला सकती हो?"

"क्यों नहीं, ओह—सॉरी जॉनी—मैं तुम्हारी कहानी में कुछ इतनी बुरी तरह उलझ गई कि इस बात का ध्यान ही न रहा।" वह बोली—"क्या खाओगे?"

"जो तुम खिला दो।"

"मैं नमकीन चावल बनाती हूं, तुम्हें बहुत पसन्द हैं।"

दिमाग पर काफी जोर डालने के बाबजूद भी युवक यह तो न जान सका कि उसे नमकीन चावल पसन्द हैं या नहीं, मगर रूबी को उसने वही बनाने के लिए कह दिया।

¶¶

अब उस कमरे में युवक अकेला था।

बेड की पुश्त के साथ रखे डनलप के तकियों पर सिर रखे वह बेड पर लगभग लेटा हुआ था, किचन की तरफ से आवाजें आ रही थीं—कमरे की छत को घूरता हुआ वह न्यादर अली और रूबी द्वारा सुनाई गई कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन कर रहा था।

थोड़ा सोचने के बाद उसे लगा कि—रूबी की कहानी ज्यादा सशक्त है और आत्मविश्वास से भरी है—इसने जो कुछ कहा है, उसमें ऐसे 'छिद्र' हैं, जिनके जरिए सुनाई गई कहानी की पुष्टि की जा सकती है।

रूबी के बताए अनुसार वह महरौली स्थित उसके घर जा सकता है—वह बस्ती भी जा सकता है, जहां रूबी के कथनानुसार उसके माता-पिता और छोटे भाई-बहन रहते हैं—यहां, यानि भगवतपुरे में उसे बहुत-से लोग जॉनी के नाम से जानते हैं—उसके दोस्त भी हैं।

पुष्टि बड़ी सरलता से हो सकती है।

सबसे विशेष बात यह थी कि नेकलेस, पर्स और फोटो आदि का सम्बन्ध स्वयं ही रूबी की कहानी से जुड़ गया था, जबकि रूबी को यह मालूम भी नहीं था कि यह सब सामान उसकी जेब से निकला है।

न्यादर अली की कहानी में ऐसे छिद्र या तो थे ही नहीं या बहुत कम थे, जिनके जरिए वह अपने सिकन्दर होने की पुष्टि कर सके—इन्वेस्टिगेशन करके अब उसे पहले इस नतीजे पर पहुंचना था कि जॉनी और सिकन्दर में से वह क्या है?

वह इन्हीं ख्यालों में भटकता रहा और रूबी उसके लिए चावल बना लाई—स्टील

की प्लेट में चावल लिए जब उसने कमरे में प्रवेश किया तो पीले रंग के गर्म चावलों में से भांप उठ रही थी, किन्तु भूख के बावजूद वह तश्तरी की अपेक्षा रूबी की तरफ ज्यादा आकर्षित हुआ।

इस वक्त रूबी बेहद खूबसूरत लग रही थी।

चावल बनाने के बीच ही या तो वह नहाई थी या मुंह-हाथ धोए थे—मुखड़े पर पूरा मेकअप था। उसके मस्तक पर लगी सिन्दूरी बिन्दिया को देखता ही रह गया वह—बाल संवरे हुए थे—सिन्दूर से लबालब भरी मांग—साड़ी के स्थान पर नाइट गाउन पहना था उसने।

अपने होंठों के समान ही गुलाबी रंग का झीना गाउन—ऐसा कि युवक को उसकी ब्रेजरी और अण्डरवियर साफ नजर आए—युवक ने पहली बार ही महसूस किया कि रूबी का जिस्म सख्त और गठा हुआ है—टांगें लम्बी और गोल थीं, पुष्ट वक्ष कसी हुई ब्रेजरी से मानो निकल पड़ने के लिए बेताब हों।

युवक देखता ही रह गया उसे।

जाने कहां से यह विचार उसके दिमाग में जा टकराया कि अगर रूबी सचमुच मेरी पत्नी है तो यह मुझे पसन्द है—वह वाकई खूबसूरत थी—एकटक युवक उसे देखता ही रह गया, वह स्वयं भी तो उसे प्यार से, आंखों में चमक लिए उसे निहार रही थी।

युवक की सांसें तेज हो गईं—दिल के धड़कने की गति बढ़ गई—मस्तक पर पसीना उभर आया और अपना हलक सूखता-सा महसूस किया उसने—बिल्कुल नजदीक आकर रूबी ने उसे कातर दृष्टि से देखते हुए पूछा—"इस तरह क्या देख रहे हैं?"

"क...कुछ नहीं।" युवक हड़बड़ा गया।

"कुछ तो?" कहती हुई रूबी ने झुककर चावलों की प्लेट बेड पर रखी तो युवक की नजरें ब्रेजरी से झांकते उसके पुष्ट वक्ष पर स्वयं ही पड़ गईं।

"त...तुम बहुत सुन्दर लग रही हो।" कहीं सोया-सा युवक कह उठा।

धीमें से बैठती हुई रूबी ने कहा—"जब भी मैं यह लिबास पहनती हूं, आप तभी यह कहते हैं—स्वयं आपको इस लिबास के बारे में भी कुछ याद नहीं है?"

"न.....नहीं तो?"

"इसे आप मेरे लिए विशेष रूप से लाए थे, सुहागरात के लिए।"

हक्का-बक्का-सा वह केवल रूबी के दमकते मुखड़े को देखता रहा। एकाएक ही उसे अपने होंठ तक सूखते महसूस हुए, बोला—"क्या मुझे एक गिलास पानी मिलेगा?"

"क्यों नहीं, मैं अभी लाई।" कहकर वह उठी, घूमी और फिर तेजी के साथ दरवाजे की तरफ बढ़ गई—युवक की दृष्टि उसके नितम्बों पर चिपककर रह गई। तेजी से चलने के कारण उनमें कुछ ऐसा लोच उत्पन्न हुआ था कि युवक के मन में गुदगुदी-सी हुई।

एक ही पल में वह नजर आनी बन्द हो गई।

एकाएक उसके दिमाग में विचार उठा कि क्या रूबी इस उत्तेजक लिबास को पहनकर मुझे किसी जाल में फंसा रही है या एक पत्नी दो महीने से गुम अपने पति का स्वागत कर रही है? वह ठीक से निर्णय नहीं कर सका कि सच्चाई क्या है?

एक जग में पानी और दूसरे हाथ में खाली गिलास लिए वह आ गई—गिलास में पानी भरकर उसने युवक को दिया, युवक एक ही सांस में गिलास खाली कर गया—पानी पीने के बाद उसने गिलास के ऊपरी सिरे पर लिखा 'जॉनी' देखा।

हलक अब भी सूखा-सा महसूस हो रहा था।

"एक गिलास और...।" युवक ने कहा।

"पानी से ही पेट भर लेंगे तो चावल क्या खाएंगे?" कहती हुई रूबी ने उसके हाथ से गिलास लिया और उसे जग के समीप रखती हुई बोली—"चावल खाइए।"

युवक ने चुपचाप प्लेट में रखी एक चम्मच उठा ली।

रूबी ने दूसरी चम्मच संभाल ली थी और अब वे चावल खाने लगे—युवक अपने मन-मस्तिष्क को नियंत्रण में रखने की भरपूर चेष्टा कर रहा था, परन्तु फिर भी रह-रहकर उसका ध्यान गाउन के अन्दर चमक रहे उसके गदराए जिस्म की तरफ चला ही जाता था।

उसे डर था कि दिलो-दिमाग में कहीं वे ही विचार न उठने लगें, जो नर्स को देखकर उठे थे—वे चावल खा चुके तो रूबी सारे बर्तन किचन में रख आई। उसके नजदीक बेड पर बैठती वह बोली—"अभी तक आपका वह नया दोस्त नहीं आया, क्या नाम बताया था आपने?"

"रूपेश—वह शायद शाम तक ही आएगा।"

"आप नहा लीजिए, मैं आपके लिए कपड़े निकाल देती हूं।" कहने के साथ ही रूबी उठी और सेफ की तरफ बढ़ गई—युवक की दृष्टि उसके जिस्म ही पर थिरक रही थी।

वह सेफ के कपड़ों को खंगालने में व्यस्त थी।

युवक की दृष्टि उसकी गर्दन पर चिपक गई।

बड़े ही विस्फोटक ढंग से उसके दिमाग में विचार टकराया—"यदि रूबी के तन से गाउन, ब्रेजरी और अण्डरवियर उतार दिये जाएं तो वह कैसी लगेगी?"

खूबसूरत।

एक नग्न युवती उसके सामने आ खड़ी हुई।

युवक रोमांचित हो उठा।

उसकी मुट्ठियां कस गईं—दिल चाहा कि अपनी सभी उंगलियां फैलाकर हाथ बढ़ाए और रूबी की गर्दन दबोच ले—"अगर ऐसा कर दूं तो क्या होगा?"

रूबी मर जाएगी।

पहले इसका चेहरा लाल-सुर्ख होगा, बन्धनों से निकलने के लिए छटपटाएगी, मगर मैं इसे छोड़ूंगा नहीं—इसके मुंह से गूं-गूं की आवाज निकलने लगेगी—इसकी आंखें और जीभ बाहर निकल आएंगी—कुतिया की तरह जीभ बाहर लटका देगी वह।

तब, मैं इसकी गर्दन और जोर से दबा दूंगा।

मुश्किल से दो ही मिनट में यह फर्श पर गिर जाएगी—चेहरा बिल्कुल निस्तेज होगा—सफेद कागज-सा....उस अवस्था में कितनी खूबसूरत लगेगी वह—हां, इसे मार ही डालना चाहिए—उस अवस्था में यह कुछ ज्यादा ही खूबसूरत लगेगी।

उन भयानक विचारों से पूरी तरह अनभिज्ञ रूबी सेफ में से उसके पहनने के लिए कपड़ों का 'सलेक्शन' कर रही थी—वह क्या जानती थी कि एक दरिन्दा उसे अपनी खूनी आंखों से घूर रहा है—मौत उस पर झपटने ही वाली है।

युवक के दिमाग में रह-रहकर कोई चीख रहा था—"इसे मार डालो—मारने के बाद फर्श पर पड़ी वह बेहद खूबसूरत लगेगी—इसकी गर्दन दबा दो, जल्दी।

आंखों में बेहद हिंसक भाव उभर आए। चेहरा खून पीने के लिए किसी आदमखोर पशु के समान क्रूर और वीभत्स हो गया—आंखों में—अजीब-सा जुनून सवार हो गया उस पर। सारा जिस्म कांप रहा था....मुंह खून के प्यासे भेड़िए की तरह खुल गया—लार टपकने लगी-उंगलियां किसी लाश की उंगलियों के समान फैलकर अकड़ गईं।

बहुत ही डरावना नजर आने लगा वह।

अचानक ही वह उठा, किसी दरिन्दे की तरह फर्श पर खड़ा-खड़ा वह खूनी आंखों से रूबी को घूरने लगा। मुंह से लार टपककर उसके कपड़ों पर गिर रही थी—पंजे खोलकर उसने अपनी दोनों बांहें फैला रखी थीं।

बिल्कुल अनभिज्ञ, सेफ ही में मुंह गड़ाए मासूम रूबी ने पूछा—"आज आप ब्राउन सूट पहन लीजिए।"

एकाएक ही युवक के मुंह से किसी भेड़िये की-सी गुर्राहट निकली—"कपड़े

उतारो।"

रूबी एकदम चौंककर उसकी तरफ घूमी।

युवक की अवस्था देखकर बरबस ही उसके कण्ठ से चीख उबल पड़ी—डरकर पीछे हटी, चेहरा सफेद पड़ चुका था, बोली—"क्....क्या हुआ—क्या हो गया है आपको?"

"हूं-हूं-हूं-।" की डरावनी आवाज अपने मुंह से निकालता हुआ वह बांहें फैलाए रूबी की तरफ बढ़ा। लार टपके जा रही थी, वह चीखा—"मैं कहता हूं कपड़े उतारो।"

"ज.....जॉनी....जॉनी।" दहशतनाक अन्दाज में रूबी चीख पड़ी—"क...क्या हो गया है तुम्हें? प...प्लीज, मुझे इस तरह मत ड़राओ।"

"हरामजादी—सुनती नहीं मैंने क्या कहा, कपड़े उतार!"

और अब, हलक फाड़कर रूबी चिल्ला उठी—"बचाओ.....ब.....बचाओ।"

मगर इस बन्द स्थान के अन्दर से उसकी चीखें शायद बाहर नहीं जा सकीं—युवक झपटा—रूबी चीख पड़ी...और वह खूबसूरत झीना गाउन फटता चला गया—रूबी चीखती रही—किसी पागल कुत्ते की तरह वह बार-बार गाउन पर झपटता रहा।

गाउन के टुकड़े फर्श पर बिखर गए।

ब्रेजरी और अण्डरवियर में ही चीखती हुई रूबी दरवाजे की तरफ भागी।

दरिन्दे ने झपटकर पीछे से उसे दबोच लिया। लगातार चीखती हुई रूबी उसकी गिरफ्त से निकलने के लिए छटपटाई—युवक ने अपना खुला मुंह उसकी पीठ की तरफ बढ़ाया और इस वक्त बहुत पैने-से नजर आने वाले दांत उसकी ब्रेजरी के हुक में फंसाए।

भेड़िए की तरह उसने एक झटका दिया।

ब्रेजरी फर्श पर गिर गई।

बंधनों में जकड़ी रूबी को घुमाकर उसने बेड की तरफ फेंका, चीखती हुई रूबी बेड पर जा गिरी—युवक घूमकर उसी खूनी अन्दाज में पंजे फैलाए बेड की तरफ बढ़ा।

उससे बुरी तरह आतंकित रूबी हाथ जोड़कर रोती हुई गिड़गिड़ा उठी—"म.....मुझे माफ कर दो—म-मुझे मत मारो—म...मैं..।"

युवक पुन: उस पर झपट पड़ा।

इस बार कपड़े का वह आखिरी रेशा भी जिस्म से अलग हो गया। निर्वस्त्र रूबी बेड से कूदकर दरवाजे की तरफ भागी—हड़बड़ाहट के कारण गिरी, फिर उठी, मगर इस बार उठते ही युवक के हाथ उसने अपनी गर्दन पर महसूस किए।

हलक से अभी तक की सबसे जोरदार चीख निकली।

मगर दांत भींचे युवक उसकी गर्दन दबाता ही चला गया—उसकी गिरफ्त से मुक्त होने की रूबी की हर कोशिश नाकाम रही। श्वांस क्रिया रुकने लगी—युवक का वीभत्स और डरावना चेहरा उसकी आंखों के बहुत नजदीक था। मुंह से टपकती हुई लार रूबी के मुंह में गिर रही थी—रूबी की जीभ बाहर निकलने लगी—चेहरा लाल-सुर्ख पड़ गया।

बोलने के प्रयास में गूं-गूं कर रही थी वह।

आंखें पलकों के किनारे से बाहर उबलने लगीं।

हाथ-पैर ढीले और सुन्न पड़ गए—प्रतिरोध करने की उसकी क्षमता कम होती चली गई...उसे इस अवस्था में देखकर युवक किसी राक्षस के समान ठहाका लगाकर हंस पड़ा।

हाथों का दबाव गर्दन पर बढ़ता ही चला गया।

रूबी के कण्ठ से एक हिचकी-सी निकली और गर्दन एक तरफ लुढ़क गई, सारा जिस्म ढीला पड़ गया। बर्फ के समान सर्द—जीभ बाहर लटकी हुई थी—उबली आंखों से वह अभी तक युवक को देखती-सी महसूस हो रही थी—उसके सफेद चेहरे पर हर तरफ आतंक
था...दहशत।

अपने हाथों में दबी उस लाश को देखकर युवक काफी देर तक पागलों की तरह ठहाके लगाता रहा, फिर रूबी की गर्दन से अपने हाथ हटा लिए उसने।

लाश 'धड़ाम्' से फर्श पर गिरी।

¶¶

किसी स्टेचू के समान युवक भी फटी आंखों से फर्श पर चित्त अवस्था में पड़ी रूबी की निर्वस्त्र लाश को देख रहा था—वह लाश अब उसे बड़ी ही भयानक लग रही थी।

फटी आंखों से छत को घूरती लाश—सफेद कागज-सा निस्तेज चेहरा।

सिकुड़े चमड़े की तरह लटकी हुई जीभ।

फर्श पर चिपककर रह गया था युवक—क्रूरता और दरिन्दगी से भरे भाव धीरे-धीरे उसके चेहरे से गायब होने लगे—जिस्म में छाया अजीब-सा तनाव जाने कहां चला गया।

आंखों में खौफ उभरने लगा। टांगें कांपने लगीं।

चेहरा सफेद पड़ता चला गया। रूबी के मुर्दा शरीर की तरह ही सफेद।

आतंकित-सा वह बड़बड़ाया—"म...मैंने इसे मार डाला है—ये क्या किया मैंने—मैँ हत्यारा हूं—मैंने खून किया है—म.....मगर इसे क्यों मार डाला मैंने?"

जवाब देने वाला वहां कोई नहीं था। फिर भी जवाब उसे मालूम था—"रूबी को मैंने उसी दौरे के दौरान मार डाला है, जिसे डॉक्टर ब्रिगेंजा ने जुनून कहा था...मेरे दिमाग में यही विचार उभरे थे।"

"म.....मगर।" युवक बड़बड़ाया—"ये भयानक विचार मेरे दिमाग में उभरे ही क्यों थे—क्या हो गया था मुझे—मैंने क्यों मार डाला इस मासूम को—हे भगवान—ये मुझसे क्या करा दिया?" बड़बड़ाता हुआ वह वहीं फर्श पर बैठ गया।

अपने दोनों हाथों से चेहरा ढांप लिया उसने, बुरी तरह से डरे हुए मासूम बच्चे की तरह फूट-फूटकर रो पड़ा। चीखकर वह स्वयं ही से कहने लगा—"म.....मैँ हत्यारा हूं—मैंने कत्ल किया है—एक बेगुनाह और मासूम नारी का खून किया है मैंने.....आह।"

युवक रोता रहा।

अचानक ही उसे ख्याल आया कि क्या रूबी मेरी पत्नी थी—क्या वाकई मैं जॉनी हूं—क्या मैंने अपनी ही पत्नी को मार डाला है?

रोना भूल गया वह।

चौंककर रूबी की उस लाश को देखने लगा, जो समय के साथ-साथ अब अकड़ती जा रही थी। इस लाश से अब उसे डर लगने लगा—पहली बार उसने महसूस किया कि सारे घर में सन्नाटा छाया हुआ है—उसके कानों के इर्दगिर्द सांय-सांय की आवाज गूंजने लगी।

घबराकर उसने चारों तरफ देखा।

सभी कुछ उसे डरावना-सा लगा।

कमरे के सारे फर्श पर बिखरे रूबी के कपड़ों के टुकड़े उसे मजबूत रस्सी के फन्दे-से नजर आए।

घबराकर वह खड़ा हो गया। उसके दिमाग में यह विचार चकराने लगा था कि हत्या की सजा फांसी है। मैंने हत्या की है और अब फांसी से मुझे कोई नहीं बचा सकेगा—चारों तरफ छाया सन्नाटा उसे कुछ और ज्यादा गहराता-सा महसूस हुआ।

तभी किचन की तरफ से उसे बरतनों के खड़कने की आवाज सुनाई दी।

उसका दिल 'धक्क' से उछलकर कण्ठ में जा फंसा। क्षणमात्र में जिस्म के सारे रोएं खड़े हो गए और मसामों ने ठण्डा पसीना उगल दिया—चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगी थीं।

उसके मन में एकमात्र विचार उभरा था—'क्या किचन में कोई है?'

सांस रोके वह पुन: उभरने वाली किसी आहट को सुनने की कोशिश करने लगा और उस वक्त तो उसके होश ही उड़ गए जब कमरे के बाहर से किसी के दबे पांव चलने की आवाज उभरी। सन्नाटे में इस आवाज को वह स्पष्ट सुन सकता था।

"क.....कौन है?" डरी हुई आवाज में वह चीख पड़ा।

किसी के चलने की आवाज गुम हो गई।

युवक दहशत के कारण रो पड़ने के लिए बिल्कुल तैयार था—फिर किचन की तरफ से ऐसी आवाज उभरी जैसे कोई 'चप्प-चप्प' कर रहा हो।

युवक एकदम भागा, आंगन में पहुंचा।

किचन के दरवाजे पर ही रखी प्लेट को एक बिल्ली चाट रही थी—आहट सुनकर बिल्ली ने उसकी तरफ देखा—युवक का दिल बुरी तरह धक्-धक् कर रहा था—सफेद बिल्ली की कंजी आंखों में झांकते ही युवक के हाथ-पैर कांप उठे।

किसी स्टेचू के समान खड़ा रह गया था वह।

"म्याऊं...म्याऊं...।" बिल्ली की आवाज मकान में छाए मौत के-से सन्नाटे को चीरती चली गई। पसलियों पर होने वाली दिल की चोट वह स्पष्ट महसूस कर रहा था... उस पर से नजरें हटाकर बिल्ली पुन: प्लेट में लगे चावल चाटने लगी—'चप्प...चप्प...।'

बिल्ली की जीभ और उसके नुकीले दांत देखकर युवक के जिस्म में झुरझुरी-सी दौड़ गई—उसने पैर पटका, बिल्ली ने उसकी तरफ देखा जरूर, मगर भागी नहीं—जाने युवक को उसे वहां से भगाना इतना जरूरी क्यों लगा कि वह बिल्ली की तरफ दौड़ पड़ा।

बिल्ली भागी।

उसका पैर शायद प्लेट में लग गया था, इसीलिए प्लेट उलट गई—प्लेट के खनखनाने की आवाज सारे मकान में गूंज गई.....आंगन में एक चक्कर लगाने के बाद बिल्ली झट से उस कमरे में घुस गई, जिसमें रूबी की लाश थी—मूर्ख की तरह उसके पीछे आता हुआ युवक जब कमरे में पहुंचा तो वहीं ठिठककर खड़ा रह गया।

हार्ट अटैक होते-होते बचा था उसे।

रूबी के वक्षों पर खड़ी बिल्ली अपनी कंजी आंखों से उसे घूर रही थी—युवक सहम गया। बिल्ली ने दो बार "म्याऊं...म्याऊं' की.....उसके नुकीले दांत युवक को अपनी आंखों में गड़ाते महसूस हुए—एकाएक ही दिमाग में एक ख्याल उठा कि बिल्ली झपटने वाली है, अपने पंजों से वह उसकी आंखें निकाल ले जाएगी।

अचानक ही छत की तरफ मुंह उठाकर बिल्ली रो पड़ी।

युवक को काटो तो खून नहीं।

बिल्ली यूं रो रही थी जैसे उसे मालूम हो कि वह एक लाश पर खड़ी है....मकान में गूंजने वाली बिल्ली के रोने की आवाज़ ने युवक के रहे-सहे हौंसले भी पस्त कर दिए।

बड़ी ही डरावनी और भयानक आवाज थी वह।

फिर, बिल्ली रूबी की नाक से अपनी नाक सटाकर जाने क्या सूंघने लगी—आतंक के कारण युवक का बुरा हाल था, बौखलाकर वह बिल्ली की तरफ दौड़ा—रोती हुई बिल्ली उछलकर पलंग के नीचे घुस गई—युवक भी पलंग के नीचे—कमरे के कई चक्कर लगाने के बाद बिल्ली उसे आंगन में ले आई। युवक की सांस बुरी तरह फूल रही थी।

तभी किचन से निकलकर आंगन में एक चूहा भागा।

बिल्ली झट से चूहे पर झपट पड़ी।

चूहे की चीं-चीं के साथ मकान में युवक की चीख भी गूंज उठी—जाने क्यों चूहे पर झपटती बिल्ली को देखकर वह चीख पड़ा था, मुंह में चूहा दबाए बिल्ली ने उसे घूरा।

दहशत के कारण वहां ढेर होते-होते बचा युवक।

बिल्ली दौड़कर बाथरूम में घुस गई—जाने किस भावना से प्रेरित युवक भी उधर लपका और फिर उसने बिल्ली को बाथरूम की नाली के जरिए मकान से बाहर निकलते देखा।

हक्का-बक्का-सा युवक वहीं खड़ा हांफता रहा।

अपने दिमाग पर छाए आतंक और भय के भूत से मुक्त होने की असफल कोशिश करता रहा—जब थोड़ा संभला तो बाथरूम का दरवाजा कसकर बन्द कर दिया उसने।

यह सोचता हुआ वह आंगन पार करने लगा कि भला बिल्ली से वह क्यों डर रहा था?

कमरे के दरवाजे पर पहुंचते ही उसकी नजर पुनः रूबी की लाश पर पड़ी और अपनी गर्दन के आसपास झूलता फांसी का मजबूत फन्दा उसे तत्काल नजर आने लगा।

¶¶

उसे महसूस हो रहा था कि रूबी की हत्या करके उसने शायद अपनी जिन्दगी का सबसे ज्यादा मूर्खतापूर्ण काम किया है—यह उसकी पत्नी हो या न हो, मगर इसकी हत्या के जुर्म से बचना एकदम नामुमकिन है, कानून उसे फांसी पर लटका देगा।

तो क्या अब वह खुद को कानून के हवाले कर दे?

सजा का ख्याल आते ही उसके समूचे जिस्म में झुरझुरी-सी दौड़ गई—उसके दिमाग ने कहा कि—"नहीं, तुझे रूबी का खून करने से भी बड़ी यह मूर्खता नहीं करनी चाहिए।

फिर क्या करूं मैं?

इस हत्या के जुर्म से बचने की कोशिश!

कैसे?

दिल के अन्दर छुपे किसी शैतान ने कहा—हत्या करते तुझे देखा ही किसने है, सिर्फ एक बिल्ली ने और वह किसी को कुछ नहीं बता सकती—इस राज को भी केवल दो ही व्यक्ति जानते हैं कि तू यहां आया है—रूपेश और राजाराम।

'ग.....गजेन्द्र भी तो जानता है? वह बड़बड़ाया।'

'चलो मान लिया। उसी शैतान ने कहा...म...मगर वे तेरा कर क्या सकेंगे—तू खुद अपने आपको नहीं जानता, फिर वे तेरे बारे में पुलिस को क्या बता सकेंगे-वे केवल तुझे जॉनी के नाम से जानते हैं, तू यहां से भाग जा।'

'क.....कहां?'

'कहीं भी, दुनिया बहुत बड़ी है—तू किसी दूसरे नाम से रह सकता है।'

'म....मगर—रूपेश तो आने ही वाला होगा?'

'इसीलिए तो कहता हूं कि जल्दी से भाग जा यहां से, अगर वह आ गया तो फिर बच निकलने का यह आखिरी मौका भी तेरे हाथ से जाता रहेगा।'

'पुलिस मेरा फोटो अखवार में छपवा देगी।'

'अभी समय है, यहां मौजूद अपने सभी फोटुओं को जलाकर राख कर दे बेवकूफ।'

ऐसे संवेदनशील समय में इंसान के दिमाग में जब भी द्वन्द होता है, तब उसके अन्दर छुपे शैतान की ही जीत होती है—ऐसे हर क्षण में इंसान की आत्मा मर जाया करती है और वैसा ही इस युवक के साथ भी हुआ—वह अपने अतीत की तलाश में निकला था और शायद अतीत की ही किसी गुत्थी के कारण रूबी की हत्या कर बैठा।

अब उसके लिए अपने अतीत को तलाश करना उतना महत्वपूर्ण नहीं था, जितना इस हत्या के जुर्म में गिरफ्तार होने से खुद को बचाना—अतीत की तलाश में भटकते जो गुत्थियां उसके सामने पेश आई थीं, वे गुत्थियां ही रह गईं और दिलो-दिमाग से पूरी तरह

चौकन्ना होकर अब वह खुद को बचाने की कोशिश में जुट गया।

उसने निश्चय कर लिया था कि इस मकान में वह अपना एक भी फोटो नहीं छोड़ेगा, इसीलिए सारे मकान की तलाशी ले डाली—अपने और रूबी के ढेर सारे फोटुओं से भरी एक एलबम मिली उसे—इस एलबम के चन्द फोटुओं को देखकर उसे विश्वास-सा होने लगा कि मैं सचमुच जॉनी ही हूं और रूबी मेरी पत्नी थी।

मगर इस विषय में अब विस्तारपूर्वक सोचने के लिए उसके पास समय नहीं था। एलबम को फर्श पर डालकर उसने आग लगा दी और उस क्षण उसके दिमाग में एक बहुत ही भयानक ख्याल उभरा।

यह कि क्यों न वह रूबी की लाश को भी जलाकर राख कर दे?

अब उसे अपने इन भयानक ख्यालों से डर नहीं लग रहा था। दौड़कर किचन में पहुंचा—थोड़ी-सी कोशिश के बाद ही उसे तेल से भरी एक कनस्तरी मिल गई।

कनस्तरी को उठाकर वह कमरे में ले आया।

फर्श पर बिखरे रूबी के सारे कपड़े समेटकर उसने लाश के ऊपर डाले। कनस्तरी खोलकर मिट्टी का तेल लाश के ऊपर—सारे कमरे में मिट्टी के तेल की दुर्गन्ध फैल गई।

उसने माचिस के मसाले पर रगड़कर तीली जलाई।

अभी उसे लाश की तरफ उछालने ही वाला था कि स्वयं ही उछल पड़ा—सारे मकान में कॉलबेल के बजने की आवाज़ बड़े जोर से गूंजी थी।

युवक थरथरा उठा। तीली बुझ गई।

बिजली की-सी तेजी से उसके दिमाग में यह विचार कौंधा था कि कौन हो सकता है?

फिर उतनी ही तेजी से यह कि—रूपेश—शायद वह रूपेश ही होगा।

उफ्! यह कम्बख्त दस-पन्द्रह मिनट बाद नहीं आ सकता था। युवक बुरी तरह हड़बड़ा गया। एकदम से वह कुछ फैसला नहीं कर सका—अभी हक्का-बक्का-सा वह यथास्थान खड़ा ही था कि कॉलबेल पुनः घनघना उठी।

युवक की सिट्टी-पिट्टी गुम।

बौखलाकर उसने अपने चारों तरफ देखा और फिर दौड़ता हुआ किचन में आया—कुछ सोचकर ठिठका, दबे पांव गैलरी पार की। दरवाजे के समीप पहुंचकर धीमे से बोला —"कौन है?"

"मैं रूपेश हूं, दरवाजा खोलो।"

युवक की खोपड़ी रूपेश की आवाज को सुनने के बाद हवा में नाच उठी।

उसके दिमाग में बिजली के समान कौंध-कौंधकर ये सवाल उठ रहे थे कि एकमात्र रूपेश ही वह व्यक्ति है, जो यह जानता है कि मैं ही सिकन्दर भी हूं—वह पुलिस को बता सकता है कि मैं यहां कहां से, कैसे और क्यों आया था?

उसके बयान के आधार पर पुलिस न्यादर अली के यहां से मेरा फोटो हासिल कर लेगी और फिर मेरा वह फोटो एक हत्यारा कहकर अखबारों में छाप दिया जाएगा।

दुनिया के किसी भी कोने में, किसी भी नाम से मेरा सुरक्षित रहना दूभर हो जाएगा।

यदि रूपेश न हो, तब मैं बिल्कुल सुरक्षित हूं।

बाहर से पुनः रूपेश की आवाज उभरी— "क्या बात है जॉनी, दरवाजा खोलो।"

"ए....एक मिनट ठहरो, अभी खोलता हूं।" युवक ने जल्दी से कहा और फिर दबे पांव तेजी से गैलरी पार करके आंगन में पहुंच गया।

अचानक ही उसे लगने लगा था कि एकमात्र रूपेश ही है, जो मेरा सम्पूर्ण रहस्य जानता है। जब तक यह रहेगा, कानून नाम की धारदार तलवार मेरी गर्दन पर लटकती रहेगी और यही न रहे तो फिर मैं सुरक्षित हूं।

दुनिया का कोई भी कानून मुझ तक नहीं पहुंच सकेगा।

“उसे मार दो—अगर खुद इस दुनिया में रहना चाहते हो तो उसे मारना तुम्हारे लिए बहुत जरूरी है।” शैतान उसके कान में फुसफुसाया।

"म...मतलब एक कत्ल और?" बड़बड़ाकर युवक ने चारों तरफ देखा, रसोई के एक कोने में पड़ी पत्थर के कोयलों को तोड़ने के काम में आने वाली लोहे की एक भारी हथौड़ी पर उसकी नजर स्थिर हो गई।

शैतान फुसफुसाया—“यह कत्ल करे बिना तुम पहले कत्ल की सजा से बच नहीं सकोगे, बचने के लिए यह एक और हत्या तुम्हें करनी ही होगी।"

झपटकर वह रसोई में पहुंचा। हथौड़ी उठा ली उसने।

इस वक्त युवक बहुत ही खूंखार नजर आ रहा था। हथौड़ी संभाले आंगन पार करके वह गैलरी में पहुंचा। दरवाजे से थोड़ा इधर ही गैलरी की दीवार में एक आला था—युवक ने हथौड़ी उसी में रख दी।

दरवाजे पर दस्तक हुई, साथ ही रूपेश की आवाज—“इतनी देर से तुम क्या कर रहे

हो जॉनी, दरवाजा खोलो।"

"खोलता हूं।" युवक के मुंह से अजीब-सी आवाज निकली और आगे बढ़कर उसने सांकल खोल दी—दरवाजा खोलते ही उसका दिल जोर से धड़का।

"धक्क्!"

बस, अन्तिम बार धड़ककर दिल मानो शान्त हो गया।

हक्का-बक्का—किसी मूर्ति के समान खड़ा रह गया था वह, और उसकी ऐसी हालत रूपेश के साथ गजेन्द्र को देखकर हुई थी।

रूपेश के साथ गजेन्द्र भी दरवाजे पर खड़ा था।

युवक का चेहरा एकदम फक्क पड़ गया—हवाइयां उड़ने लगीं—जुबान तालू में चिपक गई। लाख चाहकर भी मुंह से वह कोई आवाज नहीं निकाल सका।

"हैलो जॉनी।" गजेन्द्र ने कहा।

"ह.....हैलो।" अपनी ही आवाज उसे कहीं बहुत दूर से आती महसूस हो रही थी। होश फाख्ता थे उसके—रूपेश उसे देखकर मुस्करा रहा था।

युवक के होठों पर अजीब मूर्खता-भरी मुस्कान थिरक गई।

"क्या बात है?" रूपेश ने पूछा—"दरवाजा खोलने में इतनी देर कैसे लग गई?"

कुछ अटपटा-सा जवाब देने के लिए युवक ने अभी मुंह खोला ही था कि उसकी बगल में खड़े गजेन्द्र ने कहा—"भाभी से दो महीने बाद मिला है, व्यस्त होगा...क्यों जॉनी?"

रूपेश धीमे से हंस दिया।

बौखलाकर युवक ने भी खीसें निपोर दीं, जबकि रूपेश के साथ खड़े गजेन्द्र ने बताया, "तुम्हारे यह दोस्त सारे भगवतपुरे में तुम्हारा मकान तलाशते फिर रहे थे जॉनी, मुझे टकरा गए और मैं इन्हें यहां ले आया।"

"थ...थैंक्यू।" यह शब्द उसके मुंह से बड़ी कठिनाई से निकल सका।

"ओoकेo जॉनी, चलता हूं।" कहने के साथ ही उसने हाथ आगे बढ़ा दिया। युवक ने जल्दी से हाथ मिलाया। जाते हुए गजेन्द्र ने कहा—"तो शाम को जम रहे हो न?"

"हां...हां—क्यों नहीं!"

"अपने इस दोस्त को भी लाना।" कहता हुआ गजेन्द्र एक तरफ को चला गया—

हक्का-बक्का-सा खड़ा युवक अभी उसे जाता देख ही रहा था कि रूपेश ने कहा—"क्या बात है दोस्त, तुम कुछ 'एबनॉर्मल' से लग रहे हो?"

"न...नहीं तो...ऐसी कोई बात नहीं है, मगर तुम उसे यहां क्यों ले आए?"

"राजाराम ने मुझे यहीं का पता दिया था, भगवतपुरे में पहुंचने के बाद इस मकान के नम्बर के बारे में पूछने लगा तो वह मेरे साथ हो लिया।"

"खैर—आओ।" कहता हुआ युवक दरवाजे के बीच से हटा तो रूपेश गैलरी में आ गया। युवक ने जल्दी से दरवाजा बन्द करके सांकल चढ़ाई, रूपेश ने पूछा—"कहो, यहां आने के बाद किस नतीजे पर पहुंचे?"

"वह सब मैं तुम्हें बाद में बताऊंगा रूपेश, पहले तुम बताओ कि वहां क्या हुआ—मेरे गायब होने की सेठ न्यादर अली पर क्या प्रतिक्रिया हुई थी?"

"वह बुरी तरह परेशान हो गया था, चीखने-चिल्लाने लगा—नौकरों पर और सबसे ज्यादा मुझ पर बरस पड़ा—कहने लगा कि मैंने तुम्हें रखा किसलिए था—अपना बेटा गुम होने की रपट भी लिखवा दी है उसने।"

"तुमने राजाराम को तो सिकन्दर वाली कहानी नहीं बताई है?"

"मेरा दिमाग खराब था क्या?"

"गुड़, अन्दर चलो...मैं तुम्हें रूबी से मिलाता हूँ।"

रूपेश आगे बढ़ गया। युवक उसके पीछे था—इस वक्त उसका दिल बहुत जोर-जोर से धड़क रहा था, किन्तु निश्चय कर चुका था कि रूपेश के आला पार करते ही वह आले के समीप पहुंचेगा, हथौड़ी उठाएगा और उसके सिर पर दे मारेगा।

उस वक्त युवक ने अपनी नसों में दौड़ता खून एकदम रुक गया-सा महसूस किया, जब आले के समीप पहुंचकर रूपेश खुद ही रुक गया—वह लम्बी-लम्बी सांसें लेता हुआ बोला—"क्या बात है, यहां मिट्टी के तेल की बदबू क्यों फैली हुई है?"

सुन्न पड़ गया युवक का दिमाग।

हड़बड़ाकर बोला—"क.....कोई विशेष बात नहीं है, स्टोव में डालते वक्त रूबी से ही थोड़ा तेल बिखर गया था।"

एकाएक ही चौंकते हुए रूपेश ने पूछा—"क्या बात है—तुम इतने घबराए हुए क्यों हो?"

"भ.....भगवान के लिए चुप रहो—अगर रूबी ने कुछ सुन लिया तो सब गड़बड़ हो जाएगा—प्लीज, चुपचाप अन्दर चलो रूपेश।"

वह आगे बढ़ गया।

आले के समीप पहुंचते ही युवक ने हथौड़ी उठा ली।

रूपेश कह रहा था—"राजाराम की बात सुनने के बाद तो मैं कुछ ज्यादा ही, आह...।"

सिर पर भारी हथौड़ी की ऐसी जोरदार चोट पड़ी कि हलक से एक चीख निकल पड़ी। आंखों के सामने रंग-बिरंगे तारे नाचे और फिर उसकी आंखों के सामने घना काला अंधेरा छाता चला गया।

युवक हथौड़ी वाला हाथ ऊपर उठाए दूसरा वार करने के लिए तैयार खड़ा था, जबकि दोनों हाथों से अपना सिर पकड़े रूपेश किसी शराबी के समान लड़खड़ाने के बाद कटे वृक्ष-सा युवक के पैरों के नजदीक गिर गया।

दांत पर दांत जमाए युवक अपने स्थान पर खड़ा कांपता रहा।

फिर उसने हथौड़ी एक तरफ फेंकी, जल्दी से नीचे बैठकर रूपेश की नब्ज देखी, नब्ज चल रही थी, मतलब यह कि वह केवल बेहोश हुआ था।

युवक ने जल्दी से उसकी दोनों टांगें पकड़ीं और फिर पूरी बेरहमी के साथ उसके जिस्म को घसीटता हुआ आंगन में से गुजरकर उसी कमरे में ले आया, जिसमें रूबी की लाश पड़ी थी।

युवक ने रूपेश के बेहोश जिस्म को उठाकर रूबी की लाश के ऊपर डाला और जेब से माचिस निकाल ली।

तीली को मसाले पर रगड़ते वक्त उसके चेहरे पर बहुत सख्त भाव थे। चेहरा किसी खुरदरे पत्थर-सा महसूस हो रहा था—ढूंढने पर भी उसके चेहरे पर से इस वक्त दया अथवा वेदना का कोई चिन्ह नहीं मिल सकता था—फर्...र्र...र्र...से तीली के सिरे पर मौजूद मसाला जला।

युवक की आंखों में हिंसक भाव थे।

सच ही कहा है किसी ने—अपने प्राण हर व्यक्ति को हर कीमत से कहीं ज्यादा प्यारे होते हैं...अगर किसी को यह पता लग जाए कि सारी दुनिया में आग लगाने से उसके अपने प्राण बच सकते हैं तो वह सारी दुनिया को जलाकर राख करने में एक पल के लिए भी नहीं हिचकेगा।

और फिर इस युवक को तो सिर्फ एक लाश और दूसरे जिन्दा शरीर को आग के हवाले करना था। अगर मैं यह लिखूं कि वह हिचका था तो वह गलत होगा—एक पल के लिए भी तो नहीं हिचका वह। हां...यह सोचकर दिल जरूर कांपा था कि वह कितना

भयानक काम कर रहा है, मगर दिमाग में इस ख्याल के उठते ही कि उसके जीवित रहने के लिए इन दोनों का राख होना जरूरी है, उसने तीली उछाल दी।

मिट्टी के तेल से तर रूबी की लाश ने 'फक्क' से आग पकड़ ली—चेहरे पर हिंसक भाव लिए युवक दरवाजे के समीप खड़ा सब कुछ देखता रहा—आधे मिनट में ही उन दोनों जिस्मों ने एक छोटी-सी होली का रूप ले लिया।

कमरे में गोश्त के जलने की दुर्गन्ध फैलने लगी।

युवक तब चौंका जब उसने रूपेश के जिस्म में हल्की-सी हरकत महसूस की—उस वक्त तो उसके रोंगटे ही खड़े हो गए, जब रूपेश के कण्ठ से घुटी-घुटी-सी चीख निकली —जिस्म के आग में जलने से शायद उसकी चेतना लौट रही थी।

लपलपाती आग ने बेड का किनारा पकड़ लिया।

चेहरे पर वही कठोरता लिए युवक तेजी से घूमा, कमरे से बाहर निकला और दरवाजा भड़ाक से बन्द करके उसने सांकल चढ़ा दी।

बहुत तेजी के साथ उसने आंगन और गैलरी पार की।

¶¶

युवक जानता था कि जो कुछ वह करके आया है, यह बहुत देर तक लोगों की नजरों से छुपा नहीं रह सकेगा—मकान के अन्दर से उठता धुआं पड़ोसियों को शीघ्र ही आकर्षित कर लेगा—मकान का मुख्य दरवाजा वह बाहर से बन्द करके आया है, अत: भगवतपुरे के निवासी शीघ्र ही उसके अन्दर दाखिल हो जाएंगे, तब उन्हें पता लगेगा की वहां दो लाशें भी हैं—फायर ब्रिगेड और पुलिस को फोन किया जाएगा।

पहले आग पर काबू पाया जाएगा—फिर शुरू होगी पुलिस कार्यवाही।

सम्भव है कि गजेन्द्र पुलिस को उसका हुलिया भी बता दे, बस—हुलिए और जॉनी नाम से ज्यादा वह कुछ नहीं बता सकेगा।

अत: यदि पुलिस के सक्रिय होने से पूर्व मैं गाजियाबाद से बाहर निकल जाता हूं तो फिर कानून की पकड़ से बहुत दूर हूं।

अपने इसी विचार के अन्तर्गत उसने भगवतपुरे से निकलते ही एक रिक्शा पकड़ा, सीधा रेलवे स्टेशन आया और हरिद्वार से जाकर देहली की तरफ जाने वाली गाड़ी में सवार हो गया—सेकंड क्लास का कम्पार्टमेंट भीड़ से खचाखच भरा हुआ था।

वह स्वयं भी उसी भीड़ में जा—मिल गया।

हर आदमी व्यस्त था, अपने में मस्त।

उसकी तरफ ध्यान तक नहीं दिया किसी ने—कौन जानता था कि वह कितना संगीन, घिनौना और भयानक अपराध करके इस ट्रेन से भाग रहा था?

ट्रेन चल पड़ी।

एक बर्थ के कोने पर टिके युवक का दिमाग भी समानान्तर पटरियों पर दौड़ने लगा।

मन-ही-मन अपनी आगे तक की योजना तैयार कर चुका था वह, बल्कि कहना चाहिए कि योजना भी कुछ न थी, सिकन्दर बनकर न्यादर अली की कोठी पर छिप जाना ही उसकी योजना थी। कोई नहीं कह सकता था कि भगवतपुरे में रहने वाला, दो व्यक्तियों का हत्यारा जॉनी ही सिकन्दर है।

उस वक्त न्यादर अली को बताने के लिए वह अपने गायब होने के लिए उपयुक्त बहाने की तलाश कर रहा था, जब अचानक ही नजर कम्पार्टमेंट में मौजूद एक पुलिस इंस्पेक्टर और चार कांस्टेबलों पर पड़ी।

युवक का चेहरा एकदम फक्क पड़ गया।

क्या भगवतपुरे के मकान में लगी आग के सिलसिले में पुलिस इतनी जल्दी सक्रिय हो उठी है—क्या पुलिस को किन्हीं सूत्रों से पता लग गया है कि मैं इस ट्रेन से भागने की कोशिश कर रहा हूं?

हां, गजेन्द्र और रिक्शा वाले के संयुक्त बयान से पुलिस यहां पहुंच सकती है—अगर वे दोनों पुलिस के हाथ लग गए होंगे तो उन्होंने एक ही हुलिया बताया होगा—रिक्शा वाले ने बता दिया होगा कि इस हुलिये की सवारी को उसने भगवतपुरे से हरिद्वार पैसेंजर पर छोड़ा है।

यहां पहुंचने के लिए पुलिस को इतना ही काफी है।

इस किस्म के सैकड़ों विचार नन्हें-नन्हें सर्प बनकर उसके मस्तिष्क में रेंगने लगे थे और शायद इन्हीं सर्पों के कारण युवक पर बौखलाहट-सी हावी होने लगी।

तेजी से धड़कता हुआ दिल पसलियों पर चोट करने लगा।

मस्तक पर पसीना उभरने लगा। उसका दिल चाह रहा था कि उठे, दरवाजे पर पहुंचे और चलती ट्रेन से ही बाहर जम्प लगा दे, मगर उसके विवेक ने कहा कि यह सबसे ज्यादा मूर्खतापूर्ण हरकत होगी।

यह भी तो सम्भव है कि यह पुलिस दल किसी दूसरे ही चक्कर में हो?

अगर ऐसा हुआ तो वह व्यर्थ ही फंस जाएगा, अत: कनखियों से उसने पुलिस दल की तरफ देखा—हाथ में दबे रूल को घुमाता हुआ इंस्पेक्टर एक-एक यात्री को बहुत

ध्यान से देख रहा था—इंस्पेक्टर के चेहरे पर क्रूरता थी, देखने मात्र से ही बहुत हिंसक-सा नजर आता था वह—युवक को महसूस हुआ कि यदि मैं इस इंस्पेक्टर के चंगुल में फंस गया तो यह इतनी बुरी तरह से टॉर्चर करेगा कि मुझे सब कुछ उगल देना पड़ेगा।

एक-एक यात्री को घूरता हुआ वह उसी तरफ बढ़ रहा था।

एकाएक युवक को लगा कि वह हर चेहरे को गजेन्द्र और रिक्शा वाले द्वारा बताए गए हुलिए से मिलाने की कोशिश कर रहा है—मेरे चेहरे पर आकर वह ठिठक जाएगा।

तब, मैं क्या करूंगा?

बल्कि कहना चाहिए कि तब मैं कुछ भी कर पाने को स्थिति में नहीं रहूंगा।

एक यात्री पर इंस्पेक्टर को जाने क्या शक हुआ कि कांस्टेबलों से उसकी तलाशी लेने के लिए कहा—तलाशी में कुछ नहीं मिला तो वे कुछ इधर चले आए।

युवक नर्वस होने लगा।

पसीने से हथेलियां गीली हो गई महसूस हुईं उसे—बेचैनी के साथ हथेलियों को उसने अपनी पतलून पर रगड़ा, अपना चेहरा स्वयं ही उसे पसीने से तर-बतर महसूस हुआ।

दोनों हाथों से चेहरा साफ किया।

और उस वक्त तो उसके होश ही फाख्ता हो गए जब अपने हाथों में से उसे मिट्टी के तेल की दुर्गंध आई।

उफ्फ...कितनी बड़ी गलती कर बैठा है वह?

उसे मकान से निकलने से पहले साबुन से हाथ धोने चाहिए थे।

क्या यह इंस्पेक्टर इस दुर्गन्ध को सूंघ लेगा—क्या इस दुर्गन्ध से ही वह अनुमान लगा लेगा कि मैं क्या करके आ रहा हूं? हां, यदि हुलिए के साथ उसे मेरे हाथों में से यह बदबू भी मिल गई तो बन्टाधार।

इंस्पेक्टर उसके बिलकुल नजदीक आ खड़ा हुआ। न चाहते हुए भी युवक ने चेहरा उठाकर उसकी तरफ देख ही लिया। इंस्पेक्टर को अपनी ही तरफ घूरता पाकर वह सकपका गया। वह महसूस कर रहा था कि उसके अपने चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं—उस वक्त रूबी की लाश के समान निस्तेज था उसका चेहरा।

इंस्पेक्टर कई पल तक उसे कड़ी निगाहों से घूरता रहा।

युवक की सांसें तक रुक गई थीं।

अचानक ही इंस्पेक्टर ने उससे पूछा—"क्या नाम है तुम्हारा?"

"स...सिकन्दर।" वह बड़ी कठिनाई से कह सका।

"कहां से आ रहे हो?"

यह सवाल ऐसा था कि जिसने उसके तिरपन कंपा दिए। एकदम से उसके मुंह से 'गाजियाबाद' निकलने वाला था, तभी दिमाग में विचार कौंधा कि—नहीं, मुझे गाजियाबाद नहीं कहना चाहिए, परन्तु तभी मस्तिष्क में यह विचार भी कौंधा कि, यदि वह 'गाजियाबाद' नहीं कहेगा तो यहां बैठे यात्री चौंक पड़ेंगे।

इनमें से अधिकांश पीछे से आ रहे हैं। उन्होंने मुझे गाजियाबाद से चढ़ते देखा है—यह सारे विचार क्षणमात्र में ही उसके दिमाग में उभरे थे और अगले ही पल उसने जवाब दे दिया था—"गाजियाबाद।"

"कहां जाना है?"

"नई देहली।"

"क्यों?"

"क.....क्यों से मतलब, देहली में मेरा घर है।"

"कहां?"

"लारेंस रोड पर...सेठ न्यादर अली का लड़का हूं मैं।"

"गाजियाबाद क्यों गए थे?"

"बिजनेस के सिलसिले में।"

"क्या बिजनेस है आपका?"

"गत्ते की फैक्ट्री है मेरी।"

"हद है, गत्ते की फैक्ट्री लगाए बैठे हैं और यात्रा कर रहे हैं इस कम्पार्टमेंट में!" अजीब-से अन्दाज में बड़बड़ाते हुए इंस्पेक्टर ने मानो खुद ही से कहा और उसके यूं बड़बड़ाने पर युवक को भी अपनी गलती का अहसास हुआ, निश्चय ही सेठ न्यादर अली के बेटे और एक गत्ता फैक्ट्री के मालिक को कम-से-कम इस कम्पार्टमेंट में नहीं होना चाहिए मगर जो तीर कमान से निकल चुका था, अब वह वापस तो आना नहीं था। इसीलिए खामोश ही रहा।

इंस्पक्टर ने उसी से कहा—"प्लीज, अपना टिकट दिखाइए।"

और हड़बड़ाया-सा युवक जेब से टिकट निकालते वक्त सोच रहा था कि इसी क्षण फंस गया था, गाजियाबाद से देहली तक का टिकट निकालकर उसने इंस्पेक्टर को पकड़ा दिया।

टिकट को उलट-पुलटकर ध्यान से देखने के बाद उसे लौटाते हुए इंस्पेक्टर ने कहा —"प्लीज, स्टैण्डअप।"

युवक के तिरपन कांप गए।

आत्मा तक हिल उठी थी उसकी—समझ नहीं पा रहा था कि इंस्पेक्टर आखिर उसी के पीछे क्यों पड़ गया है-कम्पार्टमेंट में दूसरे यात्री भी तो हैं—क्या उस पर किसी किस्म का शक कर रहा है, क्या उसके हुलिए को वह पहचान गया है?

खड़ा हो जाना युवक की मजबूरी थी।

उसने महसूस किया कि टांगें बुरी तरह कांप रही थीं—बहुत ज्यादा देर तक वह खड़ा नहीं रह सकेगा, गिर पड़ेगा वह—अगर इंस्पेक्टर ने उसकी इस वक्त की अवस्था देखी होती तो किसी भी कीमत पर उसे गिरफ्तार किए बिना न रहता, क्योंकि युवक के दिलो-दिमाग पर छाई नर्वसनेस उसके जिस्म से बुरी तरह छलक रही थी।

मगर एक कांस्टेबल को उसकी तलाशी लेने का हुक्म देकर इंस्पेक्टर एक दूसरे यात्री की तरफ आकर्षित हो गया था और कांस्टेबल का ध्यान उसकी जेबें टटोलने के अलावा किसी तरफ नहीं था, तलाशी के बाद कांस्टेबल ने उसे बैठ जाने का इशारा किया।

युवक 'धम्म' से बैठ गया।

सन्तोष की पहली सांस उसने अभी ली ही थी कि इंस्पेक्टर अपने नथुनों से लम्बी-लम्बी सांसें लेने लगा। एकाएक ही वह बोला—"मिट्टी के तेल की दुर्गन्ध कहां से आ रही है?"

युवक के दिमाग में बिजली-सी कौंध गई।

बेहोश होते-होते बचा वह।

इस कम्बख्त इंस्पेक्टर की नाक कितनी लम्बी है! इतनी दूर से भी उसे मिट्टी के तेल की बदबू आ रही है—युवक जड़वत्-सा बैठा उस इंस्पेक्टर को देखता रहा, जो अभी तक लम्बी-लम्बी सांसें लेने के साथ पता लगाने की कोशिश कर रहा था कि बदबू कहां से आ रही है।

अन्जाने ही में युवक ने अपनी दोनों हथेलियां भींच लीं।

ऊपर वाली बर्थ पर रखे इक्कीस लीटर के एक केन पर रूल मारते हुए इंसपेक्टर ने

पूछा—"यह केन किसका है?"

कम्पार्टमेंट में सन्नाटा छाया रहा, किसी ने कोई जवाब नहीं दिया था।

इंस्पेक्टर ने बड़ी पैनी निगाहों से वहीं बैठे एक-एक यात्री को देखा। इस बार उसका लहजा कुछ कर्कश हो गया था—"बोलते क्यों नहीं, किसका है ये कैन?"

सन्नाटा।

यात्री एक-दूसरे का मुंह देखने लगे।

अब युवक को पता लगा कि इंस्पेक्टर को मिट्टी के तेल की दुर्गन्ध उसके हाथों में से नहीं, इस केन से आ रही थी—कठोर दृष्टि से हर यात्री को घूरते हुए उसने कांस्टेबलों को केन उतारने का आदेश दिया—केन खोलकर देखने पर पाया कि वह मिट्टी के तेल से भरा था।

केन को घूरते हुए इंस्पेक्टर ने कहा—"हूं—सारे देश में मिट्टी के तेल की किल्लत है, जहां से एक बूंद भी मिलने की उम्मीद होती है तो वहां लाइन लग जाती है, मगर यहां इस केन में इक्कीस लीटर तेल यूपी से देहली जा रहा है।"

युवक को खुशी हुई कि मामला उससे सम्बन्धित नहीं था।

इंस्पेक्टर ने पुनः हरेक यात्री को घूरते हुए कहा—"मेरा नाम इंस्पेक्टर चटर्जी है, चुप रहकर इस केन का मालिक मुझसे बच नहीं सकेगा, या तो वह खुद ही बोल पड़े, अन्यथा पता लगाने के मुझे बहुत रास्ते मालूम हैं।"

सनसनी-सी फैल गई वहां, मगर सन्नाटा पूर्ववत् छाया रहा।

अब इंस्पेक्टर चटर्जी के चेहरे पर कठोरता के साथ-साथ गुस्से के भाव भी दृष्टिगोचर होने लगे। इस बार उसके मुंह से गुर्राहट निकली थी—"आखरी बार वार्निंग देता हूं—या तो वह खुद बोल पड़े और अगर मैंने पता लगाया तो खाल खींचकर रख दूंगा।"

कम्पार्टमेंट में मौजूद सभी के चेहरे फक्क पड़ गए।

यह सोचकर युवक संतुष्ट था कि मामला मेरा नहीं है। इस मिट्टी के तेल का मालिक कोई और है—हुंह—मैं व्यर्थ में ही दुबला हुआ जा रहा था, भला इतनी जल्दी उस मामले में पुलिस यहां कैसे पहुंच सकती है?

जब चटर्जी की इस चेतावनी के बाद भी कोई नहीं बोला तो वह चीख पड़ा—"सभी यात्री अपने दोनों हाथ मिलाकर हवा में यूं फैला लें।"

सभी ने देखा कि कहने के बाद इंस्पेक्टर चटर्जी ने अपने दोनों हाथ खोलकर उसी

अन्दाज में फैला दिए थे, जैसे मास्टर की कमची से पिटता बालक फैलाए रखता है।

सभी ने उस अन्दाज में हाथ फैला दिए।

और, सबको देखकर जब युवक ने भी हाथ फैलाए तो उसी क्षण उसके दिमाग को बहुत तेज झटका लगा—इसमें शक नहीं कि हार्टअटैक होते-होते बचा उसे।

एक क्रम में चटर्जी ने यात्रियों की फैली हुई हथेलियां सूंघनी शुरू कर दी थीं—युवक को अपनी आंखों के सामने अंधेरा-सा छाता महसूस हुआ—उफ्फ—क्या मैं इस केन को देहली ले जाने के जुर्म में पकड़ा जाऊंगा?

ये क्या हो रहा है भगवान?

दिमाग जाम हो गया युवक का—जी चाह रहा था कि वह चीख पड़े—केन के मालिक का पता लगाने के लिए यह कोई उपयुक्त तरीका नहीं है—मिट्टी के तेल की बदबू मेरे हाथ में भी है, मगर यह केन मेरा नहीं है।

परन्तु इस बात पर इंस्पेक्टर चटर्जी यकीन नहीं करेगा।

उससे हाथों में मौजूद बदबू का कारण पूछा जाएगा—क्या जवाब देगा वह?

मगर कम्बख्त चटर्जी तो हर यात्री के हाथ सूंघता चला जा रहा है—मेरे हाथों पर वह ठिठक जाएगा—फिर वह मुझे पकड़ लेगा—ऐसे भी जान जाएगा कि मेरे हाथों में बदबू है। इससे अच्छा तो ये है कि मैं स्वयं ही चीखकर उसे बता दूं—मैं दूसरे यात्रियों की गवाही दिला सकता हूं—कई यात्री कह देंगे कि जब मैं यहां आया था तो मेरे हाथ में यह केन नहीं था।

हाथों में मौजूद बदबू का क्या जवाब दूंगा?

इसका जवाब तो मुझे तब भी देना होगा, जब इंस्पेक्टर मेरे हाथों तक पहुंच जाएगा, अत: क्यों न पहले ही खुल जाऊं—शायद वैसा करने से मेरे पक्ष में माहौल बन सके?

युवक का बुरा हाल था।

एक ऐसे अपराध में पकड़ा जाने वाला था वह, जिससे दूर-दूर तक भी उसका कोई सम्बन्ध नहीं था, यदि किसी जुर्म में पकड़कर उसे थाने ले जाया गया तो फिर सम्भव है कि गजेन्द्र और रिक्शा वाले द्वारा बताया गया हुलिया सत्यानाश ही कर दे।

व्यर्थ ही फंसने जा रहा था वह।

दिल चाहा कि अभी-अभी, दहाड़ें मार-मारकर रो पड़े।

जिस्म का रोयां-रोयां खड़ा हो गया। बड़े ही संवेदनशील क्षण थे—दिलो-दिमाग पर छाया आतंक सहना जब युवक के वश में न रहा तो सब कुछ कह देने के लिए उसने मुंह खोला ही था कि बुर्केवाली एक औरत के हाथ सूंघने के तुरन्त बाद ही इंस्पेक्टर ने अपनी पूरी ताकत से रूल उसके हाथों पर मारा।

औरत चीख पड़ी।

गुस्से में तमतमाते हुए चटर्जी ने एक झटके से उसका नकाब उलट दिया—दूसरे यात्रियों के साथ युवक ने भी तवे के पृष्ठ भाग के समान उस काली औरत को देखा, जिसके चेहरे पर उस वक्त वेदना और आतंक के भाव थे।

अच्छा-खासा काला चेहरा इस वक्त सफेद-सा लग रहा था।

"इसे गिरफ्तार कर लो।" औरत की बांह पकड़कर उसे कांस्टेबलों की तरफ धकेलते हुए चटर्जी ने कहर भरे स्वर में कहा—कांस्टेबलों ने औरत को पकड़ लिया।

बचे हुए यात्रियों की तरह युवक ने भी अपने हाथ नीचे गिरा लिए। मस्तक पर से स्वयं ही पसीना सूखता चला गया—धड़कनें अब नियन्त्रण में आ रही थीं।

चटर्जी ने जेब से सामान बरामदी का एक कागज निकालते हुए कहा—"शेष यात्रियों से मैं माफी चाहता हूं—दरअसल मुजरिम को पकड़ने के लिए कभी-कभी हमें शरीफ लोगों के साथ भी सख्ती बरतनी पड़ती है।"

खामोशी छाई रही।

चटर्जी ने फार्म भरा। बुर्के वाली औरत से पूछकर उसका नाम और पूरा पता लिखा—फार्म पर उसके अंगूठे का निशान लगवाया, तब बोला—"औरत पर केस दर्ज करने के लिए दो गवाहों की जरूरत पड़ेगी और वे आदमी पब्लिक के ही होने चाहिए—एक साइन आप कीजिए मिस्टर।" चटर्जी ने युवक के सामने बैठे एक अधेड़ आयु के व्यक्ति से कहा था।

"म...मैं।" वह सकपका-सा गया।

"घबराइए नहीं, इसमें चिंता करने जैसी कोई बात नहीं है।" चटर्जी उसे समझाने के अन्दाज में बोला—"आप सिर्फ यह कह रहे हैं कि आपके सामने मिट्टी के तेल से भरा यह केन पुलिस ने इस औरत से बरामद किया है, जिसके अंगूठे का निशान फार्म पर है और यही बात अपने अदालत में कहनी होगी।"

"म...मगर अदालत के चक्कर कौन काटेगा, इंस्पेक्टर?"

"हम आपकी परेशानी समझते हैं।" चटर्जी ने हल्की-सी मुस्कान के साथ कहा—"मगर आपको भी हमारी दिक्कत समझनी चाहिए। हमारे लिए यह जरूरी होता है—

एक बार से ज्यादा आपको अदालत में नहीं जाना पड़ेगा, और फिर सहयोग करना आपका फर्ज है।"

अनिच्छापूर्वक अधेड़ आयु के व्यक्ति को साइन करने ही पड़े।

"पूरा एड्रेस लिख दीजिए, ताकि आपसे सम्पर्क स्थापित करने में किसी तरह की प्रॉब्लम न आए।" चटर्जी ने कहा।

एड्रेस लिखते वक्त अधेड़ के चेहरे पर ऐसे भाव थे, जैसे वह अपनी मौत के परवाने पर साइन कर रहा हो—उसे देखकर युवक सोच रहा था कि पता नहीं वह बेवकूफ क्यों मरा जा रहा है?

तभी, फार्म उसी की तरफ बढ़ाते हुए इंस्पेक्टर ने कहा—"दूसरे साइन आप कर दीजिए, मिस्टर सिकन्दर।"

सकपका गया युवक।

हिल तक नहीं सका वह, किंकर्तव्यविमूढ़-सा चटर्जी के चेहरे को देखता रहा, जबकि उसे इस अवस्था में देखकर इंस्पेक्टर धीमे-धीमे मुस्करा रहा था—"आप तो पढ़े-लिखे हैं, मिस्टर सिकन्दर—क्या आपको भी वे सब बातें समझानी पड़ेंगी, जो अभी-अभी...।"

"मु.....मुझे माफ ही कर दो इंस्पेक्टर तो ज्यादा अच्छा है।"

"क्यों?"

"मैं देहली का रहने वाला हूं, यह केस शायद गाजियाबाद की अदालत में जाएगा—अगर गाजियाबाद के ही किसी आदमी को गवाह बना लें तो शायद ज्यादा मुनासिब रहे।"

"व्यापार के सिलसिले में आप आते ही रहते हैं और फिर भी भले ही प्रदेश अलग हैं, किन्तु देहली और गाजियाबाद में दूरी ही कितनी है?"

"य...यह तो ठीक है, मगर फिर भी...?"

"इस तरह तो हर आदमी पीछा छुड़ा सकता है मिस्टर सिकन्दर और यदि हम इस तरह करने लगे तो बस हो ली कानून की हिफाजत—प्लीज, साइन कीजिए।"

कैसी विवशता थी युवक के सामने!

'सिकन्दर' के नाम से उसे साइन करने ही पड़े—पता भी लिखा—लारेंस रोड पर स्थित न्यादर अली के बंगले का नम्बर उसे मालूम नहीं था, मगर ऐसा कह नहीं सकता था, क्योंकि इस बात पर भला कोई कैसे यकीन कर लेगा कि किसी को अपने ही मकान का नम्बर मालूम न हो—उसने यूं ही एक काल्पनिक नम्बर लिख दिया।

सब कुछ सही लिखना इसीलिए जरूरी था, क्योंकि कुछ ही देर पहले चटर्जी के सवालों के जवाब में वह बता चुका था। फार्म उससे लेकर 'तह' बनाते हुए इंस्पेक्टर ने कहा—

"थैंक्यू मिस्टर सिकन्दर, पहली बार मेरा अनुमान गलत निकला है।"

"क्या मतलब?"

"जब यहां आते ही मैंने आपको घूरा तो आपके चेहरे पर जाने क्यों मैंने हवाइयां-सी उड़ती महसूस की...मेरा अनुमान था कि केन शायद आपकी है, मगर वह गलत निकला—मेरी जिन्दगी में ऐसा पहली बार ही हुआ है।"

"तो क्या इसीलिए आपने मुझसे इतने ढेर सारे सवाल किए थे?"

"जी हां....खैर, आपको हुई असुविधा के लिए माफी चाहता हूं।" कहने के तुरन्त बाद ही वह कांस्टेबलों की तरफ घूम गया और उसने उन्हें उतर जाने का संकेत किया।

साहिबाबाद के प्लेटफार्म पर पहुंचने की कोशिश में ट्रेन की गति धीमी पड़ती जा रही थी—यहां उतरने वाले यात्री खड़े हो गए।

पुलिस टुकड़ी को जाते देख युवक ने एक लम्बी संतोष की सांस ली—वहां केवल दो मिनट ठहरने के बाद रेंगती हुई ट्रेन आगे बढ़ गई—गति पकड़ने लगी—युवक के आसपास बैठे लोग उसी घटना के बारे में चर्चा करने लगे।

युवक का दिमाग ट्रेन की-सी गति के साथ ही विचारों में गुम था।

उसे लग रहा था कि फिलहाल तो वह बच गया, मगर आनन-फानन में कुछ-न-कुछ गलत जरूर हो गया है—गवाह के रूप में चटर्जी उसके साइन और एड्रेस ले गया है—बंगले का नम्बर गलत होने से कोई फर्क नहीं पड़ेगा।

लारेंस रोड पर पहुंचने के बाद किसी का भी न्यादर अली के बंगले पर जाना आसान है। अब इंस्पेक्टर के पास सबूत है कि आज की तारीख में हरिद्वार पैसेंजर से गाजियाबाद से देहली जा रहा था—भगवतपुरे में लगी आग से हरिद्वार पैसेंजर का टाइम सही टैली करेगा—यदि पुलिस के हाथ गजेन्द्र और रिक्शा वाला लग जाए तो पुलिस को मेरा हुलिया मिल जाएगा।

संयोग से यदि वह हुलिया इस काइयां इंस्पेक्टर के सामने आ गया तो मेरी याद आने में इसे एक पल भी नहीं लगेगा और उसी क्षण उसकी समझ में मेरे चेहरे पर उड़ती हवाइयों का अर्थ भी आ जाएगा—फिर उसे लारेंस रोड पहुंचने में देर नहीं लगेगी।

इन सब विचारों ने युवक को एक बार फिर उद्विग्न कर दिया।

आतंक की अधिकता के कारण एक बार फिर उसका दिल घबराने लगा—पुलिस कभी लारेंस रोड तक न पहुंच सके, एकमात्र इसी उद्देश्य से तो उसने जिन्दा रूपेश को जलाकर राख कर दिया था और अब, अपने पीछे वह खुद ही गाजियाबाद से लारेंस रोड तक की यात्रा के लिए पटरियां बिछाता जा रहा था।

इन सब विचारों में फंसकर अचानक ही उसे अपना लारेंस रोड जाना खतरनाक नजर आने लगा—यह बात उसके दिमाग में बैठती चली गई कि अब 'सिकन्दर' बनकर शेष जिन्दगी गुजारना उसके लिए बिल्कुल असम्भव है।

सारे सबूत बिछ चुके हैं, वह किसी भी क्षण पकड़ा जाएगा।

फिर कहां जाता?

एकाएक ही दिमाग में 'बस्ती' का ख्याल उभर आया—फिर उसने जितना सोचा, यही बात जमी कि बस्ती चले जाना ही सुरक्षित है—यदि वह सचमुच जॉनी है, अगर वास्तव में रूबी ही उसकी पत्नी थी, तो बस्ती में उसके अपने मां-बाप हैं।

अपना घर है, छोटे भाई-बहन हैं।

अगर रूबी द्वारा सुनाई गई कहानी सही थी तो उसके बस्ती के पते का राज किसी को मालूम नहीं है। यह रहस्य अपनी पत्नी होने के नाते उसने केवल रूबी को ही बताया होगा, अतः बस्ती का ख्याल भी पुलिस के दिमाग में नहीं आ सकेगा।

मगर यदि रूबी द्वारा सुनाई गई कहानी काल्पनिक हुई?

अगर वहाँ उसका कोई घर न हुआ तो?

तो कम-से-कम वह यह तो समझ जाएगा कि रूबी झूठी थी। न्यादर अली नहीं—और फिर कम-से-कम यह बोझ तो उसके दिल पर से हट जाएगा कि उसने अपनी ही पत्नी की हत्या की है।

'लेकिन यदि ऐसा हुआ तो होगा क्या...फिर कहां जाऊंगा मैं?'

'तब की तब देखूंगा, फिलहाल यहां से बहुत दूर निकल जाना ही जरूरी है और बस्ती यहां से काफी दूर है, इस चक्कर में अतीत की तलाश भी हो जाएगी।'

'मैं देहली से सीधा बस्ती चला जाऊंगा।'

'इस यात्रा के लिए बस ही ठीक रहेगी, ट्रेन मेरे लिए सुरक्षित नहीं है—भले ही देहली से बस्ती तक मुझे दो-बार बसें बदलनी पड़ें, मगर यह लम्बी यात्रा बस से करनी ही सब से ज्यादा सुरक्षित है।'

'और इस ट्रेन में ज्यादा देर रहना भी ठीक नहीं है।'

'सम्भव है कि इंस्पेक्टर चटर्जी को मेरा हुलिया मिल जाए और वह तुरन्त ही वायरलेस पर हरिद्वार पैसेंजर से मेरे देहली पहुंचने की सूचना देहली पुलिस को दे दे।'

'उस अवस्था में मैं स्टेशन पर ही पकड़ लिया जाऊंगा।'

इस ख्याल के दिमाग में जाते ही वह कुछ और घबरा गया।

उसने शाहदरे में ही उतर जाने का निश्चय किया—शाहदरे से टू-सीटर द्वारा वह सीधा कश्मीरी गेट जाएगा और वहीं से बस्ती की तरफ जाने वाली बस पकड़ लेगा।

यह सोच-सोचकर उसकी हालत अजीब होने लगी कि रूबी की हत्या के बाद से उसके दिलो-दिमाग को एक मिनट के लिए भी आराम नहीं मिला था—प्रत्येक मिनट, हरेक पल बहुत ही दहशतनाक, उत्तेजक और संवेदनशील बना रहा था।

शाहदरे में ट्रेन रुकी।

वह उतर पड़ा। बहुत ध्यान से उसने अपने चारों तरफ देखा—दूर, एक पुलिस वाला खड़ा था, हालांकि उसका ध्यान युवक की तरफ बिल्कुल नहीं था, फिर भी वह रास्ता काटता हुआ निकास द्वार की तरफ बढ़ा।

द्वार पर खड़ा एक टीoटीo गुजरने वालों से टिकट कलेक्ट कर रहा था।

जेब से अपना टिकट निकालकर युवक भी निकलने वालों की भीड़ में शामिल हो गया, अचानक ही उसके मन को यह सवाल परेशान करने लगा कि क्या टीoटीo देहली के टिकट पर, उसके शाहदरा पर उतरने पर चौंकेगा?

मगर वैसा कुछ नहीं हुआ।

टीoटीo ने उसका टिकट बिना देखे गड्डी में रख लिया। वह तेजी से सीढ़ियां उतरता चला गया—सड़क पर पहुंचा—वहां कोई थ्री-व्हीलर वाला नहीं था।

रिक्शा वाले जरूर खड़े थे, मगर उनसे उसका कोई मतलब हल होने वाला नहीं था। उसे मालूम था कि कश्मीरी गेट के लिए थ्री-व्हीलर राधू सिनेमा के आसपास से मिल जाएंगे।

वह पैदल ही तेजी के साथ राधू के सामने खुलने वाले चौराहे की तरफ बढ़ रहा था कि स्कूल के बच्चों से भरी एक रिक्शा उसके बराबर से गुजरी और उस रिक्शा में बैठा एक बच्चा जोर-जोर से चिल्ला उठा—"प...पापा...पापा।"

बच्चा कुछ इस तरह चिल्लाया था कि दूसरे राहगीरों के साथ ही युवक का ध्यान उधर चला गया और उस वक्त तो वह भौंचक्का ही रह गया, जब उसने महसूस किया कि बच्चा उसे ही पुकार रहा है—युवक ने घबराकर अपने आसपास देखा।

इस उम्मीद में कि शायद यह मेरे आसपास खड़े किसी व्यक्ति को पुकार रहा हो, मगर वहां कोई नहीं था—युवक ने चौंककर ढलान पर लुढ़ककर दूर जाती हुई रिक्शा की तरफ देखा, बच्चा अभी तक पागलों की तरह उसी को पुकार रहा था।

युवक के होश उड़ गए।

करीब आठ साल की आयु का वह गोरा-चिट्टा खूब स्वस्थ और गोल चेहरे वाला लड़का था। उसकी पलकें भूरी और आंखें नीली थीं। नीले रंग की हाफ पैन्ट पर वह फुल बाजू की लाल स्वेटर पहने था, रिक्शा के साथ ही उसकी आवाज दूर होती जा रही थी, मगर वह बराबर चीख रहा था—"प...पापा...पापा।"

इस तमाशे को सैंकड़ों राहगीरों ने देखा।

खुद युवक की नजर भी उस रिक्शा पर टिकी हुई थी और फिर अगले पल तो जैसे कमाल ही हो गया—चीखते हुए बच्चे ने चलती रिक्शा में से ही सड़क पर छुलांग लगा दी थी, सड़क पर वह बेचारा घुटनों के बल गिरा।

जाने क्यों युवक के दिल में एक टीस-सी उठी।

अन्जाने में ही वह बच्चे की तरफ दौड़ पड़ा—उसने देख लिया था कि बच्चे के घुटने छिल गए थे, वहां से खून बहने लगा था, मगर उसकी परवाह किए बिना वह दीवानों की तरह अपनी दोनों नन्हीं बाहें फैलाए—"पापा...पापा"—चिल्लाता हुआ युवक की तरफ ही दौड़ता चला आया।

वे मिले।

जाने किस भावना से प्रेरित होकर युवक ने उस मासूम बच्चे को अपनी बांहों में भर लिया और उससे किसी बेल के समान लिपटा बच्चा सुबक-सुबककर रो रहा था—"आप कहां चले गए थे, पापा? बहुत गन्दे हैं आप—आपको याद करके मैं हमेशा रोता रहा हूं... और मम्मी भी...दादी तो पागल ही हो गई हैं।"

युवक की आंखें भर आई—दिमाग सुन्न पड़ता जा रहा था।

¶¶

रूपेश के कण्ठ से हृदय-विदारक चीखें निकल रही थीं, होश में आते ही सबसे पहले उसने यह महसूस किया कि उसका समूचा जिस्म बुरी तरह जल रहा था—जाने किस अज्ञात शक्ति से संचालित होकर वह उछलकर खड़ा हो गया।

नजर किसी होली के समान जलते एक नग्न जिस्म पर पड़ी—खुद उसके जिस्म से आग की लपटें लपलपा रही थीं, उसके कपड़ों में आग लगी हुई थी।

जिस्म भी जल रहा था।

मुंह से स्वयं ही चीखें निकल रही थीं, और फिर जाने किस शक्ति ने उसे इतनी बुद्धि दे दी कि वह कमरे के आगरहित फर्श पर लुढ़कता फिरने लगा।

उसके अवचेतन मस्तिष्क में एकमात्र यही विचार उभरा था कि उसके कपड़ों में आग लगी हुई था और इस आग से बचने का केवल एक ही रास्ता है, वही उसने किया भी —चीखता हुआ जाने वह कितनी देर तक फर्श पर लुढ़कता रहा।

तन के कपड़ों पर लगी आग काफी हद तक बुझ गई।

मुंह से अब भी चीखें निकल रही थीं, क्योंकि वह काफी बुरी तरह जल चुका था— शायद जिस्म में गर्मी होने के कारण ही वह उठकर खडा हो गया था—कमरे का दृश्य बहुत ही खौफनाक था—नग्न जिस्म से लपलपाने वाली आग डबलबेड को घेर चुकी थी।

अब वह शेष कमरे में फैलने जा रही थी।

कमरे में धुआं भी काफी था।

एकाएक ही रूपेश के दिमाग में यह ख्याल उठा कि कुछ ही देर में यह सारा कमरा आग की लपटों की भेंट चढ़ जाएगा—चीखता हुआ ही वह दरवाजे पर झपटा।

यह महसूस करते ही उसके होश उड़ गए कि दरवाजा बाहर से बन्द है।

मुंह से चीखें बराबर निकल रही थीं, मगर फिर भी वह पीछे हटा—किसी सांड की तरह दरवाजे की तरफ दौड़ा—दरवाजे पर उसके कंधे की चोट पड़ी।

दरवाजा बहुत ज्यादा मजबूत नहीं था, चरमरा उठा।

स्वयं उसके कण्ठ ते भी चीख निकली थी, क्योंकि यह कंधा भी शायद जला हुआ था, जिससे दरवाजे पर चोट की थी—प्राणों को बचाने की लालसा बड़ी तीव्र होती है। विशेष रूप से उन क्षणों में, जब व्यक्ति को मृत्यु सामने नजर आ रही हो। उसी लालसा से प्रेरित रूपेश ने
असहनीय टीस और जलन की परवाह किए बिना दरवाजे पर पुनः हमला किया।

आग निरन्तर अपने विकराल रूप की तरफ बढ़ती जा रही थी, धुआं इतना ज्यादा भर चुका था कि सांस लेने पर अब उसे पर्याप्त ऑक्सीजन नहीं मिल रही थी।

बुरी तरह खांस रहा था वह।

पांचवें प्रहार पर दरवाजा टूटकर भड़ाक्-से आंगन में गिरा और उस टूटे हुए दरवाजे पर ही गिरा रूपेश—वह गिरते ही उठा, संभलकर गैलरी की तरफ भागा, परन्तु मुख्य द्वार पर पहुंचने से पहले ही लड़खड़ाकर गिर पड़ा।

उसकी दुनिया में अंधेरा हो चुका था, दिमाग सुन्न पड़ता चला गया। जबकि आंगन में पहुंचने के बाद धुआं जाल की तरफ बढ़ा और उसे पार करके गगन की ओर।

¶¶

फायर ब्रिगेड आग पर काबू पाने के लिए प्रयत्न करने लगी। रूपेश के बेहोश जिस्म को देख जीप में डालकर अस्पताल पहुंचाया जा चुका था—जिस समय इमरजेंसी रूम में डॉक्टर रूपेश के जिस्म से जूझ रहे थे, उसी समय फायर ब्रिगेड मकान में लगी आग से।

आग पर काबू पाने में पूरा एक घंटा लग गया।

तब काम शुरू हुआ वहां पहुंचने वाली पुलिस टुकड़ी का नेतृत्व करने वाले इंसपेक्टर आंग्रे का—अपने साथ वह पुलिस के फोटोग्राफर तथा कुछ कांस्टेबलों को साथ लिए अन्दर दाखिल हुआ—बुरी तरह जले हुए कमरे के दरवाजे पर ही उन्हें ठिठक जाना पड़ा। जहाँ से आग शुरू हुई थी—कमरे के बीचो-बीच फर्श पर एक इंसानी हड्डियों का ढांचा पड़ा था।

खाल पूरी तरह जल चुकी थी।

हड्डियां भी काली पड़ चुकी थीं—बड़ा ही डरावना दृश्य था वह—सारा कमरा फायर ब्रिगेड वालों के पानी से बुरी तरह गीला था, कदाचित् पानी की तीव्र धारा ने ही फर्श पर पड़े इंसानी जिस्म की हड्डियों को भी अव्यवस्थित कर दिया था।

इंस्पेक्टर आंग्रे समझ सकता था कि इस आग में कोई बुरी तरह जलकर खाक हो गया है—वह स्त्री थी या पुरुष, जानने के लिए आंग्रे आगे बढ़ा—हड्डियों के ढांचे, बल्कि कहना चाहिए कि इंसानी हड्डियों के ढेर या मलबे के नजदीक पहुंचा।

आंग्रे ने शीघ्र ही मलबे में से एक नथ, सोने की बालियां और चांदी की पाजेब बरामद कर लीं—जाहिर था कि वह मलबा किसी स्त्री का था।

आंग्रे के दिमाग में यह कहानी स्पष्ट हो गई कि—किसी ने इस मकान में रहने वाले स्त्री-पुरुष को जलाकर राख कर देने की कोशिश की है, स्त्री को मलबे के ढेर में बदलने में वह कामयाब हो गया, परन्तु पुरुष बच गया।

मकान के किसी भी हिस्से से उसे हत्यारे की उंगलियों के निशान या उसके सम्बन्ध में किसी सूत्र के मिलने की आशा कम ही थी, इसीलिए कमरे से बाहर निकल आया।

आंगन पार करने के बाद गैलरी में से गुजरते वक्त अचानक ही उसकी ठोकर किसी भारी वस्तु पर पड़ी। उसने चौंककर देखा—कोयला तोड़ने वाली लोहे की एक भारी हथौड़ी थोड़ी दूर तक लुढ़कती चली गई थी।

इस हथौड़ी को उठाने के लिए आंग्रे नीचे झुका।

मगर तभी जेहन में यह विचार कौंधा कि भला गैलरी में यह हथौड़ी क्या कर रही है, इसी विचार ने उसे ठिठका दिया। उसे लगा कि हथौड़ी का निश्चय ही इस काण्ड से कोई गहरा सम्बन्ध है—सम्भव है कि हत्यारे ने ही इसका प्रयोग किया हो।

यह महसूस करते ही उसकी आंखें चमक उठीं कि इस हथौड़ी पर से उसे इस काण्ड के जन्मदाता की उंगलियों के निशान मिल सकते हैं—उसने पलटकर देखा।

गैलरी के इस सिरे से शुरू होकर आंगन के फर्श से गुजरती खून की एक रेखा पर आंग्रे की दृष्टि पड़ती चली गई—खून की यह लकीर दुर्घटनाग्रस्त कमरे के दरवाजे तक चली गई थी—हां, आंगन में पड़े दरवाजे ने उसका कुछ भाग ढक जरूर लिया था—शायद उस दरवाजे और फायर ब्रिगेड के पानी से गीले हुए फर्श के कारण ही खून की उस लकीर पर पहले उसकी नजर नहीं पड़ी थी।

फोटोग्राफर को उसने हथौड़ी तथा खून की रेखा का फोटो लेने के लिए कहा और स्वयं रेखा को घूरता हुआ, आंगन से गुजरकर कमरे के दरवाजे पर पहुंच गया।

अपना काम निपटाकर कमरे में आ गए फोटोग्राफर से आंग्रे ने पूछा—"यदि किसी बेहोश जिस्म में आग लगा दी जाए तो क्या होगा मार्श?"

"उसे होश आ जाएगा।"

"क्यों?" प्रश्न करने के बाद अपने आशय को और स्पष्ट करते हुए आंग्रे ने पूछा—"जब वह बेहोश है तो उसे पता कैसे लगेगा कि आग उसे जला रही है?"

"बेहोश होना किसी की मृत्यु होना नहीं है, बेहोश व्यक्ति का सिर्फ चेतन मस्तिष्क निष्क्रिय होता है, अवचेतन मस्तिष्क नहीं—जिस्म में होने वाली तीव्र जलन को अवचेतन मस्तिष्क महसूस करेगा और जलन जब असहनीय हो जाएगी, तो चेतन मस्तिष्क भी जाग्रत हो उठेगा और इस प्रक्रिया के होने को ही हम किसी को होश में आना कहते हैं।"

"मतलब यह कि जब आग लगाई गई, तब पुरुष बेहोश था और स्त्री बेहोश नहीं थी।"

"पुरुष के जीवित बचने से ही यह बात जाहिर है।"

चमकदार आंखों वाले आंग्रे ने कहा—"अब मेरे दिमाग में एक कहानी बन रही है, मार्श।"'

"कैसी कहानी?"

"इरादतन मकान के अन्दर दाखिल होकर किसी ने इसकी हत्या की—हत्या के बाद हत्यारा लाश को ठिकाने लगाने की कोई तरकीब सोच ही रहा था कि पुरुष मकान में आ जाता है—घबराया हुआ हत्यारा हथौड़ी की चोट से उसे बेहोश कर देता है—पुरुष किसी को हत्यारे के बारे में न बता सके, इसीलिए हत्यारा पुरुष को भी खत्म कर लेने का निर्णय लेता है—बौखलाहट में एक ही तरकीब उसके दिमाग में आती है—बेहोश व्यक्ति को भी लाश के साथ ही राख कर देने की, क्योंकि इस तरह उसकी समझ के मुताबिक आग लगने के बाद यहां उसके विरुद्ध कोई सबूत भी बाकी रह जाने वाला नहीं था—किचन से मिट्टी के तेल की कनस्तरी लाकर वह ऐसा करता है, मगर इस फैक्ट को भूल जाता है कि बेहोश व्यक्ति आग लगाते ही होश में आ जाएगा।" कहने के बाद आंग्रे सेफ की तरफ बढ़ गया।
सेफ बुरी तरह काली पड़ी हुई और गीली थी।

¶¶

उनके चारों तरफ अच्छी-खासी भीड़ लग चुकी थी।

लोग पिता और पुत्र के उस अजीब-से रोमांचक मिलन को देख रहे थे—देखने वाले उस लाल जर्सी वाले मासूम, प्यारे और खूबसूरत बच्चे की दीवानगी देखते ही रह गए थे, जिसके छिले हुए घुटनों से अभी तक खून बह रहा था। जाने किस भावना से प्रेरित युवक उसे अपने से लिपटाए कांप रहा था और साथ ही अपना दिमाग उसे अन्तरिक्ष में तैरता-सा महसूस हो रहा था।

उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह बच्चा उसे अपना पापा क्यों कह रहा है?

अभी वह बच्चे से अलग होने और कोई सवाल करने का होश भी नहीं जुटा पाया था कि बच्चों की रिक्शा का चालक बेतहाशा भागता हुआ वहां पहुंचा—वह 'विशेष....विशेष' करके चिल्ला रहा था। भीड़ के साथ ही बच्चे और युवक ने भी उसकी तरफ देखा।

हांफता हुआ रिक्शा चालक बोला—"तुम्हें क्या हुआ विशेष?"

"देखते नहीं रिक्शा वाले—मेरे पापा मिल गए हैं?" लड़के ने मासूम आवाज में कहा।

"तुम्हारे पापा...मगर....।"

वह कुछ कहता-कहता रुक गया और आश्चर्य के साथ युवक की तरफ देखने लगा—युवक स्वयं हक्का-बक्का-सा उसकी तरफ देख रहा था। रिक्शा वाले ने पूछा— "भला आप विशेष के पिता कैसे हो सकते हैं?"

"क्या इस बच्चे का नाम विशेष है?" उसके इस प्रश्न पर चारों तरफ खड़ी भीड़

चौंकी थी, साथ ही बच्चे ने कहा— "आप कैसी बातें कर रहे हैं पापा, क्या आप मेरा नाम नहीं जानते हैं?"

हैरत में डूबे युवक ने एक नजर विशेष पर डाली, फिर रिक्शा चालक से पूछा —"विशेष कहां रहता है।"

"गांधी नगर में।"

"क्या तुम इसके पापा को जानते हो?"

"जी...जी।" रिक्शा चालक चकित-सा था—"जानता तो नहीं हूं, मगर बीबीजी कहती हैं कि आज से तीन महीने पहले विशेष के पिता का इन्तकाल हो चुका है।"

"बीबीजी कौन?"

"विशेष की मम्मी।"'

"तुम झूठ बोलते हो रिक्शा वाले।" विशेष ने एकदम प्रतिरोध किया—"मेरी मम्मी ने मुझसे कहा था कि पापा मेरे लिए ढेर सारी टॉफियां लेने आकाश में गए हैं— क्या मैं आपको जानता नहीं हूँ पापा—मेरे लिए टॉफी लेने गए थे न आप।"

"हां बेटे—हां।" कहकर युवक ने उसे गोद में उठा लिया। ऐसा शायद विशेष के भोले अन्दाज की वजह से हुआ था। बड़ी ही मासूमियत के साथ कहा था उसने और कहने के साथ ही उसकी झील-सी गहरी नीली और बड़ी-बड़ी आंखों में पानी था।

एकाएक युवक को ध्यान आया कि यहां, इतनी भीड़ के सामने ये अटपटी बातें करना उसके हित में नहीं है—उन अटपटी बातों को सुनकर कोई पुलिस को बुला सकता है या ड्यूटी पर तैनात कोई पुलिसमैन स्वयं भी यहां आ सकता है—इस वक्त किसी भी चक्कर में उलझकर उसका पुलिस के हत्थे चढ़ना खतरनाक है, अतः वहां से बच निकलने की गर्ज से बोला—"आओ बेटे, अब घर चलें।"

"चलो पापा, मम्मी आज बहुत खुश हो जाएंगी।" कहकर खुशी से लगभग झूमते हुए विशेष ने उसके गले में अपनी बांहें डाल दीं।

¶¶

पहले तो राजाराम अपनी दुकान में दाखिल होते पुलिस इंस्पेक्टर को देखते ही हड़बड़ा गया था और उस वक्त तो उसके चेहरे पर हवाइयां ही उड़ने लगीं, जब एक कमीज काउण्टर पर डालते हुए इंस्पेक्टर ने सवाल किया—"क्या तुम इसे पहचानते हो?"

"ज...जी—मैं समझा नहीं, साहब।"

"याद करके बताओ, यह कमीज तुमने कब और किसके लिए सिली थी?"

"ए...ऐसे कहीं याद रहता है साहब?"

"बको मत—तुम्हें याद करना होगा, यह एक हत्या का मामला है।"

"ह.....हत्या.....किसकी हत्या हो गई है साहब?" कहते हुए राजाराम का न केवल चेहरा ही फक्क पड़ गया था, बल्कि उसकी आवाज भी बुरी तरह कांप गई थी—कदाचित् इस वजह से आंग्रे को शक हो गया कि राजाराम कुछ छुपा रहा है, झपटकर उसने दोनों हाथों से राजाराम का गिरेबान पकड़ा और उसे आतंकित करने के उद्देश्य से दांत भींचकर गुर्राया—"अगर तुमने सब कुछ सच-सच नहीं उगल दिया तो इस हत्या के जुर्म में मैं तुम्हीं को फंसा दूंगा—बोलो।"

"व...वो साहब, बात ऐसी है कि एक औरत तीन दिन पहले मुझसे एक ही नाप के ढेर सारे कपड़े सिलवाकर ले गई थी, वे सभी कपड़े मर्दाना थे—यह कमीज उन्हीं में से एक है।"

इंस्पेक्टर आंग्रे की आंखें अजीब-से अन्दाज में सिकुड़ गईं, बोला—"क्या उसके साथ वह आदमी नहीं था, जिसके नाप के कपड़े सिले थे?"

"जी नहीं।"

"उस औरत का हुलिया?"

जवाब में राजाराम ने जो बताया, वह वही हुलिया था, जो इंस्पेक्टर आंग्रे को भगवतपुरे में स्थित दुर्घटनाग्रस्त मकान के आस-पड़ोसियों ने बताया था। किसी गहरी सोच में डूबते हुए आंग्रे ने पूछा—"क्या तुमने उससे यह नहीं पूछा कि एक साथ इतने कपड़े वह क्यों सिलवा रही है—और जिसके वे कपड़े हैं, वह कहां है?"

"स...साहब...।"

"सब कुछ बिल्कुल साफ-साफ बताओ। अगर तुमने कुछ छुपाया और आगे चलकर मुझे इस बारे में कोई जानकारी मिली तो मुजरिम को बचाने के आरोप में मैं तुम्हें भी फंसा दूंगा।"

"स...साहब, कपड़ों की सिलाई के अलावा उसने मुझे दस हजार रुपए भी दिए थे।"

"दस हजार रुपए?" आंग्रे की आंखें सिकुड़कर बिल्कुल गोल हो गईं। उत्सुकतापूर्वक उसने पूछा—"ये रुपए उसने तुम्हें किसलिए दिए थे?"

"उसने कहा था साहब कि एक आदमी मेरी दुकान पर यह पूछता हुआ अएगा कि 'मैं कौन हूं'—मैं उसे पहचानने का नाटक करूं, साथ ही जॉनी कहकर उसे पुकारूं—यानि मैं उसे यह बताऊं कि उसका नाम जॉनी है और वह भगवतपुरे के एक मकान में रहने वाली

रूबी नामक एक स्त्री का पति है। उस औरत ने अपना नाम रूबी ही बताया था।"

"क्या बकवास कर रहे हो, दुनिया में ऐसा भला कौन होगा, जो खुद को न जानता हो?"

"जब रूबी नाम की औरत मुझे यह सब कुछ समझा रही थी, तब मैंने भी उससे यही पूछा था, जवाब में उसने बताया कि उसका पति अपनी याददाश्त गंवा बैठा है, वह उसे अपनी पत्नी मानने से ही इन्कार करता है, उसे विश्वास आ जाए, इसीलिए वह मुझे गवाह बना रही है और दस हजार रुपए इस बात के दे रही है कि मैं इस सारे मामले का जिक्र किसी अन्य से न करूंगा—मुझे लालच आ गया साहब, दस हजार के फेर में पड़ गया मैं—सोचा कि यदि मुझे दस हजार मिलते हैं और मेरी मदद से किसी को अपना खोया हुआ पति मिलता है तो इसमें बुराई क्या है, म...मुझे नहीं मालूम था साहब कि बात इतनी बढ़ जाएगी।"

"विस्तार से वह सब कुछ बताओ, जो तुमने उस औरत के कहने पर किया।"

राजाराम ने युवक के अपनी दुकान पर पूछने से लेकर उसे भगवतपुरे के मकान में पहुंचाने तक की सारी घटना विस्तारपूर्वक बता दी। सुनकर हालांकि खुद आंग्रे को अपना दिमाग किसी तेजी से घूमने वाली फिरकनी के समान महसूस हो रहा था, परन्तु फिर भी उसने सवाल क्रिया।

"क्या तुम उस युवक से दुआ-सलाम करने वालों में से किसी को जानते हो?"

"नहीं साहब।"

इंस्पेक्टर आंग्रे बिखरी हुई कड़ियों को जोड़ने लगा, कुछ देर शांत रहने के बाद बोला—"मेरे साथ चलो।"

"क...कहां साहब?" राजाराम का चेहरा एकदम सफेद पड़ गया।

"जॉनी या रूपेश में से एक अस्पताल में है, तुम्हें बताना है कि वह दोनों में से कौन है?"

¶¶

विशेष उसे गांधीनगर की एक ऐसी बस्ती में ले गया, जहां अधिकांश मध्यम आय वर्ग के मकान थे...और जिस मकान को विशेष ने अपना मकान कहा, वह बस्ती से थोड़ा दूर हटकर एकान्त में था—उसके इर्द-गिर्द के प्लाट अभी खाली पड़े थे।

दो सौ गज के प्लाट पर खड़ा यह दो-मंजिता मकान था।

पूरी आत्मीयता के साथ नन्हां विशेष खींचकर उसे मकान के अन्दर ले गया और

चिल्लाने लगा—“दादी, मम्मी.....कहां हो तुम, देखो…मैं किसको लाया हूं?"

किंकर्तव्यविमूढ़-सा युवक उसके साथ आंगन में पहुंच गया।

आंगन काफी बड़ा था।

सामने वाले कमरे से एक बूढ़ी महिला बाहर निकलती हुई बोली—"अरे, तू जा गया, वीशू?"

"हां दादी, देखो मैं किसे लाया हूं?"

"कौन है बेटा?" बढ़िया ने कम हो गई अपनी आंखों की ज्योति का प्रयोग करने की कोशिश करते हुए कहा और आंखों के ऊपर हाथ रखकर युवक को देखने लगी।

"मेरे पापा आए हैं, दादी।”

"प...पापा?” युवक को ध्यान से देखती हुई बुढ़िया ने कहा, वह कुछ आगे बढ़ी और फिर अचानक ही बांहें फैलाकर युवक की तरफ दौड़ती हुई चीखी—"अरे मेरा बेटा, मेरा सर्वेश—हां, तू मेरा सर्वेश ही है।"

आगे बढ़कर युवक ने बड़ी जल्दी से उसे संभाल न लिया होता तो खुशी और जोश की अधिकता के कारण शायद यह गिर ही पड़ती। युवक ने उसे बांहों में भर लिया और उससे लिपटी थर-थर कांप रही बुढ़िया चीख रही थी—“मेरा सर्वेश मिल गया है—हां, तू ही मेरा सर्वेश है—सब बकते थे, ये जन्मजले दुनिया वाले झूठ ही कहते थे कि मेरा बेटा मर गया है—हुंSS—मेरा सर्वेश कोई मर सकता है—देखो, ये रहा मेरा बेटा—हा-हा-हा—मेरा बेटा जिन्दा है, मेरा सर्वेश भला कभी मर सकता है—हा-हा-हा—मेरा बेटा जिन्दा है, मेरा सर्वेश भला कभी मर सकता है…हा-हा-हा।"

वह कुछ ऐसे वहशियाना ढंग से हंसने लगी थी कि युवक के जिस्म में झुरझुरी-सी दौड़ने लगी। उसे लगा कि यह बूढ़ी औरत शायद पागल है—वह पागलों की तरह ही हंसती चली जा रही थी—युवक ने उसे अपने से अलग करने को कोशिश की—मगर बुढ़िया ने बहुत ही कसकर पकड़ रखा था उसे।

जैसे डर हो कि वह कहीं भाग जाएगा।

युवक को लग रहा था कि उसके दिमाग की मशीनरी में अब जंग लग चुका है, जाम हो गई है वह—सोचने-समझने या किसी बात का सही अर्थ निकालने की क्षमता नहीं महसूस हो रही थी उसे, जबकि बुढ़िया ने उससे चीखकर पूछा— "तू सर्वेश ही है न, तू मेरा बेटा ही है न—बोल, तू रश्मि का पति है न?"

"हां...हां मांजी।" अवाक्-से युवक के मुंह से निकल गया।

“खबरदार, जो तुमने खुद को रश्मि का पति कहा।" अचानक ही वहां एक कर्कश आवाज गूंजी। विशेष और बूढ़ी औरत के साथ पलटकर युवक ने भी आवाज की दिशा में देखा। आवाज मकान के मुख्य द्वार से उभरी थी और वहां खड़ी संगमरमर की एक प्रतिमा को देखता ही रह गया युवक, चाहकर भी दृष्टि उस पर से हटा न सका।

उधर, उस युवक पर नजर पड़ते ही संगमरमर की वह प्रतिमा भी बुरी तरह चीख पड़ी थी, जाने क्यों—युवक के चेहरे पर दृष्टि पड़ते ही उसका मुंह खुला-का-खुला रह गया।

सारे जहां की हैरत मानो सिर्फ और सिर्फ उसी मुखड़े पर सिमट आई थी।

युवक के चेहरे पर उसकी दृष्टि जमकर रह गई।

जबकि युवक खुद उस मुखड़े से दृष्टि नहीं हटा पा रहा था...उस मुखड़े से, जिसके लिए सारे जहां से शर्त लगाकर यह दावा पेश कर सकता था कि यह मुखड़ा दुनिया की सभी हसीनाओं से कई गुना ज्यादा खूबसूरत है—निहायत ही सुन्दर थी रश्मि।

छोटी-सी, मासूम—रुई की बनी गुड़िया जैसी।

मुखड़ा गोल था उसका, रंग वैसा ही जैसा एक चुटकी सिन्दूर मिले मक्खन का हो सकता है—सुतवां नाक, गुलाब की पंखड़ियों से कोमल और गुलाबी होंठ—चौड़े मस्तक और कमान के आकार की भौंहों वाली रश्मि की आंखें नीली थीं।

किसी फाइव स्टार होटल के 'स्विमिंग पूल' में भरे स्वच्छ नीले जल-सी आंखें—तांबे के-से रंग के लम्बे बालों को बड़ी सख्ती के साथ सिमेटकर बांधे हुए थी वह—ऐसी अपूर्व सुन्दरी जिसे देखकर स्वयं सुन्दरता भी ईर्ष्या की लपटों की शिकार होकर राख में बदल जाए।

मगर जाने क्यों? उसे विधवा के लिबास में देखकर युवक की छाती पर एक घूंसा-सा लगा—सस्ती परन्तु धुली हुई बेदाग सफेद साड़ी पहने थी वह—कर्फ्यूग्रस्त सड़क-सी सूनी पड़ी थी उसकी मांग—गोरी, गोल, भरी-भरी बांहों में एक भी चूड़ी नहीं थी।

एक नन्हीं-सी गुड़िया को इस रूप में देखकर युवक को जाने क्यों धक्का-सा लगा। उसकी इच्छा हुई कि रश्मि को यह लिबास पहनाने वाले का मुंह नोंच ले, जबकि कुछ देर तक उसकी तरफ असीमित हैरत के साथ देखने के बाद एकाएक ही रश्मि की नीली आंखें सिकुड़ती चली गईं...चिंगारियां-सी बरसाने लगीं वे आंखें—मुखड़ा संगमरमर के किसी पत्थर की तरह ही साफ हो गया। युवक पर दृष्टि जमाए ही वह आगे बढ़ी।

उसके नजदीक पहुंची, मोतियों-से दांत भींचकर गुर्राई—"कौन हो तुम?"

"मैं...मैं।" युवक चीखता गया।

"अरे, क्या तूने इसे पहचाना नहीं रश्मि बेटी—यह मेरा बेटा है—तेरा सर्वेश।"

"प...प्लीज मां, आप खामोश रहिए—कितनी बार कह चुकी हूं कि आप चाहे जिसको अपना बेटा कहती फिरा करें, मगर मेरा पति न कहें किसी को।"

"ये कोई थोड़ी हैं, मम्मी-मेरे पापा...।"

'चटाक्...।' रश्मि का एक जोरदार चांटा विशेष के गाल पर पड़ा।

मासूम की चीख सारे आँगन में गूंज गई।

जाने क्यों युवक को यह सब कुछ अच्छा नहीं लगा—सहमे हुए विशेष को खींचकर अपने गले से लगा लेने की प्रबल आकांक्षा दिल में
उबल पड़ी। स्वयं को रोक नहीं सका वह।

विशेष को पकड़ने के लिए हाथ आगे बढ़ाया।

रश्मि ने पहले ही खींचकर उसे अपने अंगों से लिपटा लिया। नीले नेत्रों से चिंगारियां-सी बरसाती हुई वह गुर्राई—"तुम्हारे इस जाल में मां फंस सकती हैं...मासूम वीशू धोखा खा सकता है, मगर मैं नहीं—मैं जानती हूं कि तुम कोई बहरूपिये हो।"

"म.....मैँ।"

"निकल जाओ यहां से।"

युवक चकरा गया, बोला—"अगर मैं सर्वेश नहीं हूं तो यह मां मुझे...।"

"उन्होंने अपने बुढ़ापे का एकमात्र सहारा, अपना जवान बेटा खोया है—तब से वे पागल हो गई हैं—हर युवक को सर्वेश कहने लगती हैं, अपना बेटा कहकर हरेक से लिपट जाती, हैं।"

"म...मगर विशेष?"

"यह बच्चा है, तुम्हारी उस सूरत से धोखा खा गया है, जो बनाकर तुम यहां आए हो, मगर मैं इस किस्म के किसी धोखे का शिकार होने वाली नहीं हूं...मैं जानती हूं कि तुम सर्वेश नहीं हो सकते—तुम कोई बहुरूपिये हो—ऐसे बहुरूपिये जो चेहरे पर उनका मेकअप करके शायद हमें ठगने आया है।"

"मेकअप?"

"हां, मैं जानती हूं कि तुम्हारे चेहरे पर मेकअप है।"

"आप यकीन कीजिए, मेरे चेहरे पर कोई मेकअप नहीं है।"

नीली आँखों में नफरत के चिन्ह उभर आए। खूबसूरत मुखड़ा कुछ और ज्यादा सख्त हो गया। बोली—"क्या तुम यह कहना चाहते हो कि तुम सर्वेश हो?"

"नहीं।"

"फिर?"

"केवल यह कि आप कैसे कह रही हैं कि मैं सर्वेश नहीं हो सकता?"

"इसीलिए क्योंकि उनकी लाश मैंने अपनी आंखों से देखी है—उनकी लाश के मस्तक पर इन कलाइयों को पटककर सारी चूड़ियां तोड़ी हैं मैंने—उनके मफलर से अपने मस्तक की बिंदिया, अपनी भांग का सिन्दूर पोंछा है।"

कहते-कहते उसका गला रुंध गया। नीली आंखें भर आईं।

कुछ देर तक अवाक्-सा युवक उसे देखता रहा। फिर बोला—"तो क्या मेरी शक्ल सर्वेश से मिलती है?"

"म...मैं फिर कहती हूं कि यह नाटक बन्द करो—तुम मुझे ठग नहीं सकते, बाहर निकल जाओ इस घर से, वरना मैं पुलिस को बुला लूंगी।"

पुलिस का नाम बीच में आते ही युवक के तिरपन कांप गए—उसकी इच्छा हुई कि वहां से भाग खड़ा हो, मगर वहां आने के बाद जो नई गुत्थियां उसके जेहन में चकराने लगी थीं—वह उनका जवाब चाहता था। अत: बोला—"इस वक्त आप गुस्से में हैं, यकीन मानिए, मैं कोई बहुरूपिया नहीं हूं...शायद बचपन ही से यह मेरी असली शक्ल है—शायद इस शक्ल को देखकर ही विशेष रिक्शा में से कूद पड़ा था।"

"त...तुम रिक्शा में से कूद पड़े थे वीशू?"

"हां मम्मी—पापा को देखकर।"

"अरे—तुझे तो चोट लगी है वीशू—घुटनों से खून बह रहा है—चल मेरे साथ।" उसकी चोट देखकर एकदम से बेचैन हो उठी रश्मि—सब कुछ भूल गई वह और विशेष को लेकर आंगन से ही शुरू होकर दूसरी मंजिल तक जा रही सीढ़ियों पर बढ़ती चली गई।

ढेर सारे प्रश्नों से घिरा युवक किंककर्तव्यविमूढ़-सा खड़ा उसे देख रहा था कि बूढ़ी मां उसके समीप सरक आई। धीमे से रहस्यमय अन्दाज में बोली—"रश्मि की किसी बात का बुरा मत मानना बेटा, पता नहीं किस कलमुंहे की लाश को सर्वेश की लाश समझकर बेचारी ने अपनी सारी चूड़ियां तोड़ डाली हैं—खुद को विधवा समझने लगी है यह—दिमाग में खराबी आ गई है, बेचारी रश्मि। सुहागिन बनने की उम्र में विधवा बन जाने पर भला किसका दिमाग ठिकाने रह सकता है?"

युवक चौंककर बूढ़ी मां की तरफ देखने लगा।

¶¶

अस्पताल के कमरे में, लोहे के बेड पर पड़े व्यक्ति पर नजर पड़ते ही राजाराम के कण्ठ से ऐसी ह्रदय विदारक चीख निकल पड़ी कि जिसने अस्पताल की नींव में रखी अंतिम ईंट को भी शायद झंझोड़कर रख दिया होगा।

बुरी तरह डर गया था वह। सहमकर पीछे हट गया।

अपनी आंखों पर हाथ रख लिया था उसने।

सचमुच रूपेश का चेहरा इतना भयानक हो गया था कि उसे देखकर किसी के भी कण्ठ से चीख निकल सकती थी। चेहरा अत्यन्त ही वीभत्स हो गया था—डरावना।

उसके सारे बाल जल चुके थे। काली जली हुई गंजी खोपड़ी नजर जा रही थी—जलकर चेहरे की खाल झुलस गई थी—ऐसी नजर आ रही थी जैसे चमगादड़ की खाल हो। दायां गाल पूरी तरह जल गया था—वहीं से रूपेश का जबड़ा साफ नजर आ रहा था, जबड़े के लम्बे-लम्बे भयानक दांत, फफोलेदार मोटे होंठ, जलने के बाद जाने कैसे नाक एक तरफ को मुड़-सी गई थी।

बुरी तरह भयभीत होकर कांपते हुए राजाराम ने कहा—"म...मुझे यहां से ले चलो साहब, मुझसे देखा नहीं जाता—म....मुझे डर लग रहा है।"

"ध्यान से देखो उसे और पहचानने की कोशिश करो कि वह जॉनी है या रूपेश?" इंस्पेक्टर आंग्रे ने गुर्राहट भरे स्वर में उसे आदेश दिया।

कांपते हुए विवश राजाराम को ध्यान से वह डरावना चेहरा देखना ही पड़ा, बोला —"यह तो रूपेश बाबू हैं साहब।"

"गुड।" कहने के बाद आंग्रे नर्स की तरफ मुखातिब होकर बोला—"थैंक्यू सिस्टर, अब आप इसके चेहरे को पट्टियों से ढक सकती हैं।"

"मेन्शन नॉट।" कहती हुई नर्स ने वे पट्टियां पुन: रूपेश के जख्मी चेहरे और सिर पर लपेटनी शुरू कर दीं—जिन्हें इंस्पेक्टर आंग्रे की प्रार्थना पर ही उसने हटाया था।

राजाराम को साथ लिए आंग्रे बाहर निकल गया—गैलरी में उसकी टुकड़ी के कांस्टेबल खड़े थे। राजाराम को उनमें से दो के हवाले करता हुआ आंग्रे बोला—"और सुनो, इस वक्त युवती द्वारा दिए गए दस हजार इसके घर पर हैं—इसे साथ लेकर उन्हें बरामद कर लो—और सुनो, इस वक्त यह पुलिस का मेहमान है।"

"स...साहब...म...मुझे गिरफ्तार क्यों कर रहे हैं आप? मैंने कुछ नहीं किया है।"

राजाराम चीखता ही रह गया, जबकि उसके किसी शब्द पर ध्यान दिए बिना इंस्पेक्टर आंग्रे तेजी के साथ वहां से चला गया।

दो मिनट बाद अस्पताल के डचूटी-रूम में खड़ा वह फोन पर कह रहा था—"जरा चटर्जी को बुला दीजिए—कहिए कि आंग्रे बात करना चाहता है।"

दूसरी तरफ से शायद होल्ड करने के लिए कहा गया था, क्योंकि ये कहने के बाद आंग्रे कुछ देर तक रिसीवर कान से लगाए खड़ा रहा और कुछ देर बाद एकदम बोला —"हां चटर्जी—क्या करू रहे हो?"

"मजे कर रहे हैं।" दूसरी तरफ से आवाज उभरी।

"क्या तुम्हारे पास इस वक्त कोई केस नहीं है?"

"ऐसा ही समझो।"

"तो तुम फौरन यहां, अस्पताल में चले आओ।"'

"आता हूं, मगर मामला क्या है?"

"मेरे क्षेत्र में हत्या का बहुत ही जघन्य काण्ड हो गया है—बहुत ही उलझा हुआ मामला है चटर्जी, इसीलिए यहां सारे मामले पर तुम्हारे साथ बैठकर डिस्कस करना चाहता हूं। शायद कोई नतीजा निकल आये।"

"मैं आ रहा हूं प्यारे, दिमाग की नसों को झनझनाकर रख देने वाले मामलों की तो चटर्जी को तलाश रहती है—साली इनवेस्टिगेशन करने में मजा तो आए।"

¶¶

युवक नहीं जानता था कि मां का प्यार क्या होता है। यह भी मालूम नहीं था कि यह प्यार उसे कभी मिला है या नहीं, मगर उस बूढ़ी मां ने जो कुछ किया, जितना प्यार उस पर बरसाया, उसे महसूस करके कई बार उसकी आंखें भर आईं।

इच्छा हुई कि उस बूढ़ी के कलेजे में मुखड़ा छुपाकर फूट-फूटकर रो पड़े।

वह उसे अपने कमरे में ले आई थी—छोटी-छोटी कनस्तरियों से निकाल-निकालकर वह उसे जाने क्या-क्या खिलाने लगी—उसने बहुत इन्कार किया, मगर एक न चली—आखिर वह एक मां के हत्थे चढ़ गया था और उसे अपने हाथों से जाने कब की रखी सूखी मिठाइयां खिलाईं।

इतना प्यार पाने के बावजूद भी युवक का दिमाग बुरी तरह उलझा हुआ था—कहना चाहिए कि वहीं जाकर, इन नई उलझनों में फंसने के बाद यह भूल गया था कि आज हमें दिन में वह कितना जघन्य हत्याकांड कर चुका है।

इस वक्त तो उसके दिमाग में तीन ही नाम कौंध रहे थे।

सिकन्दर, जॉनी और सर्वेश।

इनमें से कौन है वह?

कहीं इस बूढ़ी मां की बात ही तो ठीक नहीं हैं—कहीं सचमुच ऐसा ही तो नहीं है कि उस नन्हीं-सी अभागिन ने किसी अन्य की लाश को ही सर्वेश की लाश समझकर अपनी चूड़ियां तोड़ डाली हों—कहीं मैं सचमुच सर्वेश ही तो नहीं हूं?

सोचते-सोचते युवक का दिमाग थक गया।

एकाएक ही कमरे में विशेष आया, उसके दोनों घुटनों पर पट्टी बंधी हुई थी। उसे देखते ही युवक खड़ा हो गया—उसके नजदीक जाते हुए विशेष के सुर्ख होंठों पर ऐसी प्यारी मुस्कान थी कि युवक के दिल में गुदगुदी-सी होने लगी।

उसके नजदीक आकर विशेष ने कहा—"पापा।"

"हां...हां बेटे।" दिल में कहीं संगीत-सा बज उठा।

"आपको मम्मी ने ऊपर बुलाया है।"

एक बार को धक् से रह गया युवक का दिल.....फिर असामान्य गति से धड़कने लगा, कुछ वैसी ही घबराहट उसके दिलो-दिमाग पर हावी हो गई जैसी तब हुई थी, जब इंस्पेक्टर चटर्जी सबके हाथ सूंघ रहा था.....मस्तक पर कुछ ऐसी ही अवस्था में पसीना छलछला उठा, जैसा बन्द मकान में रूपेश के जाने पर छलछलाया था—हालांकि वह स्वयं रश्मि से बातें करने का इच्छुक था, परन्तु जाने क्यों रश्मि के इस सन्देश को पाकर घबरा-सा उठा—मुंह से स्वयं ही निकल गया—"क...क्यों?"

"मम्मी पूछने लगीं कि आप मुझे कहां मिले थे...मैंने बता दिया—सुनकर मालूम नहीं क्या सोचने लगीं, फिर बोलीं कि मैं आपको ऊपर बुला लाऊं।"

युवक चुप रह गया।

वह पुनः विचारों के जंगल में भटकने लगा था। उसे लगा—"शायद विशेष की बात सुनकर रश्मि ने यह महसूस किया है कि मैं यहाँ जानबूझकर नहीं आया हूं—मैं उलझन में हूं तो क्या मेरी शक्ल ने उसे भी उलझन में डाल रखा होगा?'

'मुझसे बात करके शायद वह उस उलझन से निकलना चाहती है—मैं भी तो यही चाहता हूं—पता तो लगे कि आखिर ये सर्वेश का चक्कर क्या है?'

'म...मगर अकेले में कहीं मुझ पर पुनः वही जुनून सवार न हो जाए।'

इस एकमात्र विचार ने उसे अन्दर तक हिलाकर रख दिया—रूबी की लाश आंखों के सामने चकरा उठी और घबराकर बोला—"त...तुम भी चलो बेटे।"

"मम्मी ने भी तो यही कहा था कि मैं आपके साथ आऊं।" विशेष ने कहा।

¶¶

"जिस मकान में दुर्घटना घटी है, उसके मालिक का कहना है कि उस औरत ने, जिसने अपना नाम रूबी बताया था, मकान चार दिन पहले ही किराए पर लिया था।"

"केवल चार दिन पहले ही?"

"हां।" आंग्रे ने बताया—"पड़ोसियों के बयान से भी यही स्पष्ट हुआ है—उनका कहना है कि तीन दिन पहले ही यह औरत मकान में जाकर बसी थी—कोई उसका नाम तक नहीं जानता है। जब से वह मकान में आई थी, तब से मकान में ही रही—मजे की बात ये है कि खुद मकान मालिक भी औरत का नाम बताने से ज्यादा और कुछ नहीं बता सका।"

"यानि मकतूल खुद एक अत्यन्त रहस्यमय व्यक्तित्व की है। खैर, आगे बढ़ो।"

"इसके बाद मैं घंटाघर पर स्थित राजाराम की दुकान पर पहुंचा।" कहने के बाद आंग्रे ने उसे राजाराम से हुई बातें, रूपेश की शिनाख्त आदि सभी बातें बता दीं।

चटर्जी ने एक सिगरेट सुलगाई, धुआं छोड़ता हुआ बोला—"अब पूछो प्यारे, ऐसी क्या बात है, जो तुम्हारी बुद्धि के किसी भी 'खांचे' में 'फिक्स' नहीं हो रही है?"

"अगर भगवतपुरे में रूबी और जॉनी को कोई भी नहीं जानता था तो रास्ते में जॉनी से दुआ-सलाम किन लोगों ने की थी.....जॉनी से 'जमने' के लिए किस युवक ने कैसे कह दिया था?"

"वे सभी राजाराम की तरह के लोग थे—रूबी से पैसे लेकर अभिनयकर्ता।"

"इस सबका मतलब तो यह हुआ कि कथित रूबी एक याददाश्त खोए व्यक्ति के दिमाग में यह बात बैठाना चाहती थी कि वह उसका पति जॉनी है।"

"करेक्ट।"

"जाहिर है कि रूबी एक खतरनाक षड़यन्त्र रच रही थी—फिलहाल नजर आता है कि हत्यारा याददाश्त भूला व्यक्ति ही है.....वह कौन है—कहां गया—उसने हत्या क्यों की?"

"तुम जरा याददाश्त खोए व्यक्ति का वह हुलिया बयान करो जो राजाराम ने तुम्हें बताया होगा।"

आंग्रे हुलिया बयान करता चला गया और चटर्जी की आंखें दो बहुत ही कीमती हीरों की तरह चमकने लगी थीं, आंग्रे के चुप होने पर वह बहुत ही उत्तेजित अवस्था में चीख पड़ा—“ओह! माई गॉड!”

"आखिर बात क्या है?"

"इस काण्ड के मुजरिम से शायद मैं मिल चुका हूं।"

"क.....क्या कह रहे हो तुम? वह तुम्हें भला कहां मिल गया?"

"हरिद्वार पैसेंजर में।""

"व...वह भला वहां क्या कर रहा था?"

"इस जघन्य हत्याकाण्ड को करने के बाद शायद भाग रहा था वह।" चटर्जी ने कहा और फिर खुद ही से बड़बड़ाकर बोला—"अब मेरी समझ में उसके फक्क चेहरे, हड़बड़ाहट और नर्वसनेस का अर्थ आ रहा है। अपना नाम उसने सिकन्दर बताया था—लारेंस रोड पर रहता है, पिता का नाम क्या बताया था उसने—याद नहीं आ रहा है, खैर—उस कागज में सब कुछ दर्ज है—हम उसके घर तक पहुंच सकते हैं आंग्रे।"

"मैँ कुछ नहीं समझ पा रहा हूं चटर्जी—क्या बड़बड़ा रहे हो तुम?"

“म.....मगर उसकी याददाश्त गुम तो नहीं लगती थी।" चटर्जी किसी पागल के समान बड़बड़ाता ही चला गया—"याददाश्त गुम—अभी कुछ दिन पहले कहां पढ़ा था मैंने—कहीं पढ़ा था कि एक युवक की याददाश्त गुम है—शायद अखबार में।"

“तुम क्या बड़बड़ा रहे हो चटर्जी?"

"आंग्रे—प्लीज़, अस्पताल में अखबार तो आता ही होगा—जरा पिछले दस दिन के अखबार मंगा लो, मुझे लगता है कि तुम्हारे मुजरिम की तस्वीर अखबार में मिल जाएगी।"

हालांकि आंग्रे ठीक से कुछ समझ नहीं सका था, फिर भी पिछले दस दिन के अखबार उसने मंगवा लिए—अखबार आने के बीच में चटर्जी ने उसे हरिद्वार पैसेंजर में हुई घटना विस्तारपूर्वक सुना दी। सुनकर आंग्रे के चेहरे पर हर तरफ उत्साह नजर जाने लगा।

उसे लग रहा था कि वह आज ही इस हत्याकांड के दोषी को पकड़ लेगा।

जो मामला उसे कुछ ही देर पहले बहुत चक्करदार और उलझा हुआ नजर आ रहा था, वह अचानक ही सचमुच बेहद सीधा-सादा नजर आने लगा—अखबारों को खंगालता चटर्जी एकदम उछल पड़ा—“य....यही है.....यही है, आंग्रे।”

"ये देखो, अखबार में दो फोटो छपी हैं—एक युवक की, दूसरी उसकी जेब से निकले पर्स में से किसी युवती की—यह उसी युवक की फोटो है, जो मुझे हरिद्वार पैसेंजर में मिला था, जरा इन फोटुओं के साथ छपे मैटर को पढ़ो।"

आंग्रे ध्यान से फोटो को देखने के बाद इंस्पेक्टर दीवान द्वारा छपवाए मैटर को पढ़ने लगा, पढ़ने के बाद बोला—"अब इसमें कोई शक नहीं रह गया है कि यही हत्यारा है।"

"अभी शक है आंग्रे प्यारे, अन्तिम शिनाख्त बाकी है।"

"क्या मतलब?"

"राजाराम को ये फोटो दिखाए जाने चाहिए।"

"ठीक है, मैं देखता हूं कि फोर्स राजाराम के साथ वापस लौटी है या नहीं।" कहने के साथ ही उत्साहित आंग्रे उठकर खड़ा हो गया। कमरे से बाहर गया और पांच मिनट बाद ही राजाराम को लिए कमरे में दाखिल हुआ।

इंस्पेक्टर चटर्जी को समझने में देर नहीं लगी कि साथ वाला व्यक्ति राजाराम है—वह सहमा हुआ था—चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं, जब चटर्जी ने पुलिसिए अन्दाज में उसे ऊपर से नीचे तक घूरा तो बेचारे राजाराम की सिट्टी-पिट्टी ही गुम हो गई। आंग्रे ने अखबार उसके सामने फेंककर कहा—"इन दोनों फोटुओं को पहचानो।"

युवक के फोटो पर दृष्टि पड़ते ही राजाराम उछल पड़ा, बोला, "अ...अरे...यह तो वही युवक है साहब, जिसकी याददाश्त गुम थी—जॉनी।"

आंग्रे सफलता की जबरदस्त खुशी के कारण अपने जिस्म के सारे रोयें खड़े महसूस कर रहा था, जबकि चटर्जी ने राजाराम से पूछा—"और वह युवती का फोटो?"

"मैं...मैं इसे नहीं जानता साहब।"

"ध्यान से देखकर बताओ, कहीं यह वही औरत तो नहीं है, जिसने तुम्हें रुपये दिए थे?"

राजाराम ने पूरे विश्वास के साथ कहा—"यह वह नहीं है साहब।"

"तुम जा सकते हो।" कहने के बाद चटर्जी ने कुर्सी की पुश्त से पीठ टिका दी, राजाराम चुपचाप कमरे से बाहर चला गया, आंग्रे ने पूछा— "किसी नतीजे पर पहुंचे चटर्जी?"

"सारा मामला हल हो चुका है।"

"कैसे?"

"जिस हत्यारे का तुम्हारे पास नामो-निशान नहीं था, उसका फोटो सामने है, नाम और एड्रेस मैं बता रहा हूं—जाकर गिरफ्तार कर लो, अब इस केस में रखा ही क्या है?"

"अगर यह नाम-पता गलत हुआ तो?"

"गलत!" चटर्जी उछल पड़ा—"हां, यह बात जमती है, आंग्रे—वह नाम-पता आदि सब कुछ गलत हो सकता है और फिर जिसकी याददाश्त गुम है, वह भला अपना नाम बता ही कैसे सकता है?"

"उसने यूं ही, जो मुंह में आया नाम बक दिया होगा।"

"ऐसा हो सकता है।" चटर्जी उससे पूरी तरह सहमत था और शायद इसीलिए वह अचानक दुबारा सतर्क नजर आने लगा था, बोला—"मेडिकल इंस्टीट्यूट अथवा इंस्पेक्टर दीवान से यह मालूम कर सकते हैं कि वह याददाश्त खोया व्यक्ति कब, किन परिस्थितियों में अस्पताल से बाहर निकला।"

¶¶

"शायद होश आने पर रूपेश नाम का वह नौजवान भी उसके बारे में कुछ बता सकेगा।"

"मैंने डॉक्टर से कह रखा है, रूपेश के होश में आते ही सूचना दी जाएगी।"

"हालांकि इस केस की गुत्थियां अभी बुरी तरह उलझी हुई हैं—ऐसे ढेर सारे सवाल हैं, जिनमें से किसी का जवाब हमारे पास नहीं है—यह कि रूबी उसे जॉनी बनाने की कोशिश क्यों कर रही थी? यह कि युवक ने उसी का कत्ल क्यों कर दिया? वह अस्पताल से कैसे निकला और राजाराम की दुकान पर ही क्यों पहुंचा आदि?"

तभी कमरे में दाखिल होती हुई नर्स ने सूचना दी—"मिस्टर रूपेश होश में आ रहे हैं।"

दोनों ही इंस्पेक्टर एक साथ ऑन होने वाले बल्बों की तरह खड़े हो गए।

¶¶

विशेष को साथ लिए युवक ने धड़कते दिल से ऊपर वाले कमरे में कदम रखा और दरवाजे पर आकर रुक जाना पड़ा उसे—कमरे के, दरवाजे के ठीक सामने वाली दीवार पर एक बहुत बड़ा फोटो लगा हुआ था।

उसका अपना फोटो।

युवक की आंखें उस पर चिपककर रह गईं—दिल धक्...धक् कर रहा था—हालांकि फर्क था, परन्तु फोटो उसे अपना ही लगा-फर्क सिर्फ दाढ़ी-मूंछ, आंखों पर चढ़े सफेद लैंसों

वाले चश्मे और हेयर स्टाइल का था, यानि युवक का चेहरा क्लीन शेव था, जबकि फोटो में यह गहरी मूंछों, घनी दाढ़ी में था—हेयर स्टाइल में मामूली फर्क—आंखों पर चश्मा।

युवक को याद नहीं आया कि उसने कभी इस ढंग की दाढ़ी-मूंछें रखी हैं या नहीं—दरवाजे पर ठिठका अभी वह यह सोच ही रहा था कि यदि एक महीने वह शेव न कराए तथा आंखों पर चश्मा पहन ले और फोटो खिंचवा ले तो उसमें और इस फोटो में कोई फर्क नहीं रहेगा।

फोटो के नीचे, स्टैंड पर अगरबत्तियां जल रही थीं, सारे कमरे में अगरबत्तियों की तीव्र खुशबू-सी की हुई थी—चाहकर भी युवक उस फोटो से नजर नहीं हटा पा रहा था...कि कमरे में रश्मि की आवाज गूंजी—"वह वीशू के पापा का फोटो है।"

युवक ने बौखलाकर रश्मि की तरफ देखा।
सफेद लिबास में वह बहुत पाक लग रही थी—कुरान या गीता की तरह।

युवक चाहकर भी कुछ नहीं कह सका, जबकि विशेष ने फौरन ही चटकारा लिया—"वाह मम्मी—क्या मजे की बात है, आप पापा से ही कह रही हैं कि यह पापा का फोटो है।"

"वीशू!" रश्मि का लहजा सख्त था—"तुम हमें डिस्टर्ब नहीं करोगे, और यदि किया तो हम तुम्हें यहाँ से बाहर निकाल देंगे।"

बड़े मासूम अन्दाज में विशेष ने युवक की तरफ देखा।

"ऐसा मत कहिए, बच्चों की तो आदत होती है।"

"आपको ऐसा कोई अधिकार नहीं मिला है मिस्टर, जिसके तहत आप मुझे विशेष को डांटने से रोक सकें।" रश्मि का लहजा पत्थर की तरह सख्त और खुरदरा था।

युवक सकपका गया।

पहले तो उसने कहा ही बहुत हिम्मत करके था, दूसरे—उसके वाक्य को बीच ही में काटकर रश्मि ने चेतावनी-सी दी थी, इस बार भी युवक ने बहुत हिम्मत करके कहा—"स....सॉरी।"

संगमरमर के मुखड़े पर मौजूद तनाव कुछ कम हुआ, वातावरण को सामान्य बनाने की गरज से ही युवक ने कहा—"निश्चय ही सर्वेश से मेरी शक्ल हू-ब-हू मिलती है। केवल दाढ़ी-मूंछ, चश्मे और हेयर स्टाइल में फर्क है, मगर कम-से-कम विशेष के लिए यह फर्क काफी है—कहने का मतलब यह कि मेरा चेहरा क्लीन शेव तथा चश्मे रहित होने पर भी विशेष का सड़क पर मुझे "पापा' कहकर पुकारना आश्चर्यजनक है।"

"यदि वीशू ने अपने पिता का सिर्फ दीवार पर लगा यह चित्र ही देखा होता तो

शायद इससे वह भूल नहीं होती, मगर इसने उनके दूसरे फोटो भी देखे हैं, जैसे यह।" कहकर रश्मि ने अपने हाथ में दबा पासपोर्ट साइज का फोटो उछाल दिया।

युवक ने फोटो को फर्श से उठाकर देखा।

वह दावे के साथ कह सकता था कि फोटो उसका अपना ही है—सर्वेश के इस फोटो में उसके चेहरे पर दाढ़ी-मूंछ और चश्मा नहीं था। हां—हेयर स्टाइल में अब भी फर्क था —इस फोटो पर युवक की नजर चिपककर रह गई। वह सोचने लगा कि क्या वास्तव में दो व्यक्तियों की शक्ल इस सीमा तक मिल सकती है? कहीं मैं सर्वेश ही तो नहीं हूं?

कहीं रश्मि मेरी पत्नी और विशेष मेरा बेटा ही तो नहीं है?

"इस फोटो के अलावा विशेष ने अपने पापा को अनेक बार बिना दाढ़ी मूछों और चश्मे के देखा है, शायद इसीलिए सड़क पर आपको देखकर वह...।"

"प....प्लीज मम्मी—पता नहीं पापा से आप कैसी बातें कर रही हैं, ये मेरे पापा.....।"

"गेट आउट!" अत्यधिक ही रश्मि गुस्से में चीख पड़ी। युवक ने उसके चेहरे को बुरी तरह सुर्ख होकर तमतमाते देखा। यह गुर्रा रही थी—"हमने तुम्हें डिस्टर्ब न करने के लिए कहा था वीशू आई से गेट आउट।"

विशेष ने सहमकर युवक को देखा।

युवक के मन में ममता उमड़ पड़ी, मगर फिर रश्मि का ख्याल आने पर वह कुछ बोला नहीं—युवक को अपना पक्ष न लेते देखकर विशेष मायूस हो गया। अनिच्छापूर्वक कमरे के दरवाजे की तरफ जाने लगा वह और यही क्षण था जब युवक के दिमाग में यह विचार बिजली की तरह कौंधा कि यदि विशेष बाहर चला गया तो इसके साथ वह इस कमरे में अकेला रह जाएगा।

अगर मेरे दिमाग पर पुन: उन्हीं भयानक विचारों ने कब्जा कर लिया तो?

रूबी की लाश उसकी आँखों के सामने नाच उठी।

फिर मर्डर के बाद से शुरू हुए आतंक ने उसे त्रस्त कर दिया। अधीर-सा होकर अन्जाने ही में वह झपटा और विशेष को अपने से लिपटाकर बोला—"न...नहीँ, तुम बाहर मत जाओ।"

रश्मि ने गुर्राना चाहा—"म...मिस्टर...।"

"'प...प्लीज रश्मि जी।" युवक एकदम गिड़गिड़ा-सा उठा—"इसे कमरे से बाहर जाने का हुक्म मत दो...म...मैँ अकेला तुम्हारे साथ यहां नहीं रहना चाहता।"

रश्मि की आंखों में उलझनयुक्त आश्चर्य उभर आया।

वह कह रहा था—"प्लीज, अब यह डिस्टर्ब नहीं करेगा—तुम बीच में नहीं बोलोगे बेटे। म...मगर हमें यहां अकेला मत छोड़ो।"

अच्छी खासी सर्दी के बावजूद युवक के मस्तक पर उभर आए पसीने को देखती रह गई रश्मि—युवक के चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं—अचानक ही वह बेहद आतंकित-सा नजर आने लगा था—गहन उलझन भरे आश्चर्य के साथ रश्मि देखती रह गई उसे। युवक ने पुन: कहा था—"मेरी बस यह एक बात मान लीजिए—अब वीशू हमें बिल्कुल डिस्टर्ब नहीं करेगा, प्लीज रश्मिजी।"

हैरत में डूबी रश्मि ने मौन स्वीकृति दे दी।

युवक ने विशेष को एक बार फिर हिदायत दी—बड़े ही मासूम अन्दाज में विशेष ने स्वीकृति में गर्दन हिलाई। रश्मि ने पूछा—"आपका नाम?"

युवक गड़बड़ा गया। यह निश्चय नहीं कर सका कि खुद को सिकन्दर बताए, जॉनी या कुछ और, बोला—"मेरा जवाब सुनकर शायद आप चौंक पड़ेंगी।"

"मतलब?" गम्भीर, कठोर और सौम्य लहजा।

"म.....मुझे अपना नाम मालूम नहीं है।"

रश्मि की आंखों के चारों तरफ का हिस्सा सिकुड़ गया। इस बार उसके मुंह से गुर्राहट-सी निकली—"बद्तमीजी से भरे आपके इस जवाब का अर्थ?"

अपनी विवशता पर युवक कसमसा उठा। चेहरे पर हल्की-सी झुंझलाहट के भाव उभरे, बोला—"आप यकीन कीजिए रश्मि जी, मैं कोई बद्तमीजी नहीं कर रहा हूं—बहुत विवश हूं मैं—जाने भाग्य मेरे साथ क्या खिलवाड़ करना चाहता है। यह सच्चाई है कि मैं खुद को नहीं जानता—मेरा नाम क्या है, मैं कौन हूं...क्या हूं—ऐसे किसी भी सवाल का जवाब खुद मुझे नहीं मालूम है—दुनिया का कोई भी दूसरा आदमी शायद मेरी उलझन, कसमसाहट और विवशता को नहीं समझ सकेगा—स्वयं आपने किसी ऐसे आदमी की मानसिकता की कल्पना की है, जो खुद ही अपने लिए एक पहेली हो—जो खुद ही इनवेस्टिगेशन करके यह पता लगाने की कोशिश कर रहा हो कि वह कौन है? शायद मेरी कसमसाहट को कोई नहीं समझ सकेगा रश्मि जी, क्योंकि मैं खुद ही वह आदमी हूं।"

उलझन के असीमित भाव रश्मि के मुखड़े पर उभर आए। कुछ देर तक विचित्र-सी नजरों से युवक को देखती रही वह, फिर बोली—"मैं आपकी पहेली जैसी बात का अर्थ नहीं समझी।"

"उसके लिए शायद मुझे अपने से सम्बन्धित वे सभी बातें आपको बतानी होंगी,

जितनी मुझे मालूम हैं।"

रश्मि मौन रही, अर्थ था कि वह सुनने के लिए तैयार है।

इसके बाद युवक ने उसे अपनी याददाश्त गुम होने के बारे में बता दिया—युवक ने न्यादर अली या रूबी के बारे में कुछ नहीं बताया था—बस यही कहा था कि उसकी जानकारी के मुताबिक एक एक्सीडेंट के बाद उसकी याददाश्त गुम हो गई है और अब वह पागलों की तरह यह पता लगाने की कोशिश में घूम रहा है कि एक्सीडेण्ट के पहले वह कौन था।

रश्मि के मुखड़े पर उसकी विचित्र कहानी सुनने के बाद हैरत का समुद्र-सा उमड़ पड़ा—एकदम से चाहकर भी वह कुछ नहीं कह सकी, जबकि युवक ने कहा—"इसी वजह से वीशू के 'पापा' कहने पर, यह उम्मीद लेकर मैं यहां आ गया कि शायद मुझे मेरा अतीत मिल
जाए।"

"आप कुछ भी हों, मगर सर्वेश नहीं हो सकते।" रश्मि ने सपाट लहजे में कहा।

"हो सकता है मगर...।"

"मगर.....?"

"अगर आप बुरा न मानें तो क्या मैं पूछ सकता हूं कि क्यों—आप यह बात इतने विश्वासपूर्वक किस आधार पर कह सकती हैं कि मैं सर्वेश नहीं हूं?"

"बता चुकी हूं कि उनकी लाश मैंने अपनी आंखों से देखी है।"

"म....मगर दो इंसानों की शक्ल इस हद तक मिलना भी तो...।"

"यह शायद कुदरत का खेल है।"

"हो सकता है, लेकिन क्या ऐसा नहीं हो सकता कि वह लाश, जिसे आप अपने पति की समझीं, दरअसल किसी अन्य की हो?"

"क्या आप खुद को मेरा पति साबित करना चाहते हैं?"

"प...प्लीज रश्मि जी। मेरी बातों को इस ढंग से न लीजिए—मैं तो खुद ही उलझन में हूं—मेरी विवशता को समझने की कोशिश कीजिए—खुद ही को तलाश करना पड़ रहा है मुझे—मैं ऐसे सबूत नहीं जुटाना चाहता कि जिससे सर्वेश साबित होऊं—मैं आपसे ऐसा ठोस प्रमाण चाहता हूं जिससे साबित हो सके कि मैं सर्वेश नहीं हूं।"

"पहला प्रमाण है यह।" कहने के साथ ही वह कमरे में रखी एक डाइटिंग टेबल की तरफ बढ़ गई, दराज खोलकर उसमें से एक फोटो निकाला उसने, फोटो को उसकी तरफ

उछालत्ती हुई बोली—"यह मेरे पति की लाश का फोटो है।"

युवक ने फोटो उठाकर देखा।

फोटो को देखते ही वह चौंक पड़ा, यह फोटो दाढी-मूंछ वाले किसी युवक की लाश का जरूर था, मगर लाश का चेहरा बिल्कुल स्पष्ट नजर नहीं जा रहा था, चेहरा विकृत-सा था। अत: भले ही हेयर स्टाइल सर्वेश जैसा हो, मगर यह दावा पेश नहीं किया जा सकता था कि फोटो सर्वेश की लाश ही का है—और जब यह बात युवक ने रश्मि से कहीँ तो रश्मि ने कहा—

"दूसरा सबूत आपकी पीठ पर से मिल जाएगा।"

"प...पीठ से?"

“क्या आप कपड़े उठाकर मुझे अपनी पीठ दिखाने का कष्ट करेंगे?"

थोड़ा हिचकने के बाद युवक ने उसके आदेश का पालन किया, पीठ को देखते ही रश्मि कुछ और ज्यादा दृढ़तापूर्वक कह उठी—“आप सर्वेश नहीं हैं।"

कपड़ों को ठीक करते हुए युवक ने उसकी तरफ घूमकर पूछा—"आपने क्या देखा?"

"यह।" रश्मि ने दराज से एक फोटो निकालकर उसकी तरफ उछाल दिया, बोली—“आपकी पीठ पर कहीं कोई मस्सा नहीं है।"

युवक ने देखा, इस फोटो में एक युवक की पीठ थी—पीठ पर एक काफी बड़ा मस्सा बिल्कुल स्पष्ट नजर जा रहा था—हालांकि फोटो पीठ का होने के कारण सर्वेश का चेहरा स्पष्ट नहीं था, किन्तु रश्मि उसे सर्वेश का फोटो कह रही थी, सो उसे मानना ही पड़ा।

युवक उस फोटो को अभी देख ही रहा था कि रश्मि ने कहा—"अब तो आपके दिमाग से अपने सर्वेश होने का वहम निकल गया होगा?"

"ज.....जी हां।" इसके अलावा युवक और कह भी क्या सकता था?

युवक आश्वस्त हुआ हो या न हुआ हो, परन्तु रश्मि अवश्य आश्वस्त हो गई थी। शायद उसके अपने दिमाग में भी कहीं यह विचार कांटा बनकर चुभने लगा था कि कहीं यह सर्वेश ही न हो और उसे यहां बुलाकर रश्मि ने अपने उसी कांटे को साफ किया था, बोली—“वीशू बच्चा है, यह मुझसे ज्यादा अपने पापा को प्यार करता था—शायद इसीलिए मैंने इससे कह दिया था कि इसके पापा आकाश में गए हैं—एक दिन इसके लिए ढेर सारी टॉफियां लेकर जरूर लौटेंगे और शायद उसी भुलावे और आपकी शक्ल के चक्कर में यह भरी सड़क पर आपको ‘पापा' कहकर पुकार बैठा—मेरे इस नादान बेटे की वजह से अगर आपको कोई मानसिक दुख पहुंचा हो तो मैं क्षमा मांगती हूं।" कहते-कहते रश्मि की आवाज भर्रा गई।

उसकी आंखों में डबडबाते नीर को युवक ने स्पष्ट देखा।

उस विधवा के दिल में उठ रही किसी टीस का एहसास करके युवक को अपने दिल में एक हूक-सी उठती महसूस हुई, वह बड़ी मुश्किल से कह सका—"न.....नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है, रश्मि जी।"

एकाएक ही उसने सपाट स्वर में कहा—"अब आप यहां से जा सकते हैं।"

जाने क्यों, रश्मि के इस वाक्य से उसके मन-मस्तिष्क को एक झटका-सा लगा—पता नहीं क्यों युवक को इस घर से कहीं जाने की कल्पना अच्छी नहीं लगी—विशेष और रश्मि से वह अदृश्य लगाव-सा हो गया महसूस कर रहा था, एक नजर उसने विशेष पर डाली। अपनी मासूम आंखों से वह उसी की तरफ देख रहा था। उसकी आँखों में यह डर था कि कहीं उसके पापा पुन: कहीं चले न जाएं—युवक ने अपने मनोभावों का गला घोंटते हुए कहा—"यहां से जाना तो होगा ही रश्मि जी, क्योंकि मैं सर्वेश नहीं हूँ और यह घर मेरा नहीं है, मगर जाने से पहले मैं जानना चाहता हूं कि...।"

युवक स्वयं ही रुक गया।

रश्मि ने उसे सवालिया नजरों से देखते हुए पूछा—"क्या जानना चाहते हैं?"

"यह कि सर्वेश की मृत्यु कैसे हुई थी?"

इस वाक्य की रश्मि के चेहरे पर बड़ी ही तीव्र प्रतिक्रिया हुई। एकाएक ही उसका मुखड़ा हीरे से भी कई गुना ज्यादा कठोर नजर आने लगा, आंखें अन्तरिक्ष में जा टिकीं और गुर्राहट भरे स्वर में उसने कहा—"यह मेरी कहानी है, मिस्टर—मेरी और मेरे पति की व्यक्तिगत कहानी—इसमें किसी का दखल मुझे पसन्द नहीं आएगा।"

युवक ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला, मगर कह नहीं सका, क्योंकि तेजी के साथ, हवा के झोंके की तरह रश्मि कमरे से बाहर चली गई थी—युवक मूर्ख-सा, मुंह फाड़े—आश्चर्य के सागर में डूबा, हिलते हुए पर्दे को देखता रहा।

¶¶

उस वक्त शाम के सात बजे थे जब यू०पी० पुलिस की एक जीप, टायरों की तेज चरमराहट के साथ देहली में उस थाने के पोर्च में रुकी, जहां का इंचार्ज इंस्पेक्टर दीवान था—पाठक समझ ही सकते हैं कि इस जीप में इंस्पेक्टर चटर्जी और आंग्रे थे।

लगभग साथ ही वे जीप से बाहर निकले।

वातावरण में अंधेरा छा चुका था। लाइटें ऑन थीं और ठिठुरन बढ़ गई थी—उनके जीप से बाहर निकलते ही एक सिपाही उनके नजदीक आया। चटर्जी ने कहा—"हम गाजियाबाद से आए हैं और इंस्पेक्टर दीवान से मिलना चाहते हैं।"

"वे ऑफिस में हैं।" सिपाही ने बताया।

कुछ ही देर बाद वे आँफिस में इंस्पेक्टर दीवान के सामने थे—औपचारिक परिचय के आदान-प्रदान के उपरान्त दीवान ने उन्हें बैठने के लिए कहा, वे बैठ गए।

दीवान ने कहा—"फरमाइए, मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूं?"

"पिछले दिनों आपने अखबार में दो फोटो छपवाए थे, एक एक्सीडेंट के बाद याददाश्त खोए युवक का और दूसरा उसके पर्स से निकली युवती की तस्वीर का।"

दीवान एकदम से सतर्क नजर जाने लगा। कुछ इस प्रकार जैसे इस विषय में उसकी अपनी व्यक्तिगत दिलचस्पी भी पैदा हो गई हो, बोला—"जी हां।"

"आपका पता हमने अखबार से ही लिया था और अब यहां याददाश्त खोए उस व्यक्ति के बारे में आपसे कुछ जानने आए हैं।"

"उसके बारे में क्या जानना चाहते हैं आप?"

जवाब में चटर्जी ने उसे हरिद्वार पैसेंजर की घटना समेत सारी घटना सुना दी। सुनकर हैरत के कारण दीवान का बुरा हाल हो गया—"उफ्फ! उसने इतना जघन्य काण्ड कर डाला?"

"उसी हत्याकाण्ड के सिलसिले में हमें उसकी तलाश है।" सिगरेट ऐश ट्रे में मसलते हुए चटर्जी ने कहा—"होश में आने पर रूपेश नामक व्यक्ति ने हमें बताया कि लारेंस रोड पर रहने वाले सेठ न्यादर अली ने उसे सिकन्दर की देखभाल करने के लिए रखा था—सिकन्दर ने मीठी-मीठी बातें बनाकर उसे अपने विश्वास में ले लिया—दोस्त बना लिया—रूपेश के अनुसार सिकन्दर को यकीन नहीं आ रहा था कि वह न्यादर अली का लड़का है—उसके इस सन्देह को होश में आने के वक्त पहने कपड़ों पर लगी टेलर की चिट ने बल दिया—इन कपड़ों पर गाजियाबाद के 'बॉनटेक्स' टेलर की चिट थी, जबकि न्यादर अली के यहां मौजूद कपड़ों पर देहली के ही किसी टेलर की—सिकन्दर अपने अतीत के बारे में इनवेस्टिगेशन करने के लिए बेचैन हो गया—वह जानता था कि न्यादर अली उसे किसी भी कीमत पर बंगले से बाहर नहीं निकलने देगा, अत: उसने रात ही को गायब होने की स्कीम बनाई—रूपेश को विश्वास में लेकर उसने यह वादा करा लिया कि वह उसके गायब होने का रहस्य किसी को नहीं बताएगा-रूपेश ने उससे किए गए अपने वादे को पूरी तरह निभाया भी था कि आज शाम रूपेश भी टेलर की दुकान पर पहुंच जाएगा—सिकन्दर ने कहा था कि उसे टेलर से पता लग जाएगा कि मैं कहां मिलूंगा।"

"प्रोग्राम के मुताबिक रूपेश राजाराम की दुकान पर पहुंचा और वहां से राजाराम ने उसे भगवतपुरे के उस मकान में भेज दिया।" दीवान ने लिंक जोड़ा।

"हां।"

"क्या रूपेश ने यह भी बताया कि उस मकान में उसके साथ क्या हुआ?"

"उसका कहना था कि सिकन्दर ने उसे बातों में उलझाकर हथौड़ी की चोट से बेहोश कर दिया, कम-से-कम सिकन्दर से उसे ख्वाबों में भी ऐसी उम्मीद नहीं थी, अत: वह बिल्कुल भी सतर्क नहीं था—उसे तभी होश आया जब वह जल रहा था।"

"उसने पूरे विश्वास के साथ कहा है कि हमलावर सिकन्दर था?"

"हां।"

इंस्पेक्टर दीवान जाने किस सोच में डूब गया।

चटर्जी कहता ही चला जा रहा था—"अब सिकन्दर द्वारा ट्रेन में बताए गए एड्रेस से रूपेश का बयान 'टेली' कर रहा था, इसीलिए हमने लारेंस रोड पर स्थित न्यादर अली के बंगले पर छापा मारने की योजना बनाई, मगर उसके लिए हमारे साथ देहली पुलिस का होना जरूरी है, सो आपके पास आए हैं—सोचा था कि इस मामले में आप 'इनवाल्व' भी हैं, अत: हो सकता है कि कोई नई जानकारी दे दें और केस पर विचार-विमर्श करने से नतीजे निकल आया करते हैं।"

दीवान की मुस्कान गहरी हो गई, बोला—"मेरे पास आकर आपने नि:सन्देह बड़ी होशियारी का काम किया है।"

"हम समझे नहीं।"

"आपके मामले की सबसे महत्वपूर्ण गुत्थी यह है कि आखिर सिकन्दर ने यह हत्या क्यों की और इस सवाल का जवाब मेरे पास है।"

"कृपया पहेलियां न बुझाएं।"

गहरी मुस्कान के साथ दीवान ने बताया—"वह जब भी किसी युवा लड़की के साथ अकेला होगा, तभी उसकी हत्या कर देगा। फर्श पर पड़ी निर्वस्त्र लाश देखने और गर्दन दबाकर युवा लड़की को मार डालने का जुनून सवार होता है उस पर।"

"क्या कह रहे हैं आप?"

"उसे यह बीमारी है, इस बात का प्रमाण-पत्र आपको देहली का एक प्रसिद्ध मनोचिकित्सक डॉक्टर ब्रिगेंजा दे देगा और अदालत में यह एक ठोस वजह होगी।"

"क्या इस बारे में आप हमें विस्तार से बता सकते हैं?"

दीवान ने उन्हें युवक के द्वारा गर्दन दबाकर नर्स को मार डालने की असफ़ल चेष्टा, डॉक्टर ब्रिगेजा का दृष्टिकोण और युवक के पुन: होश में आने के बाद के बयान के बारे में बता दिया। सुनकर जहां उनकी आंखों में हैरत की चमक उभर आई, वहीं सफलता के साए

भी नाचने लगे।

कुछ देर तक चुप रहने के बाद चटर्जी ने कहा—"अब मैं इस सारे मामले के दूसरे ही पहलू पर सोच रहा हूं।"

"किस पहलू पर?"

"रूबी के बारे में।" चटर्जी ने कहा—"सभी सवालों का जवाब मिल गया है—यूं कहना चाहिए कि एक प्रकार से यह समूचा केस पूर्णतया हल हो चुका है, केवल अपराधी की गिरफ्तारी बाकी है, सम्भावना है कि वह भी हो जाएगी, मगर यह सवाल अनुत्तरित है कि रूबी कौन थी—उस युवक को वह जॉनी क्यों बता रही थी.....और सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि रूबी को यह बात कैसे मालूम थी कि युवक अपने बारे में पूछताछ करने राजाराम की दुकान पर ही जाएगा?"

"सम्भव है कि रूबी को उसके कपड़ों पर लगी चिट की जानकारी हो?"

"सारी कहानी हमारे सामने है, यह जानकारी उसे किस माध्यम से रही होगी?"

इस प्रश्न पर दीवान और आंग्रे बगलें झांकने लगे—जवाब शायद खुद चटर्जी के पास भी नहीं था, इसीलिए उसने एक नया ही सवाल खड़ा किया—"और वह प्रश्न भी विचाराधीन गये है, जिसकी तलाश में युवक न्यादर अली के बंगले से फरार हुआ।"

"हम समझे नहीं।"

"अगर युवक सचमुच न्यादर अली का लड़का सिकन्दर ही है तो उसके तन पर मिले कपड़े ही अलग टेलर द्वारा तैयार किए हुए क्यों थे, उसी टेलर द्वारा तैयार किए गए क्यों नहीं थे, जिसके न्यादर अली के बंगले में मौजूद उसके अन्य कपड़े थे?"

"प्रश्न नि:सन्देह विचारणीय है।"

"तो क्या तुम यह कहना चाहते हो चटर्जी कि वह युवक सिकन्दर नहीं था?" अजीब दुविधा में फंसे आंग्रे ने पूछा।

"जिन सवालों का फिलहाल हमारे पास जवाब नहीं है, उनकी तह में कुछ भी हो सकता है। राजाराम कहता है कि वह युवक पहले कभी उसकी दुकान पर नहीं आया—तब सवाल यह भी उठता है कि उसकी दुकान के सिले कपड़े युवक के तन पर कैसे मिले?"

"सवाल वाकई गहरा है।"

"इन सबका जवाब रूबी का रहस्य खुलने पर ही मिलेगा कि वह कौन थी? किस चक्कर में थी और यह अकेली ही कोई षडयन्त्र रच रही थी या उसका कोई साथी भी था?"

"यह सब पता लगाने के लिए हमारे पास कोई 'क्लू' कहां है?"

"तुम उसके द्वारा राजाराम को दिए गए दस हजार रुपयों को भूल रहे हो।"

"द...दस हजार रुपए, उससे क्या होगा?"

"वे रुपए अपने आप में खुद एक बहुत बड़ा क्लू हैं।"

चकित आंग्रे बड़बड़ाया—"रुपये भला किस रूप में 'क्लू' बन सकते हैँ?"

जवाब में चटर्जी ने कुछ कहा नहीं, सिगरेट में लम्बे-लम्बे कश लगाने के साथ ही वह अजीब-से रहस्यमय अन्दाज में मुस्कराता रहा। दीवान उसकी इस मुस्कराहट में से तंत निकालने के लिए अपने दिमाग के कस-बल निकाले दे रहा था।

¶¶

युवक अभी तक मुंह बाए कमरे के दरवाजे पर झूल रहे उस परदे को देख रहा था, जो रश्मि के तेजी से निकलने के कारण जोर-जोर से हिल रहा था।

एक बार फिर उसके दिमाग को ढेर सारे प्रश्नवाचक चिन्हों के जाल ने बुरी तरह जकड़ लिया था, हर कदम पर उसे उलझनों का सामना करना पड़ रहा था...किसी मूर्ति की तरह अवाक्-सा वह वहीं खड़ा रह गया।

उसे यह भी होश न रहा था कि नजदीक ही विशेष भी खड़ा है।

वह सोचने लगा कि न्यादर अली मुझे सिकन्दर साबित करना चाहता था और मैं खुद को सिकन्दर मानने के लिए तैयार न हुआ—रूबी मुझे जॉनी कह रही थी, पर्याप्त प्रमाण भी पेश किए थे उसने, मगर मैं फिर भी उस पर शक करता रहा—परन्तु यहां, इस छोटे-से घर में—छोटे-से परिवार के बीच हालात बिल्कुल उल्टे रहे—रश्मि सिद्ध कर रही थी कि मैं सर्वेश नहीं हूं और मैं खुद को सर्वेश ही साबित करने पर तुल गया।

पूर्णतया अभी तक मानने को तैयार नहीं हूं कि मैं सर्वेश नहीं हूं।

इसका कारण?

वह उस तरीके से सोचने लगा।

युवक इन्हीं विचारों के बीहड़ जंगल में भटक रहा था कि विशेष ने पुकारा—"पापा-पापा!"

तंद्रा भंग हो गई युवक की—उसने चौंककर विशेष की तरफ देखा, किसी शंका से डरा-सा वह युवक की तरफ देख रहा था, बोला—"चुप क्यों हो पापा?"

घुटनों के बल उसके समीप बैठ गया युवक, बोला—"नहीं तो बेटे, भला हम चुप

क्यों होते?"

"क्या आप हमारे पास से फिर चले जाएंगे, पापा?"

"न...नहीं बेटे, बिल्कुल नहीं।" विशेष को खींचकर अपने कलेजे से लगाता हुआ युवक उठा, गला जाने कैसे रुंध गया था—आवाज खुद-ब-खुद भर्रा गई—उसे लगा कि आंखें बेवफाई करने वाली हैं, भावावेशवश विशेष को कसकर भींच लिया उसने।

"म...मम्मी तो कह रही थीं।" विशेष अब भी किसी शंका से आतंकित था।

"व...वे इस वक्त गुस्से में हैं, बेटे।"

"तो आप नहीं जाएंगे?" अलग होते हुए उत्साहित-से विशेष ने पूछा, इस बच्चे की नीली आंखों में जो चमक इस वक्त थी, उसे देखकर युवक का दिलो-दिमाग हाहाकार कर उठा, अपने दिल के हाथों विवश होकर उसने कहा—"बिल्कुल नहीं बेटे।"

"तो खाइए मेरी कसम।" कहने के साथ ही विशेष ने उसका हाथ उठाकर अपने सिर पर रख लिया—युवक का मात्र वह हाथ ही नहीं, बल्कि दिल तक कांप उठा—अवाक्-सा मासूम विशेष को देखता रहा वह, जुबान तालू से जा चिपकी थी, विशेष ने कहा—"अगर आप फिर गए तो मैं बापू की तरह खाना-पीना छोड़ दूंगा—पढ़ने के लिए स्कूल भी नहीं जाऊंगा।"

युवक के सारे शरीर में झुरझुरी-सी दौड़ गई।

अन्जाने ही में उसके सेब-से गाल पर एक चुम्बन अंकित करता हुआ वह बोला —"हम तुम्हें छोड़कर कहीं नहीं जाएंगे, बेटे। क्या अपने पापा पर तुम्हें यकीन नहीं है।"

"तो इसी बात पर मिलाइए हाथ।" जोश में भरे विशेष ने अपना नन्हां हाथ आगे बढा दिया—युवक ने हाथ मिलाया—विशेष के दमकते चेहरे को देखकर युवक के होंठों पर भी मुस्कान बिखर गई।

जैसे उनका दुख-सुख एक ही डोर से बंधा हो।

अचानक विशेष ने पूछा—"आपको मेरे लेटर मिल गए थे, पापा?"

"लेटर?"

"हां, मम्मी के कहने पर मैंने आपको डाले थे।"

"हमें लेटर डाले थे आपने.....किस एड्रेस पर भाई?"

"आपका नाम, आकाशपुरी—तारा नम्बर फिफ्टीन।"

वेदना से लबालब भर गया युवक का हृदय। खुद को रोने से रोकने के लिए

जबरदस्त श्रम करना पड़ा उसे, बोला—“अरे, हम तो तारा नम्बर फिफ्टीन में ही रहते थे।"

"फिर आपने हमारे इतने सारे लेटर्स का जवाब क्यों नहीं दिया?"

"लेटर तो तभी मिलता है न बेटे, जब उसे लेटर बॉक्स में डाला जाए?"

"मम्मी ने भी यही कहा था और हमारे सारे लेटर्स उन्होंने लेटर बॉक्स में ही डलवाए थे।"

"ल...लेटर बाक्स में—कौन-सा लेटर बॉक्स?"

"देखिए, वह रहा।" कहने के साथ ही विशेष ने जल्दी से एक तरफ को इशारा कर दिया। युवक ने जब उस तरफ देखा तो दिल धक्क से रह गया।

कमरे में मौजूद एक सेफ की पुश्त पर लेटर बॉक्सनुमा एक खिलौना रखा था। लाल रंग का एक छोटा-सा, गोल लेटर बाक्स—दरअसल यह 'गुल्लक' थी, अत: अन्दर से खोखला था...पैसे डालने वाले स्थान से कोई भी कागज 'तह' करके अन्दर आराम से डाला जा सकता था।

युवक के सारे शरीर में झुरझुरी-सी दौड़ गई।

"क्या तुमने सारे पत्र उसी में डाले थे?"

"मम्मी ने कहा था कि उसमें डालने से पत्र आपको मिल जाएंगे।"

रोकने की काफी कोशिश के बाद भी आंखों ने विद्रोह कर ही दिया, जाने क्यों—युवक के दिल में उस लेटर बॉक्स को खोलने की तीव्र इच्छा उभरी-बॉक्स के खुलने वाले मुंह पर छोटा-सा ताला लटका हुआ था—एकाएक ही उसके दिल में यह सवाल उठा कि एक मां को, बिना पापा के बच्चे को पालने के लिए क्या-क्या करना पड़ता है!

वह खुद को रोक नहीं सका।

एक कुर्सी पर चढ़ाकर उसने बॉक्स उतार लिया—बॉक्स के समीप ही छोटी-सी चाबी रखी थी। विशेष के नजदीक आकर उसने ताला खोला, बॉक्स का ताला खोलते ही लुढ़ककर कई कागज फर्श पर गिर गए।

“अरे, ये सारे लेटर तो इसी में रखे हैं पापा—फिर आपको मिलते कैसे?"

"इस तरफ का पोस्टमैन छुट्टी पर होगा, बेटे।" भर्राए स्वर में कहते हुए युवक ने उनमें से एक कागज उठा लिया, खोलकर पढ़ा, लिखा था—“मेरे प्यार पापा, मेरे लिए टॉफियां लेने गए आपको इतने ढेर सारे दिन हो गए हैं—मगर आप आते ही नहीं—मैं हर समय आपके लिए रोता रहता हूं—जब मैं रोता हूं तो मम्मी भी रोती हैं, पापा—कहती हैं

कि मैं हर समय आपसे टॉफियों के लिए जिद्द करता रहता था—इसीलिए आप चले गए हैं—अच्छा तो, मैं अपने कान पकड़ता हूं पापा—अब कभी टॉफी नहीं मांगूंगा, मगर आप आ तो जाओ—अब आओगे न पापा—टॉफी बहुत गंदी होती हैं—यस, पापा अच्छे होते हैं, सच है न पापा—देखो, अगर आप मेरा यह लैटर पढ़कर भी नहीं आए तो मैं रूठ जाऊंगा आपसे।

...आपका शैतान बेटा—विशेष।

'टप-टप' करके कई बूंदें उस कागज पर गिर पड़ीं।

"अरे, आप रो रहे हैं, पापा?"

"ब...बेटे।" खींचकर उसने विशेष को अपने सीने से लगा लिया और बांध टूट चुका था—युवक की आंखों से आंसुओं का सैलाब-सा उमड़ पड़ा—फूट-फूटकर रो पड़ा वह—लाख चाहकर भी अपनी इस रुलाई को रोक नहीं सका था युवक।

विशेष की समझ में कुछ नहीं आ रहा था।

"नहीं पापा, रोते नहीं हैं—मम्मी कहती हैं कि रोने वाले बच्चे कायर होते हैं—क्या आप कायर हैं पापा—कायर होना गन्दी बात है।"

विशेष का एक-एक शब्द उसके अन्तर में कहीं ज़बरदस्त खलबली मचा रहा था। तभी कमरे में रश्मि की आवाज गूंजी—"आप अभी तक यहीं हैं?"

युवक एकदम से विशेष से अलग होकर खड़ा हो गया—बौखलाकर उसने अपने आंसू पौंछे और खुले पड़े लेटर बॉक्स को देखकर रश्मि जैसे सब कुछ समझ गई—एक क्षण के लिए उसके मुखड़े पर असीम वेदना उभरी, अगले ही पल उसने सख्त स्वर में कहा —"यह लेटर बॉक्स यहां से उतारकर आपने किस अधिकार से खोल लिया है?"

युवक चुप रहा, उसके पास कोई जवाब नहीं था।

"आप यहां से जाते हैं या मैं पुलिस को बुलाऊं?"

खुद को नियंत्रित करके युवक ने कहा—"मैं आपसे कुछ बातें करना चाहता हूं।"

"मुझे आपकी कोई बात नहीं सुननी है।"

"प...प्लीज।" युवक गिड़गिड़ा उठा—"म.....मेरी सिर्फ एक बात सुन लीजिए। घर आपका है, अन्त में वही होगा, जो आप चाहेंगी।"

रश्मि खामोश रह गई, युवक की बात मान लेने के लिए यह उसकी मौन स्वीकृति थी। युवक ने विशेष को नीचे चले जाने के लिए कहा।

सहमे-से विशेष ने तुरंत ही उसके आदेश का पालन किया।

"कहिए।" विशेष के जाते ही रश्मि ने सपाट स्वर में कहा।

"द....दरअसल मैंने विशेष के द्वारा अपने पिता को लिखा गया पत्र पढ़कर ही वास्तव में अहसास किया है कि, विशेष को अपने पिता से बेइन्तहा मौहब्बत है...अपने पिता के लौटने का उसे बेसब्री से इंतजार था और वह मुझी को अपना पिता समझ बैठा है, अब अगर मैं यहां से इस तरह चला गया तो उसका दिल टूट जाएगा।"

"उसके बारे में चिन्तित होने का आपको कोई हक नहीं है।"

"जानता हूं लेकिन जज्जात नहीं जानते रश्मि जी कि हक क्या होता है—उन्हें तो दिल में खलबली मचाने से मतलब है.....वे जाने कब, किसके लिए, किसके दिल में मचल उठें...वीशू कहता है कि अगर मैं चला गया तो वह खाना नहीं खाएगा—स्कूल भी नहीं जाएगा।'"

"वे सब मेरी समस्याएं हैं, मैं जानूं...आपसे मतलब ?"

"अगर कुछ ज्यादा नहीं तब भी, इंसानियत का मतलब तो है ही—मुझे लगता है कि यदि मैं यहां से चला गया तो वीशू के विकसित होते दिमाग पर बहुत बुरा असर पड़ेगा।"

"तो क्या मैं आपको इस घर में बसा लूं?"

"म...मैंने यह कब कहा?"

"फिर क्या मतलब है आपका?"

"अगर मैं किसी तरह वीशू के दिमाग में इस सच्चाई को भरने में सफल हो जाऊं कि मैं उसका पिता नहीं हूं तो शायद मेरे यहां से चले जाने का उसके दिमाग पर कोई असर नहीं होगा।"

"इस काम में कितना समय लगेगा आपको?"

उत्साहित-से होकर युवक ने कहा—"एक या ज्यादा-से-ज्यादा दो दिन।"

"दो दिन।" कहकर रश्मि किसी सोच में डूब गई महसूस हुई। शायद विशेष की मानसिक स्थिति का अंदाजा वह भी ठीक से लगा पा रही थी, बोली—"ठीक है, आप केवल दो दिन यहां रह सकते हैं, दो दिन से ज्यादा एक क्षण भी नहीं।"

"थ...थैंक्यू।" खुशी से लगभग कांपते हुए युवक ने कहा।

"और इन दो दिनों में मांजी को भी समझा दीजिएगा कि आप उनके बेटे नहीं हैँ—

मैं जितनी देर नीचे उनके पास रही, वे आपको बेटा ही कहती रहीं।"

"म...मैँ समझा दूंगा।"

"आप सिर्फ नीचे रहेंगे—एक क्षण के लिए भी ऊपर आने की कोशिश नहीं करेंगे।"

"म....मुझे आपकी हर शर्त मंजूर है।" कहने के बाद युवक तेज और लम्बे-लम्बे कदमों के साथ कमरे से बाहर निकल गया। जाने क्यों वह बहुत खुश था।

¶¶

दो जीपों में पूरी पुलिस फोर्स के साथ वे सर्च वारण्ट लेकर न्यादर अली के बंगले पर पहुंचे। पुलिस बल बंगले में दाखिल हो गया।

उन्हें देखते ही सेठ न्यादर अली अधीरतापूर्वक पूछ बैठे—"क्....क्या मेरा बेटा मिल गया है?"

दीवान ने बहुत ही कड़ी दृष्टि से न्यादर अली को घूरा, बोला—"हमें तो यह पता लगा है कि सिकन्दर यहां आया है।"

"य.....यहां—कहां है, कहां है सिकन्दर?" न्यादर अली पागल-सा होकर चीख पड़ा।

"ज्यादा नाटक करने की कोशिश मत करो, मिस्टर न्यादर अली, हम जानते हैं कि उसे तुमने इसी बंगले में कहीं छुपा रखा है—उसे हमारे हवाले कर दो।"

"क...कैसी बात कर रहे हो, इंस्पेक्टर? हम भला उसे छुपाएंगे क्यों?"

उसे आतंकित कर देने की मंशा से घूरते हुए दीवान ने पुन: कहा—"इस बात को अच्छी तरह समझ लो मिस्टर न्यादर अली कि मुजरिम को पनाह देने वाला भी मुजरिम होता है। भले ही पनाह देने वाला मुजरिम का पिता हो।"

"म.....मेरा सिकन्दर भला मुजरिम कैसे हो सकता है?"

और फिर चटर्जी ने आगे बढ़कर संक्षेप में न्यादर अली को सारा किस्सा समझा दिया। सुनने के बाद न्यादर अली की आंखें हैरत से फटी-की-फटी रह गईं। वह पागलों की तरह चीख पड़ा—"न...नहीं...यह झूठ है...मेरा बेटा किसी की हत्या नहीं कर सकता—मेरा सिकन्दर तो एक चींटी को भी नहीं मार सकता—तुम झूठ बोल रहे हो—या तो वह कोई और होगा या पुलिस मेरे बेटे को किसी षड़यंत्र का शिकार बना रही है।"

न्यादर अली चीखता ही रहा, जबकि फोर्स ने उसके बंगले की तलाशी लेनी शुरू कर दी।

परिणाम तो पाठक जानते ही हैं।

पूरा एक घण्टा व्यर्थ बरबाद किया गया। उसके बाद वह पुलिस बल न्यादर अली को रोता-पीटता छोड़कर वापस लौट गया—तीनों इंस्पेक्टर एक ही जीप में थे।

काफी देर तक जीप में खामोशी छाई रही।

"मेरे ख्याल से अब वह देहली से बाहर निकलने की चेष्टा करेगा।" अचानक दीवान ने शंका व्यक्त की।

धीमे से मुस्कराया चटर्जी, बोला—"भागकर जाएगा कहां, कल हम अखबार में उसकी फोटो छपवा देंगे। ऐसा होने पर उसे कोई भी पहचान सकता है...और फिर हर आदमी उसके लिए एक पुलिस कांस्टेबल से कम खतरनाक नहीं होगा।"

¶¶

ऊपर वाले कमरे में, पलंग पर अकेली पड़ी रश्मि सूने-सूने नेत्रों से कमरे की छत को निहार रही थी।

अभी, कुछ देर पहले तक नीचे से विशेष और उस अजनबी के खेलने, हंसने और बोलने की आवाजें आ रही थीं।

कुछ ही देर से तो खामोशी छाई है।

रात गहरा गई थी—चारों तरफ सन्नाटा छा गया।

रश्मि सोचने लगी कि क्या विशेष सो गया है?

क्या उस शैतान को नींद आ गई है, जो कभी उसके बिना नहीं सोता है? यही सोचते-सोचते उसे काफी देर हो गई। अचानक ही जाने उसके दिमाग में क्या विचार आया कि वह उठकर खड़ी हो गई—बड़े ध्यान से, बड़े प्यार से वह दीवार पर लगे सर्वेश के फोटो को देखने लगी। वह देखती रही—देखती रही और देखते-ही-देखते उसे जाने क्या याद आने लगा।

उसका चेहरा कठोर होता चला गया, आंखें पथरा-सी गईं—जाने किस भावना के वशीभूत जबड़े भिंच गए उसके।

कोमल मुट्ठियां कसती चली गईं।

नीली आंखों से आग लपलपाती-सी महसूस हुई। दांत भींचे किसी जुनून-से में फंसी वह कह उठी—"म...मैं बदला लेकर रहूंगी प्राणनाथ—आपके चरणों की कसम, अपने हत्यारे का खून पी जाऊंगी मैं—एक बार, बस एक बार रंगा-बिल्ला मेरे सामने आ जाएं।"

जज्बातों के झंझावात में फंसी, उत्तेजना के कारण अभी वह कांप ही रही थी कि कमरे के बन्द दरवाजे पर दस्तक हुई।

बुरी तरह चौंककर वह उछल पड़ी।

एक ही क्षण में उसके जिस्म के असंख्य मसामों ने बर्फ-सा ठंडा पसीना उगल दिया —दिल बहुत जोर-जोर से धड़कने लगा, आतंकित-सी वह कमरे के बन्द दरवाजे को देखने लगी। शायद दहशत के कारण ही जुबान तालू में कहीं जा चिपकी थी।

दस्तक पुन: उभरी।

रश्मि ऊपर से नीचे तक कांप गई। उसने अपनी सारी हिम्मत जुटाकर पलंग के सिरहाने से एक रिवॉल्वर निकाल लिया। डर के कारण भले ही उसका हाथ कांप रहा था, परन्तु रिवॉल्वर को बन्द दरवाजे की तरफ तानकर बोली—"क....कौन है?"

"म...मैं हूं रश्मिजी।"

"त...तुम?" कांपते लहजे को संतुलित करने की रश्मि ने भरपूर चेष्टा की—"तुम यहां क्यों आए हो?"

"वीशू सो गया है, इसे ले लीजिए।"

रश्मि का कठोर स्वर—"अगर सो गया है तो नीचे ही सोने दीजिए।"

"यह नींद में मम्मी-मम्मी बड़बड़ा रहा था, इसीलिए मैं विवश हो गया।"

"मैंने कहा था कि तुम ऊपर नहीं आओगे।"

"मुझे याद है रश्मिजी, मैं वीशू को दरवाजे के इस तरफ लिटाए जा रहा हूं—जब मैं चला जाऊंगा तो इसे उठाकर ले जाइएगा।" युवक के इस वाक्य के जवाब में रश्मि चुप रही—कुछ देर बाद उसे किसी के द्वारा सीढ़ियां उतरने की आवाज सुनाई दी।

एक बोझ-सा उसके दिलो-दिमाग से उतर गया।

रिवॉल्वर को पलंग पर डालकर दरवाजे की तरफ अभी उसने पहला कदम बढ़ाया ही था कि मस्तिष्क से एक विचार टकराया—'कहीं यह उस बदमाश की कोई चाल तो नहीं है?

'सम्भव है कि सीढ़ियां उतरने की आवाज सिर्फ पैदा की गई हों, असल में वह कमरे के बाहर ही अंधेरे में कहीं छिपा खडा हो, ऐसा हो सकता है।'

इस एकमात्र विचार ने उसे पुन: आतंकित कर दिया।

'उसकी नीयत में खोट हो सकता है—पराए मर्द का क्या भरोसा—बहुरूपिया कहीं छुपा पड़ा हो—मैं दरवाजा खोलूं और वह झपट पड़े, तब मैं उस दरिन्दे से अपनी रक्षा कैसे कर सकूंगी?'

'बस— एकाएक ही कानों में उसके पति की आवाज गूंज गई—'रश्मि, क्या तुझमें इतना ही हौंसला है? अरे, अगर तू इतनी डरपोक बनी रही तो मेरे हत्यारों से बदला कैसे ले सकेगी—रिवॉल्वर तेरे पास है, उठा उसे और निकल बाहर—अगर वह तेरी इज्जत पर हमला करे तो गोली से उड़ा दे उसे।'

उसी आवाज की प्रेरणावश उसने रिवॉल्वर उठा लिया, चेहरे पर सख्ती के वही भाव उभर आए, जो कभी महारानी लक्ष्मीबाई के चेहरे पर रहे होंगे—अब वह बिना डरे आगे बढ़ी।

बेहिचक दरवाजा खोल दिया उसने।

रिवॉल्वर मजबूती के साथ पकड़े हुए थी रश्मि। रात चांदनी थी—सारी छत पर चांदनी पिघली हुई चांदी के समान बिखरी पड़ी थी। दरवाजे के पास जमीन पर सो रहे विशेष के अलावा वहां कोई नहीं था।

चारों तरफ खामोशी और छिटकी हुई चांदनी उसे अच्छी लगी।

सोते हुए विशेष को उठाकर उसने कमरे के अंदर, पलंग पर लिटाया, फिर दरवाजा बन्द किया—रिवॉल्वर सिरहाने रखा और इत्मीनान की एक सांस लेती हुई लेट गई।

वह पुनः छत को निहारने लगी।

मस्तिष्क में पुनः विचार रेंगने लगे—सोच रही थी कि मैंने व्यर्थ ही उस बेचारे की नीयत पर शक किया, यह सचमुच चला गया था और फिर विशेष तो सचमुच ही नींद में 'मम्मी-मम्मी' बड़बड़ाता रहता है—सुनकर उसने इसे यहां पहुंचाना जरूरी समझा होगा।

'किसी पर व्यर्थ ही शक करना भी तो पाप है—वह ऐसा नहीं है—म....मैं जब स्वयं विशेष को डांटकर कमरे से बाहर भेज रही थी, तब खुद उसी ने इसे यहां रोका था—यदि वह गिरे हुए चरित्र का होता तो ऐसा हरगिज नहीं करता—नहीं, युवक ऐसा नहीं है।'

'वह बेचारा तो खुद ही ऐसी उलझन में फंसा हुआ है, जो बड़ी अजीब है।'

युवक की उलझन का अहसास करती-करती वह जाने कब सो गई?

जब आंख खुली तो दरवाजे को कोई जोर-जोर से पीट रहा था।

रश्मि हड़बड़ाकर उठी, रोशनदान के माध्यम से कमरे में धूप की ताजा रोशनीयों आ रही थी। बौखलाकर उसने पूछा—"क.....कौन है?"

"अरी दरवाजा खोल, रश्मि...देख, वह चला गया है—मेरा बेटा चला गया, बस एक ही रात के लिए यहां आया था।"

रश्मि खुद नहीं जानती थी कि युवक के चले जाने की इस सूचना से उसे धक्का-सा क्यों लगा, वह लपकी-सी दरवाजे पर पहुंची।

विशेष भी जाग चुका था।

अपनी दोनों मुट्ठियों से आंखें भींचते हुए उसने पहला वाक्य यही कहा—"पापा कहां हैं?"

दरवाजा खुलते ही पागल-सी रोती-पीटती बूढ़ी मां अंदर दाखिल हुई, बोली—"देख ले—वह चला गया, तू उसे सर्वेश कहने के लिए तैयार नहीं थी न?"

"क...कहां चले गए?"

"म....मैं क्या जानूं.....मैं उसके कमरे में गई तो वह वहां नहीं था—पलंग पर यह खत पड़ा था, शायद कुछ लिखकर छोड़ गया है—इसे जल्दी से पढ़।"

विशेष कुछ भी नहीं समझ पा रहा था, इसीलिए पलंग पर ही बैठा मासूम-सी नजरों से उनकी तरफ देखता रहा। रश्मि ने जल्दी से
मां के हाथ से कागज लिया।

लिखा था—

प्रिय रश्मिजी,

अपने घर में रहने के लिए दो दिन की मौहलत देने के लिए बहुत धन्यवाद—दिल से चाहता तो था कि वे दो दिन पूरे करूं, अगर सच्चाई पूछें तो वह यें है कि यहां से जाने की इच्छा बिल्कुल नहीं थी—अतीत की तलाश में भटकते हुए यहां आकर मुझे कुछ ऐसा सकून मिला कि फिर से अतीत की तलाश में भटकने की मंशा ही खत्म हो गई थी—हां, लेकिन यकीनन मैं सर्वेश नहीं हूं, फिर भी जाने क्यों, इस चारदीवारी में मुझे ऐसा महसूस हुआ था कि मेरा अतीत मिल गया है।

मैँ वीशू के साथ खेला, हंसा—वह सब शायद मुझे तब तक याद रहेगा, जब तक कि प्रकृति एक बार पुन: मेरी याददाश्त न छीन ले—, बड़ी ही प्यारी लगने वाली शैतानियां करता है वीशू और यदि सच पूछें तो मैं वक्त से पहले उसी शैतान से डरकर जा रहा हूं—मुझे माफ करना रश्मि जी, वीशू और मांजी को जो कुछ समझाने का मैंने आप से वादा किया था, उसे पूरा करके नहीं जा रहा हूं—पूरा कर भी नहीं सकता—'बेटा-बेटा' करती मांजी और 'पापा-पापा' करते वीशू को वास्तविकता बताना दुनिया का शायद सब से कठिन काम है।

वीशू को आपके कमरे के बाहर लिटाकर आने के बाद यहां आकर यह पत्र लिख रहा हूं—दुर्भाग्य से उस वक्त मैंने आपकी आवाज सुन ली थी, जब शायद आप अपने

पति के फोटो से बातें कर रही थीं—यह सवाल तीर की तरह दिल में चुभता चला गया कि आखिर किस दरिन्दे में इतना कलेजा था, जिसने वीशू जैसे मासूम बच्चे के पिता की हत्या कर दी—खैर, जानता हूं कि इस सवाल का जवाब मुझे कभी नहीं मिलेगा, क्योंकि यह आपका अपना व्यक्तिगत मामला है और इस बारे में कुछ भी जानने का मुझे कोई हक नहीं है—दिल पर पत्थर रखकर इसीलिए जा रहा हूं क्योंकि जानता हूं कि अगर मैं पूरे दो दिन तक उस मासूम फरिश्ते के साथ खेलता रहा तो फिर जा ही नहीं सकूंगा और जाना तो मुझे पड़ेगा ही। मैं सर्वेश नहीं हूं—फिर भी मेरी तरफ से एक बार वीशू को चूम जरूर लेना, मांजी से चरण स्पर्श करना।

आपका कोई नहीं—एक अजनबी।

पूरा पत्र पढ़ने के बाद उसी स्थान पर खड़ी-खड़ी पथरा-सी गई रश्मि। मांजी अभी तक चीख-चीखकर पूछ रही थी कि पत्र में क्या लिखा है। विशेष ने केवल एक ही रट लगा रखी थी—"मम्मी, पापा कहां हैं—पापा कहां चले गए हैं, मम्मी?"

¶¶

हालांकि उस वक्त वातावरण में दिन का प्रकाश फैल चुका था जब युवक ने गांधीनगर में स्थित मकान से बाहर कदम रखा, किन्तु लोग सड़क पर नहीं आए थे—इतनी सुबह उसे कहीं से कोई सवारी भी नहीं मिली थी, अत: विचारों में गुम वह पैदल ही बढ़ता चला जा रहा था—सड़क पर इक्का-दुक्का व्यक्ति ही नजर आ रहे थे।

वे जो मॉर्निंग वॉक' के शौकीन थे। वे जो सड़क साफ कर रहे थे या वे जो साइकिल के हैण्डिल पर अखबारों का पुलिन्दा रखे थे।

वे साइकिल को काफी तेज चलाते हुए उसके समीप से गुजर जाते थे।

शायद अपने ग्राहकों तक अखबार पहुंचाने की जल्दी में थे वे।

अचानक ही बिजली की तरह युवक के दिमाग में यह विचार कौंध गया कि—सम्भव है आज के अखबारों में गाजियाबाद के भगवतपुरा मौहल्ले में हुए हत्याकांड के बारे में कुछ छपा हो?

जरूर छपा होगा।

मगर क्या?

मन में अखबार देखने की तीव्र इच्छा जाग्रत हो उठी—बहुत ही जबरदस्त बेचैनी के साथ उसने अपने चारों तरफ नजर दौड़ाई। एक अखबार विक्रेता जाता नजर आया, युवक ने उसे रोक लिया।

उसने एक अखबार खरीदा।

अखबार विक्रेता साइकिल दौड़ाता चला गया और इधर अखबार के मुख्य पृष्ठ पर नजर पड़ते ही युवक का दिल 'धक्क' से किसी गेंद के समान उछलकर कण्ठ में जा अटका।

सारा शरीर पसीने से भरभरा उठा उसका।

आंखों के सामने अंधेरा छा गया और यह सच है कि चलना तो दूर, अपनी टांगों पर खड़ा रहना असम्भव हो गया—इस डर से कि कहीं गिर न पड़े, वह वहीं—फुटपाथ पर बैठ गया।

अपनी बिगड़ी हुई स्थिति पर काबू पाने के लिए उसे काफी मेहनत करनी पड़ी—उसका इस प्रकार फुटपाथ पर बैठना अजीब था—इक्का-दुक्का राहगीर उसे विचित्र निगाहों से देखकर गुजरे थे, इसीलिए साहस जुटाकर पुनः खड़ा हो गया।

उसकी ऐसी अवस्था अखबार में अपने फोटो को देखकर हुई थी, उस फोटो को देखकर, जिसके नीचे लिखा था—इस हत्यारे से विशेष रूप से युवा लड़कियों को दूर रहना चाहिए, क्योंकि उन्हें देखते ही यह गर्दन दबाकर उन्हें मार डालने के लिए मचल उठता है।'

'उफ्फ—अखबार ने ऐसा खतरनाक परिचय दिया है मुझे?'

कुछ ही देर में ये अखबार सारी देहली और उसके आसपास फैल जाएंगे-शाम तक लगभग सारे ही भारत में—हर व्यक्ति इस फोटो को घूर रहा होगा।

अब वह ज्यादा-से-ज्यादा आधे घण्टे तक सड़क पर सुरक्षित है—केवल तब तक जब तक कि सड़कें वीरान हैं—कुछ ही देर में भीड़ बढ़ने लगेगी—आधा घण्टे बाद हर सड़क पर मेला-सा लग जाएगा और फिर लाखों-करोड़ों उन व्यक्तियों में से कोई भी उसे पहचान लेगा, अतः उसे जल्दी से किसी ऐसे स्थान पर पहुंच जाना चाहिए जहां उसके अलावा कभी कोई न जा सके।

यहां आसपास ऐसा कौन-सा स्थान हो सकता है?

बौखलाकर उसने अपने चारों तरफ देखा।

कहीं कोई स्थान नहीं था, सड़क के दोनों तरफ लोगों के मकान—ज्यादातर मुख्य द्वार अभी तक बन्द थे—युवक पर घबराहट पूरी तरह हावी हो गई—जेहन में रह-रहकर यह सवाल भी उठ रहा था कि पुलिस को आखिर मेरा फोटो कहां से मिल गया?

बौखलाकर वह सड़क पर भाग पड़ा।

उसे किसी ऐसे स्थान की तलाश थी, जहां दुनिया के हर व्यक्ति की नजर से बच सके—हालांकि ऐसा कोई स्थान उसकी समझ में नहीं आ रहा था। फिर भी—पागलों की तरह वह एक से दूसरी गली में भागता फिरने लगा।

भागते हुए अचानक ही उसकी दृष्टि एक ऐसे मकान पर पड़ी जो मकान नहीं, सिर्फ मलबे का ढेर नजर आ रहा था—वह कोई पुराना मकान था, जो अपनी उम्र पूरी करने के बाद गिर चुका था और किसी वजह से जिसके मालिक ने मलबा हटाकर उसका पुनः निर्माण नहीं कराया था—मलबे के ढेर से दबा होने के बावजूद भारी मुख्य द्वार अभी गिरा नहीं था, अटका पड़ा था।

द्वार पर एक बहुत पुराना ताला भी झूल रहा था, किन्तु उसका कोई महत्व नहीं था, क्योंकि साइड में से कोई भी मलबे के ऊपर से गुजरकर अंदर जा सकता था।

इस तरफ मलबे का एक छोटा-सा पहाड़ बन गया था।

वह भागता-हांफता मलबे पर चढ़ गया।

सामान्य अवस्था में हालांकि किसी के उस मलबे के पार जाने की कोई वजह नहीं थी, परन्तु ऐसी गारंटी कोई नहीं थी कि यहां कोई पहुंचेगा ही नहीं, मगर इस वक्त युवक को किसी गारंटी की जरूरत नहीं थी, अतः दूसरी तरफ मलबे के ढेर से नीचे उतर गया।

खण्डहर ही बता रहा था कि अपने समय में मकान काफी बड़ा रहा होगा—चारों तरफ मलबा-ही-मलबा पड़ा था। दाएं कोने में एक ऐसा कमरा था जिसकी आधी दीवारें खड़ी थीं—छत का एक कोना भी जाने कैसे लटका रह गया था।

वह वहां पहुंच गया।

गन्दे कोने में एक व्यक्ति के लेटने जितनी जगह पर उसकी नजर पड़ी—इस कोने में छिपे व्यक्ति को कोई इस कमरे में आए बिना नहीं देख सकता था, अतः युवक को छिपने के लिए वही स्थान उपयुक्त लगा।

कपड़ों की परवाह किए बिना वह धम्म से उस कोने में जा गिरा।

मलबे के ढेर पर बैठा वह दो गन्दी और आधी दीवारों से पीठ टिकाए बुरी तरह हांफ रहा था—स्वयं को नियंत्रित करने में उसे काफी समय लगा।

थोड़ा संभलने के बाद उसने अखबार में छपा खुद से सम्बन्धित समाचार पढ़ा।

मोटे-मोटे शब्दों में हैडिंग बनाया गया था—'सनसनीखेज हत्याकाण्ड।'

युवक पढ़ता चला गया, सारी वारदात विवरण सहित लिखी थी—आंग्रे की खोजबीन पढ़कर वह चकित रह गया—आंग्रे और चटर्जी के मिलने तथा उनकी वार्ता के निष्कर्ष ने उसके होश उड़ा दिए—राजाराम के बयान ने उसके दिमाग की समस्त नसों को हिला दिया।

तात्पर्य यह कि पूरा समाचार पढ़ने के बाद उसकी घबराहट चरम सीमा पर पहुंच

गई, इन सबसे जहां यह बात स्पष्ट होती थी कि रूबी किसी वजह से व्यर्थ ही उसे जॉनी सिद्ध करना चाहती थी, वहां इस समाचार ने उसे थरथराकर रख दिया कि रूपेश जीवित बच गया है और तीनों इंस्पेक्टर न्यादर अली के बंगले तक पहुंच गए।

वह उस क्षण को धन्यवाद देने लगा जिस क्षण उसके दिमाग में न्यादर अली के बंगले के लिए देहली जाने के स्थान पर शाहदरा में ही उतर जाने का विचार आया था।

मगर इस तरह कब तक बचा रह सकूंगा मैं?

युवक का मनोबल कमजोर पड़ने लगा—उसे महसूस हो रहा था कि—कानून से भागते रहने की मेरी हर कोशिश अब बेकार जाएगी। अंतत: इन काइया इंस्पेक्टरों के चंगुल में फंस जाना ही मेरा भाग्य है।

युवक को अपने चारों तरफ अंधेरा-ही-अंधेरा नजर आने लगा—ऐसा घनघोर अंधेरा कि जिसमें हाथ को हाथ सुझाई न दे और इस अंधेरे में हल्की-सी प्रकाश की किरण बनकर उभरा—सर्वेश।

रश्मि के कमरे की दीवार पर लगा सर्वेश का वह फोटो।

'हां।' दिमाग के उसी शैतान कोने ने सलाह दी—'तुम सर्वेश बन सकते हो। पूरी तरह सर्वेश बनकर बचे रह सकते हो—फिलहाल तुम्हारा कोई परिचय नहीं है—कोई चोला नहीं है तुम पर—सर्वेश का चोला ओढ़ लो—तब शायद पुलिस भी धोखा खा जाए।'

यह बात युवक के दिमाग में बैठती चली गई कि अब केवल उस छोटे-से घर की चारदीवारी ही उसके लिए एक सुदृढ़ किला साबित हो सकती है।

'मगर अब वहां जाऊं किस मुंह से?'

छोड़े हुए पत्र में लिखा अपना एक-एक शब्द उसे याद आने लगा—दिलो-दिमाग में एक द्वन्द-सा छिड़ गया।

¶¶

पंजाब नेशनल बैंक की मेरठ रोड पर स्थित शाखा के मैनेजर की मेज पर सौ-सौ के नए नोटों की एक गड्डी धीमे से रखते हुए इंस्पेक्टर चटर्जी ने कहा, "मैं यह जानना चाहता हूं कि नोटों की यह गड्डी आपके बैंक ने कब और अपने किस ग्राहक को दी थी।"

"य...यह सब बताना तो बहुत कठिन है, इंस्पेक्टर।"

"जानता हूं मगर यह एक संगीन मामला है मिस्टर मेहता, जुर्म की तह तक पहुंचने

के लिए हमारे पास इस गड्डी के अलावा कोई दूसरा सूत्र नहीं है—जितना कठिन काम आपको करना पड़ेगा, उतना ही रिजर्व बैंक को भी करना पड़ता है—वहीं से यह पता लगाना भी आसान काम नहीं था कि यह गड्डी आपकी शाखा को इशू की गई थी।"

मैनेजर दुविधा में फंस गया।

"प.....प्लीज मिस्टर मेहता—ऐसा करके आप कानून की बहुत बड़ी मदद करेंगे—दरअसल यह मर्डर का मामला है—शायद आपके उसी खातेदार का मर्डर हुआ है, जिसे यह गड्डी दी गई—हमें मरने वाले का नाम-पता आपके बैंक से मालूम करना है।"

"कमाल है—लोग हत्यारे को तलाश करते हैं और आप उसके ठीक विपरीत यह मालूम करने के लिए घूम रहे हैं कि हत्या किसकी हुई है?"

"वक्त की बात है, मिस्टर मेहता।"

"खैर—आप 'वेट' कीजिए, मैं कोशिश करता हूं।" कहने के बाद मेज से गड्डी उठाकर मैनेजर अपने ऑफिस से बाहर चला गया—चटर्जी ने जेब से एक सिगरेट निकालकर सुलगा ली और कुर्सी की पुश्त से पीठ टिकाकर धुएं के छल्ले उछालने लगा।

दस मिनट बाद मेहता ने जाकर बताया कि गड्डी के नोटों का सीरियल नम्बर वह हेड-कैशियर को लिखवा आया है। वह कोशिश कर रहा है—सफलता मिलते ही सूचना देगा।

"आप बेशक अपना काम कर सकते हैं—मैं इंतजार कर रहा हूं।" चटर्जी ने कहा और इस वाक्य के एक घण्टे बाद हैड-कैशियर ऑफिस में आया। एक कागज पर उसने खाता नम्बर, खातेदार का नाम, पता और वह तारीख नोट कर रखी थी, जिसमें यह दस हजार की गड्डी बैंक से निकाली गई।

"थैंक्यू।" कहने के बाद चटर्जी ने उस कागज पर नजर डाली और खातेदार का नाम पढ़ते ही उछल पड़ा। लिखा था—"रूपेश सान्याल।"

चटर्जी के जेहन में एकदम अस्पताल के बिस्तर पर पड़ा बुरी तरह जला हुआ व्यक्ति नाच उठा और यह सोचकर उसकी खोपड़ी उलट गई कि वे दस हजार रुपए रूपेश के खाते में से निकले थे।

रूपेश के खाते में से निकले रुपए राजाराम को रूबी देती है।

स्पष्ट है कि रूपेश और रूबी मिले हुए हैं।

जोश की अधिकता के कारण अन्जाने में ही चटर्जी ने एक जोरदार मुक्का मैनेजर की मेज पर जमा दिया। मेज पर भूचाल-सा आ गया।

"क्या हुआ, इंस्पेक्टर?" मैनेजर ने पूछा।

"थैंक्यू वेरी मच मिस्टर मेहता और तुम्हें भी बहुत-बहुत धन्यवाद मिस्टर।" चटर्जी ने सफलतावश झूमते हुए हेड-कैशियर से कहा—"तुम लोगों की वजह से मेरी एक ऐसी गुत्थी सुलझ गई है, जो कभी सुलझती नजर ही न आ रही थी।"

"यदि आपको कोई सफलता मिली है तो हम उसके लिए आप को बधाई देते हैं।" मैनेजर ने उससे हाथ मिलाते हुए कहा और उन दोनों के प्रति आभार व्यक्त करके चटर्जी बैंक से बाहर निकल आया। बाहर निकलते वक्त उसने चिट पर लिखा एड्रेस भी पढ़ लिया था। बैंक
के बाहर उसकी मोटरसाइकिल खड़ी थी।

अगले कुछ ही पलों बाद मोटरसाइकिल उस एड्रेस की तरफ उड़ी चली जा रही थी—पन्द्रह मिनट बाद ही वह 'सुभाष नगर' मौहल्ले में मकान नम्बर बावन पूछ रहा था।

फिर मकान नम्बर बावन के सामने उसने अपनी मोटरसाइकिल रोक दी।

बैल बजाने पर बीस-इक्कीस की आयु के युवक ने दरवाजा खोला, चटर्जी ने उससे प्रश्न किया—"क्या यहां कोई रूपेश सान्याल रहते हैं?"

"जी हां, वे हमारे किराएदार हैं।"

"क्या वे घर पर हैं?"

"जीं नहीं, वे तो पिछले एक हफ्ते से कहीं बाहर गए हुए हैं।"

"बाहर कहां?"

"म...मुझे नहीं मालूम, शायद अम्माजी को मालूम हो। मगर बात क्या है?"

"पुलिस को ऐसा डाउट है कि शायद मिस्टर रूपेश किसी दुर्घटना के शिकार हो गए हैं, तुम थोड़ी देर के लिए अपनी माताजी को चुला दो।"

एक मिनट बाद ही एक अधेड़ आयु की महिला चटर्जी से कह रही थी—"रूपेश तो बहू को लेकर बस्ती गया है।"

"ब...बहू...क्या मिस्टर रूपेश शादीशुदा हैं?"

"हां.....।"

"मगर वे बस्ती क्यों गए हैं?"

"बस्ती में रूपेश का अपना घर है—उसके मां-बाप आदि।"

"क्या आप मुझे रूपेश की पत्नी का नाम बता सकेंगी?"

"माला।"

"मैं मकान का वह हिस्सा देखना चाहता हूं—जहां वे रहते हैं।"

"म...मगर बात क्या है—रूपेश को आखिर हुआ क्या है?"

"मेरा नाम इंस्पेक्टर चटर्जी है और यह मेरा परिचय-पत्र है।" चटर्जी ने जेब से परिचय-पत्र निकालकर युवक को दिया, बोला—"कल गाजियाबाद के ही भगवतपुरे मोहल्ले में, एक मकान में आग लगा दी गई थी। मिस्टर रूपेश बुरी तरह जली हुई अवस्था में वहां पाए गए।"

"र...रूपेश वहां क्या कर रहा था—वह तो बस्ती गया हुआ है?"

"यह पहेली अभी मुझे सुलझानी है।"

एकदम चौंकते हुए युवक ने कहा—"कहीं आप उस हत्याकांड की बात तो नहीं कर रहे हैं, जिसमें एक याददाश्त खोए व्यक्ति ने एक औरत को मार डाला और फिर उसके साथ ही एक जीवित व्यक्ति को भी जला डालने की कोशिश की—जी, हां, उस जले हुए व्यक्ति का नाम अखबार में रूपेश ही लिखा था, मगर वह रूपेश भला ये कैसे हो सकते हैं?"

"मैं यही पुष्टि करना चाहता हूं कि वह रूपेश यहां रहने वाला रूपेश है या नहीं—इसीलिए आपसे उनके रहने का स्थान देखने की रिक्वेस्ट कर रहा हूं।"

"आइए।" युवक और महिला ने उसे एक कमरे के सामने ले जाकर खड़ा कर दिया। कमरे का दरवाजा बन्द था और उस पर गोदरेज का एक ताला लटक रहा था, चटर्जी ने पूछा—"क्या उनके पास किराए पर यही एकमात्र कमरा था?"

"जी हां।" युवक ने बताया और आंगन में ही एक तरफ को उंगली उठाकर बोला—"उधर उनका किचन और बाथरूम हैं।"

"इस कमरे की चाबी कहां है?"

"म...माला मुझे दे गई है, मगर उनमें से किसी के बिना हम इसे खोल नहीं सकते।"

"मैं मानता हूं—किसी का कमरा इस तरह खोलना ठीक नहीं है—मगर इस वक्त मजबूरी हो गई है—आप कहती हैं कि वे बस्ती गए थे, जबकि मिस्टर रूपेश रहस्यमय ढंग से बुरी तरह जली हुई अवस्था में हमें गाजियाबाद से ही मिले हैं—अब सवाल यह उठता है कि उसकी पत्नी माला कहां गई, शायद उनके कमरे से बरामद किसी चीज के जरिए उसका पता लग सके।"

महिला अपने कमरे से जाकर चाबी निकाल लाई।

ताला खोलकर चटर्जी युवक और महिला के साथ कमरे में दाखिल हुआ। वहां कोई ज्यादा सामान नहीं था—एक रैक पर रखे पति-पत्नी के फोटो पर चटर्जी की नजर टिक गई।

चटर्जी ने पूछा—"वह फोटो रूपेश का ही है न?"

"जी हां।" कहने के बाद युवक ने पूछा—"क्या वहां से ये जले हुए मिले हैं?"

"हां।"

"ओह माई गॉड!"

"क्या फोटो में रूपेश के साथ उसकी पत्नी है?"

"जी हां।"

बहुत ही ध्यान से चटर्जी ने उस युवती के फोटो को देखा और मन-ही-मन राजाराम द्वारा बताए गए रूबी के हुलिए से मिलाने पर उसने काफी समानता महसूस की।

अब यह बात उसे जंच रही थी कि रूबी माला ही थी।

चटर्जी ने कमरे की तलाशी लेनी शुरू की। पलंग के गद्दे से उसे 'पंजाब नेशनल बैंक' से सम्बन्धित वही पास बुक मिली—उसे कुछ देर देखने के बाद चटर्जी ने जाना कि पिछले चार साल में रूपेश ने बहुत ही छोटी-छोटी रकम जोड़कर चौदह हजार रुपए बना लिए थे और पिछले हफ्ते उसमें से तेरह हजार निकाल लिए गए।

तीन एक बार, दस एक बार।

एकाएक ही युवक की तरफ पलटता हुआ वह बोला—"लगता है कि मिस्टर रूपेश की आय बहुत ज्यादा नहीं है—क्या काम करता है वह?"

"उनकी फोटोग्राफी की एक दुकान है—दुकान अच्छी मार्किट में न होने की वजह से ग्राहक वहां कम ही आते हैं—फिर भी—गुजारे लायक आमदनी उन्हें हो जाती है।"

चटर्जी करीब पन्द्रह मिनट तक कमरे की तलाशी लेता रहा—अन्य कोई उल्लेखनीय चीज उसके हाथ नहीं लगी। अन्त में उसने फ्रेम से रूपेश और उसकी पत्नी का फोटो निकालते हुए कहा—"इस फोटो को मैं ले जा रहा हूं—माला को ढूंढने में मदद करेगा।"

"और यह पास-बुक?"

"इसे भी, केस में शायद इसकी भी जरूरत पड़े।"

"अगर आप अस्पताल जा रहे हैं इंस्पेक्टर साहब—तो क्या रूपेश भाई को देखने मैं आपके साथ चल सकता हूं?" युवक ने पूछा।

एक क्षण सोचने के बाद चटर्जी ने कहा—"चलो।"

¶¶

उस वक्त रात के साढ़े ग्यारह बजे थे, जब युवक ने सर्वेश के मकान के मुख्य द्वार पर धड़कते दिल से दस्तक दी—उसका ख्याल था कि रात के इस समय तक वे तीनों सो चुके होंगे, परन्तु आशा के विपरीत मकान में जाग थी।

पहली ही दस्तक के बाद अन्दर से पूछा गया—"कौन है?"

आवाज रश्मि की थी।

इस विचारमात्र से उसके रोंगटे खड़े हो गए कि उसे पुन: यहां देखकर रश्मि क्या सोचेगी, क्या व्यवहार करेगी—फिर भी उसने जल्दी से कहा—"म...मैं हूं।"

"मैं कौन?"

"म...म...मुझे अपना नाम नहीं मालूम है।"

इस वाक्य के तुरन्त बाद ही एकदम कुछ इतने तीव्र झटके के साथ दरवाजा खुला कि युवक हड़बड़ा गया। सामने ही रश्मि खड़ी थी—इतना प्रकाश वहां नहीं था कि उसके चेहरे के भावों को ठीक से देख सकता।

"त...तुम फिर आ गए?" बड़ा ही सपाट स्वर।

सकपका गया युवक। यह सच्चाई है कि इस सीधे प्रश्न का उसके पास कोई जवाब नहीं था, अत: वहां खड़ा वह सिर्फ—"मैं...मैं" ही करता रहा।

"आज सुबह ही तुम यहां से चले गए थे—ऐसा पत्र भी छोड़ गए थे जैसे जीवन में फिर कभी यहां नहीं आओगे और अभी ही आ गए हो—पूरे चौबीस घण्टे भी नहीं गुजरे हैं—जब आना ही था तो वह लम्बा-चौड़ा पत्र लिखकर गए क्यों थे?"

"क...क्या बताऊं रश्मि जी, मैंने बहुत चाहा कि यहां न लौटूं मगर...।"

"फिर क्या आफत आ गई?"

"दिल के हाथों विवश होकर आया हूं—सारे दिन वीशू का ख्याल जेहन से लिपटा रहा—म...मैं उसके बिना नहीं रह सकता रश्मि जी।"

"तुम कोई बहुत बड़े जालसाज हो।"

"र...रश्मि जी।"

"वीशू कौन लगता है तुम्हारा? उससे क्या सम्बन्ध है? क्यों उसके लिए मरे जाने का नाटक कर रहे हो?"

"प...प्लीज रश्मि जी, नाटक मत कहिए—उफ्फ, मैं अपने किसी अजीज को नहीं जानता, जिसकी कसम खाकर आपको यकीन दिला सकूं कि मैं नाटक नहीं कर रहा हूं—काश, मैं अपना सीना चीरकर दिखा सकता—जानता हूं कि वीशू मेरा कोई नहीं है, फिर भी जाने क्यों—पता नहीं क्यों—दीवानों की तरह यहां चला आया हूं?"

कुछ देर शांत खड़ी रश्मि उसे देखती रही। जैसे समझने की कोशिश कर रही थी कि युवक झूठ बोल रहा है या सच? जबकि यह जानने के बाद युवक के जेहन से बहुत बड़ा बोझ उतर गया था कि रश्मि को अखबार में छपे उसके फोटो के बारे में कोई जानकारी नहीं है।

एकाएक रश्मि ने कहा—"अन्दर जा जाओ।"

धड़कते दिल से युवक ने चौखट पार की।

दरवाजे को पुन: बन्द करने के बाद घूमती हुई रश्मि ने कहा—"यदि सच पूछो तो इस वक्त इस घर को तुम्हारी बहुत जरूरत थी।"

"म...मेरी जरूरत!" युवक लगभग उछल ही पड़ा।

"वीशू ने सुबह से कुछ भी नहीं खाया है—आज वह स्कूल भी नहीं गया—सिर्फ तुम्हें ही याद कर रहा है—उधर मांजी ने भी आपके जाने पर मुझे न जाने क्या-क्या कहा है।"

"क...क्या कहा...वीशू ने कुछ भी खाया-पिया नहीं है?"

"इस वक्त वह बेहोशी की-सी अवस्था में है।"

"क...कहां है वीशू?"

"स...सामने वाले कमरे में।"

युवक गन से निकली गोली के समान कमरे की तरफ भागा। उसे भागता देखकर रश्मि सोचने लगी कि क्या बिना खून का रिश्ता जुड़े ही दो व्यक्ति एक-दूसरे के लिए इतने पागल हो सकते हैँ?

कमरे के दरवाजे पर ही ठिठक गया युवक।

पलंग पर वह प्यारा बच्चा लेटा था। सिरहाने बूढ़ी मां बैठी आँसू बहा रही थी।

आहट सुनकर उसने दरवाजे की तरफ देखा, बोली—“कौन है?"

"म....मैँ हूं, मां।" युवक खुद नहीं जानता था कि उसकी आवाज क्यों भर्रा गई।

"क.....कौ....न....स.....सर्वेश?" वह एकदम उछल पड़ी।

विवश युवक को कहना ही पड़ा—“हां मां।"

"अरे, तू कहां चला गया था मेरे लाल—देख, तेरे बेटे ने अपनी क्या हालत बनाई है—सुबह से पानी की एक बूंद तक नहीं पी है मरदूद ने।" चीखती हुई पागलों की तरह वह युवक की तरफ दौड़ी।

युवक ने आगे बढ़कर उसे संभाला।

आलिंगनबद्ध हो गए वे। बुढ़िया फूट-फूटकर रो पड़ी। सांत्वना देने के प्रयास में खुद युवक की आंखें बरस पड़ीं। काफी देर तक उनकी यही स्थिति रही। अपने गम से उबरते ही बुढ़िया ने कहा—"उस मरदूद को तो देख, जालिम—कहीं वह अपनी जान ही न ले ले।”

युवक बुढ़िया से अलग हुआ।

नजर बरबस ही दरवाजे की तरफ उठ गई। चौखट के बीचो-बीच संगमरमर की प्रतिमा के समान खड़ी थी वह विधवा—हैरत के साथ वह युवक को ही देख रही थी। विशेष रूप से उसके धूल से अटे पड़े कपड़ों को।

रश्मि की आंखें सूजी हुई थीं।

युवक को समझने में देर नहीं लगी कि अपने बेटे के गम में वह भी सारे दिन रोती रही है। वह तेजी के साथ पलंग की तरफ बढ़ा—नजदीक पहुंचकर विशेष पर झुका।

विशेष अर्ध-मूर्छित अवस्था में था।

रह-रहकर उसके होंठ कांप रहे थे और उनके बीच से आवाज निकल रही थी—‘पापा-पापा’—बस यही एक शब्द निकल रहा था उसके मुंह से।

"वीशू-वीशू।" युवक ने दोनों हाथों से उसके गाल थपथपाते हुए पुकारा—कई बार पुकारने पर कराह-सी विशेष के मुंह से निकली। युवक ने कहा—"देखो बेटे...हम आ गए हैं—आंखें खोलो।"

धीमे-धीमे उसने आंखें खोल दी। बहुत ही कमजोर आवाज उसके मुंह से निकली-"पापा।"

"हां बेटे—हम ही हैं—देखो, हम आ गए हैं।"

"प...पापा।" जोर से चीखकर विशेष अपनी नन्हें बांहें फैलाकर उससे लिपट गया और फूट-फूटकर रोने लगा—युवक का हृदय भयानक अंदाज में कांप उठा। कुछ उसी तरह, जिस तरह उस क्षण कांपा था, जब पहली बार उसे अहसास हुआ था कि उसने रूबी की हत्या की है।

युवक रो पड़ा।

बुढ़िया और रश्मि भी, मगर रश्मि ने किसी को पता नहीं लगने दिया था कि वह रो रही है—भले ही वह युवक चाहे जो सही, परन्तु फिलहाल यहां फरिश्ता बनकर ही आया था।

¶¶

"दोपहर के वक्त हमने एक डॉक्टर को बुलाया था।" रश्मि ने बताया—"चैक करने के बाद उसने कहा कि वीशू को कोई बीमारी नहीं है, इस बच्चे के दिल में कोई बात बहुत गहरे तक बैठ गई है—इसे दवा या डॉक्टर की नहीं, उसकी जरूरत है जिसे यह याद कर रहा है।"

युवक चुपचाप सुन रहा था।

"डॉक्टर जानता था कि उन्हें गुजरे तीन महीने के करीब हो गए हैं, इसीलिए उसने पूछा कि आखिर आज ही बच्चे को इतना गहरा शॉक क्यों लगा है—मैं डॉक्टर के इस सवाल का कोई उत्तर नहीं दे सकी, कहती भी क्या?"

युवक अब भी चुप ही रहा।

ऊपर वाले कमरे में उस वक्त वे दोनों अकेले थे—रश्मि ने कुछ जरूरी बातें करने के लिए उसे वहां बलाया था। युवक आ तो गया था, मगर प्रत्येक पल यह सोचकर उसका दिल कांप रहा था कि कहीं इस अकेले कमरे में पुन: वे ही भयानक विचार उसके जेहन में न उठने
लगें।

कहीं वह जुनूनी न बन जाए।

अपने दिमाग पर नियंत्रण रखने की पूरी चेष्टा कर रहा था वह।

रश्मि ने आगे कहा—"डॉक्टर वाली यह बात मैंने तुम्हें इसीलिए बताई है, ताकि तुम समझ सको कि मैं तुम्हें इस घर में सहन करने के लिए कितनी विवश हूं।"

युवक अब भी खामोश रहा।

"अगर तुम कोई जालसाज हो तो निश्चय ही बहुत खतरनाक हो। तुम जानते हो

कि पति की मृत्यु के बाद एक नारी की सबसे बड़ी कमजोरी उसका बेटा होती है और इसीलिए तुमने वीशू को अपने वश में कर लिया है।"

"ऐ...ऐसा मत कहिए रश्मि जी—म...मैं...।"

"मुझे कहने दो।" आंखों से युवक पर ढेर सारी चिंगारियां बरसाती हुई रश्मि ने बहुत ही साफ और सपाट स्वर में कहा—"तुमने जाल ही ऐसा फेंका है कि तुम्हारे जालसाज होने की शंका के बावजूद भी, मुझे तुम्हें सहन करना ही होगा—मेरे बच्चे के प्राण अपनी मुट्ठी में कैद कर लिए हैं तुमने।"

"यह बिल्कुल झूठ है—गलत है।" युवक चीख पड़ा।

"अगर तुम सच कह रहे हो, तब भी अपने बेटे की जिन्दगी एक अजनबी के हाथ में चले जाने का दु:ख है मुझे—कोशिश करूंगी, कि उसे तुम्हारे मोहजाल से मुक्त कर सकूं।"

"म...मेरी कोशिश भी यही होगी।"

"यह कहना मेरी विवशता है कि अगर चाहो तो वीशू के मोहजाल से मुक्त होने तक तुम यहीं रह सकते हो।"

"ध...धन्यवाद।" खुशी के कारण युवक का लहजा कांप गया। उसे लगा कि वह बच गया है। वह छोटा-सा घर—वह चारदीवारी कानून के लम्बे कहे जाने वाले हाथों से बहुत दूर है। वह छोटा-सा घर उसे बहुत ही सुदृढ़ किला महसूस हुआ।

अचानक ही रश्मि ने प्रश्न किया—"क्या मैं तुम्हारे कपड़ों पर लगी इस बेशुमार धूल का कारण जान सकती हूं? यहां से जाने के बाद सारे दिन कहां रहे?"

"जिसका कोई घर न हो, वह रह भी कहां सकता है? सारा दिन एक खण्डहर हुए मकान के मलबे पर पड़ा रहा, यह धुल वही मलबा है।"

"अब तुम नीचे जा सकते हो—मगर सुनो—यहां तुम केवल तब तक रहोगे, जब तक कि वीशू तुम्हारे मोहजाल से मुक्त न हो जाए, तुम उसे मुक्त करने की कोशिश करोगे—बांधने की नहीं—यहां तुम वीशू के पापा और मांजी के पुत्र बनकर ही रहना, रश्मि का पति बनने की कोशिश कभी मत करना।"

"ऐ...ऐसा गन्दा विचार मेरे दिमाग में कभी नहीं जाएगा।"

"हमेशा याद रखना कि मैं तुमसे नफ़रत करती हूं।"

युवक विचित्र नजरों से उसे देखता रहा। सचमुच उसकी आंखों से नफरत की चिंगारियां निकल रही थीं। युवक कुछ बोल नहीं सका, जबकि रश्मि ने कहा—"यहां से बाहर निकल जाओ।"

कमरे से निकलता, सीढ़ियां उतरता युवक 'मां' की महानता के बारे में सोच रहा था —'उफ—एक मां अपनी औलाद के लिए ऐसे जालसाज को भी सहन कर सकती है, जिससे बेइन्तहा नफरत करती हो—सिर्फ नफरत।

¶¶

"हैलो आंग्रे प्यारे।"

अपने ऑफिस में बैठा आंग्रे इंस्पेक्टर चटर्जी की आवाज सुनकर चौंक पड़ा, स्वागत के लिए खड़ा हो गया वह और हाथ बढ़ाता हुआ बोला—"हैलो—तुम नोटों की वह गड्डी ले गए थे—क्या तीर मारकर आए हो?"

"उसे छोड़ो प्यारे।" हाथ मिलाने के बाद 'धम्म' से एक कुर्सी पर बैठता हुआ चटर्जी बोला—"तुम कहो, आज का अखबार पढ़ने के बाद सिकन्दर का सुराग देने वाला कोई मुर्गा यहां आया भी या यूं ही बैठे मक्खियां मार रहे हो?"

"कोई नहीं आया।" आंग्रे के लहजे में निराशा थी।

"यानि मक्खियाँ मार रहे हो, कितनी मार चुके हो—पूरी तीस हुईं या नहीं?" इस वाक्य के बीच ही में उसने जेब से निकालकर एक सिगरेट सुलगा ली थी—आंग्रे ने देखा कि चटर्जी का चेहरा सफलता की वजह से चमक रहा था। उससे रहा न गया तो पूछ लिया—"तुम्हारे चेहरे से लग रहा है कि तुम किसी मामले में सफल होकर लौटे हो, क्या मुझे अपनी उपलब्धि नहीं बताओगे।"

"इस बारे में पांच मिनट बाद बात करेंगे—पहले यह बताओ कि राजाराम को जेल भेजा या नहीं?"

"बस, तैयारी ही कर रहा था।"

"यानि अभी वह हवालात में है?"

"हां।"

"मैं पांच मिनट में उससे बात करके आता हूं—तब तक अपनी गड्डी के इन नोटों को गिनो, चोरी की आदत है—कहीं बीच में से मैंने एकाध सरका न लिया हो।" कहने के साथ ही उसने गड्डी मेज पर डाली और तेजी के साथ उस तरफ चला गया जिधर इस थाने की हवालात थी।

चटर्जी के अंतिम शब्दों पर हौले से मुस्कराते हुए आंग्रे ने गड्डी उठाकर दराज में डाल ली और व्यग्रतापूर्वक चटर्जी के लौटने का इंतजार करने लगा—वह नहीं समझ पा रहा था कि चटर्जी राजाराम से क्यों मिलने गया है।

वह पांच मिनट से पहले ही लौट आया। आंग्रे ने देखा कि इस बार चटर्जी की आंखें ठीक कीमती हीरों की तरह चमक रही थीं। कुर्सी पर बैठते हुए चटर्जी ने कहा—"रूबी की लाश का मलबा यहीं है?"

“उस अलमारी में, मगर उसका तुम क्या करोगे?"

"निकालो प्यारे, अचार डालना है।"

आंग्रे उठा, अलमारी के समीप पहुंचा—जेब से चाबी निकालकर अलमारी पर लगा लॉक खोला और फिर एक लाल कपड़े की छोटी-सी गठरी उसने मेज पर लाकर रख दी—इस गठरी में घटनास्थल से बरामद रूबी की हड्डियां थीं। बैठते हुए आंग्रे ने कहा—"यह मेरी जिन्दगी का ही नहीं, बल्कि शायद क्राइम की दुनिया का पहला ही केस होगा, जिसके अन्तर्गत अदालत में मकतूल की डैडबॉडी शब्द कहकर ये हड्डियां पेश की जाएंगी—शायद ही कभी किसी को किसी की डैडबॉडी इस रूप में मिली हो—ये हड्डियां न तो यह बता सकती हैं कि ये किसके जिस्म की हैं और न ही इस लाश का पोस्टमार्टम आदि कुछ हो सकता है।"

चटर्जी ने जेब से एक फोटो निकाला, इस फोटो को उसने बीच में से मोड़ रखा था—यानि केवल माला का फोटो ही सामने था। रूपेश का नहीं—फोटो को उसी स्थिति में मेज पर रखते हुए चटर्जी ने कहा—“जरा देखो प्यारे, इस कन्या को देखो।"

"देख रहा हूं।"

“कैसी है?"

"ठीक है, सुन्दर ही कही जाएगी—मगर इसे तुम मुझे क्यों दिखा रहे हो?"

"अब जरा यह कल्पना करो कि उस पोटली में रखी हड्डियों को अगर 'सिस्टेमेटिक' ढंग से फिट करके उन पर गोश्त और खाल का लेप कर दिया जाए तो इतनी सुन्दर कन्या बन सकती है या नहीं?"

"'क...क्या यह रूबी की फोटो है?" आंग्रे उछल पड़ा।

चटर्जी ने बड़े प्यार से कहा—"राजाराम यही कहता है, अखबारों में इसका नाम गलत छप गया है—असल में इसका नाम माला है।"

"म....माला?”

"हां।"

"म....मगर तुम यह कैसे कह सकते हो?"

चटर्जी ने फोटो की तह खोल दी। युवती के साथ बैठे युवक को देखते ही वह

सचमुच उछल पड़ा, मुंह से निकला--“रूपेश?”

"तुमने ठीक पहचाना किबला।"

"म...मगर रूपेश और यह!” आंग्रे अपने आश्चर्य पर काबू नहीं कर पा रहा था —"क.....क्या ये दोनों पति-पत्नि हैं?"

"तुम्हारे होने वाले बच्चे जिएं।"

"ल...लेकिन ये सब चक्कर क्या है?" बेचैन होते हुए आंग्रे ने पूछा—"प...प्लीज चटर्जी, मुझे विस्तार से सब कुछ बताओ।"

चटर्जी ने नोटों की गड्डी के आधार पर रूपेश के कमरे तक पहुंचने की कहानी सुनाने के बाद कहा—“हम वहां से मकान मालिक के लड़के को लेकर अस्पताल पहुंचे—मेरे साथ अपने मकान मालिक के लड़के को देखकर रूपेश समझ गया कि मैं कहानी की उस तह तक पहुंच गया हूं, जिसे वह छुपा रहा था, अत: मेरे सवालों के उत्तर उसने बिना किसी हील-हुज्जत के दे दिए।"

"क्या बताया उसने?"

"रूपेश बस्ती जिले में रहने वाले एक निर्धन परिवार का लड़का है, जो किसी वजह से गाजियाबाद में जा बसा—वह बचपन से ही महत्वाकांक्षी रहा है—बस्ती में जहां उसका घर है, वहां एक करोड़पति परिवार भी रहता है—उनके ठाट-बाट, शानो-शौकत आदि देखकर वह ईर्ष्या करता रहा है—करोड़पति का एक विद्रोही लड़का दस साल की उम्र में ही भाग गया था। जो काफी तलाश करने के बावजूद आज बीस साल गुजरने के बाद भी नहीं मिला है—पिछले तीन साल पहले वहां बाढ़ आई और वह बाढ़ सैंकड़ों अन्य लोगों के साथ उस करोड़पति परिवार के सभी बच्चों को अपने साथ बहा ले गई—ठूंठ की तरह रह गए वह करोड़पति सेठ और उनकी पत्नी—पड़ोसी होने के नाते रूपेश का वहां आना-जाना था, अत: उनके कोई भी बच्चा न रहने के कारण उनकी दौलत को हासिल करने की उसके मन में और प्रबल इच्छा हो गई।”

"मगर सवाल था—कैसे?"

“इधर रूपेश एक दिन घूमने-फिरने देहली गया—वहां कनॉट प्लेस पर जिस लड़की से उसका आंख-मट्क्का हुआ, वह महरौली में रहने वाले एक परिवार की लड़की थी—अपने परिवार के साथ वह पिकनिक पर यहां आई हुई थी—सारे दिन की अठखेलियों के बाद उनके दिल की अदला-बदली हो गई थी—अत: रूपेश महाराज उन्हें उनके महरौली स्थित मकान तक छोड़ने गए—इस रहस्य को केवल माला ही जानती थी, उसके परिवार के अन्य लोग नहीं।"

"अब तो मुलाकातों का सिलसिला चालू हो गया—इश्क की पेंगें बढ़ने लगीं—झोंटे

ऊंचे और ऊंचे होते चले गए—रूपेश ने गाजियाबाद से देहली तक का पास बनवा लिया, जिसके जरिए वह सर्विस करने वाले दूसरे 'डेली पैसेंजर्स' की तरह आने-जाने लगा—इस तरह खर्चा भी कम पड़ता था।"

"खैर—इश्क इस मुकाम पर पहुंचा कि माला के घर भण्डाफोड़ हो गया, डांट-फटकार पड़ी—प्रेम दीवानी ने विद्रोह कर दिया—मां-बाप कम्बख्त होते क्या चीज हैं—उन्हें क्या हक है कि दो प्यार करने वालों के बीच चीन की दीवार बनें—देहली के किसी अंधेरे कोने में माला ने यह सारी रामायण रूपेश को सुनाई—अब रूपेश ने बता दिया कि वह कोई बहुत मोटी हस्ती नहीं है—गाजियाबाद में फोटोग्राफी की एक दुकान है जिस पर ग्राहक तभी जाता है जब शहर की दूसरी दुकान पर उसकी दाल न गलती हो।"

"र...रूपेश फोटोग्राफर है?"

"सुनते रहो, प्यारे। वैसे तुमने प्वाइंट ठीक पकड़ा है—हां, तो हम कह रहे थे कि रूपेश ने अपनी हकीकत माला को बता दी—माता के सिर पर प्रेम-भूत सवार था, उसे भला इन बातों से क्या फर्क पड़ना था—टीoवीo पर देख-देखकर उसने ढेर सारे फिल्मी डायलॉग रट रखे थे, सब उगल दिए—उनमें प्यार की महिमा थी और यह था कि भला प्यार का दौलत से क्या सम्बन्ध, दौलत होती ही क्या है—हुंह—चांदी के चन्द सिक्के। उस वक्त माला को यकीन था कि अगर तराजू के एक पलड़े में उनका प्यार और दूसरे में सारे जहां से इकट्ठी करके दौलत रख दी जाए तो नीचे प्यार वाला पलड़ा ही रहेगा।"

"तुम तो उनके प्यार ही पर अटक गए, आगे बढ़ो।"

"माला और रूपेश भी आगे बढ़े और इतने आगे बढ़ आए कि उन्होंने कोर्ट में शादी कर ली—पैदा करने वाले आएं भाड़ में—न रूपेश के मां-बाप को पता था, न ही माला के घर वाले इन्वाइट किए गए, क्योंकि उस घर को हमेशा के लिए छोड़ने के बाद ही वह शादी हुई थी—अब वे पति-पत्नि बन गए।

साथ रहने लगे।

"कुछ दिन तक ठीक चला, मगर शीघ्र ही माला की समझ में यह बात आ गई कि उनके प्यार के मुकाबले पर तराजू के दूसरे पलड़े में अगर एक सौ का नोट भी रख दिया जाए तो प्यार वाला पलड़ा हवा में डगर-डगर नाचेगा।

"कहना चाहिए कि फांकों की झाड़ू ने माला के सिर से प्रेम-भूत उतार दिया और तब उसने जाना कि वह खुद दौलत के मामले में रूपेश से कहीं प्यादा महत्वाकांक्षी है—अब ये पति-पत्नी किसी ऐसी तिकड़म के जुगाड़ में लग गए, जिससे एक ही दांव में मालामाल हो जाएं। रूपेश के जेहन में बस्ती में रहने वाला करोड़पति सेठ खटक ही रहा था।

"ऐसे समय में इन लोगों ने इंस्पेक्टर दीवान द्वारा अखबारों में दिया गया विज्ञापन

देखा और उसे देखते ही रूपेश के दिमाग में एक साफ-सुथरी स्कीम चकरा गई—फोटोग्राफर होने के नाते रूपेश यह समझ गया कि याददाश्त गंवाए व्यक्ति के दिमाग की प्लेट ताजा फोटो रील के समान है, जिस पर चाहे जो फोटो उतारा जा सकता है, अतः उसने उसे बस्ती के करोडपति सेठ का बचपन में भागा हुआ लड़का साबित करने की ठान ली—पति-पत्नी में मंत्रणा हुई, इस बात पर गौर किया गया कि उनकी स्कीम कितनी मजबूत रहेगी—इसी विचार-विमर्श में इन्हें देर हो गई और रूपेश से पहले मेडिकल इंस्टीटयूट में सेठ न्यादर अली न केवल पहुंच गया, बल्कि युवक को अपने साथ भी ले गया—यह बात रूपेश को डॉक्टर भारद्वाज से पता लगी और इस प्रथम चरण में ही उनकी योजना पर पानी फिर गया।

"जब गाजियाबाद लौटकर रूपेश ने यह सब माला को बताया तो माला के वे सारे सपने चूर-चूर हो गए, जो उसने बनी हुई स्कीम की सफलता पर देखे थे...उसने रूपेश को ताने दिए कि वह सिर्फ बातें मिला सकता है, कर कुछ नहीं सकता।

"फिर रूपेश ने सेठ न्यादर अली द्वारा अखबारों में दिया गया विज्ञापन देखा—अब, अपनी उसी स्कीम को कार्यान्वित करने का उनके सामने एक और मौका था।

"इस बार रूपेश चूका नहीं।

“उसने न्यादर अली के यहां सर्विस कर ली—पहले ही दिन उसने जान लिया कि युवक को अपने सिकन्दर होने का पूरा यकीन नहीं है और वह स्वयं अपने अतीत को तलाश करना चाहता है। युवक की यह मानसिकता रूपेश के लिए लाभदायक ही थी—युवक कपड़े बदल चुका था, यानि वे कपड़े यह उतार चुका था जो एक्सीडेंट के समय उसके तन पर पाए गए थे। उन कपड़ों को साथ लिए रूपेश समय निकालकर गाजियाबाद आया। स्कीम के मुताबिक उन्हीं कपड़ों के नाप के न केवल ढेर सारे कपड़े सिलवाए गए, बल्कि इन कपड़ों पर भी ‘बॉनटेक्स’ की चिट लगवाई गई—उसी दिन रूपेश ने अपने खाते से रुपए निकाले और माला को सब कुछ समझाने के बाद देहली लौट आया, क्योंकि सर्विस की शर्तों के मुताबिक वह ज्यादा देर तक न्यादर अली की कोठी से बाहर नहीं रह सकता था।

"उधर योजना के अनुसार माला ने रूबी के नाम से दस हजार राजाराम को दिए। सौ-सौ रुपए उन्हें, जिन्होंने युवक को दुआ-सलाम की थी—वे पैसे केवल सलाम करने के ही थे—उस युवक को पांच-सौ रुपए दिए गए, जिसने सिकन्दर से 'जमने' के लिए कहा था, भगवतपुरे वाला मकान किराए पर लिया गया—इतना सब काम निपटने के बाद माला रात के वक्त देहली जाकर रूपेश से मिली—स्कीम के मुताबिक यह ट्रिक फोटोग्राफी से ऐसी एलबम तैयार कर चुका था, जिससे सिकन्दर और माला पति-पत्नी नजर आएं—वह एलबम देते वक्त रूपेश ने उसे बाकी बातें भी समझा दीं।

“माला भगवतपुरे वाले मकान में लौट आई।

"उसी रात रूपेश ने बातों में फंसाकर सिकन्दर की नॉलिज में यह बात ला दी कि उसके तन से मिले कपड़ों पर गाजियाबाद के बॉनटेक्स टेलर की चिट है और वहीं से उसका सही अतीत पता लग सकता है।"

"बेचारा सिकन्दर रूपेश को सचमुच अपना दोस्त और शुभचिन्तक समझ बैठा। रूपेश की जानकारी में वह उसी रात न्यादर अली की कोठी से भाग निकला—रूपेश को वह समझा चुका था कि दिन में 'बॉनटेक्स' टेलर से मालूम कर ले कि यह कहां गया है—वह क्या जानता था कि सब कुछ रूपेश का ही किया-धरा है।

"सोच-समझकर फैलाए गए जाल में से गुजरता सिकन्दर भगवतपुरे के मकान में पहुंच गया। उसे सुनाने के लिए जो कहानी तैयार की गई थी, उसमें उन सभी सवालों के जवाब थे, जो सिकन्दर के जेहन में चकरा रहे थे—रूबी बनी माला ने अपनी और रूपेश की प्रेम कहानी ज्यों-की-त्यों सिकन्दर को सुना दी—उनके जेहन में यह भर दिया कि वह बस्ती में रहने वाले सेठ का भागा हुआ लड़का है—उसे यह बताया कि वह अपराधी प्रवृत्ति का है, ताकि अपने बारे में और ज्यादा खोजबीन करने का साहस न कर सके।"

आंग्रे की आंखों में हैरत के साए लहरा उठे, बोला—"बड़ी खतरनाक और साफ-सुथरी स्कीम थी इनकी—बस्ती में रहने वाले सेठ के समक्ष ये सिकन्दर को उसका बेटा सिद्ध कर देते और माला को उसकी पत्नी—फिर समय आने पर सिकन्दर को रास्ते से हटा दिया जाता और सेठ की सारी दौलत की एकमात्र अधिकारिणी रूबी या माला।"

"मगर—सिकन्दर के जुनून ने सारे हालात उलट दिए—अपनी स्कीम के जोश में वे 'जुनून' के बारे में भूल गए थे—इसी जुनून ने न केवल इनकी सारी स्कीम खाक में मिला दी, बल्कि माला चल बसी, रूपेश भी एक प्रकार से चल ही बसा—अंजाम वही हुआ आंग्रे प्यारे, जो अक्सर ऐसे खतरनाक 'प्लानर्स' का होता है।"

"क्या मरने से पहले माला सिकन्दर को यकीन दिला चुकी थी कि....?"

"इस बारे में कौन जानता है!"

"ल...लेकिन...रूपेश माला को उसकी पत्नी साबित कर रहा था, जबकि असल में वह रूपेश की पत्नी थी, इस स्कीम के आगे बढ़ने पर क्या माला की पवित्रता कायम रह पाती?"

"किस किस्म की पवित्रता की बात कर रहे हो, प्यारे?"

"तुम समझ रहे हो।"

"हुंह।" व्यंग्यपूर्वक मुस्कराते हुए चटर्जी ने कहा—"अपराध करने वाले यदि इस किस्म की पवित्रता-अपवित्रता का ख्याल करने लगे तो अपराध ही न हों—दौलत हासिल करने की ललक इन बातों को नगण्य कर देती है, आंग्रे भाई—जिस बात की

चिंता तुम कर रहे हो, उसकी चिंता न रूपेश को थी, न माला को।"

आंग्रे चुप रह गया, इस बारे में पूछने के लिए अब जैसे उसके दिमाग में कोई सवाल नहीं रहा था, बोला—"मान गए चटर्जी—नोटों की गड्डी को क्लू बनाकर तुमने इस मामले की अंतिम गुत्थी भी सुलझा दी।"

"यह केस तुम्हारा है, फिर मैंने इतनी भाग-दौड़ क्यों की?"

"दोस्ती के नाते।"

"बिल्कुल नहीं।"

"फिर?"

"उलझी हुई गुत्थियों को सुलझाने की बीमारी है मुझे, गुत्थी मेरे सामने आई और फिर मैं खुद को रोक नहीं सका।"

मुस्कराते हुए आंग्रे ने कहा—"चलो यूं ही सही, मगर सारा मामला सुलझने के बाद भी अपराधी अभी तक गायब है, उस तक पहुंचने का भी तो कोई रास्ता निकालो।"

"लगता है कि वह किसी बिल में छुपकर बैठ गया है प्यारे मगर कब तक छुपा रहेगा? जब चटर्जी हरकत में आएगा तो उस बिल को भी खोज निकालेगा—कम-से-कम आज मैं हरकत में आने वाला नहीं हूं प्यारे, बहुत थक गया हूं—आराम करूंगा।"

¶¶

युवक को वहां रहते धीरे-धीरे एक महीना गुजर गया।

विशेष और बूढ़ी मां बहुत खुश थे। रश्मि अब उसके प्रति इतनी सख्त नहीं थी। अब युवक उसकी आंखों से अपने लिए नफरत की चिंगारियां निकलते नहीं देखता, परन्तु आज तक भी यह युवक के प्रति नम्र नहीं थी—ऐसा नहीं कहा जा सकता था कि वह युवक की उपस्थिति से खुश थी।

हां, इस एक महीने में, युवक के व्यवहार आदि से रश्मि इतना समझ गई थी कि युवक कोई बहुरूपिया या जालसाज नहीं था, वह किसी दुर्भावना से यहां नहीं रह रहा था।

युवक के चरित्र में कोई बुराई महसूस नहीं की थी उसने।

उसे अपनी तरफ कभी उन नजरों से देखते नहीं पाया था, जिन्हें अनुचित कहा जा सके, वह तो यह कोशिश करती ही थी कि युवक के सामने न पड़े—रश्मि ने भी यह महसूस किया था कि युवक स्वयं अकेले में उसके सामने पड़ने से कतराता था।

मगर पिछले दस-पन्द्रह दिन से एक बात कांटे की तरह उसके मस्तिष्क में चुभ रही थी। वह यह कि इस एक महीने में युवक ने एक बार भी शेव नहीं कराई थी, उसकी दाढ़ी और मूंछें काफी बढ़ गई थीं और अब उसका चेहरा रश्मि के कमरे की दीवार पर लगे फोटो में मौजूद सर्वेश के चेहरे जैसा ही लगता था।

पिछले पांच-छः दिन से उसने अपने हेयर स्टाइल में भी परिवर्तन कर लिया था।

फोटो में सर्वेश की आंखों पर मौजूद चश्मे जैसा ही चश्मा पहने भी रश्मि ने उसे एक रात देखा था, यानि युवक अब पूरी तरह वह सर्वेश बनने की कोशिश कर रहा था, जिसका फोटो उसके कमरे की दीवार पर लगा है।

आखिर क्यों वह पूरी तरह सर्वेश बनता जा रहा हे?

उधर—यदि युवक के दृष्टिकोण से इस बदलाव को देखा जाए तो वह केवल पुलिस से बचने के लिए यह सब कर रहा था। हमेशा तो वह इस घर की चारदीवारी में बन्द रह नहीं सकता था। जानता था कि वहां से उसे निकलना ही होगा और किसी पुलिस वाले से टकरा जाने का पूरा खतरा था—ऐसे किसी भी समय के लिए यह खुद को सर्वेश बना रहा था।

ताकि समय आने पर खुद को सर्वेश कहकर बच सके—पुलिस साबित न कर सके कि मैं 'सिकन्दर', 'जॉनी' या वह हत्यारा हूं जिसे युवा लड़कियों को मारने का जुनून सवार होता है, बस—इस बदलाव के पीछे यही एक मकसद था।

¶¶

"मैं तो असफल हो ही गया हूं चटर्जी, मगर उस हत्यारे को खोज निकालने के मामले में तुम भी मात खा गए हो।" आंग्रे कह रहा था—"तुम, जिसके बारे में लोग यह कहा करते हैं कि चटर्जी जिस मामले के पीछे पड़ जाता है, उसकी बखिया उधेड़कर रख देता है—आज पूरा एक महीना हो गया है, क्या तुम उसे तलाश कर सके?"

"ठीक कहते हो प्यारे, मानता हूं इस झमेले में मेरी खोपड़ी ने मेरा साथ नहीं दिया है।" चटर्जी बोला—"पता लगाने की हर कोशिश कर ली, एड़ी से चोटी तक का जोर लगा लिया, किन्तु उस कम्बख्त का कोई सुराग नहीं मिला। पता नहीं उसे जमीन खा गई या आसमान निगल गया।"

"यानि तुम भी हार मान चुके हो?"

"चटर्जी तब तक हथियार नहीं डालेगा प्यारे, जब तक जिन्दा है।"

"क्या मतलब?"

"अंतिम सांस तक मेरी इच्छा उस तक पहुंचने की रहेगी।"

“आशावान भी रहें तो किस आधार पर, आज एक महीना हो चुका है—गधे के सींग की तरह जाने कहां गायब हो गया और अब मेरा ख्याल तो कुछ और ही है।"

"उसे भी पेश कर दो।"

"कम-से-कम मर्द के लिए अपनी शक्ल में तब्दीली करने के लिए एक महीना काफी होता है, अगर वह होशियार होगा तो अपनी शक्ल में यह तब्दीली उसने कर ली होगी और सामने पड़ने पर भी एक बार को शायद हम उसे पहचान न सकें।"

"किस किस्म की तब्दीली की बात कर रहे हो?"

"वह दाढ़ी-मूंछ बढ़ा सकता है, नाक की बनावट बदल सकता है—बाजार में मिलने वाले स्थाई लैंस से आंखों के रंग को बदल सकता है—हेयर स्टाइल चेंज कर सकता है।"

"तुम्हारा मतलब है—मेकअप?"

“ऐसा, जो मेकअप भी न कहलाया जा सके।"

"किसी भी मेकअप से तुम भले ही धोखा खा जाओ आंग्रे प्यारे, मगर चटर्जी चक्कर में आने वाला नहीं है, इंसान तो इंसान—यदि वह 'भैंस' बनकर भी मेरे सामने आ गया तो मैं उसे पहचान लूंगा, और फिर उसे हत्यारा भी बड़े आराम से साबित कर दूंगा।"

"वह कैसे?"

"लाख मेकअप के बावजूद वह अपने 'फिंगर-प्रिण्ट्स' नहीं बदल सकेगा—लाख कोशिश के बावजूद अपनी 'राइटिंग' चेंज नहीं कर सकेगा वह—हथौड़ी से प्राप्त फिगर-प्रिंट्स और 'मिट्टी के तेल' वाले सिलसिले में मेरे पास उसकी राइटिंग है।"

"उन्हें तो तभी मिलाओगे न जब हमें किसी पर शक हो?”

"बात के जवाब में एक बात पक्की है प्यारे, वैसे तुम्हारे इस विचार से मैं सहमत हूं कि उसने निश्चय ही अपनी शक्ल में हर सम्भव परिवर्तन किया होगा—खैर, चलता हूं प्यारे।" कहते हुए चटर्जी ने उठने के लिए कुर्सी के दोनों हत्थों पर हाथ रखे ही थे कि आंग्रे ने अनुरोध किया—“बैठो यार, ऐसी क्या जल्दी है?"

“कचहरी जाना है।"

आंग्रे ने कहा—“कचहरी तो मुझे भी जाना है।"

"किस सिलसिले में?"

"रूपेश को अदालत में पेश करने के बाद जेल भेजने। अब वह लगभग पूरी तरह स्वस्थ हो चुका है—जलने के कारण चेहरे पर जो बदसूरती आ गई है, वह तो हमेशा रहेगी

ही।"

"उसके कर्म गोरे शरीर पर फूट पड़े हैं।"

"वैसे तुम्हें कचहरी क्यों जाना है?"

"कुछ नहीं यार, हरिद्वार पैसेंजर से पकड़े उसी मिट्टी के तेल के मामले की आज पहली तारीख है, अपना एक गवाह तो साला उड़न छू हो ही गया है—देखें, एक गवाह से काम चलेगा या नहीं?"

"तुम्हें भी गवाह के लिए वह हत्यारा ही मिला था।"

"इतना बड़ा मामला नहीं है, एक ही गवाह काफी होगा और वह तो आएगा ही—अरे....।" बात करता-करता चटर्जी एकदम उछल पड़ा, जैसे कुछ याद आ गया हो।

बिजली के समान मस्तिष्क में जैसे कुछ कौंधा हो।

"वो मारा पापड़ वाले को!" एकाएक ही मेज पर बहुत जोर से घूंसा मारता हुआ चटर्जी चीखा—"क्लू मिल गया है आंग्रे प्यारे।"

"क...कैसा क्लू?" चौंकते हुए आंग्रे ने पूछा।

"गवाही के सिलसिले में वह दूसरा गवाह अदालत में आज जरूर जाएगा—उसे भी नई देहली जाना था, यानि वह बता सकता है कि "सिकन्दर' ट्रेन से किस स्टेशन पर उतरा था।"

"क्लू तो है, मगर...।"

"मगर?"

"उतना जोरदार नहीं है जितना तुम उछल रहे हो-मान लिया कि हमें पता लग गया कि सिकन्दर पुरानी देहली में उतरा है, तब?"

"अभी तक तो 'क्लू' ही नहीं मिल रहा था, मेरी जान.....यह प्रकाश किरण नजर तो आई है और प्रकाश किरण नजर आना शुभ होता है।"

¶¶

"मैं आपसे कुछ बात कहना चाहती हूं।" रश्मि की आवाज सुनते ही युवक ने न केवल अपनी आंखें खोल दीं, बल्कि हड़बड़ाकर वह खड़ा भी हो गया। भौंचक्की-सी अवस्था में उसने अपने कमरे के दरवाजे पर खड़ी रश्मि को देखा और बोला —"क....हिए।"

रश्मि ध्यान से युवक के चेहरे पर मौजूद दाढ़ी-मूंछ, चश्मे और परिवर्तित हेयर

स्टाइल को देख रही थी—साथ ही देख रही थी अपनी मौजूदगी के कारण युवक के चेहरे पर उभर आए 'नर्वसनेस' के भाव—युवक शायद इसीलिए कुछ ज्यादा ही बौखलाया हुआ था, क्योंकि इस एक महीने में रश्मि ने उस कमरे में पहली बार ही कदम रखा था, जो कमरा उसे रहने के लिए मिला था।

विशेष स्कूल गया हुआ था।

युवक को नहीं मालूम था कि मांजी कहां हैं?

अपने पलंग पर आंखें बन्द किए, जिस्म को ढीला छोड़े लेटा वह किन्हीं विचारों में गुम था, जब रश्मि के वाक्य से छिन्न-भिन्न हो गए।

युवक को डर हुआ कि कहीं फिर उसका जुनून न उभर जाए, इसीलिए जल्दी से बोला—"क...कहिए रश्मि जी, क्या बात करना चाहती थीं आप?"

"धीरे-धीरे करके मैं आपकी चेंज होने वाली शक्ल के बारे में जानना चाहती हूं।"

"म...मैं समझा नहीं।"

"य...यह दाढ़ी-मूंछ, चश्मा आदि...।"

"ओह, क्या यह सब कुछ आपको पसंद नहीं है?"

"सवाल मेरी पसन्द-नापसन्द का नहीं है, यह आपका व्यक्तिगत मामला है कि आप कैसे रहना चाहते हैं, दाढी-मूंछ में या क्लीन शेव।" बहुत ही ठोस और सपाट स्वर में कहा रश्मि ने—"मैँ केवल इस परिवर्तन का कारण जानना चाहती हूं।"

युवक के पास जवाब पहले से तैयार था, फिर भी उसने किसी तरह की जल्दबाजी नहीं की—सबसे पहले अपने बिखेरे हुए आत्मविश्वास को समेटा, फिर ध्यान से उसने रश्मि को देखा।

गोरी-चिट्टीं और मासूम रश्मि ने अपने तांबे के-से रंग के घने और लम्बे बालों को मस्तक के आसपास से समेटकर बहुत ही सख्ती के साथ सिर के पृष्ठ-भाग में एक जूड़ा बना रखा था। वह धीमे से बोला—"कारण सुनने में शायद आपको अच्छा नहीं लगेगा।"

"क्या मतलब?"

"मैं चाहता हूं कि भले ही कुछ दिनों के लिए सही, मगर सारी दुनिया मुझे सर्वेश समझे।"

रश्मि की आंखों के चारों तरफ की खाल सिकुड़ गई—"क्यों?"

"ताकि वे हत्यारे चौंक पड़ें —जिन्होंने सर्वेश का मर्डर किया था।"

"क्या कहना चाहते हो?" रश्मि गुर्रा-सी उठी।

"अगर सच्चाई पूछें तो वह यह है कि मैं सिर्फ उन हत्यारों के लिए सर्वेश दिखना चाहता हूं—मुझे देखकर वे चौकें, सोचें कि जिस सर्वेश को उन्होंने मार डाला था, वह जीवित कैसे घूम रहा है?"

"इससे क्या होगा?"

"वे किसी भी तरह इस रहस्य को जानना चाहेंगे, मुझसे सम्बन्ध स्थापित करेंगे या ज्यादा-से-ज्यादा मुझे सर्वेश ही समझकर कातिलाना हमला करेंगे—और यही मैं चाहता हूं।"

"ऐसा क्यों चाहते हैं आप?"

"ताकि मासूम वीशू को यतीम करने वालों से बदला ले सकूं, आपकी मांग में सिन्दूर की जगह खाक उड़ाने वालों का मुंह नोच सकूं।"

"ख...खामोश।" अचानक ही रश्मि हलक फाड़कर चिल्ला उठी।

कांप गया युवक, घबराकर उसने रश्मि की तरफ देखा और रश्मि की तरफ देखते ही उसके होश उड़ गए—रश्मि का मुखड़ा भारी उत्तेजना के कारण तमतमा रहा था, आंखों से चिंगारियां बरस रही थीं जैसे, दांत पीसती हुई वह बोली—"मेरे सर्वेश की हत्या के मामले में तुम कुछ सोचोगे भी नहीं।"

"क.....क्यों?"

"क्योंकि उनके हत्यारों की बोटियां मुझे नोंचनी हैं—खून में डूबी उनकी लाश पर हाथ रखकर बदला लेने की कसम खाई है मैंने—उनके एक भी हत्यारे को मैं जिन्दा नहीं छोड़ूंगी—उनका खून पीने के बाद मरने का वादा मैंने अपने पति से किया है।"

"अ...आप भला उन दरिन्दों से बदला कैसे ले सकेंगी?"

"इससे तुम्हें कोई मतलब नहीं, मैं जानती हूं कि मुझे क्या करना है—अगर किसी अन्य के द्वारा उन हत्यारों की मौत पर मुझे शांति मिलती तो जाने कब की मैं पुलिस को उन कुत्तों का नाम बता चुकी होती।"

"क...क्या आप उन्हें जानती हैं?" युवक चौंक पड़ा था।

"ब...बेशक।"

"क...कौन हैं वे?" युवक एकाएक ही व्यग्र हो उठा।

"कोई भी हों, तुमसे मतलब।"

"प.....प्लीज रश्मि जी, मेरी बात...।"

रश्मि की गुर्राहट जहर में बुझी-सी महसूस हुई—"एक बार पहले भी कह चुकी हूं मिस्टर—और फिर कहती हूं कि इस बारे में आप सोचेंगे भी नहीं—उनके हत्यारों से बदला लेने का ख्याल तक दिमाग में लाने का आपको कोई हक नहीं है।"

इस बार युवक भी चीख पड़ा—"मुझे हक क्यों नहीं है?"

"क.....क्या मतलब?" रश्मि ने दांत पीसे।

"ये कौन-सा कानून है कि आप जब, चाहें जिस बात के लिए मुझे कह दें कि—मुझे कोई हक नहीं है—मैं पूछता हूं मुझे हक क्यों नहीं है—क्या मैं वीशू से प्यार नहीं करता—क्या मांजी का पागलपन मुझे झिंझोड़ नहीं डालता है—क्या एक मासूम की मांग में उड़ती खाक किसी इंसान को पागल नहीं बना देती है?"

हैरत से आंखें फाड़े रश्मि युवक को देखती रह गई।

जाने किस जोश में भरा युवक कहता ही चला गया—"मुझे पूरा हक है रश्मिजी, अगर सच्चाई पूछें तो सर्वेश के हत्यारों से बदला लेने का आपसे ज्यादा हक मुझे है-क्योंकि सर्वेश के नाम और उसके परिचय ने मुझे शरण दी है—म...मैं जिसे यह नहीं मालूम कि मैं कौन हूं—मैं दर-दर भटक रहा था—दुनिया में कहीं मेरी कोई मंजिल नहीं थी—तब मुझे इस घर में, इस छोटी-सी दीवार में शरण मिली—शरण ही नहीं, यहां मुझे बेटे का स्नेह मिला है—मां की ममता गरज-गरजकर बरसी है मुझ पर और आप—आप कहती हैं कि इस घर की नींव रखने वाले के प्रति मेरा कोई हक ही नहीं है—मैं आपका पति न सही, सर्वेश न सही, मगर वीशू का पापा जरूर हूं—मांजी का बेटा जरूर हूं और अगर मैं यह हूं तो
सर्वेश मेरा भाई जरूर रहा होगा—और क्या। चबा जाऊंगा उन्हें जिन्होंने मेरे भाई को मारा है—वीशू को यतीम करने वालों की बोटी-बोरी नोंच डालूंगा मैं—एक बूढ़ी मां से उसका जवान बेटा छीनने की सजा उन्हें भोगनी ही होगी—इस घर, चारदीवारी के लिए मुझे सब कुछ करने का हक है।"

बादल की तरह गरजते युवक ने रश्मि को थरथराकर रख दिया। युवक के अन्दर की वेदना आज पहली बार ही फूटकर बाहर आई थी और वह वेदना ऐसी थी कि जिसके जवाब में कहने के लिए रश्मि को कुछ नहीं मिला—स्वयं उसने भी महसूस किया कि 'हक' की बात करके उसने ठीक नहीं किया था। इस बार वह अपेक्षाकृत शान्त स्वर में बोली—"हक की बात छोड़ो, मैं मानती हूं कि तुम्हें सारे हक हैं, लेकिन...।"

"लेकिन?"

"बदला मुझे ही लेना है—मैंने कसम खाई है।"

"मैँ नहीं जानता कि वे हत्यारे कौन हैं, मगर यह कल्पना जरूर कर सकता हूं कि जिन्होंने सर्वेश की हत्या कर दी, वे जालिम और शक्तिशाली जरूर रहे होंगे—आप नारी हैं और मेरी नजर में सबसे ज्यादा कोमल नारी, आप उनसे बदला नहीं ले सकेंगी।"

रश्मि का चट्टानी स्वर—"मैं बदला लेकर रहूंगी।"

"सिर्फ जोश से बदला नहीं लिया जाता है, रश्मि जी—वे जरूर कोई बड़े मुजरिम होंगे—शक्तिशली और चालाक होंगे—लोहे को लोहा ही काट सकता है—कोई और धातु नहीं।"

"वक्त आने पर मैं लोहा बनकर दिखा दूंगी।"

युवक को लगा कि रश्मि उस स्थान से एक इंच भी नहीं हिलेगी जहां खड़ी है। अतः कई पल तक कुछ सोचने के बाद बोला—"मैं आपसे एक समझौता कर सकता हूं।"

"कैसा समझौता?"

"सर्वेश के हत्यारों से मैं टकराऊंगा—मैं लोहा लूंगा उनसे, क्योंकि ऐसा करने के लिए इस चारदीवारी से बाहर निकलना होगा—आप यह नहीं कर सकेंगी और अन्त में मैं उन हत्यारों को आपके कदमों में लाकर डाल दूंगा—आप उनके खून से अपनी प्यास बुझा सकती हैँ—उनकी मौत आपके रिवॉल्वर से निकली गोली से ही होगी।"

युवक की बात रश्मि को ठीक ही लगी।

इसमें शक नहीं कि इस चारदीवारी में कैद एक नारी होने की वजह से ही वह आज तक उन हत्यारों से बदला नहीं ले सकी थी—यह बात ठीक ही थी कि उनसे टकराने के लिए एक मर्द चाहिए, अतः युवक की मदद उसे आवश्यक-सी लगी।

बोली—"क्या जरूरी है कि तुम उन्हें मेरे कदमों में लाकर डालोगे ही—यह भी तो हो सकता है कि तुम ही उन्हें मार डालो?"

"ऐसा नहीं होगा।'"

"मैं गारण्टी चाहती हूं।"

"जैसी गारण्टी आप चाहें...मैं देने के लिए तैयार हूं।"

एक पल खामोश रही रश्मि, फिर बोली—"वीशू और मांजी की कसम खाकर वादा करना होगा आपको।"

"मैँ तैयार हूं।"

¶¶

गाजियाबाद के कचहरी कम्पाउण्ड में न्यादर अली को देखकर इंस्पेक्टर आंग्रे चौंक पड़ा। देहली हाईकोर्ट के एक माने हुए वकील के साथ वे उसी तरफ बढ़े चले आ रहे थे। इंस्पेक्टर आंग्रे के साथ रूपेश भी था और सेठ न्यादर अली को वहां देखकर जाने क्यों उसके बदसूरत चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं।

नजदीक जाकर सेठ न्यादर अली ने कहा—"हैलो इंस्पेक्टर!"

"हैलो—आप यहां सेठजी?"

"जी हां।" न्यादर अली ने अजीब-सी नजरों से रूपेश के जले हुए बदसूरत और वीभत्स चेहरे को देखते हुए कहा।

जलने के बाद रूपेश इतना भयानक हो गया था कि उसे देखकर सख्त कलेजे का आदमी भी डर सकता था।

इंस्पेक्टर आंग्रे ने पूछा—"आप यहां किस सिलसिले में?"

"रूपेश की जमानत के लिए आए हैं हम।"

"र...रूपेश की जमानत—और आप लेंगे?" आंग्रे चकित रह गया—"क्या आप नहीं जानते कि आपके सिकन्दर के विरुद्ध इसी ने षडयन्त्र रचा था—यह उसे सिकन्दर के स्थान पर जॉनी बना देना चाहता था।"

रूपेश को घूरते हुए न्यादर अली ने कहा—"हम सब कुछ जानते हैं—इसी ने हमारे बेटे को हमसे छीना है और इसीलिए हम इसकी जमानत कराना चाहते हैं।"

"म...मैं समझा नहीं, सेठजी।"

न्यादर अली ने एकाएक ही रूपेश के चेहरे से दृष्टि हटाकर इंस्पेक्टर आंग्रे की तरफ देखा, फिर बहुत ही धीमे और ठोस शब्दों में बोले—"हम ईंट का जवाब पत्थर से देने वाले लोगों में से नहीं हैं, इंस्पेक्टर—हम उन लोगों में से भी नहीं हैं जो बुराई का बदला बुराई से ही लेते हैं—हमारे सिद्धान्त जरा अलग हैं—हम बुराई को अच्छाई से खत्म करते हैं—जो हमें ईंट मारता है, हम उस पर फूतों की वर्षा करके उससे बदला लेते हैं।"

रूपेश कांप गया।

चकित भाव में इस्पेक्टर आंग्रे कह उठा—"एक बुरे आदमी से बदला लेने का बहुत ही अजीब और नायाब तरीका निकाला है आपने, आपका यह सिद्धान्त बहुत महान है सेठजी।"

न्यादर अली के होंठों पर फीकी-सी मुस्कान उभर आई। रूपेश की तरफ देखते हुए

वे बोले—"शायद इसी ढंग से इसे अहसास हो कि इसने कितना बड़ा पाप किया था। शायद यह एक जवान बेटे के विरह में तड़पते बाप के दर्द का अहसास कर सके?"

इसमें शक नहीं कि रूपेश अन्दर तक हिल उठा था। उसने तो ख्वाब में भी नहीं सोचा था कि उसकी जमानत लेने खुद न्यादर अली आ पहुंचेगा—चाहकर भी जुबान से वह एक लफ्ज नहीं निकाल सका, जुबान तालू में कहीं जा चिपकी थी।

कम-से-कम इस वक्त रूपेश के दिल में उठते भावों का अहसास इंस्पेक्टर आंग्रे ने भी किया था और निश्चय ही आंग्रे न्यादर अली के बदला लेने के तरीके से प्रभावित हुआ।

फिर रूपेश को मजिस्ट्रेट के सम्मुख प्रस्तुत किया गया—इंस्पेक्टर आंग्रे ने उसके विरुद्ध जो चार्जशीट तैयार की थी, वह पेश की गई—रूपेश ने मजिस्ट्रेट के सामने स्वीकार कर लिया कि उसने 'सिकन्दर' को 'जॉनी' बनाने का षडयन्त्र रचा था। जो आरोप उस पर लगाए गए हैं, वे सच हैं और दौलत के लालच में वह अपनी माला को खो बैठा है।

मजिस्ट्रेट ने न्यादर अली के वकील द्वारा प्रस्तुत जमानत की अर्जी मंजूर कर ली—रूपेश को साथ लेकर न्यादर अली चला गया और मामले के इस अजीब-से मोड़ के बारे में सोचता हुआ इंस्पेक्टर आंग्रे भी बाहर निकला ही था कि इंस्पेक्टर चटर्जी टकरा गया। सामने पड़ते ही उसने कहा—"वह दूसरा गवाह आज अदालत में आया था प्यारे—उससे पता लग गया है कि सिकन्दर शाहदरा में ही उतर गया था।"

"इससे क्या नतीजा निकलेगा? ये कैसे पता लगा सकता है कि वहां से वह कहां गया?"

"यह भी जरूर पता लगेगा बेटे—खैर, तुम बताओ कि क्या रहा—रूपेश सड़ने के लिए जेल चला गया है या नहीं?"

"नहीं।"

"क...क्या मतलब?" चटर्जी उछल पड़ता।

जवाब में जब आंग्रे ने उसे सब कुछ बताया तो चटर्जी की आंखें सिकुड़कर अचानक ही गोल हो गईं, बोला—"यह मामला तो कोई नया ही रंग लेता नजर जा रहा है, प्यारे।"

"कैसा रंग?"

"न्यादर अली वैसा आदर्शवादी नजर तो नहीं आता था, जैसा उसने काम किया है।"

¶¶

"वह नई देहली में स्थित "मुगल महल" नाम के एक फाइव स्टार होटल में काम करते थे।" रश्मि ने बताना शुरू किया तो युवक बहुत ध्यान से सुनने लगा—"यह होटल काफी प्रसिद्ध है और शायद आपने भी नाम सुना हो। वह वहां कैशियर थे, होटल के दैनिक आय-व्यय का हिसाब रखना ही उनका काम था।" रश्मि ने आगे बताया—आज से करीब चार महीने पहले प्रतिदिन की तरह ही वह सुबह सात बजे होटल के लिए निकल गए थे—उनकी ड्यूटी सुबह आठ बजे से रात आठ बजे तक की थी और वह रात नौ बजे तक यहां लौट आते थे, मगर उस सारी रात वह नहीं लौटे थे, इन्तजार में मैंने सारी रात जागकर गुजार दी थी।"

"क्या सर्वेश रात को कभी गायब नहीं होता था?"

"अक्सर तब रह जाते थे, जब दूसरा कैशियर छुट्टी पर होता था।"

"दूसरा कैशियर?"

"जी हां, दो कैशियर थे—फाइव स्टार होटल चौबीस घण्टे खुला रहता है और कोई भी एक व्यक्ति चौबीस घण्टे की ड़यूटी नहीं दे सकता, इसीलिए होटल का सारा ही स्टाफ डबल था, काम दो शिफ्ट में बंटा हुआ था—पहली वह, जिसमें वे थे—दूसरी रात आठ बजे से सुबह आठ तक को—यदि किसी दिन दूसरी शिफ्ट का कैशियर छुट्टी पर होता तो उसकी ड्यूटी भी इन्हें ही देनी होती थी।"

"तब फिर आपने वह रात जागकर क्यों काटी?"

"जब ऐसा होता था तो किसी भी माध्यम से मुझे सूचना मिल जाती थी, परन्तु उस रात मुझे उनकी नाइट ड्यूटी लग जाने की कोई सूचना नहीं मिली थी—इसीलिए मैं चिन्तित रही थी और सुबह होते ही घर से बाहर निकली थी—नजदीक के टेलीफोन बूथ से उन्हें फोन किया था—उस फोन का नम्बर उन्होंने मुझे दे रखा था, जो उन्हीं की मेज पर रखा रहता था—जब मैंने फोन किया था, उस समय सुबह के करीब सात बजे थे।"

"फिर?"

"दूसरी तरफ से फोन उठाए जाने पर मुझे एक अपरिचित आवाज सुनने को मिली थी। यह दूसरी शिफ्ट का कैशियर था—जब मैंने उसे अपना परिचय देकर उनके बारे में पूछा था तो उसने चौंके हुए स्वर में मुझे बताया था कि—सर्वेश तो तबीयत खराब होने की वजह से कल रात सात बजे ही छुट्टी कर गया था—मैं धक्क से रह गई थी—जबकि उसे बताया था कि वह अभी तक घर नहीं पहुंचे हैं तो उसने कहा था कि मैं यहां आठ बजे पहुंचा था, तब सर्वेश सीट पर नहीं था और मैनेजर ने बताया था कि तबीयत ठीक न होने की वजह से आज वह सात बजे ही छुट्टी कर गया है—मैंने व्यग्रतापूर्वक उससे रिक्वेस्ट की थी कि वह मैनेजर से पूछकर 'उनके' अब तक घर न पहुंचने की वजह बताने की कृपा

करे—उसने मुझे होल्ड करने के लिए कहा था—कुछ देर बाद उसने मुझे बताया था कि मैनेजर साहब के कथनानुसार सर्वेश सात बजे चला गया था और उनसे यही कहकर गया था कि घर जा रहा है।"

"ओह।"

"अब मेरी चिंता बढ़ गई थी, क्योंकि अब से पहले में यह सोचकर आश्वस्त थी कि उनकी 'नाइट ड्यूटी' लग गई होगी—मैं बुरी तरह चिंतित और बेचैन घर लौट आई थी। समझ में नहीं आ रहा था कि वे कहां गए—कहां तलाश करूं—उस वक्त करीब आठ बजे थे, जब कुछ सिपाहियों के साथ दीवान नाम का इंस्पेक्टर यहां आया था।"

"द....दीवान।" युवक की आवाज कांप गई।

"हां, क्या तुम उसे जानते हो?"

बड़ी मुश्किल से खुद को संभालकर युवक ने पूछा—"पुलिस यहां क्यों आई थी?"

"उसने मुझे उनकी जेब का सामान दिखाकर पूछा था कि क्या मैं उस पर्स और पर्स से निकले कागजात को पहचानती हूं? वह सारा सामान उन्हीं का था, इसीलिए मैं कांप उठी और घबराकर मैंने पूछा था कि यह सब उसके पास कैसे है—सामान में विजिटिंग कार्ड भी था और उसी के जरिए इंस्पेक्टर यहां पहुंचा था, अत: उसने पूछा था कि क्या मिस्टर सर्वेश मेरे पति हैं—'हां' कहने के बाद मैंने जब चीख-चीखकर उससे पूछा था तो उसने कहा कि—मुझे बहुत अफसोस के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि, मिस्टर सर्वेश इस दुनिया में नहीं रहे।"

कमरे में सन्नाटा-सा छा गया।

युवक चाहकर भी कुछ बोल नहीं सका।

रश्मि के मुखड़े पर हर तरफ वेदना-ही-वेदना नजर आ रही थी। युवक ने देखा कि उसकी झील-सी आंखों से आंसू उमड़ पड़ने के लिए बेताब थे—खुद को रोने से रोकने के प्रयास में उसका चेहरा बिगड़-सा गया था। वह कहती ही चली गई—"बाद में इंस्पेक्टर ने बताया था कि 'उनकी' लाश रेल की पटरी से मिली थी—इंस्पेक्टर दीवान के अनुसार शायद उन्होंने आत्महत्या कर ली थी।"

"आत्महत्या?"

"दीवान की थ्योरी यही थी, मैं और मांजी पुलिस के साथ वहीं गए थे, जहां लावारिस समझी जाने वाली लाशों को पुलिस बहत्तर घंटों के लिए रखती है—लाश का फोटो तुम देख ही चुके हो—हमने उसी अवस्था में लाश देखी थी, मांजी तभी से पागल-सी हो गई हैं—हालांकि गर्दन धड़ से अलग थी—चेहरा क्षत-विक्षत था, मगर फिर भी मैं

उन्हें पचनने में किसी किस्म की भूल नहीं कर सकती थी—जेब से निकले सामान के अलावा वे वही कपड़े और जूते पहने हुए थे, जो पिछले दिन सुबह पहचकर घर से निकले थे—उनकी पीठ पर मौजूद मस्से को देखने के वाद उन्हें सर्वेश ही न मानने का मेरे पास कोई कारण नहीं था।"

युवक खामोश रहा।

रश्मि कहती चली गई—"लाश को यहां लाया गया। अंतिम संस्कार कर दिया गया, मगर इस प्रश्न का जवाब मुझे नहीं सूझ रहा था कि उन्होंने आत्महत्या क्यों कर ली—मैं उनकी पत्नी हूं और अच्छी तरह जानती थी कि उन्हें कोई गम, कोई दुख नहीं था—आत्महत्या की वजह तो दूर-दूर तक नहीं थी—इसी उलझन में मुझे एक हफ्ता गुजर गया और फिर डाक से मुझे एक रहस्यमय पत्र मिला।"

"रहस्यमय पत्र?"

"यह।" कहती हुई रश्मि ने एक पत्र युवक की तरफ बढ़ा दिया। युवक ने व्यग्रतापूर्वक उसके हाथ से पत्र लिया, खोलकर पढ़ा—

"रश्मि बहन! अगर तुम यह सोच रही हो कि सर्वेश ने आत्महत्या की है तो यह गलत है, सर्वेश की हत्या की गई है—वजह मैं नहीं जानता—हां, इतना जानता हूं कि सर्वेश की जिन्दगी में कहीं कोई ऐसा गम नहीं था, जिससे छुटकारा पाने के लिए वह आत्महत्या करता—फिर जिस सुबह उसकी लाश मिली है, उसकी पूर्व-संध्या को सात बजे मैंने सर्वेश के ऑफिस में रंगा-बिल्ला को दाखिल होते देखा था।

रंगा-बिल्ला बहुत ही खतरनाक, क्रूर, कुख्यात और पेशेवर हत्यारे हैं—वे हमेशा साथ रहते हैं और जहां उन्हें देखा जाता है, यह समझा जाता है कि यहां निश्चय ही कोई हत्या होने वाली है—जिस समय वे सर्वेश के ऑफिस में दाखिल हुए थे, उस समय उनकी आंखों में बड़ी ही जबरदस्त हिंसक चमक दिख रही थी और पांच मिनट बाद ही सर्वेश को साथ लिए वे ऑफिस से बाहर निकले—उस क्षण के बाद मैंने यही सुना कि सर्वेश इस दुनिया में नहीं हैं।

मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूं कि रंगा-बिल्ला ने सर्वेश की हत्या करने के बाद उसकी लाश रेल की पटरी पर डाली होगी—वही दर्शाने के लिए—जो पुलिस सोच रही है—पुलिस को धोखे में डालना रंगा-बिल्ला के बाएं हाथ का खेल है।

तुम जरूर सोच रही होगी रश्मि बहन कि मैं कौन हूं और तुम्हें यह पत्र क्यों लिख रहा हूं, मैं अपना परिचय तो नहीं दे सकता, क्योंकि अभी मरना नहीं चाहता, अगर किसी माध्यम से रंगा-बिल्ला को पता लग गया कि तुम्हें इस आशय का पत्र लिखा है तो निश्चय ही मेरी लाश भी किसी रेल की पटरी पर पड़ी मिलेगी, फिर भी यह खतरनाक काम अपनी और सर्वेश की दोस्ती की खातिर कर रहा हूं।

सिर्फ इसीलिए कि वह जब भी मुझे मिलता, तुम्हारी ही प्रशंसा कर रहा होता है। सर्वज्ञ बुरी तरह तुम्हारा दीवाना था—वह तुमसे बहुत प्यार करता था। उसी के प्यार से मैंने अन्दाजा लगाया कि तुम उसे कितना चाहती होगी। कितना ख्याल रखती होगी उसका, और अब, अचानक ही तुम्हारा सब कुछ लुट गया है बहन और जाने क्यों मुझे अच्छा न लगा कि तुम्हें हकीकत पता न लगे। बस—इसीलिए यह पत्र लिख दिया है—शायद इसे तुम्हारे पास भेजकर मुझे कुछ सुकून मिल सके।

—एक भाई'

पढ़ते-पढ़ते युवक की आंखें भर आईं, दिमाग कुछ और ज्यादा उलझ गया—नजर उठाकर जब उसने रश्मि की तरफ देखा तो पाया कि अपने मुखड़े पर संगमरमरी कठोरता लिए रश्मि उसी की तरफ देख रही थी। बोली—"इस पत्र से मुझे मालूम हुआ कि रंगा-बिल्ला ने उनकी हत्या की है।"

"क्या आपने कभी इस पत्र लिखने वाले का पता लगाने की कोशिश की?"

"असफल रही।"

"क्या आपको कभी इसके बाद भी इसका कोई पत्र मिला?"'

"नहीं।"

"इस पत्र में लिखी हकीकत या रंगा-बिल्ला का पता लगाने के लिए क्या आपने कभी कोई कोशिश नहीं की?"

"इस चारदीवारी में जिम्मेदारियों से घिरी मैं बहुत ज्यादा कोशिश तो नहीं कर सकती, मगर जितनी कर सकी, उससे इस नतीजे पर पहुंची कि रंगा-बिल्ला सचमुच वैसे ही हैं, जैसा इस पत्र में लिखा है। पता लगा है कि वे अक्सर "मुगल महल" में आते रहते हैं।"

"क्या तुमने उन्हें कभी देखा है?"

"अगर देखती तो क्या उन्हें जिन्दा छोड़ देती?" रश्मि के हलक से गुर्राहट-सी निकल पड़ी—"वे कितने भी खतरनाक और क्रूर सही, मगर जिस क्षण मेरी आंखों के सामने आएंगे, वह क्षण उनकी जिन्दगी का आखिरी क्षण होगा, अपने रिवॉल्वर से मैं उनके कलेजे में आग भर
दूंगी।"

"क्या आपने कभी सोचा कि उस वक्त आपके पास रिवॉल्वर कहां से जाएगा?"

"रिवॉल्वर मेरे पास है।"

"अ...आपके पास रिवॉल्वर है?" युवक ने चकित भाव से पूछा—"क्या मैं जान सकता हूं कि रिवॉल्वर जैसी खतरनाक चीज आपके पास कहां से आ गई?"

"उनकी मृत्यु के बाद मुझे उनके व्यक्तिगत सन्दूक से मिली थी।"

"स...सर्वेश के सन्दूक से?"

"हां।"

"क्या आपने कभी सोचा कि सर्वेश के पास रिवॉल्वर क्यों थी?"

"यह सब सोचने का कभी होश ही नहीं मिला है मुझे—मैं तो बस इतना ही सोचती हूं कि रिवॉल्वर मेरे पास है—रंगा-बिल्ला के सामने पड़ते ही मैं उन्हें शूट कर दूंगी।"

"ऐसा करना शायद गलत होगा।"

गुर्रा उठी रश्मि—"क्या मतलब?"

कुछ देर तक चुप रहकर जाने क्या सोचने के बाद युवक ने कहा—"अगर सर्वेश "मुगल महल" में सिर्फ कैशियर ही था तो उसके पास रिवॉल्वर की मौजूदगी रहस्यमय है—मेरे ख्याल से वह सिर्फ कैशियर ही नहीं, कुछ और भी था—कुछ ऐसा, जिसमें उसे रिवॉल्वर की जरूरत पड़ती हो।"

"क्या कहना चाहते हो?" उसे घूरती हुई रश्मि ने कहा।

युवक हिचका नहीं, बोला—"रिवॉल्वर केवल दो ही किस्म के लोग रखते हैं—या तो अपराधी अथवा वे शरीफ लोग, जिन्हें किसी अपराधी से अपनी जान का खतरा हो—आत्मरक्षार्थ।"

"उनके अपराधी होने की कल्पना फिर कभी मत करना।" रश्मि ने चेतावनी दी।

"तो क्या सर्वेश ने आपसे कभी कोई ऐसी बात कही थी, जिससे यह ध्वनित होता हो कि उसे किसी से अपनी जान का खतरा है?"

"नहीं।"

युवक चुप रह गया, शायद गहराई से वह कुछ सोच रहा था। सोचने के बाद बोला—"जिस तरह आप कह रही हैं, यदि उस तरह सामने पड़ते ही रंगा-बिल्ला को शूट कर दिया जाए तो वह न तो उचित ही होगा और न ही बुद्धिमत्ता से भरा कदम।"

"क्या कहना चाहते हो?"

"हर हत्या के पीछे कोई कारण होता है—सर्वेश की हत्या के पीछे छुपा कारण रंगा-बिल्ला ही बता सकते हैं—अगर देखते ही आप उन्हें शूट कर देंगी तो हमें कारण

पता नहीं लगेगा—और मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि बिना कारण पता लगे रंगा-बिल्ला को शूट कर देने से भी आपके दिल को सुकून नहीं मिलेगा।"

रश्मि को लगा कि युवक ठीक कह रहा है।

आखिर पता तो लगे कि वे अपने पास रिवॉल्वर क्यों रखते थे—अगर उन्हें किसी से अपनी जान का खतरा था तो उन्होंने कभी इसका जिक्र क्यों नहीं किया—रंगा-बिल्ला ने उनकी हत्या क्यों की? सब कुछ सोचने के बाद वह बोली—"मैं नहीं जानती कि तुम्हें क्या करना है और न ही इस सारे झमेले से मुझे कोई मतलब है—मुझे मतलब है केवल उनके हत्यारों से—तुम कुछ भी हो, मगर उनके हत्यारे मुझे चाहिए—याद रखना, उनसे बदला तुम नहीं लोगे—वे मेरे शिकार हैं।"

"मैं वीशू की कसम खाकर कह चुका हूं कि हत्यारों को आपके कदमों में लाकर डाल देना ही मेरा मकसद है—बदला लेना आपका काम है।"

"इस विषय में और कुछ पूछना है?"

"मैं सर्वेश के बारे में ज्यादा-से-ज्यादा जानकारी चाहता हूं—ताकि उसका कोई परिचित यह न जान सके कि मैं सर्वेश नहीं हूं।"

¶¶

'मुगल महल' के शानदार दरवाजे के सामने इस बार जो टैक्सी रुकी, उसके अन्दर से युवक निकला। इस वक्त यह बिल्कुल वही सर्वेश नजर आ रहा था, जिसका फोटो रश्मि के कमरे की दीवार पर लगा था—वही दाढ़ी-मूंछ, चश्मा और हेयर स्टाइल।

टैक्सी की पेमेंट करने के बाद वह दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

द्वार पर खड़े वर्दीधारी दरबान ने उसे अपने परम्परागत ढंग से सेल्यूट मारा, परन्तु सेल्यूट मारते-मारते अचानक ही उसकी दृष्टि युवक के चेहरे पर पड़ी और उस क्षण न केवल उसका सैल्यूट मारने वाला हाथ, बल्कि सारा ही जिस्म बुरी तरह कांप उठा।

हैरत के असीमित भाव उसके चेहरे पर उभर आए।

दरबान के कण्ठ से चीख-सी निकल गई—"स...सर्वेश बाबू आप?"

"हां।" धीमे से कहते हुए युवक ने हाथ बढ़ाकर स्वयं ही शीशे का दरवाजा खोला और अन्दर दाखिल हो गया, जबकि मुंह फाड़े दरबान किसी स्टैचू के समान हक्का-बक्का-सा वहीं खड़ा रह गया।

युवक तेज कदमों के साथ सीधा काउंटर की तरफ बढ़ता चला जा रहा था। तभी सामने से तेजी के साथ आता हुआ एक वेटर उससे टकरा गया—टकराते ही वेटर ने

उसकी शक्ल देखी और बरबस ही सेल्यूट के लिए उसका हाथ उठा।

मगर एकदम ही शायद उसे यह ख्याल आ गया कि वह व्यक्ति तो मर चुका है।

वेटर के चेहरे पर हैरत के असीमित भावों के साथ ही भय के चिन्ह भी उभर आए। वह इतना डर गया था, कि ट्रे उसके हाथ से छूट गई। क्रॉकरी खनखनाकर टूटी।

"भ....भू...त...भूत!" बुरी तरह चिल्लाता हुआ वह एक तरफ को भागा।

काउंटर पर मौजूद एक सुन्दर लड़की ने क्रॉकरी टूटने और वेटर के चिल्लाने की वजह से उधर देखा तो उसके हलक से चीख निकल गई—"स...सर्वेश।"

युवक जानता था कि यह सब क्यों हो रहा है?

अत: वह तेजी के साथ काउंटर की तरफ बढ़ गया—आश्चर्य के साथ-साथ युवक ने काउंटर गर्ल के खूबसूरत चेहरे पर उभरने वाले खौफ के भाव भी स्पष्ट देखे।

अभी तक वह मुंह फाड़े किसी स्टैचू के समान खड़ी थी कि युवक उसके नजदीक पहुंचकर बोला—"मुझे मैनेजर साहब से मिलना है।"

सिट्टी-पिट्टी गुम थी उसकी। तभी तो उसके मुंह से कोई आवाज नहीं निकल सकी। उसकी इस अवस्था पर युवक मन-ही-मन मुस्करा उठा—एक नजर उसने अपने चारों तरफ देखा।

दरबान और टकराने वाले वेटर के अलावा होटल के स्टाफ के वहां मौजूद अन्य सभी कर्मचारी दूर खड़े, चेहरों पर काउंटर गर्ल जैसे ही भाव लिए उसे देख रहे थे।

यही स्थिति वह सर्वेश के हत्यारे की कर देना चाहता था।

उसे पूरा यकीन था कि उसकी इस हरकत से सर्वेश के हत्यारों में खलबली मच जाएगी। उसने काउण्टर गर्ल से पुन: कहा—"मैं मैनेजर से मिलना चाहता हूं।"

"क...कौन हैं आप?" काउण्टर गर्ल बड़ी मुश्किल से कह सकी। युवक ने उल्टा सवाल किया—"क्या आप मुझे नहीं जानती हैं?"

"ज....जी हां।" आतंक के कारण वह कांप रही थी।

"वह मैं नहीं था, किसी और की लाश को मेरी लाश समझ लिया गया।" बड़ी ही मोहक मुस्कान के साथ युवक ने कहा—"यकीन करो, मैं सर्वेश हूं—सर्वेश का भूत नहीं, किसी को मुझसे डरने की जरूरत नहीं है।"

"म....मगर यदि तुम मरे नहीं थे तो क.....कहां गायब हो गए थे?" वाक्य पूरा करते-करते काउण्टर गर्ल का हलक पूरी तरह सूख गया।

"इस सवाल का जवाब मैं मैनेजर साहब को ही दूंगा, प्लीज—उन्हें सूचित करो कि मैं आया हूं।"

यन्त्रचालित-सी उसने काउण्टर पर रखे फोन का रिसीवर उठा लिया।

सम्बन्धत स्थापित होने पर काउण्टर गर्ल ने बड़ी मुश्किल से कहा—"है...हैलो सर, डॉली हियर।"

"बोलो।" दूसरी तरफ से अक्खड़ स्वर उभरा।

"स...सर-स...सर्वेश आपसे मिलना चाहता है।"

दूसरी तरफ से सामान्य स्वर में ही पूछा गया—"कौन सर्वेश?"

"व...वही, सर—जो आज से चार महीने पहले तक हमारा कैशियर था।"

"क...क्या बक रही हो?" दूसरी तरफ से बोलने वाला दहाड़ उठा—"वह तो रेल के नीचे कटकर मर चुका है।"

"न...नो सर, वह इस वक्त काउण्टर पर मेरे पास ही खड़ा है।"

"तुम्हारा दिमाग तो ठिकाने है डॉली!"

"स...सॉरी सर, मैं खुद चकित हूं—वह कहता है कि मैँ सर्वेश ही हूं—जो मरा था वह कोई और था—शक्ल भी सर्वेश से बिल्कुल मिलती है, सर। वह आपसे मिलना चाहता है।"

"जाने तुम क्या बक रही हो? भेजो उसे।"

रिसीवर रखते वक्त डॉली के सम्पूर्ण चेहरे पर पसीने की बूंदें झिलमिला रही थीं, बड़ी मुश्किल से कहा था उसने—"अ...आप जा सकते हैं।"

"थैंक्यू।" कहकर वह तेज और लम्बे कदमों के साथ उस कमरे की तरफ बढ़ गया, जिसके मस्तक पर लगी पीतल की शानदार प्लेट पर 'मैनेजर' लिखा था।

किसी की परवाह किए बिना उसने मैनेजर के कमरे का दरवाजा खोला, अन्दर कदम रखते ही एक चीख-सी उसे सुनाई दी—"अ...अरे, तुम तो सचमुच सर्वेश हो?"

"जी हां।" जिस व्यक्ति से युवक ने यह कहा वह, उसे देखते ही अचम्भे के कारण अपनी कुर्सी से उछलकर खड़ा हो गया। झटके से उठने के कारण उसकी रिवॉल्विंग चेयर अभी तक चरमरा रही थी—युवक उसके चेहरे पर भी हैरत के चिन्ह देख रहा था।

शानदार कमरे में शानदार और विशाल मेज के पीछे खड़े व्यक्ति की आयु तीस के करीब ही थी—वह सांवले रंग का आकर्षणहीन नौजवान था। चपटी नाक और सुर्ख आँखों

वाले उस बदसूरत युवक के जिस्म पर कीमती सूट था।

उसके नजदीक पहुंचकर युवक ने कहा— "गुड ईवनिंग सर।"

"'इ...ईवनिंग, मगर तुम जीवित कैसे हो सकते हो, सर्वेश?"

"मैं स्वयं नहीं जानता।"

"हम समझे नहीं, तुम सर्वेश ही हो न?" मैनेजर हक्का-बक्का था।

"जी हां, आप यकीन कीजिए—मैं सर्वेश ही हूं, जिसकी लाश को सबने, यहां तक कि मेरी वाइफ ने भी मेरी लाश समझा, वह किसी और की लाश रही होगी।"

"ल...लेकिन, यह सब कुछ कैसे हो सकता है—उस लाश की जेब से तुम्हारा पर्स मिला था—वे ही सब कागजात जो तुम्हारे थे—तुम्हारे कागजात किसी अन्य की जेब में कैसे पहुंच गए—और फिर यदि तुम मरे नहीं थे तो चार महीने तक कहां रहे?"

"मैं इस किस्म के किसी भी सवाल का जवाब देने की स्थिति में नहीं हूं सर।"

"क्यों?"

"क्योंकि मैं अपनी याद्दाश्त गंवा बैठा हूं।"

"क....क्या मतलब!" इस बार मैनेजर कुछ ज्यादा ही बुरी तरह चौंक पड़ा।

युवक ने शांत स्वर में वह सब कहा जो पहले ही से सोचकर वहाँ गया था—"मैं यह भी नहीं जानता कि अपनी याद्दाश्त किस तरह गंवा बैठा हूं। बस, इतना ही याद है कि मैं दीवानों की तरह एक दिन शाहदरा स्टेशन से राधू सिनेमा की तरफ जा रहा था कि स्कूल के बच्चों से भरी रिक्शा में से एक बच्चा मुझे देखकर 'पापा-पापा' चिल्लाने लगा—वह मुझे अपने घर ले गया—वहां मुझे मालूम पड़ा कि मैं सर्वेश हूं—वह बच्चा मेरा बेटा विशेष है—मेरी पत्नी का नाम रश्मि है और एक बूढ़ी मां भी है मेरी—वाइफ ने ही बताया कि मैं यहां सर्विस करता था—सो, अपनी सर्विस पर लौट आया हूं।"

"बड़ी हैरतअंगेज कहानी है तुम्हारी!"

"मैं खुद चकित हूं, सर।"

"खैर, बैठो।" खुद को थोड़ा नियंत्रित करके मैनेजर ने कहा और अपनी रिवॉल्विंग चेयर पर बैठ गया—युवक भी धीमे से मेज के इस तरफ पड़ी छः गद्देदार कुर्सियों में से एक पर बैठ गया और बैठते ही उसकी नजर मैनेजर के पीछे वाली दीवार पर लगे एक फोटो पर पड़ी और इस फोटो को यहां देखते ही युवक बुरी तरह उछल पड़ा।

बड़े-से, खूबसूरत और कीमती फ्रेम में जड़ा यह फोटो न्यादर अली का था।

न्यादर अली के फोटो को देखकर युवक के मस्तिष्क में बहुत ही जबरदस्त विस्फोट-सा हुआ। एकदम से सैंकडों सवाल उसके मस्तिष्क में चकरा गए और चाहकर भी वह अपनी नजरें न्यादर अली के फोटो से नहीं हटा सका।

"क्या बात है, सर्वेश?" मैनेजर की आवाज सुनकर वह चौंका—"मालिक के फोटो को तुम इस तरह क्यों देख रहे हो?"

"म.....मालिक?"

"ले....लेकिन इसमें चौंकने की क्या बात है?"

"य...ये आपके मालिक कैसे हो सकते हैं?"

"कमाल की बात कर रहे हो, ये ही तो हम सबके मालिक हैं—ये 'मुगल महल' होटल इन्हीं का तो है, हम सब इनके नौकर हैं।"

युवक को लगा कि उसके मस्तिष्क की नसें एक-दूसरे से बुरी तरह उलझ गई हैं, मुंह से स्वयं ही निकला—"अजीब बात है—ये होटल इनका है?"

"इसमें अजीब बात क्या है?"

"मैं.....मैं तो होटल को आप ही का समझ रहा था।"

"अजीब बात तो तुम कर रहे हो सर्वेश, क्या तुम नहीं जानते हो कि मैं तो यहां सिर्फ मैनेजर हूं, होटल तो न्यादर अली का ही है।"

"सम्भव है कि याददाश्त के गुम होने से पहले यह बात मुझे मालूम हो, मगर अब इस वक्त तो मुझे ऐसा लग रहा है जैसे यह बात मुझे पहली बार ही पता लग रही हो—मेरी स्थिति बड़ी अजीब है सर, यदि आप सच पूछें तो इस वक्त मुझे आपका नाम तक मालूम नहीं है।"

बड़ी ही अजीब नजरों से मैनेजर उसे देखने लगा, बोला—"यह होटल इन्हीं का है, परन्तु यहां ये साल में मुश्किल से एक या दो बार ही आते हैं—इस होटल से बहुत बड़े इनके दूसरे बिजनेस फैले हुए हैं, जिन्हें ये देखते हैं—संयोग से आज होटल का हिसाब-किताब देखने यहां आए हुए हैं।"

युवक ने घबराकर पूछा—"क्या इस वक्त वे यहीं हैं?"

"हां, अपने ऑफिस में।"

एकाएक ही युवक को जाने क्या सुझा कि उसने प्रश्न कर दिया—"क्या सेठ न्यादर अली का बेटा भी है?"

“ब....बेटा, नहीं तो।" मैनेजर ने बताया।

"नहीं?”

"इनका कोई बेटा नहीं है।"

"क्या आप अच्छी तरह जानते हैं?" चौंकते हुए युवक ने कुरेदकर पूछा—“क्या सिकन्दर नाम का इनका कोई बेटा नहीं है?"

"अरे, एक बार कह तो दिया भाई, मगर तुम ये मनगढ़न्त नाम कहां से ले आए? तुमसे किसने कहा कि सेठ जी का कोई बेटा है?"

कुछ कहने के लिए युवक ने अभी मुंह खोला ही था कि 'पिंग-पिंग' की आवाज के साथ दीवार पर लगा एक लाल रंग का बल्ब दो बार जला, चौंककर उसी तरफ देखते हुए मैनेजर ने कहा—"ओह! मालिक मुझे तलब कर रहे हैं—मैं अभी आया—तुम यहीं रहना।"

युवक को कुछ कहने का अवसर दिए बिना ही मैनेजर उठा और फिर तेज कदमों के साथ कमरे की पिछली दीवार में मौजूद दरवाजा खोलकर दूसरी तरफ चला गया।

दरवाजा बन्द हो चुका था।

युवक का दिमाग फिरकनी के समान चकरा रहा था। ढेर सारे विचार मस्तिष्क में 'डिस्को' कर रहे थे। एकाएक ही उसके दिमाग में यह विचार उभरा कि उसके लौटने की घटना के अजीब होने की वजह से मैनेजर इस सबका जिक्र न्यादर अली से कर सकता है—याददाश्त खोए युवक के बारे में सुनते ही सम्भव है कि न्यादर अली यहां आ जाएं।

“ऐसा हो गया तो सारा मामला गड़बड़ हो जाएगा—मैं उस मकसद से बहुत दूर भटक जाऊंगा जिससे आया हूं। सम्भव है कि पुलिस के भी चंगुल में फंस जाऊं।”

किसी ने कान में फुसफुसाकर कहा—'यहां से भागो बेटे...।'

युवक एक झटके से उठ खड़ा हुआ।

उसे लगने लगा था कि यदि यहां ठहरा तो कुछ ही देर बाद न्यादर अली के चंगुल में फंस जाएगा और उस अवस्था में बहुत जबरदस्त गड़बड़ भी हो सकती है। शेष बातें वह यहां आकर फिर कभी मैनेजर से कर सकता है। किसी ऐसे समय जब यहां न्यादर अली न हो।

यही निश्चय करके वह घूमा।

फिर, दरवाजा खोलकर ऑफिस से बाहर निकल आया।

¶¶

संतोष की पहली सांस युवक ने तब ली जब टैक्सी 'मुगल महल' से काफी दूर निकल आई—इस सांस के साथ ही उसने अपने अभी तक तने हुए जिस्म को ढीला छोड़ दिया और टैक्सी की पिछली सीट पर पसर गया, अब उसके जेहन में विचारों का तूफान-सा मचल रहा था।

यह जानकर उसके होश उड़ गए थे कि इस होटल का मालिक न्यादर अली है।

वह, जो उसे अपना बेटा सिकन्दर बताता था। उसके होटल का मैनेजर कहता है कि उसका कोई बेटा है ही नहीं—ऐसा तो सोचा भी नहीं जा सकता कि इस बारे में मैनेजर को कोई गलत जानकारी होगी।

'मतलब यह कि मैं उसका बेटा नहीं हूं.....मैं सिकन्दर नहीं हूं।'

'फिर भला वह क्यों मुझे अपना बेटा साबित करना चाहता था?'

'कोई वैसा ही चक्कर होगा जैसा रूबी का था—मैँ जॉनी नहीं हूं, मैं सिकन्दर भी नहीं हूं—फिर क्या हूं, मैं.....कौन हूं?'

'कहीं मैं सचमुच सर्वेश ही तो नहीं हूं?'

'कहीं वही कहानी तो सच नहीं है जो अपने मन से गढ़कर मैनेजर को सुनाई थी, रेल की पटरियों पर से मिली लाश कहीं वास्तव में ही तो किसी अन्य की नहीं थी?'

'मगर, मेरी पीठ से मस्सा कहां गया?'

इस सवाल का जवाब तलाश करने के लिए अपने दिमाग में कोई रास्ता खोज ही रहा था कि अचानक टैक्सी ड्राईवर ने कहा—“सर, एक टैक्सी हमारा पीछा कर रही है।"

युवक इस तरह उछल पड़ा जैसे अचानक बिच्छू ने डंक मारा हो, बोला —"क.....कहां है?"

"हमारे पीछे।"

युवक ने पलटकर पीछे देखा, पीछे बहुत-से वाहन थे, परन्तु उनमें टैक्सी एक ही थी —मूर्ख-सा युवक अभी उसे देख ही रहा था कि ड्राइवर ने कहा—“यह टैक्सी 'होटल मुगल' से ही हमारे पीछे चली आ रही है, सर।"

टैक्सी को देखते-ही-देखते उसके जेहन में विचार उभरा कि शायद सर्वेश के हत्यारों में खलबली मच गई है।

बुरी तरह हतप्रभ स्थिति में सक्रिय हो उठे हैं।

युवक ने जेब में पड़े उस रिवॉल्वर को थपथपाया जो दुश्मन से टकराने के लिए उसने रश्मि से ले लिया था—उसे लगा कि जो वह चाहता था, वह खेल शुरू हो चुका है।

"क्या हुक्म है सर?" ड्राइवर ने एक बार पुन: उसे चौंकाया।

"गाड़ी को अपनी साइड में लेकर खड़ी कर दो।"

ड्राइवर ने वैसा ही किया।

युवक की दृष्टि पिछली टैक्सी पर स्थित थी, उनकी टैक्सी के रुकने पर पीछे वाली टैक्सी आगे निकल गई और युवक उस टैक्सी की सीट पर केवल एक लड़की की झलक देख सका।

कोई बीस कदम आगे जाकर टैक्सी भी रुक गई।

युवक ने उस टैक्सी का दरवाजा खुलते देखा और फिर उसमें से बाहर निकली 'मुगल महल' की काउण्टर गर्ल—उसे देखते ही युवक चौंक पड़ा।

युवक को उसका नाम मालूम था—डॉली।

वह बेहिचक तेजी के साथ चलती हुई नजदीक आई। युवक ने अपना हाथ उस जेब में डाल दिया, जिसमें रिवॉल्वर था। रिवॉल्वर किसी भी समय बाहर आ सकता था, मगर उसकी जरूरत नहीं पड़ी क्योंकि डॉली ने विण्डो के पास आकर कहा—"मैं तुमसे कुछ जरूरी बातें करना चाहती हूं सर्वेश।"

"किस बारे में?" युवक ने पूरी सतर्कता के साथ पूछा।

"तुम्हारे ही बारे में।"

एक पल कुछ सोचने के बाद युवक ने पूछा—"कहां?"

"तुम मेरी टैक्सी में आ सकते हो?"

युवक ने पूरे सतर्क स्वर में कहा—"नहीं, तुम्हें इस टैक्सी में आना होगा।"

"एक मिनट ठहरो, मैं अभी आती हूं।" बिना किसी हिचक के डॉली ने कहा और फिर जिस तेजी के साथ इधर आई थी, उसी तेजी के साथ अपनी टैक्सी की तरफ चली गई। अपनी टैक्सी के बाहर ही खड़ी डॉली ने पेमेंट किया और इस तरफ लौट आई।

कुछ देर बाद वह युवक की बगल में बैठी थी और टैक्सी चल दी थी—काफी देर हो गई, टैक्सी काफी दूर निकल आई, परन्तु उनके बीच खामोशी ही रही—युवक डॉली के गदराए जिस्म से उठती भीनी-भीनी खुशबू का अहसास कर रहा था।

डॉली खूबसूरत थी, ऐसी कि जिसके लिए कोई भी युवक मौत से टकराने तक का दुस्साहस कर सकता था, परन्तु सर्वेश बना वह युवक उसके सौन्दर्य-जाल में उलझकर एक पल के लिए भी असावधान नहीं होना चाहता था, अत: काफी देर से छाई खामोशी को उसने तोड़ा—"मेरे बारे में तुम क्या बात करना चाहती थीं?"

"यहां टैक्सी में नहीं, वे बातें मैं बिल्कुल तन्हाई में करना चाहती हूं।"

युवक कुछ और ज्यादा सतर्क हो गया।

उसे लगा कि डॉली सर्वेश के हत्यारों द्वारा ही बिछाई गई शतरंज का कोई मोहरा है। इसके माध्यम से कोई जाल मेरे चारों तरफ कसा जा रहा है, डॉली की ड्यूटी शायद इस बहाने से मुझे किसी निश्चित स्थान पर पहुंचा देने की है—वहीं दुश्मन मौजूद होंगे। अत: युवक ने पूछा—"कहां बैठकर बातें करना चाहती हो?"

"जहां तुम चाहो, मुझे केवल तन्हाई की जरूरत है।" युवक की आशाओं पर पानी फिर गया, डॉली के उपरोक्त वाक्य से जाहिर था कि वह उसे किसी निश्चित स्थान पर नहीं ले जाना चाहती है, बल्कि जहां वह चाहे, चलने के लिए तैयार है, इसका मतलब यह कि कोई साजिश नहीं है।

डॉली सचमुच उससे कुछ बातें करना चाहती है।

एक थ्री स्टार होटल के सामने युवक ने टैक्सी रुकवा ली। टैक्सी का पेमेंट करके वह डाली के साथ होटल के अन्दर प्रविष्ट हो गया।

अन्दर जाकर वह एक केबिन की तरफ बढ़ गया।

केबिन में बैठने तक युवक खुद को किसी भी खतरे से टकराने के लिए तैयार कर चुका था, कॉफी का आर्डर दे दिया था—वेटर कॉफी रखकर चला गया तो युवक ने कहा—

"यहां बिल्कुल तन्हाई है।"

"मैं जानना चाहती हूं कि तुम जीवित कैसे बच गए?"

सर्वेश ने संभलकर पूछा—"क्या मतलब?"

"तुम्हें जहर दिया गया था न?"

"ज.....जहर?"

अचानक ही डॉली की भवें सिकुड़ गईं। वह थोड़े आतंकित-से स्वर में बोली—"क्या तुम सचमुच सर्वेश ही हो?"

"हां।"'

"तब फिर तुम जहर वाली बात पर चौंक क्यों रहे हो?"

युवक को लगा कि अगर उसने होशियारी से काम नहीं लिया तो गड़बड़ हो जाएगी, अत: संभलकर बोला—"मैं इसीलिए चौंका हूं कि यह बात आखिर तुम्हें कैसे पता लग गई, डॉली कि उन्होंने मुझे जहर दिया था?"

"ओह, मैंने एक बार छुपकर रंगा-बिल्ला की बातें सुन ली थीं।"

युवक के मस्तिष्क में विस्फोट-सा हुआ, पूछा—"क्या बातें कर रहे थे वे?"

"यह कि तुम्हारे ऑफिस से उठाकर वे तुम्हें 'शाही कोबरा' के पास ले गए और फिर 'शाही कोबरा' तुम्हें जहर मिली बीयर पिला दी।"

"य...यह 'शाही कोबरा' कौन है?"

"मुझे सिर्फ उतना ही पता है जितना रंगा-बिल्ला की बातें सुनने से पता लगा था —उनकी बात सुनकर मैं कुल इतना ही समझ सकी कि 'शाही कोबरा' के हुक्म पर रंगा-बिल्ला तुम्हारी लाश को रेल की पटरी पर रख आए थे।"

"म...मगर मेरी लाश को रेल की पटरी पर रखने की क्या जरूरत थी?"

"ताकि पुलिस यह समझे कि तुमने आत्महत्या की है और व्यर्थ का बखेड़ा न हो।"

एक पल चुप रहने के बाद युवक ने पूछा—"रंगा-बिल्ला की बातों से तुम्हें और क्या पता लगा?"

"जो बता चुकी हूं उसके अलावा कुछ भी नहीं, तुम तो जानते ही हो सर्वेश कि वे कितने खतरनाक हैं—मुझे डर था कि अगर उन्होंने मुझे अपनी बातें सुनते देखा लिया होता तो मैं भी जिन्दा न रहूंगी।"

"हां, मैं जानता हूं।"

"तुम्हें देखकर पहले तो मैं यकीन ही नहीं कर सकी कि यह तुम हो, क्योंकि ख्वाब में भी नहीं सोच सकती थी कि तुम रंगा-बिल्ला के चंगुल से बच सकते हो—मुझे तो यह भी तुम्हारा सामने बैठा होना स्वप्न-सा लग रहा है—प्लीज, बताओ न सर्वेश कि तुम कैसे बच गए?"

युवक के जेहन में एक विस्फोट-सा हुआ था, डॉली को घूरता हुआ वह बोला —"क्या तुमने रश्मि को कोई पत्र लिखा था?"

"हां, क्या तुमने वह पढ़ लिया है—अरे?" जाने क्यों डॉली एकदम बुरी तरह से चौंक पड़ी। उसके चेहरे पर आतंक और दहशत के भाव उभर आए—अचानक ही वह बहुत

भयभीत नजर जाने लगी थी, कांपते स्वर में बोली—"न-नहीं, तुम सर्वेश नहीं हो सकते।"

"क्यों?" युवक चौंक पड़ा।

"अगर तुम सर्वेश होते तो वह क्यों पूछते कि क्या वह पत्र मैंने लिखा है—नहीं, तुम सर्वेश नहीं हो—म...मैंने कोई पत्र नहीं लिखा था।" कहने के साथ ही बुरी तरह डरी हुई डॉली उठी और केबिन से बाहर निकलने के लिए अभी उसने पहला कदम उठाया ही था कि युवक ने एक झटके से रिवॉल्वर निकालकर उस पर तान दिया।

डॉली के होश उड़ गए, चेहरा पीला जर्द।

"चुपचाप यहीं बैठ जाओ।" युवक गुर्राया।

"म....मुझे बख्श दो—मैं सच कहती हूं—सर्वेश की वाइफ को मैंने कोई पत्र नहीं लिखा—रंगा-बिल्ला की बातें मैंने बिल्कुल नहीं सुनी थी, सर्वेश के मर्डर के बारे में मुझे कुछ भी मालूम नहीं है।" बुरी तरह गिड़गिड़ाते वक्त मौत का खौफ उसके चेहरे पर साफ झलक रहा था।

"मैं तुम्हें नहीं मारूंगा, यह रिवॉल्वर सिर्फ तुम्हें यहां रोकने के लिए निकाला है—आराम से बैठ जाओ, अगर तुमने मेरे सभी सवालों का सही जवाब दिया तो तुम्हें कोई खतरा नहीं है।"

डॉली बैठ गई, उसका समूचा शरीर कांप रहा था—हल्दी-से नजर आने वाले पीले चेहरे पर झिलमिला रही थीं पसीने की बूंदें।

"अगर तुम्हारे दिमाग में यह खौफ बैठ गया है कि मैं सर्वेश के हत्यारों में से कोई हूं तो उस खौफ को निकाल फेंको, मुझे उनका दुश्मन समझो।"

"अ...आप कौन हैं?"

"में सर्वेश ही हूं।"

"क..कैसे मान लूं...अगर आप सर्वेश होते तो उस पत्र को देखते ही समझ जाते कि रश्मि बहन को वह पत्र मैंने लिखा है।"

"कैसे समझ जाता?"

"म...मेरी राइटिंग से—सर्वेश मेरी राइटिंग को खूब पहचानता था, रजिस्टर में मेरे द्वारा की गई ग्राहकों की एण्ट्री को देखकर वह हमेशा मेरी राइटिंग की तारीफ करता था।"

"ओह!" युवक की समझ में डॉली के चौंकने का रहस्य आ गया था, वह समझ गया कि जब तक डॉली उससे आतंकित रहेगी, तब तक उसके सवालों का सही जवाब

नहीं दे सकेगी, अत: अपने बारे में उसने वही कहानी डॉली को भी सुना दी, जो कुछ ही समय पहले मैनेजर को सुना चुका था।

सुनकर भौंचक्की रह गई डॉली!

आतंक, भय और मौत के खौफ के चिन्हों के स्थान पर अब उसके चेहरे पर हैरत और अविश्वास के भाव उभर आए, बोली—"क्या सच कह रहे हो, तुम सर्वेश ही हो!"

"मैंने बिल्कुल सच कहा है डॉली।'"

"अजीब हैरतअंगेज कहानी है तुम्हारी।"

"अब तुम मुझे यह बताओ कि पत्र तुमने इस ढंग से क्यों लिखा था कि पढ़ने में किसी मर्द द्वारा लिखा गया महसूस हो?"

"तुम्हारे हत्यारे से खुद को पूरी तरह छुपाने के लिए—यह सोचकर कि अगर किसी तरह उन्हें रश्मि बहन को मिले पत्र के बारे में पता लग भी जाए तो पत्र लेखक को वे पुरुषों में ही ढूंढते रहें, किसी नारी की तरफ ध्यान तक न जाए और मैं उनकी पहुंच से बहुत दूर रहूं।"

"अगर तुम इतना डरती थी तो ऐसा पत्र लिखने की जरूरत ही क्या थी?"

"म...मैं विवश थी।"

"कैसी विवशता?"

डॉली ने कुछ कहना चाहा, मगर फिर बिना कुछ कहे ही मुंह बंद कर लिया, कुछ क्षणोपरान्त बोली—"उस विवशता को छोड़ो सर्वेश, बस यह समझो कि दिल के हाथों विवश थी—चाहकर भी मैं खुद को वह पत्र लिखने से न रोक सकी।"

"आखिर क्यों?"

"छोड़ो भी।"

"नहीं डॉली, मैं किसी भी ऐसे प्रश्न का जवाब मालूम किए बिना न रहूंगा, जिसका जवाब तुम्हें मालूम हो, उस विवशता के बारे में बताओ डॉली।"

डॉली किसी दुविधा-सी में फंसी महसूस हुई, बोली—"जिद मत करो सर्वेश, यकीन मानो कि इस सवाल का तुम्हारी इन्वेस्टिगेशन से कोई सम्बन्ध नहीं है—उल्टे मुझे एक ऐसी बात उगलनी पड़ जाएगी जो तुम्हारी याददाश्त गुम होने से पहले लाख चेष्टाओं के बावजूद भी मैं नहीं कह सकी थी और बहुत पहले ही वह बात मैं तुमसे कभी न कहने का संकल्प ले चुकी हूं।"

"कौन-सी? क्या बात है?"

"अगर विवश ही कर रहे हो तो सुनो।" एक ठंडी सांस लेने के बाद डॉली ने कहा —"म...मैँ तुमसे मौहब्बत करती हूं।"

"ड...डॉली।" युवक के कण्ठ से चीख-सी निकल गई।

"बस, यही छोटी-सी बात थी, जो मैं तुमसे कभी न कह सकी और कभी न कहने का संकल्प भी ले लिया था।"

सन्नाटे की-सी अवस्था में युवक डॉली को देखता रह गया।

"अच्छा ये बताओ कि तुमने रंगा-बिल्ला को उस शाम सात बजे मेरे पास आते कैसे और कहां से देखा था?"

"मैं काउंटर पर ही खड़ी थी।'"

"क्या तुमने वे बातें भी सुनी थीं, जो उन्होंने मेरे ऑफिस में मुझसे कीं?"

"नहीं।"

"वे मुझे ऑफिस से निकालकर कहां ले गए?"

"मैं नहीं जान सकी, उस घटना के दो हफ्ते बाद रंगा-बिल्ला पुन: "मुगल महल" में आए और एक केबिन में बैठकर शराब पीने लगे, लेकिन के बाहर छुपकर उनकी जो बातें मैंने सुनीं, उनका सार तुम्हें बता ही चुकी हूं—उससे ज्यादा मैं कुछ नहीं जानती।"

¶¶

"यह तो कोई विशेष 'क्लू' न हुआ, इस तरह भला क्या पता लगना था?" चटर्जी की पूरी बात सुनने के बाद इंस्पेक्टर दीवान ने कहा।

उसी के समर्थन में आंग्रे बोला—"मैं भी चटर्जी से यही कह रहा था, मगर यह किसी की सुने तब न, लाख मना करने पर भी यह मुझे भी गाजियाबाद से शाहदरा खदेड़ ही लाया और शाहदरा स्टेशन से राधू सिनेमा की तरफ जाने वाली सड़क पर स्थित लगभग हरेक दुकान के मालिक को सिकन्दर का फोटो दिखाकर पूछता रहा कि क्या उनमें से किसी ने इसे देखा है। वही हुआ, जिसकी उम्मीद थी—यानि किसी ने यह नहीं कहा कि इसे कोई पहचान सकता है।"

"दुकानदार भला पहचानते भी कैसे—उस सड़क से हर रोज जाने कितने लोग गुजरते हैं और वैसे भी सिकन्दर एक महीने पहले वहां से गुजरा होगा—किसी दुकानदार के द्वारा उसे पहचान लिए जाने की उम्मीद करना ही मूर्खतापूर्ण है।"

हल्की-सी मुस्कान के साथ चटर्जी ने कहा—"कोई आशाजनक परिणाम नहीं

निकला है, इसीलिए फिलहाल तुम दोनों को मुझे मूर्ख ठहराने का पूरा अधिकार है।"

आग्रे ने व्यंग्य-सा किया—"तो क्या तुम्हें इस तरह से कोई परिणाम निकलने की उम्मीद थी?"

"वहां से निराश होकर हम तुम्हारे पास आ गए हैं दीवान।" आंग्रे की बात पर कोई ध्यान न देते हुए चटर्जी ने कहा—"सोचा कि जब शाहदरा तक आ ही गए हैं तो क्यों न देहली में तुम्हारी चाय पीने के बाद ही गाजियाबाद लौटें?"

दीवान ने कुछ कहने के लिए अभी मुंह खोला ही था कि मेज पर रखे टेलीफोन की घण्टी बज उठी, रिसीवर उठाकर दीवान ने कहा—"हैलो—थाना रोहतक रोड।"

"मुझे इंस्पेक्टर दीवान से बात करनी है।"

"जी, कहिए—मैं दीवान ही बोल रहा हूं।"

"क्या आप वही इंस्पेक्टर दीवान हैं, जिसने आज से करीब चार महीने पहले रेल की पटरी से 'मुगल महल' के कैशियर मिस्टर सर्वेश की लाश बरामद की थी?"

"जी हां, आप कौन हैं?"

"मैं 'मुगल महल' का मैनेजर नारायण दत्त साठे बोल रहा हूं।"

"सेवा बोलिए।"

"क्या वह लाश मिस्टर सर्वेश ही की थी?"

"नि:सन्देह, मगर आज चार महीने बाद अचानक ही आप उसके बारे में क्यों पूछ रहे हैं?"

"दरअसल आज सर्वेश यहां होटल में आया था।"

"क...क्या कह रहे हैं आप?" दीवान कुर्सी से उछल पड़ा।

"जी हां, मैं खुद चकित हूं।.....वह खुद को सर्वेश ही कहता था और नि:सन्देह, देखने में हर कोण से वह सर्वेश ही नजर आता था—मैं और मेरा सारा स्टाफ चकित है।"

"आपसे क्या चाहता था?"

"पुन: अपनी ड्यूटी ज्वाइन करना चाहता था।"

"इस वक्त कहां है?"

"जा चुका है, शायद घर गया होगा।"

"क्या आप सारी घटना विस्तार से बता सकते हैं?"

दूसरी तरफ से साठे ने सब कुछ बता दिया। याददाश्त गुम होने और शाहदरा से एक बच्चे के 'पापा' कहकर उसे अपने घर ले जाने का वृतांत सुनकर दीवान की हालत बड़ी अजीब हो गई, बोला—"तो यह बात उसकी वाइफ ने उसे बताई है कि उसका नाम सर्वेश है और वह 'मुगल महल' में कैशियर था?"

"उसके बताए अनुसार तो ऐसा ही है।"

"मैं अभी गांधीनगर स्थित सर्वेश के मकान पर जाकर इस सारे मामले की छानबीन करता हूं मिस्टर साठे।"

"मैं भी यही चाहता हूं, इंस्पेक्टर—नतीजा जो भी निकले, उससे मुझे जरूर अवगत कराइएगा, ताकि मैं निर्णय कर सकूं कि कैशियर की जगह उसे देनी है या नहीं।"

"जरूर सूचित करूंगा मिस्टर साठे, मगर मेरे ख्याल से यह इस अवस्था में सही नहीं रहेगा कि आपके यहां कैशियर रह सके, क्योंकि मैं जानता हूं कि वह सर्वेश नहीं है।" कहने के बाद दूसरी तरफ से किसी जवाब की प्रतीक्षा किए बिना दीवान ने रिसीवर क्रेडिल पर पटक दिया।

चटर्जी और आंग्रे क्योंकि दूसरी तरफ से बोलने वाले की आवाज नहीं सुन पाए थे इसीलिए कुछ समझे नहीं—हां, दीवान की आंखों में उभर आई चमक, बार-बार उसके चौंकने तथा फोन रखते वक्त उसकी उत्तेजक स्थिति से उन्होंने यह अनुमान जरूर लगाया कि मामला महत्वपूर्ण है। उसके रिसीवर रखते ही चटर्जी ने पूछा— "क्या बात है?"

"मुझे लगता है कि आप बहुत ज्यादा लकी हैं।"

चटर्जी ने चौंकते हुए पूछा—"क्या मतलब?"

"मेरे ख्याल से सिकन्दर का पता लग गया है।"'

"क....कैसे—कहां है?" एक साथ दोनों के मुंह से निकला।

दीवान ने फोन पर साठे से हुई बातें उन्हें विस्तारपूर्वक बता दीं। सुनने के बाद उनके दिलों में अजीब-सी उत्तेजना और जोश भर गया। दीवान ने कहा—"सिकन्दर शाहदरा स्टेशन पर उतरा, वह राधू की तरफ जा रहा था कि सर्वेश का बच्चा उसे अपने घर ले गया।"

"और तब से सिकन्दर सर्वेश बनकर वहीं रह रहा है।" बात आंग्रे ने पूरी की।

चटर्जी बोला—"मगर बड़ी अजीब बात है—सर्वेश के बच्चे ने सिकन्दर को भला

अपना 'पापा' कैसे कह दिया और फिर सर्वेश की वाइफ और मां ने सिकन्दर को सर्वेश कैसे मान लिया?"

"इस बारे में अभी क्या कहा जा सकता है? सम्भव है कि दोनों की शक्लों में थोड़ा-बहुत साम्य हो, साठे कहता था कि वह हू-ब-हू सर्वेश ही लगता है।"

"क्या तुमने सर्वेश को नहीं देखा था?"

"मैंने सिर्फ उसकी लाश देखी थी—चेहरा क्षत-विक्षत था।"

"कुछ भी सही, याददाश्त गुम होने और शाहदरे में यही घटना से बिल्कुल स्पष्ट है कि वह सिकन्दर है—और यह भी स्पष्ट है कि अब वह हमारे सामने खुद को सर्वेश ही साबित करने की भरपूर चेष्टा करेगा, मगर मेरा नाम भी चटर्जी है—उसकी उंगलियों के निशान और राइटिंग अब भी मेरी जेब में हैं—चलो दीवान—गांधी नगर चलते हैं।"

"चलो।" कहकर दीवान उठ खड़ा हुआ।

¶¶

"हूं।" सब सुनने के बाद रश्मि के हलक से वैसी ही गुर्राहट उभरी जैसी भूख और हिंसक सिंहनी के कण्ठ से निकलती है। चेहरा विकृत-सा हो गया उसका, आंखों से चिंगारियां निकलने लगीं। मुंह से निकली गुर्राहट—"तो उन हरामजादों ने मेरे सर्वेश को जहर देकर मार था।"

"फिलहाल डॉली के बयान से तो ऐसा ही लगता है।" युवक ने कहा—"और ऐसा सोचने की कोई वजह नहीं है कि डॉली झूठ बोल रही होगी।"

"बीयर उनकी सबसे बड़ी कमजोरी थी—मेरे लाख मना करने पर भी बीयर नहीं छोड़ सके थे वे और यही बीयर उन्हें ले डूबी—शायद 'शाही कोबरा' कहलाने वाले हत्यारे को भी उनकी इस कमजोरी की जानकारी थी।"

युवक ने सोचने की कोशिश की कि क्या बीयर मुझे पसंद है?

ठीक से निश्चय नहीं कर सका वह।

बोला—"मैं न कहता था रश्मि कि रंगा-बिल्ला को एकदम से शूट कर देना उचित नहीं होगा—अब देखो, स्पष्ट होकर यही बात सामने आ रही है कि वे दोनों तो सिर्फ हत्यारे के सहायक थे—असली हत्यारा कोई 'शाही कोबरा' नामक व्यक्ति है।"

"मुझे वही चाहिए।"

"उस तक हमें रंगा-बिल्ला पहुंचा सकते हैं—सुना है कि वे 'मुगल महल' में आते रहते हैं—डॉली को मैंने समझा दिया है—अब जिस दिन भी वहां रंगा-बिल्ला आएंगे, वह

किसी भी माध्यम से मुझे सूचित कर देगी और जिस दिन वे मेरे हत्थे चढ़ गए, उस दिन मुझे पता लग जाएगा कि वे सर्वेश को कहां ले गए थे और ये 'शाही कोबरा' का क्या चक्कर है।"

उनकी बातें अभी तक चुपचाप सुन रहे विशेष ने भोलेपन से पूछा—"ये रंगा-बिल्ला कौन हैं पापा? और आपको कब, कहां ले गए थे?"

"कहीं नहीं, बेटे।" नजदीक बैठकर युवक ने उसे बांहों में भर लिया और प्यार करता हुआ बोला—"अच्छे बच्चे मम्मी-पापा की बातें ध्यान से नहीं सुना करते हैं।"

युवक ने रश्मि के चेहरे पर मौजूद भाव देखे, उसे शायद युवक का 'मम्मी-पापा' कहना अच्छा नहीं लगा था। प्रतिशोधस्वरूप शायद अभी यह कुछ कहने ही वाली थी कि मकान के मुख्य द्वार के पार से टायरों की चीख-चिल्लाहट उभरी।

शायद कोई चार पहियों वाला वाहन रुका था।

तीनों का ध्यान उसी तरफ चला गया और पुलिस के भारी बूटों की आवाज सुनकर युवक दहल उठा। यह विचार बिजली की तरह उसके मस्तिष्क में कौंधा था कि पुलिस आ गई है।

'क्या वे जान चुके हैं कि रूबी का हत्यारा यहां सर्वेश बनकर रह रहा है?'

'इस चारदीवारी में तो यह साबित करने के लिए कि मैं सर्वेश नहीं हूं, रश्मि के जिस्म पर मौजूदा लिबास ही काफी है। सूनी मांग ही काफी है।'

यही सोचकर उसे पसीना आ गया।

यह सारे विचार उसके जेहन में एक क्षण मात्र में ही कौंध गए थे और अगले ही क्षण मकान के मुख्य द्वार पर दस्तक हुई।

आतंकित स्वर में युवक ने वहीं से पूछा—"कौन है?"

"पुलिस।" इस आवाज और शब्द ने युवक के जेहन में सनसनी फैला दी।

रश्मि सवालिया नजरों से उसकी तरफ देख रही थी।

युवक ने बौखलाए-से स्वर में कहा—"त.....तुम ऊपर जाओ रश्मि...प्लीज—पुलिस के सामने आने की कोशिश मत करना।"

कहने के बाद वह दरवाजे की तरफ बढ़ गया। रश्मि का जवाब सुनने का दरअसल उसके पास समय ही नहीं था—रश्मि तेजी के साथ सीढ़ियों पर चढ़ती चली गई और युवक ने दरवाजा तभी खोला जब वह अपने कमरे में जा चुकी थी।

दरवाजा खोलते ही जिन चेहरों पर युवक की दृष्टि पड़ी, उन्हें यहां देखते ही उसके होश उड़ गए—'उफ्फ—ये यहां?'

इंस्पेक्टर दीवान और चटर्जी।

बड़ी तेजी से उसके जेहन में सवाल कौंधा था कि चटर्जी यहां कैसे?

आंखों के सामने अंधेरा छा गया।

चकराकर स्वयं को वहीं गिरने से रोकने में युवक को जबरदस्त मानसिक श्रम करना पड़ा। उसकी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई थी।

होश फाख्ता।

दिमाग में एक ही शब्द गूंजा—'बन्टाधार।'

चटर्जी की वहां मौजूदगी से ही जाहिर था कि वे वहां यह जांच करने नहीं आए थे कि वह सर्वेश है या नहीं, बल्कि उसे सिकन्दर साबित करने आए थे निश्चय ही वह तीसरा इंस्पेक्टर आंग्रे था और किसी 'क्लू' से उन्हें यह पता लग चुका था कि रूबी का हत्यारा उस मकान में रह रहा था—कम-से-कम उन तीनों का सामना करने के लिए वह मानसिक रूप से बिल्कुल तैयार नहीं था। उसने तो कल्पना भी नहीं की थी कि यू.पी. पुलिस के चटर्जी और आंग्रे यहां आ धमकेंगे।

न चाहते हुए भी युवक का चेहरा पसीने से भरभरा उठा।

वे तीनों ही इंस्पेक्टर बड़ी पैनी दृष्टि से उसका निरीक्षण कर रहे थे। चटर्जी और दीवान की दृष्टि उसे ऐसी लगी, जैसे वे उसकी दाढ़ी-मूंछ और चश्मे के पीछे छुपे चेहरे को देख रहे हों।

किसी मूर्ति के समान वहीं खड़ा रह गया था युवक।

"हैलो, मिस्टर सिकन्दर।" एकाएक चटर्जी ने कहा।

युवक ने एकदम चौंककर पूछा—"क...कौन सिकन्दर, किसे पुकार रहे हैं आप?"

"आपको।"

"म...मुझे, लेकिन मेरा नाम सर्वेश है।"

जवाब में चटर्जी के होंठों पर एक धूर्त और जहर में बुझी-सी मुस्कान उभरी थी। चटर्जी ने उसी मुस्कान के साथ कहा—"अगर हम आपको सर्वेश मान लें तो क्या तब भी आप हमें अन्दर आने के लिए नहीं कहेंगे?"

"अ.....आइए।" बौखलाकर युवक दरवाजे के बीच से हट गया।

तीनों इंस्पेक्टर और उनके साथ आए पांच सिपाही दरवाजा पार करके आंगन में आ गए। उनकी अगवानी करते हुए युवक ने विशेष से कहा—"जरा अपनी मम्मी से चाय बनवा दो वीशू।"

"उसकी कोई जरूरत नहीं है।" दीवान ने कहा, परन्तु उसकी बात सुने बिना ही विशेष अपने 'पापा' के आदेश का पालन करने सीढ़ियों की तरफ बढ़ चुका था।

आंगन पार करके वे कमरे में पहुंच गए।

यह वही कमरा था, जो युवक को मिला हुआ था, एक ड्राइंगरूम जैसा—युवक ने उन सबको सेण्टर टेबल के चारों तरफ पड़े सोफों पर बैठाया, तीनों इंस्पेक्टर उसके ठीक सामने एक पंक्ति में बैठे थे। एकाएक ही युवक को घूरते हुए चटर्जी ने पूछा—"क्या तुम मुझे जानते हो?"

"ज...जी नहीं।"

चटर्जी ने व्यंग्यपूर्वक कहा—"मेरा नाम इंस्पेक्टर चटर्जी है और तुम भूल रहे हो कि मैं तुम्हें उस रोज हरिद्वार पैसेंजर में मिला था, जब तुम गाजियाबाद से जा रहे थे।"

"क...कमाल कर रहे हैं आप, मैं तो गाजियाबाद कभी गया ही नहीं।"

उसके वाक्य पर कोई ध्यान दिए बिना चटर्जी ने कहा—"इनसे मिलो, उम्मीद है कि तुम इन्हें जरूर जानते होंगे—ये इंस्पेक्टर दीवान हैं, चाहते हैं कि यदि तुम्हारी याददाश्त वापस लौट आई हो तो तुम इन्हें स्मगलर्स के ट्रक ड्राइवर के बारे में कुछ बताओ।"

बुरी तरह आतंकित युवक ने कहा था—"मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है, जाने आप क्या कह रहे हैं?"

एकाएक इंस्पेक्टर दीवान बोल पड़ा—"इंस्पेक्टर चटर्जी मेरे बारे में एक खास बात बताना भूल गए हैं, उसकी लाश रेल की पटरी से मैंने ही बरामद की थी, जो तुम बनने की कोशिश कर रहे हो।"

झुंझलाहट का प्रदर्शन किया युवक ने—"'क...क्या बनने की कोशिश कर रहा हूं मैं?"

"सर्वेश।" इंस्पेक्टर आंग्रे ने इस नाम को चबाया।

"स...सर्वेश तो मैं हूं ही।"

"हुंह—अगर तुम यह सोच रहे हो कि इस मूंछ-दाढ़ी, चश्मे और बदली हुई हेयर स्टाइल से हमें धोखा दे दोगे तो यह बहुत बचकाना ख्याल है मिस्टर सिकन्दर।" चटर्जी का एक-एक अक्षर जहर में बुझा था। वह कहता ही चला गया—"इधर देखो बेटे, इन

आंखों में—ये पुलिस की आंखें हैं—एक बार जिसे देख लेती हैं, वह दोबारा इंसान के स्थान पर अगर जानवर बनकर भी सामने आए तो तुरन्त पहचान लेती हैं।"

"मेरा नाम सर्वेश है।"

"सर्वेश आज से चार महीने पहले मर चुका है।"

"वह गलत था, किसी और की लाश थी वह।"

"किसकी?"

"मैं दावे के साथ नहीं कह सकता—शायद उसकी रही हो, जिसने मुझे लूटा था।"

चटर्जी ने चौंकते हुए पूछा—"त...तुम्हें लूटा था?"

"हां।"

"कब, किसने?"

हिम्मत करके युवक ने पहले ही से तैयार एक कहानी सुना दी—"उस रोज तबीयत खराब होने की वजह से आठ के स्थान पर सात बजे ही मैंने 'मुगल महल' की अपनी सीट से छुट्टी कर ली थी और एक थ्री-व्हीलर में यहां के लिए आ रहा था कि जमना के नांव वाले पुल पर एक लुटेरे ने मेरा थ्री-व्हीलर रोका और फिर मेरे सिर पर रिवॉल्वर के दस्ते का वार किया—मैं बेहोश हो गया।"

"इस गढ़े हुए खूबसूरत ड्रामे के बीच थ्री-व्हीलर का ड्राइवर क्या कर रहा था?"

"वह खामोश था, शायद लुटेरे से उसकी मिलीभगत हो।"

"क्या आप उस थ्री-व्हीलर का नम्बर बता सकते हैं?"

"शायद ही कोई थ्री-व्हीलर में बैठने से पहले उसका नम्बर देखता हो।"

"खैर।" चटर्जी ने व्यंग्यपूर्वक कहा—"अच्छी और इंट्रेस्टिंग कहानी गढ़ी है तुमने—हां, तो तुम बेहोश हो गए—उसके बाद क्या हुआ?"

"जब होश आया तो खुद को मैंने एक अंधेरी और सीलनयुक्त कोठरी में रस्सियों से बंधा पाया, मेरे मुंह पर भी टेप चिपका हुआ था और तन पर से सभी बाहरी कपड़े गायब थे।"

"वेलडन—तो तुम यह कहना चाहते हो कि तुम्हें लूटने की खुशी में वह लुटेरे तुम्हारे कपड़े पहनकर रेल की पटरियों पर जा लेटा?"

"म...मैं क्या कह सकता हूं कि ऐसा उसने अपनी किस खुशी की खातिर किया था?"

"खैर, क्या तुम बता सकते हो कि तुम्हें किसने, किस मकसद से उस अंधेरी और सीलनयुक्त कोठरी में कैद रखा?"

"मैं उसे देख नहीं सका, क्योंकि वह हमेशा अपने चेहरे पर नकाब डालकर सामने जाता था, उसका मकसद मुझे जरूर मालूम है।"

"वही बताओ।"

"वह एक ब्लैंक बॉण्ड पेपर पर मेरे साइन चाहता था।"

"किसलिए?"

"यह मैं नहीं जानता।"

"खैर, आपने उस पर साइन किए या नहीं?"

"मैं पूरे तीन महीने तक अड़ा रहा, उससे कहता रहा कि जब तक मुझे वह यह नहीं बताएगा कि मेरे साइन का क्या करेगा, तब तक साइन नहीं करूंगा, मगर यह राज उसने मुझे कभी नहीं बताया और हमेशा यही कहता रहा कि जिस दिन मैं साइन कर दूंगा, उस दिन वह मुझे कैद से मुक्त कर देगा, किन्तु साइन लिए बिना हरगिज नहीं—तीन महीने बाद आखिर मुझ ही को टूटना पड़ा और उस ब्लैंक बॉण्ड पर साइन कर दिए।"

"ओह।" चटर्जी के लहजे में जबरदस्त व्यंग्य था—"तो आपको साइन करने आते हैं?"

"क....क्यों नहीं, पढ़ा-लिखा हूं मैं।"

"खैर, साइन के बाद क्या हुआ?"

"अचानक ही जेब से रिवॉल्वर निकालकर उसने मेरे सिर पर वार किया, मैं बेहोश हो गया और इस बार जब होश में आया तो 'बुद्धा गार्डन' के एक कोने में मैं झाड़ियों के पीछे पड़ा था।"

"यानि उसने तुम्हें छोड़ दिया था?"

"जी हां।"

"काफी ईमानदार अपराधी था। खैर, फिर?"

"जेब में एक पैसा भी नहीं था, तन पर वे कपड़े थे, जो कैद करने के तीन दिन बाद ही उसने मुझे दिए थे, मैं बुद्धा गार्डन से पैदल ही अपने घर यानि यहीं के लिए चल दिया —राधू सिनेमा के नजदीक ही रिक्शा में स्कूल से लौटता वीशू मुझे मिल गया—घर जाने पर देखा कि रश्मि बेचारी खुद को विधवा समझ रही है—सारी दुनिया मुझे मृत समझ रही

थी।"

"काफी सोच-समझकर, सुलझी हुई—खूबसूरत और ऐसी कहानी गढ़ी है तुमने कि जिसमें कोई ऐसा 'लीक' प्वाइंट भी न रहे जिसके जरिए यह पुष्टि की जा सके कि कहानी सच है या किसी गढ़े हुए जासूसी उपन्यास से चुराकर सुनाई गई, मगर फिर भी तुम चूक गए सिकन्दर—अलग-अलग तीनों को अलग-अलग कहानी सुनाते फिर रहे हो तुम।"

"क्या मतलब?"

"'मुगल महल' के मैनेजर मिस्टर साठे से तुमने कहा कि तुम्हारी याददाश्त गुम है और तुम्हें पिछला कुछ भी याद नहीं है, जबकि हमें तुम अभी-अभी सब कुछ सुना चुके हो।"

बिल्कुल सफेद झूठ बोला युवक ने—"म...मैंने मैनेजर से याददाश्त गुम होने के बारे में कब कहा?"

"हमें उसी ने बताया है।"

"वह झूठ बोलता है।"

"झूठ तुम बोल रहे हो, हम उसे तुम्हारे सामने लाकर खड़ा कर देंगे।"

"मैं तब भी यही कहूंगा कि वह झूठ बोल रहा है। मैंने उससे 'सेम' यही कहा था, जो आपसे कहा है।"

आग उगलते हुए नेत्रों से उसे घूरता रह गया चटर्जी। गुर्राया—"मैं समझ गया हूं कि तुम पूरे ढीठ हो और उसका सामना होने पर भी उसे ही झूठा कहते रहोगे—फिलहाल उसके पास भी तुम्हें झूठा साबित करने के लिए ठोस सबूत नहीं होगा।"

"आप शायद हवा में तीर चला रहे हैं?"

"हवा में तीर तो तुम चला रहे हो बेटे। जब पुलिस तीर चलाएगी तो होश उड़ जाएंगे तुम्हारे, चटर्जी बिना सबूत के कोई बात नहीं करता है—यहां आने से पहले ही हम समझ चुके थे कि तुम खुद को सर्वेश साबित करने की भरपूर कोशिश करोगे और अब तक हम यही देख रहे थे कि अपने मकसद में कामयाब होने के लिए तुम क्या-क्या दांव फेंकते हो, क्या कहानी सुनाते हो?"

"जो मैं हूं यह साबित करने की भला मुझे जरूरत ही क्या है? मैंने एक शब्द भी खुद को सर्वेश साबित करने की मंशा से नहीं कहा है, केवल आपको वह घटना सुनाई, जो मेरे साथ घटी और जिसकी वजह से यह भ्रम पैदा हुआ कि सर्वेश मर चुका है।"

तभी, पानी से भरा स्टील का एक जग और पांच-छः गिलास लिए विशेष वहां

पहुंच गया—अभी उसने जग और गिलास सेंटर टेबल पर रखे ही थे कि युवक ने कहा —"मैंने तुमसे चाय लाने के लिए कहा था वीशू—पानी नहीं।"

'चाय लेकर मम्मी आ रही हैं पापा, उन्होंने कहा है कि तब तक पुलिस अंकल को पानी दो...।'

जहां विशेष के 'पापा' कहने पर तीनों इंस्पेक्टर उस बच्चे को घूरने लगे थे, वहीं विशेष का वाक्य सुनकर युवक के समूचे जिस्म में सनसनी दौड़ गई।

'चाय लेकर रश्मि आ रही है—उफ्फ—यह क्या बेवकूफी कर रही है यह।'

'उसका लिबास ही इन कम्बख्तों को सब कुछ समझा देने के लिए काफी होगा।"'

"उ....उन्हें चाय लाने की क्या जरूरत है—म...मैं खुद ही ले आता हूं।" अजीब बौखलाए-से स्वर में कहने के साथ ही युवक खड़ा हुआ।

"ठहरो मिस्टर, यहीं बैठो।" इंस्पेक्टर दीवान के वाक्य और सर्द लहजे ने उसके रहे-सहे हौंसले भी पस्त कर दिए—"चाय लेकर उन्हीं को आने दो, तुम्हारी तारीफ के चन्द शब्द कम-से-कम उन्हें तो सुनने ही चाहिए।"

वहीं जाम होकर रह गया युवक।

सारा शरीर सुन्न पड़ गया था, जैसे असंख्य चीटियां रेंग रही हों।

उसकी इस अवस्था पर चटर्जी बड़े ही धूर्त अन्दाज में मुस्कराया।

अपने सारे मन्सूबे युवक को धराशायी होते-से महसूस हो रहे थे।

इन काइयां इंस्पेक्टरों के सामने अपनी कहानी उसे बहुत कमजोर मालूम पड़ रही थी और फिर अब, चाय लेकर किसी भी क्षण वहीं खुद रश्मि जाने वाली थी।

उसके बाद बाकी कुछ नहीं रह जाता।

कई पल की खामोशी के बाद इंस्पेक्टर चटर्जी ने कहा—"उस जघन्य जुर्म में गिरफ्तार होने से बचने का एकमात्र तरीका यही था मिस्टर—न-न बीच में मत बोलो—हमें सिर्फ यह साबित करना है कि वह जघन्य हत्याकाण्ड तुमने किया है और यह साबित करने के लिए हमारे पास पर्याप्त प्रमाण हैं।"

अन्दर से पूरी तरह टूट चुकने के बावजूद भी युवक ने कहा—"क...कैसे प्रमाण?"

फिंगर-प्रिन्ट्स और राइटिंग से सम्बन्धित भेद खोलने के लिए चटर्जी ने अभी मुंह खोला ही था कि वहां पाजेब की आवाज गूंज उठी—'छम्म....छम्म...छम्म...।'

सभी के साथ युवक की दृष्टि भी दरवाजे की तरफ उठ गई।

दिल 'धक्क' से धड़का और फिर मानो धड़कनें रुक गईं।

युवक का दिलो-दिमाग गैस से भरे गुब्बारे की तरह आकाश में उड़ चला।

वहां रश्मि खड़ी थी, हाथ में ट्रे लिए—ट्रे में क्रॉकरी थी, चाय से भरी केतली।

रश्मि को देखकर युवक के रोंगटे खड़े हो गए। धमनियों में बहता लहू जैसे जम गया—टांगें किसी सौ साल के बूढ़े की तरह कांप उठीं—उफ्फ—सुहागिनों के पूरे मेकअप में थी वह विधवा। हरे रंग की सच्चे गोटे की कढ़ी भारी जाल वाली साड़ी—उसी के साथ का ब्लाउज—पैरों में बिछुए—कानों से स्वर्ण बुन्दे झूल रहे थे—नाक में नथ।

मस्तक पर दमदमा रहा था सिन्दूरी सूरज—मांग अपने अंतिम सिरे तक सिन्दूर से लबालब भरी थी—पूरे मेकअप में थी रश्मि—नयनों के किनारों पर आई ब्रो तक।

लिपस्टिक से दमदमाते होंठों पर मुस्कान बिखेरे उसने मेहमानों का स्वागत किया—उस वक्त युवक की आत्मा तक कांप रही थी, जब रश्मि ने आगे बढ़कर ट्रे मेज पर रख दी।

सन्नाटे के बीच चांदी की पाजेबों की खनखनाहट गूंजी।

युवक के साथ ही जैसे वहां मौजूद हर व्यक्ति को सांप सूंघ गया था। सबसे पहले बोलने का साहस चटर्जी ने ही जुटाया। उसने रश्मि से पूछा— "आप मिसेज सर्वेश हैं न?"

"जी हां।"

अपने रूल से युवक की तरफ़ इशारा करके चटर्जी ने पूछा—"क्या ये ही सर्वेश हैं?"

"जी हां।"

"ऐसा आप कैसे कह सकती हैं?"

रश्मि बोली—"जैसे आप यह कह सकते हैं कि आप इंस्पेक्टर चटर्जी हैं।"

चटर्जी के मन-मस्तिष्क को एक झटका-सा लगा—फिर भी उसने संभलकर कहा—"मेरा मतलब ये है कि मिस्टर सर्वेश तो आज से चार महीने पहले ही...।"

"वह किसी अन्य की लाश थी।"

दीवान कह उठा—"म.....मगर आप ही ने शिनाख्त की थी।"

"जरूर की थी, उस लाश के कपड़े और जेब से निकले सामान से जो लगा, मैंने वही कहा—मुझ अभागिन ने सुहागिन होते हुए भी वहां अपनी चूड़ियां तोड़ डालीं—आप भी

जानते हैं इंस्पेक्टर साहब कि उस लाश का चेहरा शिनाख्त के काबिल नहीं था—अगर आपको याद न हो तो उस लाश का फोटो देख सकते हैं।" कहने के साथ ही रश्मि ने सर्वेश की लाश का फोटो उनकी तरफ उछाल दिया।

चटर्जी के बाद फोटो को आंग्रे और दीवान ने भी देखा।

"अगर यह सर्वेश है तो क्या आपने पूछा कि तीन महीने यह कहां गुम रहा?"

रश्मि ने वही कहानी सुना दी जो कुछ देर पहले युवक सुना चुका था। चटर्जी बहुत धैर्यपूर्वक उसे सुनता और होंठों-ही-होंठों में मुस्कराता रहा। उसके चुप होने पर पूछा —"यह सब आपको इसी ने बताया है न?"

"जी हां।"

"और आपने यकीन कर लिया?"

रश्मि ने बहुत शान्त स्वर में कहा—"जी नहीं।"

"फ...फिर...?" चटर्जी चौंक पड़ा।

"ऐसी कहानी तो कोई बहुरूपिया भी सुना सकता था, इसीलिए मैंने अपने तरीके से जांच की कि ये वही हैं या नहीं, और हर जांच में ये खरे उतरे।"

"कैसी जांच?"

"मैंने इनसे ढेर सारे सवाल किए, जिनके जवाब केवल सर्वेश को ही मालूम हो सकते हैं, पति-पत्नी के बीच ऐसी सैंकड़ों गुप्त बातें होती हैं, जिन्हें उन दोनों के अलावा कोई नहीं जान सकता—मसलन बेडरूम की बातें और ऐसी हर जांच में ये खरे उतरे हैं—शायद पुरुष को उसकी पत्नी से ज्यादा कोई नहीं जानता और अब मैं दावे के साथ कह सकती हूं कि ये ही मेरे पति हैं, वे—जिन्हें मृत समझ लिया गया था...।"

एक लम्बी और ठंडी सांस भरी चटर्जी ने, बोला—"लगता है रश्मि बहन कि आप इस बहुरूपिए और जालसाज के द्वारा पूरी तरह ठग ली गई हैं।"

"आपको गलतफहमी है।"

"भ्रम का शिकार तो आप हो गई हैं, इस दरिन्दे की हकीकत सुनेंगी तो आपके पैरों तले से जमीन निकल जाएगी—सर्वेश बनकर यहां, एक और संगीन जुर्म कर चुका है यह, एक विधवा को सुहागिन बनाने का जुर्म—धोखे में डालकर गीता-सी पाक एक विधवा का सर्वस्व लूटने का जुर्म, इससे गिरा हुआ आदमी मैंने जिन्दगी में नहीं देखा।"

"म.....मैँ समझी नहीं?"

"जिस तरह पांचवीं कक्षा में पढ़ने वाला बच्चा यह जानता है कि सूरज हमेशा पूरब से ही निकलता है, उसी तरह हम यह जानते हैं कि यह एक ऐसा युवक है, जिसकी याद्दाश्त एक एक्सीडेण्ट के बाद लुप्त हो गई—युवा लड़कियों को निर्वस्त्र करके उनका गला घोंटकर हत्या कर देने का जुनून सवार होता है इस पर गाजियाबाद के एक बन्द मकान में यह रूबी नाम की युवती का कत्ल कर चुका है—कत्ल ही नहीं, बल्कि सबूत मिटाने के लिए रूपेश नाम के एक जीते-जागते युवक को रूबी की लाश के साथ जलाकर खाक कर देने की कोशिश की इसने—मिट्टी का तेल छिड़ककर उन दोनों जिस्मों में आग लगा दी और वहां से भाग आया—बाद में आपके पति से शक्ल मिलने के कारण इसने आपको ठगा—उसी जघन्य काण्ड की सजा से बचने के लिए अब यह सर्वेश होने का नाटक कर रहा है।"

"यह झूठ है—यह झूठ है।" रश्मि चीख पड़ी।

"यह सब सच है रश्मि बहन और सच को साबित करने के लिए हमारे पास सबूत हैं।"

"क.....कैसे सबूत?"

चटर्जी अपने तुरुप के इक्के को अभी खोलने ही वाला था कि—

"आह...आह... उई।" युवक के हलक से चीखें उबल पड़ीं और चटर्जी के साथ सभी ने चौंककर उस तरफ देखा।

"अ ....अरे।" न केवल रश्मि बल्कि चटर्जी के हलक से भी चीख निकल गई।

जाने कैसे चाय से भरी केतली फूट गई थी और उसमें भरी जलती हुई सारी चाय युवक के दाएं हाथ पर गिरी थी, इतना ही नहीं—चाय के हाथ पर गिरते ही चीखते हुए युवक ने यह हाथ पानी से भरे जग के अन्दर डाल दिया था।

साथ ही एक बार फिर हलक फाड़कर चिल्लाया था वह।

"क...क्या कर रहे हो?" चीखते हुए चटर्जी ने झपटकर उसकी कलाई पकड़ी और एक झटके से हाथ जग से बाहर निकाला—उफ्फ...हाथ बुरी तरह जल गया था—फफोले पड़ गए और चाय के गिरते ही हाथ पानी में डाल देने की वजह से कुछ फफोले फूट भी गए थे—सारे हाथ की खाल उतरकर झुलस गई थी—खाल के लोथड़े मलाई की तरह लटक गए थे और युवक मार्मिक ढंग से चीखे जा रहा था, उसकी कलाई पकड़े चीखते हुए युवक को चटर्जी हैरतअंगेज दृष्टि से देख रहा था—रश्मि एक अलमारी की तरफ लपकी—बरनॉल लाकर उसने युवक के जख्मी हाथ पर लगा दी।

देखते-ही-देखते उस हाथ पर एक पट्टी बंध गई।

और अब, चटर्जी समझ चुका था कि इस एक ही पल में युवक कितना खतरनाक खेल-खेल चुका है। जब पट्टी पूरी तरह बंध चुकी, तब चटर्जी ने अपने रूल के सिरे से युवक के सीने को ठोंकते हुए कहा—"आई लाइक इट यंगमैन, आई लाइक इट...अब दुनिया की कोई भी पद्धति न तुम्हारी उंगलियों के निशान ले सकती है और न ही राइटिंग के—चटर्जी मान गया कि तुम चालाक हो और चालाक जानवरों का शिकार करना चटर्जी का बहुत पुराना शौक रहा है—चालाकियों से भरा यह खेल जो तुमने शुरू किया है, वह मुझे कबूल है—तुम्हारी चुनौती स्वीकार है मुझे—बहुत दिन से चटर्जी किसी तुम जैसे मुजरिम से टकराने के लिए मचल रहा था।"

"ज.. जाने आप क्या कह रहे हैं?"

"तुम्हारी हर अदा मुझे पसन्द आई है, फिलहाल चलता हूं—चलो, इंस्पेक्टर दीवान।"

"म मगर यह हाथ इसने जानबूझकर...।"

"प.....प्लीज दीवान, चलो।" उसकी बात बीच में ही काटकर चटर्जी ने कहा।

दीवान, आंग्रे और सिपाही, चटर्जी की इस हरकत का मतलब नहीं समझ पा रहे थे, फिर भी उसके आदेश पर सभी चल पड़े। चटर्जी ने युवक पर अंतिम दृष्टि डाली। बड़े मोहक ढंग से मुस्कराया और बोला—"मगर सुनो दोस्त, यह कोई स्थायी हल नहीं हुआ—कुछ ही दिन में हाथ ठीक हो जाएगा, नई खाल आ जाएगी—तब तुमसे लिखवाया भी जा सकेगा और इन उंगलियों के निशान भी लिए जा सकेंगे।"

"आप आखिर बताते क्यों नहीं कि बात क्या है?"

"इस समस्या से छुटकारा पाने के लिए मैं तुम्हें स्थायी हल बता सकता हूं और वह यह है कि इस कम्बख्त हाथ को ही काटकर फेंक दो, न रहेगा बांस और न बजेगी बांसुरी...वैसे भी, फांसी पर झूल जाने से हाथ गंवाना हर हालत में बेहतर है।" कहने के बाद कुछ भी सुनने के लिए वह वहां रुका नहीं, बल्कि तेज और लम्बे कदमों के साथ दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

"र...रुकिए, इंस्पेक्टर साहब।" रश्मि ने आवाज दी।

दरवाजे के बीचो-बीच चटर्जी ठिठका।

"अ...आप सबूत पेश करने वाले थे?"

चटर्जी ने बिना मुड़े कहा—"मैं क्या पेश करने वाला था, यह उसी से पूछ लीजिएगा, जिसके लिए आप सुहागिन बनी हुई हैं, केवल एक ही सवाल कीजिएगा इससे—यह कि इसने अपना हाथ क्यों जला लिया है?"

युवक और रश्मि अवाक्-से खड़े रह गए, जबकि चटर्जी हवा के झोंके की तरह जा चुका था।

आंग्रे के स्वर में रोष था—"तुम उसे छोड़ क्यों आए?"

"और किया भी क्या जा सकता था?"

"हम उसे गिरफ्तार कर सकते थे, पुलिस के पास जो सबूत हैं उन्हें निष्फल करने और पुलिस को चकमा देने की कोशिश में अपना ही हाथ जला लेने का संगीन अभियोग भी लगता उस पर।"

"तुम्हारी भूल है।"

"क्या मतलब?"

"आज हम उसे गिरफ्तार कर लेते, उसे हत्याकांड का मुजरिम साबित करने के लिए राइटिंग और उंगलियों के निशानों के अलावा हमारे पास कोई तीसरा ठोस प्रमाण नहीं है और फिलहाल कम-से-कम पन्द्रह दिन के लिए उसने इन प्रमाणों को बेकार कर दिया है, नतीजा यह है कि वह जेल नहीं जा पाता, जमानत वहीं आसानी से हो जाती और—आज तक चटर्जी द्वारा अदालत में पेश किए गए एक भी मुजरिम की जमानत नहीं हुई है।"

"रात-भर तो उसे थाने में ही रहना था?" दीवान ने कहा—"टॉर्चर करने की मेरे पास इतनी डिग्रियां हैं कि किसी सबूत की जरूरत नहीं थी, वह खुद ही सब कुछ बक देता।"

अजीब ढंग से मुस्कराते हुए चटर्जी ने कहा—"पहली बात तो यह है दोस्त कि मेरे अध्ययन के मुताबिक वह तुम्हारे किसी भी डिग्री के टॉर्चर से टूटने वाला नहीं है, दूसरी और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस टॉर्चर वाले अमानवीय तरीके से मुझे नफरत है। बुरा न मानना—दरअसल मैं यह समझता हूं कि अगर कोई इन्वेस्टिगेटर मुजरिम को टॉर्चर करके उससे हकीकत उगलवा रहा है तो यह उसकी, उसके विवेक, सूझबूझ और दिमाग की असफलता है और टॉर्चर करना अपनी असफलता की 'खीज' उतारना है।"

"मेरे ख्याल से सिकन्दर जैसे चालाक और धूर्त मुजरिम की अक्ल को दुरुस्त करने के लिए टॉर्चर एक नायाब और जरूरी तरीका है।"

"हमारे विचारों में बुनियादी फर्क है।"

"अपने तरीके से तो हमने देख ही लिया कि उसने क्या हरकत की है, अब जरा तुम मुझे मेरे ढंग से काम करने की इजाजत दे दो—मैं उस हरामजादे को अभी गिरफ्तार करके ले आऊंगा और फिर तुम देखना कि टॉर्चररूम में वह किस तरह चीख-चीखकर अपना जुर्म कबूल करेगा।"

"बुद्धि की लड़ाई में हाथ-पैरों का इस्तेमाल अनुचित है।"

"क्या मतलब?"

चटर्जी बोला—"सच मानो आंग्रे, चटर्जी के लायक यह केस अब बना है—निश्चय ही मैं पहली बार इतने चालाक अपराधी ते टकरा रहा हूं और प्लीज, तुम इस टकराव में अड़चन मत बनो।" आंग्रे के साथ ही दीवान भी उसे हैरत-भरी नजरों से देखने लगा।

¶¶

"अब मैं समझी कि तुम इस घर से जाकर भी लौट क्यों आए थे।" नेत्रों से उस पर चिंगारियां बरसाती हुई रश्मि गुर्रा रही थी—"अब मेरी समझ में आया कि वीशू और मांजी को अपने मोहजाल में क्यों फंसाया था तुमने—क्यों तुम एक महीने तक इस चारदीवारी से बाहर नहीं निकले।"

"म.....मेरी बात तो सुनिए, रश्मि जी।"

"हत्यारे—पापी...अरे—तूने सचमुच ठगा है मुझे, मेरे वीशू और मांजी को—बहुत बड़ा जालसाज है तू—तूने मुझे बातों के ऐसे जाल में फंसाया कि मैं कुछ समझ ही न सकी...जब मैंने इस दाढ़ी-मूंछ के बारे में पूछा तो बोला कि यह रूप तूने 'उनके' हत्यारों तक पहुंचने के लिए भरा है—उफ्फ—यह हकीकत तो मुझे अब पता लगी है कि दरअसल उनके रूप में तू अपने ही पापों को छुपा रहा है।"

"य...यह गलत है, रश्मिजी।"

"वह इंस्पेक्टर ठीक ही कहता था—मेरी सारी पवित्रता भंग कर दी है तुमने—मेरा सर्वस्व लूट लिया है—विधवा होकर मैंने यह लिबास पहना, चूड़ियां और बिछुए पहने, बिन्दी लगाई और सिन्दूर में मांग भरी—उफ्फ—एक विधवा के लिए शृंगार करने से बड़ा पाप और क्या हो सकता है। और यह पाप मैंने सिर्फ तुम्हारी बातों में आकर किया—तुमने कहा था कि सर्वेश के जीवित होने की खबर से जैसी खलबली उसके हत्यारों में मचेगी, वैसी ही पुलिस में भी और पुलिस के सामने तुम्हें सर्वेश ही साबित करना जरूरी है, ताकि मुजरिमों को तुम्हारे सर्वेश होने का यकीन हो जाए, तुम्हीं ने पुलिस को वह कहानी सुनाने के लिए कहा था, जो मैंने सुनाई।"

युवक ने कहा—"तुम सर्वेश के हत्यारों के जाल में फंस रही हो रश्मि।"

"क्या मतलब?" वह गुर्राई।

"पुलिस को यहां भेजना हत्यारों की कोई साजिश थी।"

"कहानियां गढ़ने में माहिर हो तुम, शायद फिर कुछ गढ़ रहे हो।"

"तुम मेरी बात ध्यान से सुनती क्यों नहीं हो रश्मि?"

"क्या सुनूं—क्या तुम कह सकते हो कि तुमने रूबी की हत्या नहीं की?"

और युवक ने कह दिया—"मैंने कोई हत्या नहीं की।"

"क्या?" रश्मि की आंखें हैरत से फट पड़ीं—"सब कुछ इतना ज्यादा स्पष्ट होने के बावजूद भी क्या तुम ऐसा कहने की हिम्मत रखते हो—उफ्फ गजब के ढीठ हो—सफेद झूठ बोलते हो, सूरज की तरफ देखकर तुम कहते हो कि रात है और यह भी चाहते हो कि लोग तुम्हारे कथन पर यकीन कर लें।"

दिन को रात साबित करने पर आमादा हो गया युवक बोला—"प.....प्लीज रश्मि प्लीज, ठण्डे दिमाग से सिर्फ पांच मिनट चुप रहकर मेरी बात सुन लो।"

उसे घूरती हुई रश्मि ने कहा—"बोलो।"

"डॉली ने जो कुछ बताया है, उससे जाहिर है कि सर्वेश की हत्या के पीछे अपराधियों का कोई छोटा-मोटा संगठन नहीं, बल्कि कोई बहुत बड़ा गिरोह है, इसका मतलब यह है कि वे लोग फिजिकल ताकत के अलावा आर्थिक रूप से भी बहुत ज्यादा ताकतवर हैं और जरा सोचो, ऐसे दस-बीस इंस्पेक्टरों को खरीद लेना पैसे वालों के लिए क्या मुश्किल है?"

"तुम यह कहना चाहते हो कि वे सब गैंग द्वारा खरीदे हुए थे?"

"हां, मुझे जीवित देखते ही गैंग में खलबली मच गई, निश्चय ही सर्वेश को इस गैंग का कोई ऐसा राज मालूम रहा होगा, जिसके खुलने पर गैंग के बॉस डरते हैं और वह राज ही शायद सर्वेश की हत्या का कारण रहा होगा। मुझे देखते ही उन्होंने मुझे सर्वेश समझा, तुरन्त ही उन्हें यह डर था कि कहीं मैं उनका यह राज न खोल हूं और तब ही वे एक्टिव हो गए, इन पुलिस वालों को खरीदकर उन्होंने मुझे हत्या के अभियोग में गिरफ्तार कर लेने का षडयंत्र फैला दिया।"

"तुम्हारा मतलब यह है, रूबी के मरने—रूपेश के जलने जादि का काण्ड कहीं हुआ ही नहीं है—एक काल्पनिक कहानी गढ़कर वे तुम्हें जेल में डाल देना चाहते हैं।"

"ऐसा मैं नहीं कह रहा हूं। सम्भव है कि उनका बताया हुआ काण्ड कहीं हुआ हो, मगर मुझसे उनका कोई सम्बन्ध नहीं है—, उस काण्ड के मुजरिम के रूप में मुझे फंसा देने की कीमत ही इन इंस्पेक्टरों ने गैंग से ली होगी।"

"तुम भूल रहे हो कि वे तुम्हें फंसा नहीं रहे थे, बल्कि साबित कर रहे थे, शायद घटनास्थल से बरामद उनके पास तुम्हारे फिगर-प्रिन्ट्स और राइटिंग हैं, अगर ऐसा नहीं है तो जवाब दो—अपने हाथ की यह दशा क्यों बना ली तुमने?"

“क.....क्योंकि मैं उनकी साजिश समझ गया था।"

"कैसी साजिश?"

"तुमने भी गौर किया होगा कि बातों के बीच उनके मुंह से 'मुगल महल' के मैनेजर मिस्टर साठे का नाम निकल गया था, निश्चय ही सर्वेश की हत्या का 'मुगल महल' होटल से कोई सम्बन्ध है, क्योंकि रंगा-बिल्ला वहीं अक्सर आते रहते हैं और वहां से वे सर्वेश को अपने साथ ले गए थे, बल्कि मुझे तो लगता है कि मैनेजर का ही उस गैंग से कोई सम्बन्ध है।"

“क्या मतलब?”

"ऑफिस में आज उसने मुझसे एक कागज पर साइन कराए थे, जाहिर है कि पैन और उसकी मेज पर मेरे फिंगर-प्रिन्ट्स भी रह गए होंगे—उसने राइटिंग और निशान पुलिस को दिए—साथ ही नोट देकर यह भी कहा होगा कि इसे संगीन जुर्म में फंसा दो—पुलिस इतनी जल्दी सीधी यहां पहुंच गई। इससे भी जाहिर है कि उसे मैनेजर ने ही यहां भेजा था—वक्त रहते मेरे जेहन में यह बात आ गई कि मैनेजर की मेज से लिए मेरे फिंगर-प्रिन्ट्स को पुलिस बड़े आराम से किसी ऐसे स्थान से लिए दिखाकर अदालत में पेश कर देगी, जहां जघन्य काण्ड हुआ होगा—यह विचार दिमाग में जाते ही मैंने अपना हाथ जला लिया।"

इस बार चुप रह गई रश्मि—युवक को देखती ही रह गई थी वह।

युवक समझ गया कि लोहा गर्म हो चुका है, अत: उसने भरपूर चोट की—“अगर उनमें पुलिस को खरीद लेने की क्षमता न होती तो जरा सोचो रश्मि, डॉली के अनुसार सर्वेश को जहर देकर मारा गया था, क्या पोस्टमार्टम की रिपोर्ट से यह बात छुपी रह सकी होगी?"

“उनका पोस्टमार्टम ही नहीं हुआ था।"

युवक के होंठों पर धिक्कारात्मक मुस्कान उभर आई—बोला—“होता भी क्यों, पुलिस को तो उस गैंग ने पहले ही खरीद लिया होगा।"

ये शब्द रश्मि के जेहन पर असर कर रहे थे, यह खामोश खड़ी सुन रही थी।

युवक ने एक और चोट की—“वह सारा मामला इंस्पेक्टर दीवान के हाथ में था और वही इंस्पेक्टर दीवान आज भी यहां आया था।"

इसमें शक नहीं कि युवक के शब्दों ने रश्मि के मस्तिष्क को प्रभावित किया। वह यह सोचने पर विवश हो गई थी कि कहीं सचमुच यह सब उसी गैंग की साजिश तो नहीं थी?

एक के बाद एक अपने तरकश के सभी तीर चलाते हुए युवक ने रश्मि को लाजवाब कर दिया था। कहना चाहिए कि सूरज की तरफ देखते हुए अच्छे-खासे दिन को रात करके दिखाया था उसने।

और अब उसने रश्मि को ठोक-बजाकर देखा—"क्या तुम्हें अब भी मेरी बातों पर यकीन नहीं हुआ है रश्मि?"

"म...मैं दुविधा में फंस गई हूं।"

"कैसी दुविधा?"

"क्या तुम सच कह रहे हो—क्या रूबी या रूपेश नाम के व्यक्तियों से सम्बन्धित किसी हत्याकाण्ड से तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं है?"

"बिल्कुल नहीं।" इस बार युवक ने पूरी दृढ़ता के साथ कहा।

खामोशी के साथ रश्मि उसे घूरती रही। बोली—"फिलहाल मैं तुम्हारे इस कथन पर यकीन कर लेती हूं, मगर इस चेतावनी के साथ कि अगर कल हकीकत के रूप में मुझे वही पता लगा, जो पुलिस कह रही थी तो मैं तुम्हारा मुंह नोंच लूंगी।"

"जरूर—मगर...।"

"मगर?"

"एक रिक्वेस्ट मैं भी करना चाहूंगा।"

"क्या?"

"इस बात को अच्छी तरह समझ लीजिए कि मेरे और सर्वेश के हत्यारे के बीच उनके इस हमले के साथ ही खुली जंग का ऐलान हो चुका है—मैं अपनी चालें चलूंगा—वे अपनी, और वे कोई भी चाल चल सकते हैं—मेरे और आपके बीच मतभेद पैदा करने वाली चालें भी—आपकी दृष्टि में मेरा करेक्टर गिराने की चाल भी—मैं रिक्वेस्ट करूंगा कि आप खुद को उनकी ऐसी किसी भी चाल से बचाकर रखें।"

"कोशिश करूंगी, मगर एक बात अभी भी कहूंगी, मिस्टर।" रश्मि ने कहा—"मुझे तुम्हारी बातों पर पूरा यकीन नहीं हुआ है—मैं सोचती हूं कि या तो तुम वाकई निर्दोष हो या इतने बड़े जालसाज और ठग हो जो अपनी गढ़ी हुई तर्कपूर्ण कहानियों से दिन को रात साबित कर सकता है—और अगर तुम वह हो तो निश्चय ही हत्यारे हो और कान खोलकर सुन लो कि—रश्मि अपने पति के हत्यारों से बदला लेने के लिए किसी मासूम के हत्यारे से हरगिज समझौता नहीं कर सकती।"

¶¶

सैंकड़ों ट्यूबलाइटों से जगमगाता हुआ वह एक बहुत बड़ा हॉल था—सिच्युएशन से ही जाहिर था कि वह हॉल किसी बहुत बड़ी इमारत के नीचे छुपा तहखाना है। वहीं दिन जैसा प्रकाश फैला था। दीवारों के सहारे वर्दीधारी सैनिक खड़े थे।

उन सभी के पैरों में कपड़े के जूते थे। हरी वर्दी पर लम्बी कपड़े की चौड़ी बैल्ट और सिर पर लाल रंग की ही कैप लगाए, हाथों में
गन लिए वे इस कदर मुस्तैद खड़े थे कि जैसे किसी भी पल किसी को भी शूट कर देने के लिए तैयार हों।

उनकी गनें उन लोगों की तरफ तनी हुई थीं, जो पंक्तिबद्ध हॉल के बीचो-बीच खड़े थे। उनमें एक चेहरा ऐसा था, जिससे पाठक पूर्ण परिचित हैं।

यह चेहरा था—रूपेश का।

जला हुआ, वीभत्स, भयानक और डरावना चेहरा।

अपने साथ पंक्ति में खड़े अन्य लोगों की तरह ही वह भी बिल्कुल खामोश खड़ा हॉल के एक तरफ बने मंच की तरफ़ देख रहा था।

उस मंच की तरफ, जिसके अग्रिम सिरे पर पंक्तिबद्ध कम-से-कम दस सर्चलाइटें लगी हुई थीं और प्रत्येक सर्चलाइट का प्रकाश इधर ही की तरफ था, अतः मंच अंधेरे में डूबा-सा नजर आता था।

एकाएक ही मंच की छत पर लगा एक लाल रंग का बल्ब जलने-बुझने लगा और उसके साथ ही सारे हॉल में पिंग—पिंग की आवाज गूंजने लगी।

हॉल में मौजूद सभी लोग पहले से कहीं ज्यादा मुस्तैद नजर आने लगे।

फिर मंच पर एक साया नजर आया—सिर्फ साया।

चेहरा स्पष्ट नहीं चमक रहा था उसका। हां—लिबास चांदी जैसे रंग का चमकदार होने की वजह से जरूर चमक रहा था—चुस्त लिबास था वह।

बल्ब ने जलना-बुझना बन्द कर दिया—पिंग-पिंग की आवाज भी बन्द हो गई।

एकाएक मंच से सर्द आवाज उभरी—"रंगा-बिल्ला!"

पंक्ति से एक साथ दो क्रूर-से नजर जाने वाले युवक दो कदम आगे बढ़कर रुकते हुए सम्मानित स्वर में बोले—"य....यस बॉस।"

"क्या तुम्हें मालूम है कि अनाज तुम्हें यहां क्यों बुलाया गया है?"

"हमें पता लगा है बांस कि सर्वेश को जीवित देखा गया है।" उनमें से एक ने कहा।

"क्यों?"

"इ...इस बारे में सुनकर हम खुद चकित हैं, बॉस!"

"ऐसा पहली बार देखा गया है कि जिसकी लाश रंगा-बिल्ला ने ठिकाने लगाई हो—वह जीवित देखा जाए—क्या आज से चार महीने पहले ठिकाने लगाई गई वह लाश सर्वेश की नहीं थी?"

"यकीनन यह सर्वेश की लाश थी बॉस—और फिर इस मामले में केवल हम ही नहीं, 'शाही कोबरा' भी इन्वॉल्व थे, उन्होंने जिसे जहर देकर मारा, यह नहीं माना जा सकता कि वह सर्वेश नहीं था, क्योंकि ऐसा सोचा भी नहीं जा सकता कि 'शाही कोबरा' की आंखें धोखा खा सकती हैं—हमने रेल की पटरी पर यकीनन उसी लाश को रखा था, जो हमें 'शाही कोबरा' ने सौंपी—हमें हुक्म दिया गया था कि लाश को पटरी पर इस तरह रखें कि ट्रेन के गुजरने के बाद उसका चेहरा न पहचाना जा सके—हमने अक्षरश: उनके हुक्म का पालन किया था।"

"इस मामले से 'शाही कोबरा' भी बहुत चकित और चिन्तित हैं—वे उसे दो दिन से ज्यादा जीवित देखना नहीं चाहते।"

"वह दूसरे दिन भी जीवित नहीं मिलेगा।"

"गुड।" मंच की तरफ से आवाज उभरी—"तुम जा सकते हो।"

विशेष ढंग से अभिवादन करने के बाद वे दोनों कदम-से-कदम मिलाते हॉल से बाहर चले गए और तब बॉस ने पुकारा—रूपेश!"

"यस बॉस।" रूपेश पंक्ति से दो कदम आगे निकल आया।

"तुम्हारी जमानत सेठ न्यादर अली ने ली थी न?"

"यस बॉस।"

"कमाल की बात है—भला उसने तुम्हारी जमानत क्यों ली थी?"

"कचहरी में अपने वकील और इंस्पेक्टर आंग्रे के सामने तो उसने खुद को एक महान और आदर्श व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया—उसने मेरी जमानत क्यों ली थी, इसका रहस्य तो मुझे तब पता लगा, जब वह मुझे अपने बंगले पर ले गया।"

"वहां क्या किया उसने?"

"उस सारे सिलसिले से सम्बन्धित वह मुझसे कोई ऐसी बात जानना चाहता था, जो मैंने पुलिस को न बताई हो।"

“ओह, इसका मतलब यह कि न्यादर अली एक नम्बर का धूर्त है—फिर, तुमने उसे कुछ बताया तो नहीं?"

"सवाल ही नहीं उठता, बॉस—मीठी-मीठी बातें बनाकर वह मुझे अपने बंगले ही में कैद रखना चाहता था, मगर मौका मिलते ही मैं वहां से भाग आया।"

"गुड।"

"मैं बहुत शर्मिन्दा हूं, बॉस, 'शाही कोबरा' से मेरी तरफ से माफी मांग लीजिएगा—मैं पूरी तरह से उनके हुक्म पर अमल नहीं कर सका।"

"'शाही कोबरा' को सब मालूम है—वे जानते हैं कि इस स्कीम को कामयाब बनाने के लिए तुमने अपनी पत्नि खो दी, अपनी खूबसूरत शक्ल खो दी, मगर फिर भी पुलिस को यह नहीं बताया कि यह सब कुछ तुम 'शाही कोबरा' के लिए कर रहे थे—सारा जुर्म तुमने अपने ही ऊपर ले लिया है—तुम्हारी इस कुर्बानी का इनाम 'शाही कोबरा' जरूर देंगे।"

"थ.....थैंक्यू, बॉस।”

"अब तुम क्या चाहते हो?"

एकाएक ही रूपेश का डरावना चेहरा विकृत हो गया। बड़ी ही हिंसक गुर्राहट निकली उसके मुंह से—"म.....मैँ याददाश्त भूले उस हरामजादे युवक से अपनी माला के खून और मुझे इस हालत तक पहुंचाने का बदला लेना चाहता हूं।"

मंच से बॉस ने कहा—“मिलेगा रूपेश, तुम्हें पूरा मौका दिया जाएगा।"

¶¶

'मुगल महल' के काउण्टर पर पहुंचकर इंस्पेक्टर दीवान ने कहा—"मेरा नाम दीवान है और ये हैं इंस्पेक्टर चटर्जी—मैनेजर से कहो कि हम उनसे मिलना चाहते हैं।"

"क्षमा कीजिए।" डॉली ने कहा—“यह तो आपको बताना ही होगा कि किस सम्बन्ध मेँ?"

दीवान ने सवालिया नजरों से चटर्जी की तरफ देखा। दीवान इस समय यूनीफॉर्म में था, जबकि चटर्जी सलेटी रंग का सूट पहने था। उसने डॉली से कहा—“क्या यहां कल सर्वेश आया था?"

"ज...जी हां।” कहते समय डॉली चौंक पड़ी और उसका यह चौंकना चटर्जी की पैनी निगाहों से छुप नहीं सका। सामान्य स्वर में ही उसने कहा— "उनसे कहो कि हम सर्वेश के सम्बन्ध में मिलना चाहते हैं।"

"म.....मैं समझी नहीं....सर्वेश के सम्बन्ध में उनसे क्या बातें करना चाहते हैं आप?"

चटर्जी की दृष्टि कुछ और पैनी हो गई, बोला—"हम यह जांच कर रहे हैं कि जो सर्वेश कल यहां आया था, वह सर्वेश ही था या उसकी शक्ल में कोई बहुरूपिया है?"

डॉली के होश उड़ गए—"क.....क्या वह कोई बहुरूपिया भी हो सकता है?"

बहुत ही रहस्यमयी मुस्कान के साथ चटर्जी ने कहा—"क्यों नहीं हो सकता, आखिर चार महीने पहले सर्वेश ने आत्महत्या कर ली थी।"

"व.....वह तो ठीक है, मगर...।"

"हमें तुमसे बातें नहीं करनी हैं।" एकाएक ही उसकी बात बीच में काटकर दीवान गुर्रा उठा—"हमारे आने की सूचना मैनेजर को दो।"

सकपकाकर डॉली ने रिसीवर उठा लिया, मैनेजर को सूचना दी—थोड़ी देर बाद रिसीवर रखते समय वह शुष्क कण्ठ से सिर्फ इतना ही कह सकी—"आप जा सकते हैं।"

"थैंक्यू बेबी—मगर मुझे दुख है कि तुम बहुत ज्यादा स्मार्ट नहीं हो।" बड़े ही अजीब अन्दाज में कहने के बाद चटर्जी दीवान के साथ मैनेजर के कमरे की तरफ बढ़ गया।

डॉली हक्की-बक्की-सी खड़ी रह गई थी।

वह चटर्जी द्वारा कहे गए अन्तिम वाक्य का अर्थ बिलकुल नहीं समझी—हां, यह प्रश्न बड़ी तेजी से उसके जेहन में कौंधा था कि सर्वेश सचमुच सर्वेश ही है या कोई बहुरूपिया?

यह राज उसे भी पता लगना चाहिए, अत: वह मैनेजर के कमरे के बन्द दरवाजे की तरफ लपकी और अगले ही पल वह अन्दर होने वाली बातें सुन रही थी।

¶¶

"भला आपको यहां से कैसे मालूम हो सकता है कि यह सर्वेश ही है या कोई और?" साठे ने चकित भाव से पूछा।

चटर्जी ने अपनी चिर-परिचित मुस्कान के साथ कहा—"आपके पास चार महीने पहले का वह रजिस्टर तो होगा ही, जिसमें सर्वेश अपनी ड्यूटी पर आने-जाने का समय लिखकर अपने साइन करता हो?"

"हां, बिल्कुल है।"

"सर्वेश कैशियर था, उसके द्वारा तैयार किए गए खाते भी होंगे?"

"जी, बिल्कुल हैं—मगर उनसे होगा क्या?"

"मुझे केवल यहां काम करने वाले सर्वेश की राइटिंग चाहिए, जो व्यक्ति कल यहां आया था, उसकी राइटिंग मेरे पास है—दोनों को मिलाने से गुत्थी सुलझ जाएगी।"

"ओह, वेरी नाइस।" साठे कह उठा, चटर्जी के लिए उसके चेहरे पर प्रशंसा के भाव उभर आए थे, बोला—"लेबर का हाजिरी रजिस्टर तो मेरे पास रहता ही है, संयोग से चार महीने पहले के कैश रजिस्टर भी मेरे पास हैं।"

"उन्हें निकालिए।"

साठे ने मेज पर पड़े चाबी के गुच्छे में से एक चाबी से दराज खोली और कुछ ही देर बाद चटर्जी उसके द्वारा दिए गए रजिस्टर से गवाह के स्थान पर ली गई सिकन्दर की राइटिंग मिला रहा था और मिलाते-ही-मिलाते वह बड़े गहरे अन्दाज में मुस्करा उठा।

उत्सुक साठे ने पूछा—"क्या रहा?"

"यह सर्वेश नहीं, कोई बहुरूपिया है।"

"ब....बहुरूपिया, मगर वह यहां क्यों आया था—क्या चाहता है?"

"यह सब तो उसकी गिरफ्तारी के बाद ही पता लगेगा, मगर हाजिरी रजिस्टर में सर्वेश के अन्तिम दिन यहां से जाते समय का कॉलम भरा हुआ क्यों नहीं है?"

"शायद उसने तबीयत खराब होने की वजह से नहीं भरा था।"

"हो सकता है।" चटर्जी ने कहा—"अब हमारा लक्ष्य यह पता लगाना है कि खुद को सर्वेश साबित करने के पीछे उसका उद्देश्य क्या है—और उसमें आप हमारी मदद कर सकते हैं, मिस्टर साठे।"

"मैं आपके हर हुक्म का पालन करने के लिए तैयार हूं।"

"वह जब भी यहां आए, यही जाहिर करें कि आप उसे सर्वेश मानते हैं—अपनी सीट पर अगर काम करना चाहे तो वह भी उसे दे दें—पुलिस की नजर बराबर उस पर रहेगी—कोई भी प्वाइंट हाथ में आते ही हम उसे पकड़ लेंगे।"

"किसी प्वाइंट की जरूरत ही कहां रह गई है, आपने अभी कहा कि राइटिंग से क्लीयर हो चुका है, उसे गिरफ्तार कर लीजिए।"

"केवल हमारे दिमागों में क्लीयर हुआ है, अदालत में साबित नहीं किया जा सकता।"

“क्यों?”

"हम आपको बता चुके हैं कि उसने अपना हाथ जला लिया है, अत: उसकी वर्तमान राइटिंग नहीं ली जा सकती। आपके रजिस्टरों की राइटिंग को वह अपनी ही कहेगा और इस राइटिंग को जो हमारे पास है, कहेगा कि यह उसकी नहीं है, जाने किसकी राइटिंग से रजिस्टर्स में मौजूद राइटिंग को मिलाकर मुझे बहुरूपिया साबित किया जा रहा है?”

"ओह नो!"

"अपने चार महीने गुम रहने की वजह उसने आपको क्या बताई थी?"

"याददाश्त गुम होना।"

"वह कहता है कि उसने आपसे ऐसा कुछ नहीं कहा।"

“क...क्या मतलब?" साठे उछल पड़ा—"व...वह बकता है, एकदम झूठ बोल रहा है वह, उसने मुझसे कहा था कि...।"

"हम जानते हैं, मगर फिलहाल उसके झूठ को साबित नहीं कर सकते।"

“क...कमाल कर रहे हैं आप—मुझसे सामना कराइए उसका।"

चटर्जी ने उसी मुस्कान के साथ कहा—"सामना होने पर आप कहते रहेंगे कि वह झूठा है, वह कहता रहेगा कि आप—आपके पास साबित करने के लिए कोई सबूत नहीं होगा, सो—बात वहीं लटकी रहेगी।"

"हद हो गई, इतना ढीठ है वह?"

"शायद इससे भी ज्यादा, खैर—फिलहाल आपके लिए उसे सर्वेश ही समझ लेना कारगर होगा, मगर अपनी काउण्टर गर्ल से जरा सावधान रहें।"

"क...क्या मतलब?"

"वह मुझे रहस्यमय लगती है, सम्भव है कि इस बहुरूपिए से मिली हुई हो—उसकी तरफ से सतर्क रहने की सख्त आवश्यकता है।" कहने के साथ ही चटर्जी उठ खड़ा हुआ और दीवान के साथ ऑफिस से बाहर निकल गया।

सबसे ज्यादा आश्चर्यजनक बात यह थी कि इस वक्त साठे के ऑफिस की किसी भी दीवार पर सेठ न्यादर अली का फोटो नहीं लगा हुआ था।

¶¶

डॉली का दिल तभी से 'धक-धक' कर रहा था, जब से उसने मैनेजर के कमरे में होने

वाली बातें सुनी थीं। जहां से उसे यह पता लगा था कि जिससे वह अपना दिल खोल बैठी है, जिसे अपना राज बता दिया है, वह सर्वेश नहीं कोई बहुरूपिया है, वहीं अपने बारे में इंस्पेक्टर चटर्जी के विचार सुनकर उसके होश उड़ गए थे।

यह महसूस करके ही उसकी हालत पतली हुई जा रही थी कि पुलिस की नजर मुझ पर है और वे मुझे उस बहुरूपिए का साथी समझ रहे हैं—उफ्फ—मैं उससे मिली ही क्यों—सर्वेश समझकर मैंने उसे राज क्यों बता दिया—पता नहीं वह कम्बख्त कौन है, किस चक्कर में है—उसके साथ व्यर्थ ही मैं भी फंस जाऊंगी।

अचानक उसके दिमाग में एक तरकीब आई।

उसने जल्दी से एक पैड और बाल-पैन उठाया—लिखा—

मैँ जान चुकी हूं कि तुम सर्वेश नहीं हो।

सुनो, दीवान और चटर्जी नाम के दो इंस्पेक्टर यहां आए—साठे जी से मिले, उनके पास तुम्हारी राइटिंग थी, जिसे चार महीने पहले सर्वेश द्वारा तैयार किए गए रजिस्टरों से मिलाकर वे जान गए हैं कि तुम सर्वेश नहीं हो—कमरे में साठे जी से होने वाली सारी बातें मैंने भी छुपकर सुन ली हैं।

मैं नहीं जानती कि तुम किस चक्कर में हो, मगर इतना जान गई हूं कि तुम जिस चक्कर में हो, सफल नहीं हो सकोगे—साठे जी और पुलिस तुम्हारी हकीकत जान गए हैं। उनकी योजना यह बनी है कि तुम पर तुम्हें सर्वेश ही होना जाहिर करके यहां सर्वेश का काम दे दिया जाए—पुलिस की नजर हर पल तुम पर रहेगी और केवल तुम्हें फंसाने के उद्देश्य से ही यह साजिश की जा रही है, अत: तुम अपने किसी मकसद में हरगिज कामयाब नहीं हो सकोगे—खैरियत चाहते हो तो सर्वेश का यह चोला उतार फेंको, जितनी जल्दी हो सके देहली से बाहर भाग जाओ, अगर तुमने ऐसा न किया तो निश्चय ही पुलिस के हत्थे चढ़ जाओगे।

पत्र लिखने के बाद उसने एक बार पढ़ा।

उसे यकीन हो गया कि इस पत्र को पढ़ने के बाद बहुरूपिया एक पल के लिए भी देहली में नहीं ठहरेगा और सर्वेश बना रहकर अपने किसी उद्देश्य में सफल होने का भूत तो उसके दिमाग से उतर ही जाएगा।

यही डॉली चाहती थी।

जब वही न रहेगा तो मामला आगे बढ़ेगा ही नहीं और जब झमेला ही खत्म हो जाएगा तो वह हर झमेले से बाहर हो जाएगी—यही सब सोचकर उसने अपने अत्यन्त विश्वसनीय वेटर को बुलाया और पत्र को एक लिफाफे में बन्द करती हुई बोली—"इस लिफाफे को तुम इसी समय सर्वेश के घर पहुचा दो।"

'"ओ०के० मैडम।" कहकर वेटर ने लिफाफा ले लिया।

चारों तरफ़ देखती हुई डॉली ने कहा—"अब तुम जाओ।"

जाने के लिए अभी वेटर मुड़ा ही था कि मुख्य द्वार खुला, रंगा-बिल्ला होटल के अन्दर प्रविष्ट हुए—उन पर दृष्टि पड़ते ही डॉली का दिल एक बार बहुत जोर से धड़का।

'धक्'

और फिर धड़कनें मानो रुक गईं।

सिट्टी-पिट्टी गुम ही गई डॉली की—मूर्खों की तरह उधर ही देखती रह गई वह, पलकें तक जैसे रंगा-बिल्ला को देखने के बाद झपकना भूल गई थीं।

वे दोनों आदमी नहीं, जिन्न नजर जाते थे—सचमुच के जिन्न।

पांच फुट दस इंच।

वे इस वक्त भी अपना परम्परागत लिबास यानि काले कपड़े पहने हुए थे, पैरों में चमकदार काले जूते जो दर्पण का भी काम कर सकें—यह महसूस करके डॉली के होश उड़ गए कि वे काउण्टर की तरफ ही चले आ रहे हैं।

चलते समय उनके कदम बिल्कुल साथ उठते थे—परेड करते जवानों की तरह।

उनकी जलती हुई आंखों को डॉली ने अपने चेहरे पर स्थिर महसूस किया—डॉली का चेहरा स्वयं ही पीला-जर्द पड़ गया। जाने क्यों किसी अनहोनी की आशंका से डॉली का दिल सूखे पत्ते-सा कांपने लगा था, स्वयं वेटर भी उन्हें देखकर ठिठक गया था।

डॉली दांत भींचकर गुर्राई—"त.....तुम जाओ बेवकूफ, यहां क्यों खड़े हो?"

वेटर जैसे किसी मोहजाल से बाहर निकला।

लिफाफे को जेब में रखते हुए अभी उसने पहला कदम आगे बढ़ाया ही था कि नजदीक पहुंचकर रंगा ने उसके कन्धे पर हाथ रख कर पूछा—"कहां जा रहे हो?"

"ज....जी....?" वेटर के प्राण खुश्क ही गए।

डॉली को काटो तो खून नहीं।

बिल्ला ने वेटर से लिफाफा लेते हुए कहा—"ये क्या है?"

डॉली का सिर चकरा गया, चेहरा पीला-जर्द—ऐसी इच्छा हुई कि वह झपटकर बिल्ला के हाथ से लिफाफा छीन ले, मगर ऐसा करने की हिम्मत उसमें दूर-दूर तक नहीं

थी, फिर भी लड़खड़ाते-से स्वर में उसने कहा—"अ..आओ रंगा-बिल्ला, मैं तुम्हारी क्या सेवा कर सकती हूं?"

"पहले यह देखते हैं कि ये वेटर तेरी क्या सेवा कर रहा था?" कहने के साथ ही बिल्ला ने एक झटके से लिफाफा खोल लिया।

"न...नहीं...।" डॉली चीख पड़ी—"उ.....उसमें तुम्हारे मतलब की कोई चीज नहीं है....प...प्लीज़—उसे मत खोलो बिल्ला।"

रंगा बोला—"डॉली कुछ ज्यादा ही चीख रही है बिल्ला, इसमें शायद हमारे ही मतलब की कोई चीज है।"

बिना कुछ कहे बिल्ला ने पत्र निकाल लिया।

डॉली की आंखों के सामने अपना लिखा एक-एक शब्द चकरा उठा, दिमाग घूम गया उसका। आंखों के सामने अंधेरा छाने लगा, डॉली को लगा कि वह अभी चकराकर गिर पड़ेगी।

"प...प्लीज, उसे मत पढ़ो बिल्ला।" मौत का खौफ डॉली पर कुछ इस तरह हावी हुआ कि वह गिड़गिड़ाती हुई रो पड़ी।

पत्र पढ़ते-पढ़ते रंगा-बिल्ला के चेहरे क्रूरतम हो उठे, आंखों में उभर आई हिंसक चमक।

¶¶

मुर्गी के अण्डे जितना बड़ा वह एक अण्डाकार गोला था, देखने मात्र से वह कोई छोटा बम-सा नजर आता था। मुश्किल से एक मिनट पहले उसके अन्दर से 'पिंग-पिंग' की उतनी ही धीमी आवाज निकली थी, जितनी "टेबल वॉच' से प्रत्येक सेकंड निकलती है। इस आवाज़ के साथ ही अण्डाकार बम के उस स्थान पर दो बार हरे रंग का एक नन्हां-सा बल्ब जलकर बुझ गया था—जहां छोटा-सा परदर्शी शीशा लगा हुआ था।

वह अण्डाकार बम जैसी वस्तु युवक और विशेष के बीच सेन्टर टेबल पर रखी थी। विशेष अपनी बड़ी-बड़ी और मासूम आंखों में दिलचस्पी लिए उसे ध्यान से देख रहा था।

जबकि युवक के होंठों पर बहुत ही रहस्यमय मुस्कान थी।

कमरे में खामोशी छाई रही और पांच मिनट गुजरते ही 'पिंग-पिंग' की आवाज़ के साथ हरा बल्ब पुनः लपलपाया।

"बस।" युवक ने विशेष को बताया—"फिर पांच मिनट बाद हर बल्ब इसी आवाज

के साथ खुद-ब-खुद लपलपाएगा।"

"क्या शानदार खिलौना है, पापा।"

"इसे हम बाजार से नहीं लाए हैं वीशू, खुद बनाया है।"

"आपने?"

"हां।"

विशेष ने खुश होते हुए पूछा—"यह खिलौना आपने मेरे लिए बनाया है न पापा?"

"सॉरी बेटे, नहीं।"

"फिर?"

"तुम तो अभी बहुत छोटे हो वीशू, यह खिलौना हमने बड़े और गन्दे बच्चों के लिए बनाया है। वे इस बल्ब के जलने-बुझने से पूरी तरह डर सकते हैं।"

"इसमें भला डरने की क्या बात है, पापा?"

कुछ बताने के लिए युवक ने अभी मुंह खोला ही था कि किसी ने मकान के मुख्य द्वार पर दस्तक दी, दोनों ही का ध्यान भंग हो गया, युवक ने अण्डाकार बम-सी नजर आने वाली वस्तु जेब में रखते हुए कहा—"जरा देखना वीशू—कौन है?"

विशेष कमरे से निकलकर मुख्य द्वार की तरफ दौड़ गया।

युवक ने आगे बढ़कर एक मेज की दराज खोली, दराज से उसने एक इलेक्ट्रिक स्विच निकालकर कोट की ऊपरी जेब में डाल लिया।

अभी वह मुड़ा ही था कि कमरे में दाखिल होते हुए विशेष ने सूचना दी—"आपके होटल से एक वेटर आया है पापा, कहता है कि उसे डॉली मेमसाब ने भेजा है।"

सुनते ही रोमांच की एक तेज लहर उसके समूचे जिस्म में दौड़ गई। उसे लगा कि अब कुछ ही देर बाद दुश्मनों से वास्तविक जंग शुरू होने वाली है—उसने डॉली से रंगा-बिल्ला की सूचना भेजने के लिए कहा था और यह वेटर शायद यही सूचना लेकर आया है। यह सोचते ही वह तेजी के साथ कमरे से बाहर की तरफ लपका।

आंगन पार करते वक्त कदाचित कदम ठीक न पड़ने की वजह से वह कई बार लड़खड़ा गया, किन्तु गिरा नहीं। दरवाजे पर पहुंचकर उसने वहां खड़े वेटर से पूछा —"कहो, डॉली ने क्या संदेश भिजवाया है?"

वेटर ने चुपचाप एक कागज उसकी तरफ बढ़ा दिया।

युवक ने व्यग्रतापूर्वक खोलकर उसे पढ़ा, लिखा था—"मैंने पता लगा लिया है सर्वेश कि इस वक्त रंगा-बिल्ला कहां हैं—तुम इस वेटर के साथ चले आओ—यह तुम्हें मेरे पास पहुंचा देगा, फिक्र न करना—वेटर मेरा विश्वसनीय है।"

पत्र जेब में डालते हुए युवक ने घूमकर विशेष से कहा—"हम जरा काम से जा रहे हैं, वीशू बेटे—दरवाजा अन्दर से बन्द कर लो।"

वीशू के स्थान पर वहां रश्मि की आवाज गूंजी—"काम से तो तुम जा रहे हो, लेकिन जरा संभलकर चला करो—आंगन में तुम्हारे कदम ठीक नहीं पड़ रहे थे।"

"क...क्या मतलब?" कुछ भी न समझने की स्थिति में चौंकते हुए युवक ने पूछा।

अपने कमरे की तरफ जाने वाले जीने की एक सीढ़ी पर खड़ी रश्मि ने उसी गम्भीर और सौम्य स्वर में कहा—"तुम्हारे दोनों जूतों की एड़ियां घिस गई हैं—शायद इसीलिए गैलरी पार करते समय कई बार लड़खड़ा गए—मेरी सलाह है कि एड़ियां ठीक करा लो, वरना कहीं मुंह के बल गिर पड़ोगे।"

युवक रश्मि के कटाक्ष, व्यंग्य अथवा पहेली जैसे उन शब्दों का अर्थ नहीं समझ सका—रश्मि की बात का अर्थ पूछने के लिए उसके पास समय नहीं था, अतः वेटर से बोला।

"चलो।"

वह बाहर निकल गया। विशेष ने दरवाजा बन्द कर लिया।

¶¶

वेटर उसे देहली के बाहरी इलाके में स्थित एक गन्दी-सी बस्ती में ले गया, और फिर टीन के बने एक फाटक जैसे विशाल दरवाजे के सामने ठिठका। यह दरवाजा किसी गोदाम के दरवाजे जैसा था, जिसकी तरफ इशारा करके वेटर ने कहा—"आप इसके अन्दर चले आइए।"

"क्या डॉली मुझे यहां मिलेगी?"

"जी हां।"

"म...मगर यह अजीब जगह है, डॉली भला यहां क्या कर रही है?"

"डॉली मेमसाब ने कहा था कि शायद रंगा-बिल्ला को उन पर शक हो गया है—उन्हीं के डर से वे यहां छुपी हुई हैं।"

"क्या तुम अन्दर नहीं चलोगे?"

"नहीं।" अजीब-से स्वर में कहने के बाद वेटर एक क्षण के लिए भी वहां रुका नहीं। अगला सवाल पूछने के लिए युवक का मुंह खुला-का-खुला रह गया, क्योंकि गजब की तेजी के साथ वेटर मुड़ा और लम्बे-लम्बे कदमों के साथ उससे दूर होता चला गया।

ठगा-सा युवक वहीं खड़ा रहा।

मस्तिष्क में सैकडों विचार चकरा रहे थे। स्वयं को उलझन-सी में घिरा महसूस कर रहा था वह—सारा वातावरण रहस्यमय-सा लगा।

वेटर एक मोड़ पर घूमकर दृष्टि से ओझल हो गया। युवक यह सोचता हुआ दरवाजे की तरफ घूमा कि जब उसने एक खतरनाक काम अपने हाथ में लिया है तो इस किस्म के वातावरण से तो गुजरना ही होगा। दाएं हाथ पर पट्टी बंधी हुई थी—बाएं हाथ से जेब में पड़े रिवॉल्वर को थपथपाया और किसी भी खतरे से जूझने के लिए तैयार होकर उसने गोदाम के दरवाजे पर लगी सांकल जोर से बजा दी।

आवाज दूर-दूर तक गूंज गई, मगर वहां कोई व्यक्ति नजर नहीं आया।

अन्दर से उभरने वाली किसी भारी सांकल के हटने की आवाज सुनकर वह सतर्क हो गया। बायां हाथ जेब के अन्दर डालकर रिवॉल्वर की मूठ पर कस लिया।

दरवाजा खुला। डॉली पर नजर पड़ते ही वह कुछ आश्वस्त हुआ।

युवक ने महसूस किया कि डॉली इस वक्त बुरी तरह आतंकित है। उसके चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं, आंखों में हर तरफ 'खौफ-ही-खौफ' नजर आ रहा था।

"क्या बात है, डॉली? तुम इस कदर डरी हुई क्यों हो?"

"आओ।" उसके सवाल पर कोई ध्यान न देती हुई डॉली ने शुष्क स्वर में कहा तथा टीन के दोनों विशाल किवाड़ों के बीच पैदा हुए रास्ते से हट गई—अन्दर कदम रखते हुए युवक ने डॉली के लहजे में कम्पन महसूस किया।

रुई की गांठों से भरा वह एक बहुत विशाल हॉल था।

युवक ने तेजी से निरीक्षण किया। हर तरफ एक अजीब-सी खामोशी छाई हुई थी। यह खामोशी युवक को वैसी ही महसूस हुई जैसी अक्सर किसी बड़े तूफान के जाने से पहले छा जाया करती है।

वह डॉली की तरफ घूमा।

भारी सांकल चढ़ाने के बाद डॉली स्वयं उसकी तरफ घूमी थी—नजरें मिलीं तो युवक को पुन: अहसास हुआ कि डॉली खुद को सूली पर खड़ी महसूस कर रही है।

उसने पूछा—"क्या बात है डॉली?"

"क...क्या तुम्हें वेटर ने नहीं बताया?" लहजा बुरी तरह कांप रहा था।

"रंगा-बिल्ला को तुम पर कैसे शक हो गया?"

वही आतंकित स्वर—"म.....मैं इस वक्त भी उनकी कैद में हूं।"

"क.....क्या मतलब?" युवक चीख-सा पड़ा।

"म.....मैं एक-एक शब्द वही बोल रही हूं जो बोलने के लिए उन्होंने कहा है।"

युवक उछल पड़ा, रोंगटे खड़े हो गए उसके, चीखा—"क.....कहां हैं वे?"

"इ...इसी गोदाम में।"

"क...क्या मत...?"

युवक का वाक्य पूरा नहीं हो सका। दाईं तरफ बिजली-सी कौंधी।

डॉली के कण्ठ से एक हृदयविदारक चीख निकलकर सारे गोदाम में गूंज गई।

और अगले ही पल युवक ने डॉली की छाती में गड़ा एक चाकू देखा। चालू की सिर्फ मूठ चमक रही थी और उसी से अनुमान लगाया जा सकता था कि चाकू काफी लम्बा है—उसका समूचा फल डॉली की छाती में पैवस्त था।

चेहरे पर असीम वेदना के भाव लिए कटे वृक्ष-सी वह गिरी।

यह सब कुछ एक ही क्षण में हो गया था। इतनी तेजी से कि युवक कुछ समझ नहीं सका—फिर भी बौखलाकर उसने अपनी जेब से रिवॉल्वर निकाल लिया और इससे पहले कि दाईं तरफ फायर करता, स्वयं उसी के कण्ठ से एक चीख उबल पड़ी।

लोहे की कोई मोटी चैन उसकी रिवॉल्वर वाली कलाई पर पड़ी थी।

मुंह से एक चीख निकली और हाथ से रिवॉल्वर निकलकर जाने कहां जा गिरा। दर्द से बिलबिलाते हुए उसने आक्रमणकारी की तरफ देखा तो जिस्म में झुरझुरी-सी दौड़ गई।

यह बिल्ला था, काला भुजंग।

चेहरे पर इस वक्त खूंखार भाव लिए वह दाएं हाथ में दबी मोटरसाइकिल की चेन को बड़े ही खतरनाक अंदाज में अपनी बाईं कलाई पर लपेट रहा था। अपनी लाल-सुर्ख आंखों से युवक को घूरते हुए वह गुर्राया—"मुझ नाचीज को बिल्ला कहते हैं।"

दाईं तरफ से 'धम्म' की आवाज उभरी।

हड़बड़ाकर युवक ने उधर देखा।

रुई की गांठों के ढेर के ऊपर से जो अभी-अभी फर्श पर कूदा था, वह रंगा था। रुई जैसा ही सफेद, परन्तु आंखें उसकी भी अंगारों जैसी थीं, किसी भी मायने में वह बिल्ला से कम खतरनाक नजर नहीं आता था। उसके हाथ में वैसा ही दूसरा चाकू था जैसा डॉली की छाती में पैवस्त था। युवक की तरफ देखते हुए उसने कहा—"गलती से मेरा नाम रंगा है।"

"एक रंगा-बिल्ला फांसी पर झूल गए—दूसरे हम हैं।" यह बात बिल्ला ने कही थी।

जब युवक ने दोनों तरफ से उन्हें अपनी तरफ बढ़ते देखा तो युवक के तिरपन कांप गए—मौत की लहर बिजली के समान उसके जिस्म में कौंध गई—इस क्षण उसे महसूस हुआ कि रंगा-बिल्ला से टकराने का निर्णय निहायत ही मूर्खतापूर्ण था।

इस गोदाम में कदम रखकर उसने अपने जीवन की सबसे भयंकर और अंतिम भूल की है। उन दोनों से बचने के लिए सहमा-सा वह पीछे की तरफ हटा, साथ ही अपने रिवाल्वर की तलाश में फर्श पर नजर दौड़ाई थी।

नजर डॉली की लाश पर पड़ी।

युवक के होश फाख्ता हो गए। उसे लगा कि कुछ देर बाद वह स्वयं भी उसी अवस्था में पहुंचने वाला है। अपनी उंगलियों में चाकू को नचाते हुए रंगा ने कहा—"क्यों बेटे, अब डर क्यों रहे हो—डॉली से सुना था कि तुम्हें हमारी तलाश है।"

"म....मुझे?...न....नहीं तो!" आतंकित युवक बड़ी मुश्किल से कह सका।

"पिछली बार तो तुम बच गए थे, मगर इस बार नहीं बच सकोगे।"

"म...मैं सर्वेश नहीं हूँ।"

रंगा गुर्राया—"फिर सर्वेश बने क्यों घूम रहे हो?"

"क....कौन हो तुम?" बिल्ला ने पूछा।

"म....मुझे नहीं पता है।"

"रंगा-बिल्ला के सवाल को टालता है, हरामजादे।" कहने के साथ ही रंगा ने अपने हाथ में दबा चाकू उस पर खींच मारा—बिजली की-सी तेजी के साथ बौखलाकर युवक नीचे बैठ गया। जो चाकू उसके सीने पर लगना चाहिए था, वह सर्र.....र्र....र्र....की आवाज के साथ उसके ऊपर से गुजरकर पीछे रुई की एक गांठ में धंस गया।

रंगा के चाकू का वार पहली बार ही खाली गया था। कदाचित् इसीलिए रंगा-

बिल्ला ने हैरतअंगेज दृष्टि से एक दूसरे की तरफ देखा।

युवक अभी भी डरा हुआ-सा बोला—"म...मैं सच कह रहा हूं। मैं नहीं जानता कि मैं कौन हूं?"

दूसरी बार उसका यह वाक्य सुनकर रंगा-बिल्ला के तन-बदन में आग लग गई—बिल्ला ने खींचकर चेन का वार किया और युवक हवा में दो गज उछलकर दूर जा पड़ा।

सांय की आवाज पैदा करती हुई चेन उसके नीचे से निकल गई।

मुंह से पंक्चर हुए टायर की-सी आवाज निकालते हुए रंगा ने जम्प लगाई तो युवक के बाएं हाथ का घूंसा कुछ ऐसे भीषण ढंग से उसके चेहरे पर पड़ा कि एक लम्बी डकार निकालता हुआ वह पीछे जा गिरा।

बिल्ला ने एक बार फिर चेन का वार किया।

इस बार युवक स्वयं को बचा नहीं सका और चेन उसकी पसलियों पर पड़ी, मुंह से चीख निकल गई, परन्तु इस चीख के साथ ही उसने बाएं हाथ से अपने पेट और पीठ पर लिपटी चेन का अग्रिम सिरा पकड़कर इतना जोरदार झटका दिया कि बिल्ला के हाथ से न केवल चेन छूट गई, बल्कि झोंक से वह रुई की एक गांठ से जा टकराया।

इस बीच संभल गए रंगा ने युवक पर जम्प लगाई, परन्तु युवक ने घुमाकर चेन का वार जो उस पर किया तो दर्द के कारण तड़पकर रह गया रंगा।

इसके बाद—चेन युवक के हाथ में थी।

सामने थे रंगा-बिल्ला।

यह कम हैरत की बात नहीं थी कि वहां युवक के स्थान पर रंगा-बिल्ला की चीखें गूंज रही थी—जीवन में शायद वे पहली ही बार किसी से इतनी मार खा रहे थे।

युवक के सामने एक नहीं चल पा रही थी उसकी—हर दांव निष्फल।

एक बार बिल्ला को मौका लगा तो उसने चेन का आंग्रिम सिरा पकड़ लिया—अब, वे दोनों चेन को अपनी तरफ खींचने लगे—युवक ने सिर्फ एक हाथ से चेन का यह सिरा पकड़ रखा था और बिल्ला ने दोनों हाथों से।

रंगा ने उछलकर युवक पर वार किया।

युवक के लिए उसके वार को बेकार करना और अपना वार करना जरूरी हो गया, इस चक्कर में चेन उसे छोड़नी पड़ी—बिल्ला चेन समेत लड़खड़ाकर फर्श पर गिरा।

रंगा युवक के वार के परिणामस्वरूप दूसरी तरफ पड़ा फर्श चाट रहा था।

युवक ने जम्प लगाकर रुई की गांठ में धंसा चाकू निकाला, उधर बिल्ला चेन हाथ में लिए न केवल उछलकर खड़ा हो गया था, बल्कि युवक पर चेन का वार भी करने वाला था कि युवक ने आनन-फानन में अपने बांये हाथ से चाकू उस पर फेंक मारा।

घप्प से चाकू का फल बिल्ला की गर्दन के एक तरफ से निकलकर दूसरी तरफ पार निकल गया। हृदयविदारक चीख के साथ चेन को छोड़ता हुअर बिल्ला 'धड़ाम' से फर्श पर गिरा।

फर्श पर गिरने से पहले ही बिल्ला मर चुका था।

पल भर के लिए रंगा हतप्रभ रह गया, जबकि युवक ने इसी क्षण का लाभ उठाते हुए फर्श पर पड़े रिवॉल्वर पर जम्प लगा दी।

रंगा तब चौंका, जब युवक ने रिवॉल्वर उसकी तरफ तानकर कहा—"हाथ ऊपर उठा दो रंगा, वरना इस रिवॉल्वर से निकली गोली तुम्हारे भेजे के चीथड़े उड़ा देगी।"

बिल्ला की लाश पर नजर पड़ते ही उसका चेहरा अत्यन्त वीभत्स हो गया। गोरा चेहरा भभककर लाल-सुर्ख पड़ गया। दांत भींचकर गुर्राया—"त...तूने बिल्ला को मार दिया है हरामजादे, तुझे मैं कच्चा चबा जाऊंगा।"

युवक बड़े प्यार से बोला, "अगर बिल्ला के पास नहीं पहुंचना चाहते हो बेटे, तो हाथ ऊपर उठा तो, आई से हैंड्स अप।"

रंगा ने वस्तुस्थिति को भांपा, हाथ स्वयं ही ऊपर उठते चले गए।

"वैरी गुड—यह हुई न अच्छे बच्चों वाली बात।" युवक ने जहरीली मुस्कान के साथ कहा—"अब जरा ध्यान से मेरी बात सुनो—सच्चाई ये है कि मैं तुममें से किसी को मारना नहीं चाहता था—यह इत्तफाक की बात है कि आनन-फानन में बिल्ला मर गया।"

बेबस रंगा दांत किटकिटाता हुआ सिर्फ हाथ मलकर रह गया।

युवक जानता था कि यदि रंगा का बस चले तो वह उसे कच्चा चबा जाए, उसकी बेबसी का मजा लूटता हुआ बोला—"सर्वेश की हत्या तुम्हारे 'शाही कोबरा' ने की थी और उस जुर्म की सजा उसे ही मिलेगी, तुमने सर्वेश की लाश को ले जाकर केवल रेल की पटरी पर रखा था, मैं तुम्हें सिर्फ उसी जुर्म की सजा देना चाहता था—और वह सजा मौत नहीं थी, किन्तु संयोग से बिल्ला मर गया है।"

"इस संयोग की बहुत बड़ी कीमत चुकानी होगी तुझे।" रंगा गुर्राया।

"इस बात को अच्छी तरह समझ लो कि यदि तुमने मेरे सभी सवालों का सही जवाब दिया और मेरा बताया हुआ काम बिना-बाधा के किया तो मैं तुम्हें बख्श दूंगा। जिंदा रहे तो सम्भव है कि मौका लगने पर कभी मुझसे बिल्ला की मौत का बदला ले

सको, मगर यदि तुमने मेरे सवालों का ठीक जवाब नहीं दिया, या मेरा एक खास काम नहीं किया तो बदला लेने का मौका तुम्हें कभी नहीं मिलेगा, क्योंकि यकीन मानो, उस अवस्था में मैं तुम्हें यहीं, अभी बिल्ला के पास पहुंचा दूंगा।"

विवश रंगा कसमसाकर रह गया।

युवक ने पूछा—"पहला सवाल—मुझे बताओ कि उस दिन सात बजे तुम सर्वेश को उसकी सीट से उठाकर कहां ले गए थे?"

"मैं तुम्हारे किसी सवाल का जवाब नहीं दूंगा।" रंगा ने दृढ़तापूर्वक कहा।

मगर रंगा की यह दृढ़ता बहुत ज्यादा देर तक कायम नहीं रह सकी।

इसी ललक ने रंगा को तोड़ दिया—युवक के हर सवाल का जवाब देता चला गया वह। जब युवक अपने सभी सवालों का जवाब पा चुका तो बोला—"थैंक्यू—अब तुम्हें इसी शराफत के साथ मेरा एक काम भी करना होगा।"

"क्या?" जीने के लिए रंगा ने पूछा।

"उस काम को सुनने से पहले जरा तुम एक चीज को ध्यान से देख तो और उसके काम करने के तरीके को गौर से सुन लो।" कहने के साथ ही उसने रिवॉल्वर पट्टियों से बंधे दाएं हाथ में ले लिया, बोला—"निश्चय ही मेरा यह हाथ जला हुआ है, मगर ध्यान रखना, ट्रेगर दबाने जैसा आसान काम यह हाथ यकीनन कर सकेगा।"

रंगा शान्त रहा।

युवक ने बायां हाथ जेब में डालकर अण्डाकार बम जैसी वस्तु निकाली और उसे रंगा को दिखाता हुआ बोला—"तुम देख रहे हो कि यह एक बम है, देखने में भले ही छोटा लगे, मगर इतना शक्तिशाली जरूर है कि जहां फटेगा, वहां एक गज व्यास के घेरे में जितनी भी चीजें होंगी, उनके परखच्चे उड़ा देगा।"

रंगा की दृष्टि अण्डाकार बम पर जम गई।

"जिस तरह हैंडग्रेनेड में एक पिन होती है, उसी तरह की पिन इसमें भी है और उस पिन के हटते ही कस-से-कम तुम्हारे लिए यह अणुबम से भी कहीं ज्यादा खतरनाक बन जाएगा। ऐ, ये देखो, जरा ध्यान से देखो कि इसे मैंने किस तरह पकड़ रखा है।" कहने के साथ ही युवक ने बम को तर्जनी और अंगूठे के सिरे से पकड़ लिया, बोला—"अब जैसे ही दांतों से इसकी पिन निकालूंगा, वैसे ही यह साक्षात् मौत बन जाएगा—इस बम में किसी इंसानी जिस्म की ऊष्मा मात्र से फट जाने का गुण पैदा हो जाएगा।"

बहुत ही सावधानीपूर्वक युवक ने दांतों से उसमें से एक पिन खींच ली, बोला —"अब यह फटने के लिए तैयार है, किसी के छूने मात्र से फट जाएगा।"

"म...मगर यह सब कुछ तुम मुझे क्यों बता रहे हो?"

"ताकि तुम अनावश्यक रूप से इस बम के साथ छेड़खानी न करो।"

"म...मुझे भला क्या जरूरत पड़ी है?"

"अभी पता लग जाएगा।" कहते हुए युवक ने अण्डाकार बम आगे बढ़कर धीमें से रूई की एक गांठ के ऊपर रख दिया, जेब से इलेक्ट्रिक स्विच निकाला, अपनी रिस्टवॉच में समय देखने के बाद बोला—"हालांकि तुम कोई तार आदि ऐसा कुछ नहीं देख रहे हो, जिससे समझ सको कि इस बम का सम्बन्ध इस स्विच से भी है।"

"स्विच से?"

"हां, दरअसल यह स्विच इस बम को फटने से रोकने के लिए बनाया गया है।"

"क्या मतलब?"

"अगर मैं तकनीकी जानकारी बताने बैठा तो शाम इसी गोदाम में हो जाएगी। फिर भी विश्वासपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि तुम उसे समझ ही जाओगे, इसीलिए मोटी-सी बात यह जान लो कि इस बम में हर पांच मिनट बाद फट पड़ने की तीव्र इच्छा होती है, जैसा कि मैंने बताया, यह स्विच बम को फटने से रोकने के लिए बनाया गया है, प्रत्येक पांच मिनट के अन्दर इस स्विच को दबाना जरूरी है, यदि इस स्विच को नहीं दबाया गया तो समझ तो कि छठे मिनट में बम फट जाएगा।"

"क्या मतलब?"

"मतलब यह" रिस्टवॉच में समय देखते ही युवक ने अपने हाथ में दबे स्विच को एक बार दबा दिया। इधर स्विच दबा, उधर बम में 'पिंग-पिंग' की आवाज़ के साथ एक हरा बल्ब लपलपाया। युवक ने कहा—"इस स्विच के दबते ही बम में छुपा हरा बल्ब पिंग-पिंग की आवाज के साथ ही लपलपाएगा—इसका अर्थ है कि बम को अगले पांच मिनट तक फटने से रोक दिया गया है—जिन पांच मिनट के बीच इस स्विच को नहीं दबाया जाएगा, उनके गुजरते ही बम फट जाएगा।"

"अजीब बम है?"

युवक ने आगे बढ़कर बम को तर्जनी और अंगूठे के सिरे से सावधानी के साथ उठा लिया और रंगा के नजदीक पहुंचा। रिवाल्वर से कवर किए उसके पीछे पहुंचा और फिर अचानक ही बम को उसने रंगा के कॉलर के अन्दर डाल दिया।

"य...ये क्या कर रहे हो?" दहशत के कारण रंगा चीख पड़ा।

उसकी पीठ पर से सरसराता हुआ बम पतलून की वेस्ट पर अटक गया। अब वह

पीठ के सबसे निचले सिरे पर अटका हुआ था और बम की 'चुभन' वह स्पष्ट महसूस कर रहा था। युवक अजीब-से अन्दाज में हंसता हुआ उसके सामने आ गया और बोला—"अब तुम महसूस कर सकते हो कि बम कहां है—इतना भी समझ सकते हो कि तुम्हारी त्वचा से सिर्फ यही 'प्वाइंट' 'टच' है जिस पर जिस्म की ऊष्मा से कोई फर्क नहीं पड़ता है, अगर ऐसा न होता तो अब तक बम फट चुका होता और तुम्हारे जिस्म के परखच्चे इस गोदाम में बिखरे पड़े होते।"

रंगा का सफेद चेहरा निचुड़े हुए कपड़े-सा निस्तेज हो गया। आतंकित स्वर में उसने पूछा—"म...मगर यह तुमने यहां क्यों डाल दिया है?"

युवक ने कहा—"अब, न तो तुम ज्यादा उछल-कूद कर सकते हो—और न ही किसी अन्य की मदद से बम को वहां से निकाल सकते हो—बम वहीं रहेगा—स्विच मेरे पास है—भले ही एक-दूसरे से हम चाहे जितनी दूर चले जाएं, मगर स्विच और बम का सम्बन्ध विच्छेद नहीं होगा—बम में एक माइक्रोफोन भी है, जो मुझे बताता रहेगा कि तुम कहां, किससे, क्या बातें कर रहे हो—जब तक मैं प्रत्येक पांच मिनट के अन्तराल पर स्विच को दबाता रहूंगा, तब तक तुम जीवित रहोगे और जिस अन्तराल में मैंने इसे नहीं दबाया, वह तुम्हारी जिन्दगी का आखिरी अन्तराल होगा।"

रंगा के जिस्म से मानो समूचा खून निचोड़ लिया गया।

"हर अन्तराल पर मैं तब तक इसे दबाता रहूंगा जब तक कि तुम मेरे अनुसार काम करते रहोगे—और अन्त में खुश होकर बम को वहां से हटा दूंगा।"

"त...तुम क्या चाहते हो?" रंगा को अपनी ही आवाज किसी गहरे कुएं से उभरती-सी महसूस हुई।

¶¶

"बहुत ही दुख और दुख से भी कहीं ज्यादा हैरत की बात है कि उस कल के छोकरे ने बिल्ला को मार डाला—बिल्ला के मर जाने से भी कहीं ज्यादा हैरत की बात ये है रंगा कि तुम यहां जीवित खड़े हो—तुम—जिसका जोड़ीदार मर गया है—रंगा-बिल्ला को जानने वाले यही कहते थे कि वे दो जिस्म एक जान हैं।"

मंच पर मौजूद बॉस अजीब-से रोष में भरा यह सब कह रहा था। एक प्रकार से रंगा को धिक्कार रहा था वह।

पंक्तिबद्ध खड़े कम-से-कम बीस व्यक्तियों में से एक रंगा था। बिना हिले-डुले बिल्कुल सावधान की मुद्रा में खड़ा था वह। चेहरे पर दहशत के अजीब-से भाव लिए।

कुछ देर की खामोशी के बाद मंच से बॉस की आवाज पुन: उभरी—"जवाब दो रंगा—तुम्हारे सामने बिल्ला को मारकर वह छोकरा जिन्दा कैसे निकल गया?"

एकाएक ही रंगा गुर्रा उठा—"वह तो तुझे भी मार डालेगा हरामजादे...।"

"क...क्या बकते हो?" बॉस दहाड़ उठा।

सचमुच रंगा के शब्दों ने वहां अणु बम के फटने से भी कहीं ज्यादा खतरनाक विस्फोट किया था। सभी चौंक पड़े—सनसनी फैल गई—हालांकि दीवारों के सहारे खड़े सैनिकों की गनें तन गईं—पंक्ति में खड़े दूसरे लोगों को महसूस हुआ कि रंगा पागल हो गया है।

सभी के चेहरे पीले पड़ गए।

जबकि रंगा गुर्राया—"मैं ठीक कह रहा हूं उल्लू के पट्ठे—वह तुझे ही नहीं—तेरे उस कुत्ते 'शाही कोबरा' को भी देख लेगा—वह परखच्चे उड़ा देगा तुम्हारे और इस अड्डे को जलाकर राख कर देगा।"

"र...रंगा...होश में तो हो तुम?"

"होश की दवा तुझे और तेरे 'शाही कोबरा' को करनी है हरामखोर।"

और हद हो गई थी।

वातावरण इतना तनावपूर्ण बन गया कि जिस शख्स को आज से पहले किसी ने मंच से नीचे नहीं देखा था—वही आपे से बाहर होकर मंच से कूदा।

लिबास के साथ का ही चांदी-सा चमकदार नकाब उसके चेहरे पर था।

एक ही जम्प में वह रंगा के समीप आ गया। आनन-फानन में दोनों हाथों से उसका गिरेबान पकड़कर चीखा—"कौन है तू—बोल, कौन है तू?"

कड़वी मुस्कराहट के साथ कहा रंगा ने—"मुझे नहीं पहचाना बागड़बिल्ले?"

"न...नहीं—तू....रंगा नहीं हो सकता—अगर तू रंगा होता तो यह सब कुछ कहने की जुर्रत नहीं कर सकता था, या फिर तू पागल हो गया है।"

"पागल तो तू हो गया है हरामजादे। अगर खैरियत चाहता है तो उससे टकराने का ख्याल दिमाग से निकाल दे—वह तेरे सारे खानदान को..।"

"आह!" रंगा के आगे के शब्द एक चीख में बदल गए।

बॉस का फौलादी घूंसा उसके जबड़े पर पड़ा था। घूंसा हालांकि काफी शक्तिशाली था, परन्तु रंगा बम के डर से लड़खड़ाया तक नहीं। सावधान की उसी मुद्रा में खड़ा हुआ बोला—"अगर जिन्दा रहना चाहता है सूअर तो मुझसे दूर रह।"

"क..क्या बकता है तू?"

"मेरी पीठ पर एक बम है—अगर मैं जरा भी हिसा-डुला तो यह फट जाएगा—मेरे तो परखच्चे उड़ेंगे ही, साथ ही मेरे आसपास खड़ा कोई भी जिन्दा नहीं बचेगा।"

रंगा के इर्द-गिर्द खड़े लोग उससे परे सरक गए।

जबकि बॉस दोनों हाथों से उसका गिरेबान पकड़कर झिंझोड़ता हुआ चिल्लाया —"क्या बकता है कुत्ते—कैसा बम?"

रंगा जानता था कि यहां जितनी भी बातें हो रही हैं, युवक वे सब सुन रहा है और अब यदि उसने बॉस को आतंकित नहीं किया तो इस हॉल से नहीं निकल सकेगा, अत: संक्षेप में उसने बॉस को बम के बारे में सब कुछ बता दिया।

सुनकर सचमुच बॉस भी उससे दूर हट गया। अगले ही पल उसके हाथ में रिवॉल्वर नजर आया। बोला—"तो यहां, यह सब कुछ कहने के लिए तुमसे उसने कहा था और बम के डर से तुम कहते चले गए?"

रंगा ने अजीब-से स्वर में कहा—"वह बम अगर तेरी पीठ पर होता कुत्ते तो तू भी उसी तरह नाचता जैसे वह नचाता।"

उत्तेजना के कारण निश्चय ही बॉस का हाल बुरा हो रहा था।

रिवॉल्वर तानकर वह गुर्राया—"अपनी वैल्ट खोलो।"

"म...मैं नहीं खोलूंगा।"

"जिस किस्म के बम की बात तू कह रहा है रंगा, वैसे करामाती बम के बारे में न हमने कभी सुना है-न देखा है और कम-से-कम यह बात तो हमारे कण्ठ से नीचे उतर ही नहीं पा रही है कि ऐसा बम उस बहुरूपिए के पास हो सकता है—सम्भव है कि तुझे आतंकित करने के लिए उसने यह सारी बकवास की हो—अगर सच यही हुआ तो बैल्ट खोलने पर तू जिन्दा भी बच सकता है, लेकिन यदि तूने हमारे इस वाक्य की समाप्ति पर भी बैल्ट नहीं खोली तो हमारे रिवॉल्वर से निकली गोली निश्चय ही तेरा भेजा उड़ा देगी।"

रंगा के दिमाग में बात बैठ गई।

जेहन में विचार उभरा कि मरना तो अब दोनों हालत में निश्चित हो गया है। मरने से पहले क्यों न यह जान ले कि बम में वह करामात है या नहीं। अत: उसने बैल्ट खोल दी।

वेस्ट के ढीली होते ही सरसराता हुआ बम पतलून के एक पांयचे के अन्दर से होता हुआ 'पट' से हॉल के फर्श पर गिरा। थोड़ी दूर लुढ़का और फिर रुक गया।

बल्कि बॉस समेत प्रत्येक की दृष्टि उसी पर केन्द्रित थी।

रंगा को बम के अभी तक न फटने पर आश्चर्य था।

तभी 'पिंग...पिंग' की आवाज के साथ बम में हरा बल्ब लपलपाया।

"य...ये देखो बॉस—उसने स्विच दबाया होगा।"

"यह बम नहीं कमीने।" बॉस ने आगे बढ़कर बेहिचक उसे उठा लिया और अगले ही पल उसने बम जैसी वस्तु को उछाल दिया—अण्डा दो भागों में विभक्त हो गया।

दूसरे भाग में एक 'चकरी' धीरे-धीरे घूम रही थी। इस चकरी का एक भाग थोड़ा उभरा हुआ था। एक नन्हें से बल्ब का कनेक्शन दो छोटे तारों के जरिए सेल्स से जुड़ा हुआ था—उसे समझने की कोशिश में पांच मिनट गुजर गए।

'पिंग-पिंग' की आवाज के साथ हरा बल्ब पुनः जला।

"यह बम नहीं कुत्ते, खिलौना मात्र है।" बॉस गुर्राया—"सेल अपने खांचों में ढीले हैं। घूमती हुई चकरी पांच मिनट में अपना चक्कर पूरा करती है—प्रत्येक पांच मिनट बाद चकरी का उभरा हुआ भाग खांचों को कस देता है और बल्ब जल उठता है। न इसमें कोई माइक्रोफोन है और न ही किसी स्विच से इसका सम्बन्ध है।"

रंगा का मुंह हैरत से फटा रह गया।

"हुं।" उसे एक तरफ़ फेंकते हुए बॉस ने कहा—"इसमें न कोई ऊष्मारहित प्वाइंट है, न ही ऊष्मा से फट पड़ने का कोई गुण—इस खिलौने के डर से तूने हमें...।"

"मु.....मुझे माफ कर दो बॉस, मैं समझा कि यह बम...।"

"धांय-धांय।" बांस का रिवॉल्वर दो बार गरजा, उसका न सिर्फ वाक्य अधूरा रह गया, बल्कि हृदयविदारक चीख के साथ वह कटे वृक्ष-सा वहीं गिर गया।

¶¶

"एक प्रकार से यदि यह कहा जाए तो गलत नहीं होगा कि मैं सर्वेश की हत्या के सम्पूर्ण रहस्य से परिचित हो चुका हूं—मेरे और उनके बीच जंग भी जारी हो चुकी है।"

"जो तुम जानते हो, वह मुझे भी बताओ।" रश्मि ने सपाट स्वर में पूछा।

युवक ने संक्षेप में गोदाम में घटी घटना उसे सुना दी। सुनने के बाद रश्मि बोली—"अब तुम आगे क्या करने का विचार रखते हो?"

"मेरा अगला आक्रमण शायद सीधा 'शाही कोबरा' पर होगा।"

"श...'शाही कोबरा' पर। मगर उसे तो तुम अभी जानते भी नहीं हो?"

युवक की आंखें शून्य में स्थिर हो गईं—बोला—"भले ही विश्वासपूर्वक न जानता होऊं, मगर एक व्यक्ति पर मुझे शक जरूर है।"

"क...किस पर?" रश्मि एकदम व्यग्र हो उठी।

"यह मैं तुम्हें शायद आज की रात गुजर जाने के बाद बता सकूंगा।" कहते हुए युवक की दृष्टि रश्मि की गर्दन पर चिपक गई।

बड़े ही विस्फोटक ढंग से युवक के दिमाग में विचार टकराया कि—'अगर वह रश्मि की गर्दन दबा दे तो क्या होगा।'

वह मर जाएगी।

युवक पर जुनून सवार होने लगा।

एकाएक ही वह सोचने लगा कि यदि रश्मि के जिस्म से सारे कपड़े उतार दिए जाएं तो यह बहुत खूबसूरत लगेगी।

उसके दिलो-दिमाग में बैठा कोई चीखा—उतार दे—'इसके जिस्म से कपड़े का एक-एक रेशा नोंचकर फेंक दे—गर्दन दबा दे इसकी—मार डाल—फर्श पर पड़ी इसकी निर्वस्त्र लाश बहुत सुन्दर लगेगी।'

युवक के चेहरे ने अभी वीभत्स होना शुरू किया ही था कि—"हैलो पापा!"

कमरे में दाखिल होते हुए विशेष ने कहा।

युवक के जेहन में मचल रहे भयानक विचार उसी तरह छिन्न-भिन्न हो गए जैसे गोली के दीवार से टकराते ही छर्रे बिखर जाते हैं।

विशेष अभी-अभी स्कूल से आया था।

¶¶

उस वक्त रात के दो बज रहे थे। चारों तरफ अंधेरे और सन्नाटे का साम्राज्य था और अचानक ही अंधेरे में से प्रकट होकर युवक लारेंस रोड पर स्थित न्यादर अली के बंगले के मुख्य द्वार की तरफ बढ़ता नजर आया—बंगले का लोहे वाला द्वार बन्द था और उसके दूसरी तरफ खड़ा सशस्त्र चौकीदार बीड़ी में कश लगा रहा था।

युवक दरवाजे के नजदीक पहुंचा।

"कौन है?" चौंकते हुए चौकीदार ने टॉर्च निकालते हुए पूछा।

युवक ने व्यंग्यात्मक स्वर में कहा—"क्या तुम मुझे नहीं पहचानते हो?"

जवाब में नजदीक आते हुए चौकीदार ने टॉर्च आन कर दी—टॉर्च के तीव्र झाग झमाके से युवक के चेहरे पर आ गिरे। युवक की आंखें चुंधिया गईं।

"त.....तुम कौन हो भाई?" बिल्कुल नजदीक जाकर चौकीदार ने पूछा।

"सिकन्दर...।" युवक ने एक झटके से कहा।

"म...मालिक?" चौकीदार के कण्ठ से चीख-सी निकल गई—"अ...अरे, आप तो सचमुच मालिक ही हैं...म...मगर इस वक्त—ये आपने क्या हालत बना रखी है, छोटे मालिक?"

युवक जानता था कि दूसरे नौकरों की तरह यह चौकीदार भी न्यादर अली का पढ़ाया हुआ है। अत: बोला—"ज्यादा चीखने-चिल्लाने की कोशिश मत कर, मेरे पीछे पुलिस पड़ी हुई है—दरवाजा खोलो, मैं डैडी से कुछ बात करने आया हूं।"

हड़बड़ाते हुए चौकीदार ने बीड़ी एक तरफ फेंककर ताला खोल दिया—युवक तेजी के साथ लॉन के बीच बनी सड़क पर से गुजरता हुआ बंगले के द्वार पर पहुंचा। मुख्य द्वार पर ताला लगाने के बाद लपकता हुआ चौकीदार भी उसके नजदीक आ गया था।

युवक ने अपने बाएं हाथ की अंगुली कॉलबेल पर रख दिया।

अन्दर कहीं पियानो-सा बजा।

कई बार की कोशिश के बाद कहीं जाकर दरवाजा खुला। इस बार बंगले के जिस नौकर ने दरवाजा खोला, युवक उसे भी जानता था। आखिर इस बंगले में काफी दिन तक रह चुका था वह—इस नौकर से भी लगभग वैसा ही वार्तालाप हुआ जैसा चीकीदार से हुआ था—फिर यह नौकर और चौकीदार उसे दूसरी मंजिल पर स्थित एक कमरे के दरवाजे पर ले गए।

नौकर ने दस्तक देते हुए न्यादर अली को 'मालिक' कहकर पुकारा।

अन्दर लाइट ऑन हुई। दरवाजा खुला और नाइट गाउन की डोरी बांधते हुए न्यादर अली ने पूछा—"क्या बात है?"

अभी उनके सवाल का कोई जवाब भी नहीं दे पाया था कि न्यादर अली युवक को देखकर चौंका और स्वयं ही कह उठा—"य...ये कौन है?"

"अ...आपने भी मुझे नहीं पहचाना?" युवक के लहजे में जबरदस्त व्यंग्य था।

"क्या मतलब?"

"ऐसा बाप मैंने पहले कभी नहीं देखा, जो बेटे दाढ़ी-मूंछ, चश्मे और बदली हुई हेयर स्टाइल में पहचान ही न सके।"

"क...क्या तुम सिकन्दर हो, अरे हां...तुम सिकन्दर ही तो हो।" न्यादर अली एकदम बौखला-सा उठा था—"मगर तुम इस वक्त यहां—इतने दिन कहां रहे तुम—और तुमने अपनी क्या हालत बना रखी है?"

"आप तो जानते ही हैं कि पुलिस मुझे तलाश कर रही है।"

"हां।"

"उसी से बचने के लिए यह भेष बदल रखा है।"

"म...मगर तू चिंता क्यों करता है बेटे, मैं तुझे कुछ नहीं होने दूंगा—बड़े-से-बड़ा वकील तुझे बचाने के लिए अदालत में खड़ा कर दूंगा—शायद तू जानता नहीं है—जिसकी हत्या तूने की है, वह खुद मुजरिम थी—रूपेश और उसने मिलकर तेरे खिलाफ एक षडयन्त्र रचा था—तुझे जॉनी बनाने का षडयन्त्र। वे कमीने हमारे सिकन्दर को हमसे छीनना चाहते थे—तूने जो कुछ किया, अच्छा ही किया—तू इस तरह छुपता क्यों फिर रहा है बेटे, फिक्र मत कर—उस केस में दुनिया का कोई कानून तुझे सजा नहीं दे सकेगा।"

"मैं उसी सम्बन्ध में बातें करने आपके पास आया हूं।"

"आजा बेटे—आ।" कहकर न्यादर अली ने उसे कमरे में खींच लिया। नौकर और चौकीदार से बोला—"तुम दोनों जाओ, सिकन्दर के लौटने का जिक्र किसी से न करना।"

वे चले गए।

युवक ने घूमकर दरवाजा अन्दर से बन्द कर लिया।

न्यादर अली इस वक्त बहुत खुश नजर आ रहा था। बोला—"तूने अच्छा ही किया बेटे, जो यहां आ गया—हम तेरे बारे में सोच-सोचकर पागल हुए जा रहे थे।"

अचानक ही उसकी तरफ़ पलटकर युवक गुर्राया—"अब यह 'बेटा-बेटा' की रट लगाने का नाटक बन्द करो मिस्टर 'शाही कोबरा' और अपनी असलियत पर आ जाओ।"

"क...क्या मतलब?" न्यादर अली चिहुंक उठा।

"क्यों!" युवक गुर्राया—"अपना असली नाम सुनकर पैरों तले से जमीन खिसक गई?"

"य...ये तू कैसी बात कर रहा है, सिकन्दर बेटे? हमारा नाम 'शाही कोबरा'? य...ये भी भला कोई नाम हुआ और फिर हमारे पैरों के नीचे से जमीन क्यों खिसकेगी?"

"अच्छी एक्टिंग कर लेते हो।"

"ए....एक्टिंग?"

युवक ने तुरन्त ही जेब से रिवॉल्वर निकालकर उस पर तान दिया, गुर्राकर—"अब अगर तुमने जरा भी चूं-पटाक की या पटरी पर नहीं आए तो मैं तुम्हारा भेजा उड़ा दूंगा।"

न्यादर अली विस्फारित नेत्रों से रिवॉल्वर को देखता रह गया। चेहरा एकदम सफेद पड़ गया था उसका, बोला—"त.....तू हमें मार देगा?"

"हां।"

"लगता है बेटे कि तू किसी बहुत बड़ी गलतफहमी का शिकार है।"

"गलतफहमी के शिकार तो तुम हो मिस्टर 'शाही कोबरा', तुम अपने दिमाग में यह वहम पाल बैठे हो कि मैं तुम्हारे षडयन्त्र में फंसकर खुद को सिकन्दर समझने लगूंगा।"

"स...सिकन्दर तो तुम हो ही।"

"मैं बहुत कुछ जान चुका हूं बेटे, और इसीलिए तुम्हारा कोई नाटक मेरे सामने नहीं चलेगा—बाकी बातें तो बाद में होंगी, पहले तुम मुझे यह बताओ कि होटल 'मुगल महल' के मालिक तुम हो या नहीं?"

"ह....हां बेशक हम ही हैं।"

"और मैं तुम्हारा बेटा हूं—इसीलिए 'मुगल महल' का मैनेजर मुझे भी जरूर जानता होगा।"

"हां, जानता है—हालांकि तुम 'मुगल महल' कभी गए नहीं हो, मगर साठे तुम्हें अच्छी तरह जानता है—तुम्हारे दोस्तों में से है वह।"

"साठे मेरा दोस्त है?" युवक के लहजे में व्यंग्य-ही-व्यंग्य था।

"हां।"

"फिर भी वह मुझे नहीं पहचानता—इतना ही नहीं, साठे यह भी कहता है कि तुम्हारा सिकन्दर नाम का बेटा कभी कोई था ही नहीं।"

न्यादर अली चीखता गया—"स...साठे भला ऐसा कैसे कह सकता है?"

"उसने कहा है बेटे—किसी और से नहीं, सीधे मुझसे कहा है—उसी मुगल होटल में एक कमरा है-कमरा नम्बर पांच-सौ-पांच।"

"ह...होटल में तो बहुत-से कमरे हैं।"

"वे सब किराए पर दिए जाते हैं, मगर पांच-सौ-पांच कभी नहीं दिया जाता—साल-से-साल तक वह तुम्हारे और सिर्फ तुम्हारे ही नाम से बुक रहता है।"

"हमारे नाम से! भला अपने ही होटल में हम कमरा बुक क्यों कराएंगे?"

"यानि वह कमरा तुमने बुक नहीं करा रखा है?"

"बिल्कुल नहीं।"

युवक का चेहरा गुस्से के कारण तमतमा उठा, बोला—"तुम्हें यह जानकर दुख होगा मिस्टर 'शाही कोबरा' कि तुम्हारे ही गैंग का एक खास सदस्य रंगा इस बारे में मुझे सब कुछ बता चुका है।"

"हमारी कुछ समझ में नहीं आ रहा है कि तुम क्या बक रहे हो?"

युवक गुर्राकर बोला—"इस रिवॉल्वर से निकली गोली के भेजे से पार होते ही तुम्हारी समझ में सब कुछ आ जाएगा—तुम्हारे होटल के नीचे तहखाना है—रास्ता उस कमरे से होकर जाता है जो तुम बुक रखते हो—उस तहखाने के अन्दर एक गैंग बसता है—और फिर भी तुम उस सबसे अनभिज्ञता प्रकट कर रहे हो—इसी से जाहिर है कि 'शाही कोबरा' तुम खुद हो—उस गैंग के माध्यम से मादक पदार्थों की तस्करी करते हो।"

"या खुदा, हम क्या सुन रहे हैं?"

"एक और प्वाइंट भी है मेरे पास।" युवक की आंखें जलने लगी थीं—"क्या तुम बता सकते हो कि अपने ही कथित बेटे सिकन्दर को षडयंत्र का शिकार बनाने वाले रूपेश की जमानत तुमने क्यों ली?"

"उससे ऐसा कुछ जानने के लालच में जो कि उसने युवक को न बताया हो।"

"यह झूठ है-रूपेश की जमानत तुमने इसीलिए ली, क्योंकि वह भी तुम्हारे ही गैंग का एक सदस्य है—यह रहस्य भी रंगा से मुझे पता लग चुका है।"

"य...यकीन करो, सिकन्दर, हमारे और तुम्हारे बीच दरार पैदा करने के लिए शायद कोई षडयंत्र रच रहा है।"

उसकी बात पर ध्यान दिए बिना युवक ने कहा—"मुझे दो प्रमुख सवालों का जवाब चाहिए बेटे—पहला यह कि तुमने सर्वेश की हत्या क्यों की और दूसरा यह कि मुझे सिकन्दर बनाने की कोशिश क्यों कर रहे हो?"

न्यादर अली ने कुछ कहने के लिए अभी मुंह खोला ही था कि—धांय।"

एक फायर की आवाज ने सारे बंगले को झनझनाकर रख दिया।

न्यादर अली के कण्ठ से चीख निकल गई। गोली उसके सिर के परखच्चे उड़ा गई थी और बौखलाकर युवक ने जब रोशनदान की तरफ देखा तो उसे चांदी के-से चमकदार लिबास की झलक दिखाई दी। केवल एक क्षण के लिए—अगले ही पल वह गायब था।

युवक ने चमकदार लिबास वाले के हाथ में रिवॉल्वर देखा था।

इधर न्यादर अली 'धड़ाम' से फर्श पर गिरा, उधर रिवॉल्वर संभाले युवक कमरे की एक बन्द खिड़की पर झपटा। अभी वह खिड़की को खोल ही रहा था कि किसी ने दरवाजा जोर से खटखटाया।

उसके जेहन में बड़ी तेजी से यह विचार कौंधा कि नौकर और चौकीदार उसे ही हत्यारा समझेंगे—यह समझते ही वह कुछ और ज्यादा बौखला गया—चमकदार लिबास वाले का पीछा करने के स्थान पर उसके दिमाग में खुद ही वहां से भाग निकलने का विचार उभरा।

¶¶

रश्मि एकदम हड़बड़ाकर उठ बैठी।

कमरे में अंधेरा छाया हुआ था। हर तरफ सांय-सांय करती खामोशी।

पलंग पर बैठी वह आंखें फाड़-फाड़कर अपने चारों तरफ छाए अंधेरे को देखने लगी। किसी वस्तु के गिरने की तेज धमाके जैसी आवाज ने उसकी निद्रा तोड़ दी थी।

एक अजीब-सी दहशत उसे अपने मन-मस्तिष्क पर हावी होती-सी महसूस हुई—टटोलकर उसने देखा—विशेष पलंग पर सोया पड़ा था।

उसे कुछ शान्ति-सी महसूस हुई।

निद्रा टूट जाने की वजह की तलाश में भटक रहे मन-मस्तिष्क को एकाएक ही यह अहसास हुआ कि कमरे में कोई अजनबी है—इस विचार मात्र से रश्मि रोमांचित हो उठी।

कमरे में किसी तीसरे व्यक्ति के सांस लेने की आवाज गूंज रही थी।

रश्मि के मस्तक पर पसीना उभर आया। जिस्म के रोएं खड़े हो गए—उसे यह यकीन होता चला गया कि कमरे में कोई है। डर ने पूरी मजबूती के साथ उसके दिलो-दिमाग को कस लिया। सच बात तो यह है कि आतंक की अधिकता के कारण उसकी हिम्मत पलंग से स्विच तक जाने की न पड़ रही थी।

साहस करके वह फर्श पर खड़ी हो गई। फिर कमरे में छाए अंधेरे को घूरती हुई स्विच की तरफ बढ़ी और अभी मुश्किल से दो या तीन कदम ही चली थी कि दृष्टि कमरे

के पीछे की तरफ खुलने वाली खिड़की पर पड़ी।

अनायास ही रश्मि के कण्ठ से एक चीख उबल पड़ी।

बड़ी ही डरावनी और हृदयविदारक इस चीख ने सन्नाटे को झंझोड़कर रख दिया —अगले ही पल अंधेरे में विशेष की आवाज गूंजी— "क...क्या हुआ मम्मी, तुम कहां हो?"

मगर रश्मि को तो मानो होश ही न था।

विशेष की आवाज जैसे उसने सुनी ही न थी। अपने स्थान पर जड़वत्त-सी खड़ी वह पथराई-सी आंखों से खिड़की की तरफ देख रही थी। वहां एक भयानक शक्ल नजर आ रही थी।

उसी चेहरे को देखकर रश्मि के कण्ठ से चीख निकली थी।

चेहरा बुरी तरह जला हुआ था। वह अपनी खूंखार आंखों से कमरे में ही देख रहा था। बुरी तरह डरे हुए अन्दाज में रश्मि चीख पड़ी—क....कौन है?"

आतंकित रश्मि पागलों की तरह स्विच की तरफ भागी और अगले ही पल उसने स्विच ऑन कर दिया—कमरा प्रकाश से भर गया।

खिड़की के उस पार से जला हुआ चेहरा गायब।

हक्का-बक्का-सा विशेष पलंग पर बैठा नजर आया।

रश्मि दौड़कर उसकी तरफ भागी, परन्तु पलंग पर पहुंचते-पहुंचते उसने खिड़की के शीशे का कटा हुआ भाग देख लिया था—शीशा काटने वाले हीरे से काटा गया चार इंच का वर्गाकार भाग—बड़ी तेजी से रश्मि के जेहन में यह विचार कौंधा कि अगर मेरी नींद न खुल जाती तो वह डरावने चेहरे वाला अन्दर से बन्द खिड़की की चिटकनी खोल लेता।

"क...क्या बात है मम्मी, यहां कौन है?" विशेष की आवाज कांप रही थी।

"प...पता नहीं बेटे!" कहती हुई रश्मि ने विशेष को बांहों में भर लिया और उसी क्षण नजरें कमरे के फर्श पर बिखरे कांच पर पड़ीं—वह खिड़की के कटे टुकड़े का कांच था।

रश्मि समझ गई कि इस टुकड़े के टूटने की खनक से ही उसकी नींद टूटी थी—वह बुरी तरह डर गई थी, बोला—"चलो....वीशू।"

"क...कहां मम्मी?"

"न...नीचे, मांजी के पास।" कहने के साथ ही विशेष की कलाई पकड़कर वह दरवाजे की तरफ बढ़ी।

कांपते हाथों से ही उसने दरवाजे की चिटकनी खोली और दरवाजा खोलते ही उसके हलक से पुनः चीख उबली।

इस बार नन्हां विशेष भी बुरी तरह चीख पड़ा था।

विशेष को संभाले रश्मि पीछे हट गई।

भयानक, डरावने, जले हुए और वीभत्स चेहरे का मालिक दरवाजे के बीचो-बीच खड़ा अपनी खूंखार और रक्तिम आंखों से उन्हें घूर रहा था। रश्मि अपने आतंक पर अभी काबू भी नहीं कर पाई थी कि एक लम्बे कदम के साथ यह कमरे में आ गया।

दहशत के कारण विशेष ने अपना चेहरा रश्मि के अंक में छुपा लिया था।

जिस वक्त डरावने चेहरे वाला दरवाजा बन्द करने के बाद अन्दर से चिटकनी चढ़ा रहा था, तब रश्मि चीख पड़ी— क.....कौन हो
तुम....क....क्या चाहते हो?"

चिटकनी बन्द करने के बाद वह घूमता हुआ बोला—"म.....मेरा नाम रूपेश है।"

"रूपेश?"

"वही, जिसे उसने जीवित जलाने की कोशिश की थी—देख रही हो यह जला चेहरा —उसी हरामजादे की करतूत है ये—वह तुम्हारा पति बन बैठा है—हुंह—एक विधवा का पति।"

"व...वह मेरा पति नहीं है।" भयभीत रश्मि कह उठी।

"देख रहा हूं।" रूपेश के कण्ठ से गुर्राहट-सी निकली—"तुमने सफेद धोती पहन रखी है—मस्तक पर बिंदी है, न मांग में सिंदूर—न पैरों में बिछुए हैं, न कलाइयों में चूड़ियां—फिर भी पुलिस उसे तुम्हारा पति कहती है और तुम्हारी इस वेशभूषा को देखकर ही मैंने उसे विधवा का पति कहा है।"

"त...तुम यहां क्यों आए हो?"

रूपेश दांत भींचकर गुर्राया—"हरामजादे की बोटी-बोटी नोच डालने के लिए।"

"म...मगर" विशेष को लिए पीछे हटती हुई वह बोली—"इस वक्त वह यहां नहीं है।"

"मैं जानता हूं।"

"फ.....फिर तुम यहां? मेरे कमरे में क्यों आए हो?"

"सुना है कि इस लड़के से वह बहुत प्यार करता है।"

"न...नहीँ।" विशेष को अपने से लिपटाए वह हलक फाड़कर चिल्ला उठी—जबकि उसकी तरफ बढ़ता हुआ रूपेश बड़ी ही खतरनाक मुस्कराहट के साथ कहता चला गया —"मैं इसे यहां से लें जाऊंगा, और फिर जहां मैं उस कुत्ते को बुलाऊंगा, वहां घुटनों के बल रेंगते हुए उसे आना होगा।"

"त...तुम्हें गलतफहमी है। वास्तव में वह वीशू से बिल्कुल प्यार नहीं करता है—इसे प्यार करने का नाटक करके उसने सिर्फ इसे अपने मोहजाल में फंसाया था—केवल इस घर की चारदीवारी में शरण लेने के लिए—वह हत्यारा है, पुलिस से बचने मात्र के लिए वह सर्वेश बना है।"

तभी कमरे के बन्द दरवाजे को किसी ने जोर से खटखटाया।

रूपेश ने बुरी तरह चौंककर पीछे देखा, दरवाजा खटखटाने के साथ ही बूढ़ी मां की आवाज भी सुनाई दी—रश्मि और विशेष की चीखों ने शायद उसे जगा दिया था।

उचित अवसर जानकर रश्मि दरवाजे की तरफ लपकी।

रूपेश ने बिजली की-सी फुर्ती के साथ जेब से रिवॉल्वर निकालकर दस्ते का वार रश्मि की कनपटी पर किया—वार इतना 'सैट' था कि एक चीख के साथ रश्मि वहीं ढेर हो गई।

"म...मम्मी...मम्मी...।" चिल्लाता हुआ विशेष उसे झंझोड़ने लगा।

हड़बड़ाए-से रूपेश ने एक वार उसकी कनपटी पर भी किया—एक चीख के साथ विशेष भी बेहोश हो गया, दरवाजा पीटने के साथ ही बूढ़ी मां ज्यादा जोर से चिल्लाने लगी थी—बौखलाए हुए रूपेश ने रिवॉल्वर जेब में रखा।

एक कागज निकालकर कमरे के फर्श पर फेंकने के बाद विशेष के बेहोश जिस्म को उठाकर उसने कन्धे पर लादा और खिड़की की तरफ दौड़ा।

अगले कुछ ही पलों बाद वह खिड़की के समीप से गुजर रहे 'रेन वाटर पाइप' के सहारे तेजी के साथ उतरता चला जा रहा था।

¶¶

"तू...तू हत्यारा है—कमीने....पापी....मैं तुझे कच्चा चबा जाऊंगी।" दोनों हाथों से युवक का गिरेबान पकड़े उसे झंझोड़ती हुई रश्मि चीखे चली जा रही थी—"बहुत बड़ा जालसाज है तू—पुलिस ठीक ही कहती थी—तूने मुझे ठग लिया है—मैं लुट गई, मेरा बच्चा भी तूने मुझसे छीन लिया—मेरा वीशू....मेरा बेटा लौटाकर दे मुझे।"

इस खबर से युवक को भी शॉक-"सा लगा था कि रूपेश विशेष को ले गया है।

अवाक् और जड़वत्-सा खड़ा रह गया था वह—बूढ़ी मां एक तरफ पड़ी दहाड़े मार-मारकर रो रही थी।

"बोलता क्यों नहीं हत्यारे—बोल, मैं कहती हूं बोल कि मेरे वीशू को लाएगा या नहीं?" पागलों की तरह चीखती हुई रश्मि ने उसे झंझोड़ा, मगर तब भी युवक की तंद्रा भंग न हुई।

रश्मि पुनः चीखी—"अब बोलता क्यों नहीं, बहुरूपिए—अब कह कि तूने किसी रूबी की हत्या नहीं की थी—किसी रूपेश को जिन्दा नहीं जलाया था तूने।"

"प्लीज रश्मि, 'शाही कोबरा' की साजिश को समझने की कोशिश करो—मैंने कहा था कि वह कोई भी चाल चल सकता है, मेरे और तुम्हारे बीच दरार पैदा करने वाली चाल भी—उसने वही किया है—छिड़ी हुई जंग में मेरे द्वारा किए गए हमलों से वह चीखता गया है—मैं उनके बहुत-से रहस्य जान चुका हूं, रश्मि—मुझ पर उनका वश न चला तो अब वीशू को उठा ले गए हैं—केवल इसीलिए कि कहीं मैं सारे राज पुलिस को न बता हूं।"

"म...मैं कुछ नहीं जानती—मुझे वीशू चाहिए—वीशू को वे तभी छोड़ेंगे जब तू खुद को उनके हवाले कर देगा—मगर वीशू तेरा लगता ही कौन है? उसकी जान बचाने के लिए तू भला खुद को उनके हवाले क्यों करने लगा?"

जाने क्यों युवक की आंखें भर आई थीं, बोला—"मैं मांजी की कसम खाकर कहता हूं रश्मि कि खुद अपनी जान दे दूंगा, मगर वीशू को कुछ नहीं होने दूंगा।"

रश्मि अवाक्-सी युवक को देखती रह गई।

"मैं वापस आ सकूं या न आ सकूं, रश्मि—मगर ये वादा रहा कि वीशू यहां जरूर आएगा—मैं उसका बाल भी बांका नहीं होने दूंगा, मगर...।"

"मगर?" आग का एक भभका-सा रश्मि ने उसकी तरफ फेंका।

"जरा शांति के साथ रूपेश द्वारा छोड़े गए इस पत्र को पढ़ लो।"

रश्मि ने पत्र लिया, पढ़ा—

"हम विशेष को ले जा रहे हैं—अगर तुमने पुलिस को कमरा नम्बर पांच-सौ-पांच या 'शाही कोबरा' के हैडक्वार्टर के बारे में हल्की-सी भी जानकारी देने की कोशिश की तो हम विशेष को मार डालेंगे—अगर तुम्हें विशेष को जीवित पाना है तो तुरन्त 'मुगल महल' में आ जाओ।

—'शाही कोबरा'।"

पत्र पढ़कर रश्मि के रोंगटे खड़े हो गए। युवक ने कहा—"अब तुम समझ सकती हो कि रूपेश का सम्बन्ध मेरे द्वारा किए गए किसी हत्याकाण्ड से नहीं, बल्कि 'शाही कोबरा' से छिड़ी मेरी वर्तमान जंग से है—मेरी तलाश में किसी भी क्षण पुलिस यहां आ सकती है। वीशू की बेहतरी के लिए तुम उससे कुछ नहीं कहोगी।"

¶¶

उसने 'मुगल महल' में कदम रखा। देखते-ही-देखते चार गुण्डों ने उसे घेर लिया। युवक को यह समझने में देर नहीं लगी कि अब वह कैद है।

चार में से एक ने उसे अपने पीछे चले आने का संकेत किया—विवश युवक चुपचाप पीछे चल दिया—शेष तीनों उसे तीन तरफ से घेरे हुए थे, उनके हाथ जेब में थे और युवक समझ सकता था कि उनकी जेब में रिवॉल्वर पड़े हैं।

कई गैलरियों में से गुजरते हुए वे उसे कमरा नम्बर पांच-सौ-पांच के सामने ले गए, कमरे का दरवाजा बन्द था।

एक ने विशेष अन्दाज में दस्तक दी।

यहां सन्नाटा था, अत: शेष तीनों भी उसके नजदीक आ गए—दरवाजा सरसराकर स्वयं ही खुल गया—एक साथ तीनों रिवॉल्वरों की नालें उसके जिस्म से चिपक गईं।

दो पसलियों से, एक पीठ पर।

उसे कवर किए वे अन्दर दाखिल हो गए—दरवाजा स्वयं ही बंद।

युवक समझ गया कि गैंग का चीफ अपने बिल में बैठा शायद किसी टीoवीo स्क्रीन पर उन्हें देख रहा था और ये दरवाजे आदि कुछ बटनों के माध्यम से उसकी उंगलियों के इशारे पर ही खुल और बन्द हो रहे थे।

सरसराकर कमरे के बीच का फर्श एक तरफ हट गया।

अब वहां नीचे उतरने के लिए खूबसूरत टायलदार चिकनी सीढ़ियां नजर आने लगीं —रिवॉल्वरों के साए में युवक उन पर उतरता चला गया—घुमावदार सीढ़ियां तय करके वे एक गैलरी में पहुंचे।

हल्की सरसराहट के साथ रास्ता बन्द हो गया।

तहखाने की उस गैलरी में लाइट का समुचित प्रकाश था।

फिर वे उस हॉल में पहुंच गए, जिसका दृश्य पाठक पहले भी कई बार पढ़ चुके हैं। दीवारों के सहारे सशस्त्र गार्ड खड़े थे। हरी वर्दी—लाल बैल्ट—लाल कैप वाले गार्ड।

युवक को मंच के काफी नजदीक ले जाकर खड़ा कर दिया गया।

अचानक ही मंच की छत पर लगा बल्ब लपलपाया और मंच पर नजर आया चमकीले लिबास वाला नकाबपोश—युवक के जेहन में बड़ी तेजी से वह हाथ चकरा उठा, जिसे उसने न्यादर अली पर फायर करते देखा था।

"त...तुम?" युवक के मुंह से अनायास ही निकल पड़ा।

"हां, हम।" मंच से बॉस की आवाज उभरी—"बहुत तूफान उठा रखा है तुमने।"

"क्या तुम वही हो जिसने न्यादर अली का मर्डर किया है?"

"बूढ़े का मरना जरूरी हो गया था, क्योंकि उसे 'शाही कोबरा' समझकर तुमने बहुत-से रहस्य बता दिए थे—ऐसे कि हमारा यह हैडक्वार्टर ही खतरे में पड़ जाता।"

"तो 'शाही कोबरा' तुम हो?"

"'शाही कोबरा' तुम जैसे कुत्तों से बात नहीं किया करते—मैं उनका छोटा-सा खादिम हूं और तुम जैसे लोगों से मैं ही निपट लेता हूं।"

"मैं 'शाही कोबरा' से बात करना चाहता हूं।"

"ऐसे खूबसूरत ख्वाब देखने छोड़कर तुम जरा ऊपर देखो बेटे।" बॉस के इस वाक्य के तुरन्त बाद हॉल में विशेष की आवाज गूंजी—"पापा...पापा...।"

युवक ने एक झटके से ऊपर देखा।

हॉल की छत करीब तीस फुट ऊपर थी और वहां उल्टा झूल रहा विशेष उसे नजर आया। युवक के समूचे जिस्म में अजीब-सा तनाव उत्पन्न हो गया।

दो पतले तार हॉल के इस सिरे से उस सिरे तक छत के समानान्तर बंधे हुए थे। उन लोहे के तारों में लोहे का एक-एक छल्ला पड़ा था और इन छल्लों से दो रस्सी के छोटे टुकड़ों द्वारा विशेष के पैर सम्बद्ध थे।

उल्टा लटका हुआ था वह। तारों पर छल्ले फिसल रहे थे।

युवक का चेहरा लाल-सुर्ख हो गया। मुट्ठियां और दांत भिंच गए—गुस्से की अधिकता के कारण अभी वह बुरी तरह कांप ही रहा था कि बॉस की आवाज गूंजी —"हमारे एक इशारे पर वह सिर के बल फर्श पर जा गिरेगा और फिर उसके सिर के अंजाम की कल्पना तुम कर सकते हो।"

"मुझे बचाओ, पापा।" विशेष की आवाज ने युवक की रगें फड़का दीं—वह एकदम मंच की तरफ देखकर गुर्राया—"म...मैंने खुद को तुम्हारे हवाले कर दिया है, वीशू को छोड़

दो।"

"अभी कहां बेटे—तमाशा तो अब शुरू हुआ है।" व्यंग्यात्मक लहजे में कहने के बाद बॉस ने किसी को पुकारा—"गुल्लू।"

"यस बॉस।" पंक्ति से दो कदम आगे निकलकर जो कद्दावर व्यक्ति आया, उसकी बाईं आंख पर हरे रंग की एक 'आई-कैप' थी।

"इस हरामजादे की जेब में शायद एक रिवॉल्वर है—उसे निकाल लो।"

गुल्लू युवक की तरफ बढ़ा। उसके नजदीक पहुंचने के बीच बॉस ने चेतावनी दी —"अगर तुमने हरकत की तो बच्चा नीचे जा गिरेगा।"
युवक अपने स्थान पर खड़ा कांपता रहा।

विशेष की चीखें हॉल में लगातार गूंज रही थी—युवक कुछ भी न कर सका और गुल्लू ने ना केवल उसकी जेब से रिवॉल्वर निकाल लिया, बल्कि पूरी तलाशी ले डाली।

बॉस ने पुकारा—"रूपेश!"

"यस बॉस।"

"तुम्हारा शिकार सामने है।"

युवक की दृष्टि रूपेश पर जम गई। रूपेश की आंखों में लहू नाच रहा था—उसके जले हुए चेहरे पर भयानकता को देखकर एक बार को तो युवक भी सिहर उठा—युवक तक पहुंचने से पहले ही रूपेश ने गुल्लू से युवक की जेब से निकला रिवॉल्वर ले लिया।

हॉल में बॉस की आवाज गूंजी—"हमसे पहले तुम रूपेश के मुजरिम हो, अब रूपेश जो चाहेगा, तुम्हें सजा देगा।"

युवक के बहुत नजदीक आकर रूपेश गुर्राया—"उस बच्चे से शायद तू उतना ही प्यार करता है, जितना मैं माला से करता था।"

"न..नहीं रूपेश।" युवक गिड़गिड़ा उठा—"व...वीशू ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है—तुम्हारा मुजरिम मैं हूं—बदला लेना है तो मुझसे लो—वीशू मेरा कोई नहीं है—एक विधवा का आखिरी सहारा है वह—उसे छोड़ दो।"

"हुंह।" दिल में भरी घृणा जब रूपेश ने अपने चेहरे पर उड़ेली तो उसका डरावना चेहरा कई गुना ज्यादा वीभत्स हो गया। गुस्से में सुलगता हुआ वह बोला—"उसे छोड़ हूं जिसकी मौत पर तू वैसे ही तड़पेगा जैसा माला की मौत पर रूपेश तड़पा था—मरेगा तू भी कुत्ते, तेरी मौत का मंजर भी मैं अपनी आँखों से देखूंगा, मगर उसमें यह मजा नहीं आएगा, जो बच्चे की मौत पर तेरी तड़प देखने में आएगा।"

“ऐसा मत करो रूपेश—प्लीज।"

"धांय।" एक फायर करने के साथ ही रूपेश ने अट्ठहास लगाया।

युवक पूरी ताकत से चीख पड़ा—"न.....नहीँ।"

विशेष के एक पैर की रस्सी टूट चुकी थी। अब वह एकमात्र पैर पर एक कुन्दे में झूलता चीख रहा था—"मुझे बचा तो पापा....पापा।"

रूपेश हंसा—"हा-हा-हा.....उसे देख कुत्ते...देख उसे।"

"प...प्लीज़, वीशू को छोड़ दो....उसे जाने दो।" युवक पागलों की तरह रूपेश के पैरों में गिरकर गिड़गिड़ाया, परन्तु रूपेश के मुंह से निकलने वाले खूनी कहकहे बुलन्द और बुलन्द होते चले गए। उसका रिवॉल्वर वाला हाथ दूसरा फायर करने की पोजीशन में आया और—धांय।”

हॉल में फायर की आवाज गूंजी, मगर ऐन वक्त पर दीवाने-से हो गए युवक ने रूपेश के दोनों पैर पकड़कर खींच लिए थे। परिणामस्वरूप न केवल निशाना चूक गया, बल्कि खुद रूपेश चारों खाने चित्त फर्श पर गिरा।

रिवॉल्वर उसके हाथ से निकलकर दूर तक फिसलता चला गया।

जिन्दगी और मौत की परवाह किए बिना युवक ने रूपेश पर जम्प लगा दी—सारे हॉल में सनसनी-सी दौड़ गई। दीवारों के सहारे खड़े सशस्त्र गार्ड्स ने गनें सीधी कर लीं और तभी मंच से बॉस की आवाज गूंजी—"कोई बीच में नहीं आएगा।"

सभी लोग हैरत से मंच की तरफ देखने लगे।

"हम उसका हाथ जरा देखना चाहते हैं, जिसने एक साथ रंगा-बिल्ला का न केवल मुकाबला किया, बल्कि बिल्ला को मार भी डाला—सुनो रूपेश, अपने मुजरिम से निपटने का हम तुम्हें पूरा मौका दे रहे हैं।"

रूपेश और युवक में मल्लयुद्ध तो छिड़ चुका था।

बॉस की उक्त घोषणा से युवक का साहस बढ़ा। छत पर उल्टा लटका हुआ विशेष बुरी तरह चीख रहा था, मगर फिलहाल उसकी तरफ किसी का ध्यान नहीं था।

धड़कते दिल से सभी रूपेश और युवक को देख रहे थे—उन्हें, जो एक-दूसरे के खून के प्यासे हुए जंगली भेड़ियों की तरह भिड़े हुए थे—लड़ने के तरीके निश्चय ही युवक ज्यादा जानता वा, किन्तु कम रूपेश भी नहीं था।

शारीरिक ताकत में युवक से कुछ इक्कीस ही था।

रूपेश का दांव लगा। युवक को उसने अपने दोनों हाथों से सिर के ऊपर उठा लिया। किसी दांव का इस्तेमाल करने के लिए युवक अभी हाथ-पांव मार ही रहा था कि रूपेश ने उसे पूरी ताकत से फर्श पर दे मारा।

युवक का सिर बहुत ही जोर से फर्श पर टकराया।

रंगबिरंगी चिंगारियों के बाद मस्तिष्क पर गहरे काले रंग की चादर तनती चली गई और बेहोश होकर वह एक तरफ लुढ़क गया।

¶¶

जब चेतना लौट रही थी, तब उसने महसूस किया कि इस वक्त वह ढेर सारी रस्सियों के द्वारा मजबूती से एक थम्ब के साथ बंधा हुआ है—उसके मस्तिष्क पटल पर बेहोश होने से पूर्व के दृश्य उभरने लगे।

एक फियेट की ड्राइविंग सीट पर वह स्वयं था।

बहुत तेज, अंधाधुंध ड्राइविंग कर रहा था वह—तभी सामने से एक ट्रक आया। उससे भी कहीं ज्यादा तेज और अंधाधुंध।

बचने के लिए उसने स्टेयरिंग घुमाया, मगर ट्रक बिल्कुल रांग साइड पर आ गया।

एक पल...सिर्फ एक पल के लिए वह ड्राइवर का चेहरा देख पाया था, क्योंकि अगले ही पल कर्णभेदी विस्फोट के साथ कार और ट्रक
में आमने-सामने की टक्कर हो गई।

बस—उसके बाद उसे अस्पताल में होश आया था।

डॉक्टरों ने उससे नाम पूछा। वह बता नहीं सका—डॉक्टर इस नतीजे पर पहुंचे कि वह अपनी याददाश्त गंवा बैठा है—सचमुच उसे कुछ भी याद नहीं रहा था।

मगर अब उसे सब कुछ याद आ रहा था।

अपना नाम भी।

"आंखें खोलो बेटे।" व्यंग्य में दूबी एक आवाज उसके कानों से टकराई।

युवक की विचार शृंखला भंग हो गई—आवाज उसे परिचित-सी लगी थी—दर्द से कराहते हुए उसने आंखें खोल लीं—पहले उसे सब कुछ धुंधला-धुंधला-सा नजर आया—युवक को स्थान जाना-पहचाना-सा लगा।

जैसे यहां पहले भी आया हो।

"पापा...पापा।" एक बच्चे की पुकार सुनकर उसने छत की ओर देखा। बच्चे को

उसने पहचान लिया—वह विशेष था—अस्पताल में होश आने से लेकर पुनः बेहोश होने तक के सभी दृश्य चलचित्र के समान मस्तिष्क पटल पर तैर गए।

"उधर देखो बेटे, अपने पेट पर।" बॉस की आवाज सारे हॉल में गूंज गई और मंच की तरफ विशेष रूप से बॉस को देखकर उसके चेहरे पर अजीब-से भाव उभर आए—घबराकर उसने अपने पेट की तरफ देखा।

पेट पर कपड़े की एक बैल्ट के साथ बम बंधा हुआ था।

इस बम का पलीता बहुत लम्बा था। हॉल के सबसे दूर वाले किनारे तक—वह इस बम और विशेष रूप से लम्बे पलीते का अर्थ नहीं समझ सका। हाथ-पैर आदि थम्ब के साथ बंधे थे, स्वेच्छा से हिल तक नहीं सकता था।

बॉस की आवाज गूंजी—"तुमने रंगा के माध्यम से एक खिलौने को बम कहकर हमें दूसरा कमाल दिखाया था और उसी के जवाब में अब हम तुम्हें तुम्हारे पेट पर बंधे बम का कमाल दिखाएंगे, मगर यह खिलौना नहीं है।"

युवक के जबड़े अजीब-से अन्दाज में कस गए थे।

"तुम्हारी मौत का यह तरीका 'शाही कोबरा' ने चुना है—रूपेश अपने हाथ से पलीते के सिरे पर चिंगारी लगाएगा—वह चिंगारी पलीते पर धीरे-धीरे चलती हुई तुम्हारी तरफ बढ़ेगी और तुम्हारे देखते ही देखते बम तक पहुंच जाएगी—एक जबरदस्त विस्फोट होगा—और फिर तुम्हारे जिस्म के चीथड़े बिखर जाएंगे।"

मौत की ठंडी लहर के स्थान पर युवक के जिस्म में क्रोध की लहर दौड़ गई।

इस हॉल को, हॉल में मौजूदा एक-एक व्यक्ति को, यहां तक कि मंच पर मौजूद बॉस को भी जानता था वह। उसे अच्छी तरह याद आ गया कि जिस ट्रक से उसका एक्सीडेंट हुआ था—उसे वही गुल्लू नामक व्हाइट आई कैप वाला व्यक्ति ड्राइव कर रहा था।

युवक के दिमाग की सारी गुत्थियां सुलझती चली गईं। एक के बाद एक सारी वारदातें, सारी बातें उसे याद आती चली गईं। जाने किस बात को याद करके उसका सारा जिस्म असीम क्रोध एवं अत्यधिक उत्तेजनावश कांप उठा।

तभी बॉस ने कहा—"पलीते में आग लगा दो रूपेश।"

पलीते के सिरे के पास खड़े रूपेश ने लाइटर जलाया।

"ठहरो।" युवक के कण्ठ से एक विशेष भर्राटदार आवाज निकली और इस आवाज को सुनकर न सिर्फ रूपेश लड़खड़ा गया, पंक्तिबद्ध खड़े गुण्डे और दीवारों के सहारे खड़े सशस्त्र गार्ड उछल पड़े, बल्कि स्वयं बॉस के पैरों के तले से जमीन खिसक गई।

हॉल में मौजूद प्रत्येक व्यक्ति के मुंह से हैरत में डूबा स्वर निकला—"श...शाही कोबरा?"

"हां।" युवक के मुंह से वही भर्राहटदार आवाज निकली थी—"मैं 'शाही कोबरा' हूं—ध्यान से मेरी आवाज सुनो—मैं ही 'शाही कोबरा' हूं।"

बुरी तरह आतंकित और बौखलाया हुआ बॉस चीख पड़ा—"ये झूठ बोलता है।"

"झूठा तू है कुत्ते—गद्दार—नमकहराम।" थम्ब से बंधा युवक दांत भींचकर गुर्रा उठा—"इसे पकड़ लो रूपेश, यहां से भागने न पाए।"

"बेवकूफी मत करना रूपेश—यह इस हरामजादे की नई चाल है—जाने कहां से इसने 'शाही कोबरा' की आवाज की नकल करनी सीख ली है। मैं कहता हूं क्विक, पलीते में आग लगा दो।"

"खबरदार रूपेश, यह गद्दार है—हमारी याददाश्त गुम हो गई थी—हमें मारकर यह सारे गैंग पर अपना कब्जा...।"

"धांय। मंच की ओर से एक शोला लपका।

हैरअंगेज ढंग से उछलकर गुल्लू युवक की ढाल बन गया। गोली गुल्लू के सीने में लगी और एक चीख के साथ वह वहीं शहीद हो गया।

गार्ड्स की गनें गरज उठीं।

सबका निशाना मंच पर मौजूद बॉस था, मगर गोलियां उसके चांदी के चमकदार लिबास से टकराकर छितरा गईं और अगले ही पल बॉस मंच के उसी कोने में विलीन हो गया, जिसमें से प्रकट हुआ करता था।

युवक चीख पड़ा—"वह नमकहराम भागने की कोशिश कर रहा है रूपेश, जल्दी से मंच पर पहुंचो—दाईं दीवार में एक स्विच प्लेट है—उस प्लेट का लाल रंग का बटन दबा दो, जल्दी करो।"

और रूपेश के जिस्म में जैसे बिजली भर गई।

एक ही पल पहले वह जिसकी जान का ग्राहक था, उस पल उसके आदेश का गुलाम की तरह पालन करता हुआ एक ही जम्प में मंच पर पहुंच गया।

"हमें मुक्त करो।" युवक ने जोर से कहा।

हॉल में मौजूद सभी व्यक्ति उसके आदेश का पालन करने के लिए लपक पड़े।

सबसे पहले एक गार्ड ने उसके जिस्म से बहुत ही सावधानी के साथ बम अलग

किया और फिर रस्सियों से मुक्त होते उसे देर नहीं लगी—इस बीच रूपेश उसके हुक्म का पालन कर चुका था। युवक ने आंधी-तूफान की तरह दौड़ लगाई।

"आप सब यहां रहें, मैं उस नमकहराम को आपके सामने ही सजा देना पसन्द करूंगा।"

कहने के तुरन्त बाद युवक ने मंच के उसी भाग में जम्प लगा दी, जिसमें बॉस गुम हुआ था। रूपेश सहित हॉल में मौजूद प्रत्येक व्यक्ति हक्का-बक्का-सा खड़ा रह गया, जबकि मंच के उस दरवाजे को पार करने के बाद युवक एक बहुत ही संकरी गैलरी में दौड़ा चला जा रहा था। तीन मोड़ पार करने के बाद वह खूबसूरती से सजे एक छोटे कमरे में पहुंचा।

वहां एक डैस्क और डैस्क के पीछे दो टी०वी० रखे थे।

डैस्क पर बहुत-से बटन थे।

युवक ने जल्दी से उनमें से एक बटन दबा दिया, कमरे के बीच का एक छोटा हिस्सा सरसराकर हट गया, अब वहां चक्करदार लोहे की सीढ़ी नजर आ रही थी—आंधी-तूफान की तरह उतरता हुआ वह नीचे पहुंचा।

एक काफी चौड़ी गैलरी में वह भागा चला जा रहा था।

शीघ्र ही गैलरी के अंतिम सिरे पर पहुंच गया—वहीं, जहां चमकीले लिबास वाला बॉस इस्पात के बने एक दरवाजे का हैंडिल पकड़कर उससे जूझ रहा था। गैलरी के इस सिरे से उस सिरे तक शानदार कार्पेट बिछा हुआ था।

बॉस को यूं दरवाजे से जूझता देखकर युवक के होंठों पर पैशाचिक मुस्कान उभरी। अपने स्थान पर खड़ा होकर वह गुर्राया—"सात जन्म तक जोर लगाने के बावजूद वह नहीं खुलेगा साठे, उसका लॉक हॉल के मंच पर है और वह मैं बन्द करा चुका हूं।"

चमकीले लिबास वाले ने अपना नकाब उतारकर एक तरफ फेंक दिया, वह 'मुगल महल' का मैनेजर साठे ही था। एक झटके से रिवॉल्वर निकालकर तानता हुआ गुर्राया —"वहीं रुक जाओ सिकन्दर, वरना मैं तुम्हें शूट कर दूंगा।"

सिकन्दर इस तरह मुस्कराया, जैसे किसी छोटे-से बच्चे ने खिलौना रिवॉल्वर दिखाकर उसे धमकी दी हो, बोला—"अब मैं याददाश्त खोया हुआ युवक नहीं बेटे, इस सारे 'डैन' का मालिक हूं—'शाही कोबरा'—मेरी इजाजत के बिना यहां एक पत्ता भी नहीं हिल सकता—फायर करने से पहले जरा अपने पीछे का नजारा देख लो।"

बौखलाकर साठे ने पीछे देखा और इसी क्षण सिकन्दर ने झुककर फर्श पर बिछे कार्पेट को एक झटका दिया, कार्पेट के उस किनारे पर खड़ा साठे चारों खाने चित्त गिरा।

रिवॉल्वर उसके हाथ से छूट गया था।

सिकन्दर ने किसी जख्मी गोरिल्ले की तरह उस पर जम्प लगाई। हवा में लहराकर वह सीधा साठे के ऊपर जा गिरा।

साठे महसूस कर रहा था कि वह मौत के जबड़े में फंस चुका है।

¶¶

उस चौंका देने वाले रहस्य के खुलने पर काफी गहमा-गहमी के बाद हॉल में अब सन्नाटा व्याप्त था और उस वक्त तो सन्नाटा कुछ और ज्यादा बढ़ गया, जब मंच पर हॉल में मौजूद प्रत्येक व्यक्ति को 'शाही कोबरा' यानि वही युवक नजर आया—कुछ ही देर पहले जिसके मरने की तैयारियों थीं—इस वक्त उसके कन्धों पर बेहोश साठे था। जिस्म पर वही चमकीला लिबास, परन्तु नकाबरहित चेहरा।

मंच ही से पूरी बेरहमी के साथ सिकन्दर ने साठे को हॉल के फर्श पर फेंक दिया, बोला—"इसे उसी थम्ब के साथ बांध दो, जिसके साथ तुम सबको धोखे में डालकर इसने हमें बंधवा दिया था।"

रूपेश के साथ अन्य तीन व्यक्ति इस आदेश का पालन करने में जुट गए।

मंच पर खड़े सिकन्दर ने ऊपर लटक रहे विशेष को देखा, उसी स्थिति में लटका हुआ अब तक यह बेहोश हो चुका था। सिकन्दर की आंखों के सामने रश्मि का चेहरा नाच उठा।

विशेष को यहां से उतारने का हुक्म जारी करते ही चार व्यक्ति उस हुक्म का पालन करने में जुट गए और दस मिनट बाद ही विशेष के बेहोश जिस्म को मंच पर पहुंचा दिया गया। विशेष को लिए सिकन्दर मंच का दरवाजा पार करके संकरी गैलरी से गुजरकर खूबसूरती से सजे कमरे में पहुंचा।

डेस्क का एक बटन दबाते ही कमरे की बाईं दीवार में एक दरवाजा प्रकट हो गया। विशेष को गोद में लिए सिकन्दर उस कमरे में पहुंचा, कमरे में मौजूद बेड पर उसने आहिस्ता से विशेष को लिटा दिया।

विशेष के मासूम चेहरे पर नजर पड़ते ही सिकन्दर के दिल में जाने कैसे अरमान मचले कि उसने झुककर विशेष को चूम लिया—फिर उस मासूम बच्चे को किसी दीवाने के समान सिकन्दर चूमता ही चला गया—आंखें भर आईं उसकी।

फिर तेजी के साथ कमरे से बाहर निकला। डैस्क पर मौजूद बटन को ऑफ करते ही दरवाजा बन्द हो गया—वह तेज कदमों के साथ मंच पर पहुंचा।

साठे को थम्ब के साथ बांधा जा चुका था।

हॉल में मौजूद एक-एक व्यक्ति पर नजर डालने के बाद सिकन्दर ने 'शाही कोबरा' वाली आवाज़ में कहा—"आप सब लोग चकित होंगे कि यह सब क्या और कैसे हो गया है, 'शाही कोबरा' होने के बावजूद मैं उस थम्ब तक कैसे पहुंच गया—संयोग से मेरी शक्ल तो आप देख ही चुके हैं, मगर नाम अभी तक नहीं जानते, मैं अपनी एक लम्बी कहानी बहुत संक्षेप में सुनाता हूं, इस कहानी में आप लोगों को उन हर सवालों का जवाब मिल जाएगा जो आप लोगों के जेहन में चकरा रहे हैं।"

हॉल में खामोशी छाई रही, साठे अभी तक बेहोश था।

"मैं बहुत ही विचित्र व्यक्ति हूं—खुद को विचित्र सिर्फ इस मायने में कह रहा हूं कि मैंने एक ही जन्म में दो जिन्दगियां जी हैं—एक अपनी वास्तविक जिन्दगी, दूसरी वह जो याददाश्त खोने के बाद मैंने जी—और दुर्भाग्य की बात यह है कि वे दोनों ही जिन्दगियां गुनाहों से भरी हैं।"

वह सांस लेने के लिए रुका, हॉल में ऐसी खामोशी थी कि चींटी के रेंगने तक की आवाज सब सुन सकें। सिकन्दर ने आगे कहा—"मेरे ख्याल से हर व्यक्ति अपने जन्म के साथ ही कोई खास प्रवृत्ति, गुण या आर्ट लेकर पैदा होता है, उसे हम "गॉड गिफ्ट' अर्थात प्रकृति द्वारा दिया गया तोहफा कहते हैं—मेरा नाम सिकन्दर है और मैंने इस होटल के मालिक यानि न्यादर अली के घर जन्म लिया—आप सभी जानते हैं कि न्यादर अली एक करोड़पति हस्ती थी और उसके बेटे को कम-से-कम दौलत के लिए कोई गैरकानूनी काम करने की जरूरत नहीं थी, परन्तु 'गॉड गिफ्ट' के रूप में शायद मुझे 'अपराध प्रवृत्ति' मिली थी। तभी तो जवान होते ही मैंने इस गैंग का गठन किया।"

सभी धड़कते दिल से 'शाही कोबरा' का बयान सुन रहे थे।

सिकन्दर ने आगे कहा—"मेरे डैडी का बहुत बड़ा बिजनेस है, इतना ज्यादा फैला हुआ कि यह 'मुगल महल' तो उस बिजनेस का एक जर्रा है—वे साल में यहां मुश्किल से दो या तीन बार ही आते थे—और मुझे यानि अपने मालिक के लड़के को तो 'मुगल महल' के स्टॉफ ने कभी देखा ही नहीं था—न्यादर अली होटल का बिजनेस नहीं करना चाहते थे—मैंने ही जिद करके इस होटल का निर्माण कराया—होटल का बिजनेस करना मेरा मकसद भी नहीं था—मेरी 'गॉड गिफ्ट' मुझे जुर्म करने के लिए उकसा रही थी और उसी मकसद से मैंने 'मुगल महल' के नीचे यह तहखाना बनवाया—साठे मेरा कोलिज का दोस्त है, यह भी अपराध प्रवृत्ति का है, अत: डैडी से कहकर मैंने उसे प्रत्यक्ष में 'मुगल महल' का मैनेजर बनवा दिया—औरों को इस बात की भनक भी नहीं थी कि होटल के नीचे हमने कुछ खिचड़ी पकने के लिए एक तहखाना भी बनवाया है।

"हम दोनों ने मिलकर एक गैंग खड़ा कर लिया, आर्थिक रूप से कमजोर न होते हुए भी मैंने 'गॉड गिफ्ट' से विवश होकर स्मगलिंग शुरू कर दी—मैँ 'शाही कोबरा' बन गया—साठे को बॉस यानि गैंग का दूसरे नम्बर का लीडर बना दिया—आप लोग मुझे मेरी

आवाज से पहचानते थे—मैं यहां कभी-कभी आया करता था—वह भी छुपकर—एक गुप्त दरवाजे के माध्यम से होटल में मैं कभी नहीं आया—यही डैडी भी समझते थे—आप सब लोग मेरे हुक्म के पाबन्द थे—भले ही वह अक्सर साठे के द्वारा मिलता हो।

"मेरी एक बहन भी थी—सायरा मैं उससे बेइन्तहा प्यार करता था, मगर एक सुबह उसके कमरे में उसकी निर्वस्त्र लाश पाई गई—फर्श पर पड़ी आंखें फाड़े मेरी सायरा कमरे की छत को घूर रही थी—किसी ने गला घोंटकर उसकी हत्या कर दी थी और मैं उस हत्यारे से बदला लेने के लिए पागल हो उठा—मगर बदला लेता कैसे—किससे—मुझे नहीं मालूम था कि सायरा को क्यों और किसने मारा है—बदला लेने के लिए तड़पता हुआ मैं अपने उद्‌गार साठे के सामने व्यक्त करता रहता, यह हकीकत तो मुझे काफी समय गुजर जाने के बाद पता लगी कि सायरा का हत्यारा मेरा दोस्त, मेरा विश्वसनीय साठे ही था।"

"स...साठे?' हॉल में मौजूदा सभी लोगों के मुंह से हैरत में डूबा स्वर निकला और सबकी नजर थम्ब के साथ बंधे साठे की तरफ उठ गई।

"हां—साठे ही ने सायरा की हत्या की थी, खैर।" एक ठण्डी सांस भरते हुए सिकन्दर ने कहा—"इस कहानी का बाकी हिस्सा मैं आप तीनों को एक अन्य छोटी-सी कहानी सुनाने के बाद सुनाऊंगा और यह छोटी-सी कहानी यह है कि एक दिन साठे ने मुझे बताया कि सर्वेश नाम का एक हू-ब-हू मेरी शक्ल का युवक 'मुगल महल' में निकली कैशियर की वैकेन्सी के लिए इन्टरव्यू देने आया था—साठे ने मुझे उसका फोटो दिखाया तो मैं दंग रह गया—सचमुच सर्वेश और मैं एक ही कार्बन से बने पोजिटिव थे—सर्वेश को नौकरी दे दी गई—धीरे-धीरे हमने उसे इस गैंग में शामिल कर लिया—मैंने और साठे ने सोचा था कि यदि कभी दुर्भाग्य से पुलिस के हाथ "'शाही कोबरा" का फोटो लग गया तो हम सर्वेश की लाश कानून तक पहुंचा देंगे—उन हालात में कानून को चकमा देने के लिए मुझे सर्वेश भी बनना पड़ सकता है, इसीलिए मैंने सर्वेश के हाव-भाव, चाल-ढाल और बातचीत करने के अन्दाज को रीड करके उनकी नकल करने की प्रैक्टिस शुरू की—मुझमें और सर्वेश में एक बड़ा फर्क यह था कि वह 'राइट हैण्डर' या और में लैफ्ट हैण्ड, किन्तु प्रैक्टिस के बाद मैं भी सीधे हाथ का उपयोग उतने ही स्वाभाविक ढंग से करने लगा, जितने स्वाभाविक ढंग से बाएं हाथ का करता था—मैं मुसलमान हूं—किसी मुसीबत के समय मुंह से "खुदा" ही निकलता था और प्रैक्टिस के बाद मेरी जुबान इतनी 'रवां' हो गई कि स्वाभाविक रूप से मेरे मुंह से हे 'भगवान' ही निकलने लगा—कहने का मतलब यह कि अब मैं समय पड़ने पर खुद को कभी भी सर्वेश साबित कर सकता था। मगर जैसा सब कुछ सोचकर मैं और साठे सर्वेश को गैंग में लाए थे, वैसा समय कभी आया ही नहीं और उससे पहले ही हुआ यह कि सर्वेश इस भेद को जान गया कि गैंग का बॉस मैनेजर साठे है—हमारे लिए सर्वेश को खत्म कर देना जरूरी हो गया और तब, आप जानते ही हैं कि मैं उसे मंच के पीछे अपने 'सीक्रेट रूम' में ले गया—उस वक्त मेरे चेहरे पर नकाब था, अत: वह नहीं देख सकता था कि मेरी शक्ल उससे मिलती है—मैंने उसे यह आश्वासन

देते हुए बीयर पिलाई कि अगर वह साठे के बारे में किसी को कुछ नहीं बताएगा तो उसे एक करोड़ रुपया दिया जाएगा—यह सौदा उसने स्वीकार कर लिया था, किन्तु किस कम्बख्त को उसे एक करोड देने थे—बीयर में ऐसा जहर था, जिसे पीने के दस मिनट बाद ही वह मर गया और तब मैंने उसकी लाश रंगा-बिल्ला को रेल की पटरी पर डाल आने का हुक्म दिया—उसके चेहरे को क्षत-विक्षत कर देने का उद्देश्य यह था कि कहीं मेरे परिचित उसे मेरी ही लाश न समझ लें।"

सिकन्दर ने एक लम्बी सांस लेने के बाद आगे बताया—"हेलेन नाम की एक लड़की थी, जिससे साठे के नाजायज सम्बन्ध थे—आप सभी जानते हैं कि स्मगलिंग का माल इधर-से-उधर करने के लिए हमारा गैंग कभी भी अपनी गाड़ियां प्रयोग नहीं करता है—चोरी की गाड़ियां" इस्तेमाल की जाती हैँ—तुम्हें याद होगा मुकेश कि आज से करीब चार महीने पहले हमने तुम्हें 'हेरोइन' स्मग्ल करने का हुक्म दिया था?"

"मुझे याद है 'शाही कोबरा'।" हॉल में मौजूद एक युवक ने कहा।

"उस हेरोइन को स्मग्ल करने के लिए किसकी गाड़ी चुराई थी तुमने?"

"प्रीत विहार में रहने वाले किसी अमीचन्द जैन की फियेट थी वह—मैंने वह जैन के गैराज का ताला तोड़कर चुराई थी।"

"फिर तुमने क्या किया?"

"काम पूरा करके लौटने में मुझे सुबह के आठ बज गए—तब 'बॉस' ने कहा कि दिन में फियेट को कहीं छोड़कर आना खतरनाक है, अत: रात होने पर यह किया जाए कि गाड़ी एक दिन के लिए होटल के सीक्रेट गैराज में खड़ी कर दी जाए।"

"बस, उसी दिन दस बजे के करीब मैं कैडलॉक लेकर होटल के सीक्रेट गैराज में पहुंचा।" सिकन्दर ने बताया—"गाड़ी गैराज में खड़ी करके गुप्त रास्ते से इस तहखाने में आ रहा था कि तहखाने के एक कमरे से मुझे साठे और हेलेन के बातें करने की आवाज आई—उनकी बातचीत में सायरा का नाम सुनकर मैं चौंक पड़ा और दरवाजे के बाहर ही खड़ा होकर उनकी बातें सुनने लगा—उन बातों से मुझे मालूम हुआ कि साठे नाम का वह कमीना, जिसे मैं अपना दोस्त समझता था, मेरी बहन पर बुरी नजर रखता था, एक रात बलात्कार की नीयत से वह सायरा के कमरे में जा घुसा—सायरा से उसने जबरदस्ती की—मेरी बहन के सारे कपड़े उतारकर फेंक दिए, तब भी अपना मुंह काला करने में सफल न हो सका और इसने गला घोंटकर सायरा को मार डाला।

"यह सब कुछ स्पष्ट हो जाने के बाद मैं गुस्से से पागल हो गया, अपने आपे में न रहा और रिवॉल्वर निकालकर उस कमरे में घुस गया—मैंने साठे पर फायर किया, मगर गोली हैलेन को लगी—हेलेन वहीं ढेर हो गई, परन्तु साठे बौखलाकर भाग निकला—अब मैं साठे को किसी भी कीमत पर नहीं छोड़ सकता था और खुद को बचाने के लिए साठे का

मुझे मारना जरूरी हो गया था—साठे गैराज से मेरी कैडलॉक लेकर भागा—मैं उसके पीछे फियेट लेकर—हड़बड़ाहट में मेरे हाथ से जाने कहां रिवॉल्वर छूट गया—मगर भागने से पहले मैँ हेलेन के गले से अपना सोने का नेकलेस निकाल चुका था—उसी दिन स्मग्लिंग का माल लिए गुल्लू एक ट्रक द्वारा हरियाणा से आ रहा था। संयोग से हमारी कारें भी रोहतक रोड पर निकल गईं—अंधाधुन्ध ड्राइविंग करता हुआ मैं कैडलॉक का पीछा कर रहा था—तभी साठे ने एक चाल चली—ट्रासमीटर पर उसने गुल्लू को आदेश दिया कि यह ट्रक को फियेट से टकरा दे—मेरी फियेट का नम्बर उसने गुल्लू को बता दिया और गुल्लू बेचारा क्या जानता था कि फियेट में उसका 'शाही कोबरा' ही है—अपने 'बॉस' के हुक्म को 'शाही कोबरा' का हुक्म जानकर ही उसने ट्रक को फियेट से टकरा दिया।"

सिकन्दर थोड़ा गुस्से में नजर आने लगा था। वह कहता ही चला गया—"हालांकि साठे ने यह एक्सीडेण्ट मुझे खत्म कर देने की मंशा से कराया था, किन्तु मैं जीवित बच गया और यह पता लगने पर कि मैं अपनी याददाश्त गंवा बैठा हूं, साठे कुछ समय के लिए चकरा गया—वह निश्चय नहीं कर सका कि क्या करे, मुझे मारना जरूरी है या नहीं-साठे दुविधा में ही फंसा रहा कि अखवार में दीवान द्वारा दिए गए विज्ञापन के आधार पर डैडी अस्पताल पहुंच गए—मुझे कुछ भी याद नहीं आ रहा था और इसी वजह से मेरा दुर्भाग्य कि सारे सबूतों के बावजूद मैं खुद को न्यादर अली का बेटा सिकन्दर मानने के लिए तैयार नहीं हुआ—याददाश्त गुम होने के बाद सायरा की लाश मेरे अवचेतन मस्तिष्क पर छाई रही और एक हिंसक बीमारी के रूप में मुझ पर हावी हो गई—जुनून-सा सवार होने लगा मुझ पर और इसीलिए डैडी ने मेरी सेवा के लिए 'जेंट्स नर्स' हेतु विज्ञापन दिया।

"मुझे कुछ याद नहीं था, जबकि इधर साठे इस दुविधा का शिकार था कि क्या करे—उसे यह शक भी होने लगा कि कहीं मैं याददाश्त गुम हो जाने का नाटक तो नहीं कर रहा हूं—अत: इसकी पुष्टि करने के लिए विज्ञापन की आड़ में इसने रूपेश को वहां भेजा।"

"मुझे हुक्म देते समय इसने कहा था बॉस कि न्यादर अली के लड़के सिकन्दर को चैक करने का आदेश 'शाही कोबरा' ने ही दिया है।" रूपेश ने बताया।

"तुम सब क्योंकि 'शाही कोबरा' के प्रति ही कर्तव्यनिष्ठ थे—इसीलिए यह प्रत्येक आदेश यही कहकर जारी करता था कि वह 'शाही कोबरा' का आदेश है—तुम बेचारे क्या जानते थे कि तुम्हारा 'शाही कोबरा' याददाश्त गंवा बैठा है और जो आदेश यह गद्दार 'शाही कोबरा' के नाम पर दे रहा है, वह 'शाही कोबरा' ही के विरुद्ध है—तुमने साठे को रिपोर्ट दी रूपेश कि सिकन्दर वाकई याददाश्त गंवा बैठा है और उसे अपने सिकन्दर होने में संदेह है। अब साठे ने सोचा कि सिकन्दर को मारना जरूरी नहीं है—हां, न्यादर अली और देहली से बहुत दूर निकाल देना अधिक सुरक्षित रहेगा और इस उद्देश्य से उसने मुझे जॉनी बनाने का जो नाटक रचा, वह सब तुम जानते ही हो।"

हाल में सन्नाटा व्याप्त रहा।

“मैं इस नाटक में पूरी तरह फंस चुका था कि बीमारी के रूप में लग गए मेरे जुनून ने साठे की सारी योजना बिखेर दी। मैंने तुम्हारी पत्नी माला की हत्या कर दी रूपेश और तुम्हें भी जीवित जलाने की कोशिश की, मगर सच मानो, वह सब कुछ मैंने जानकर नहीं किया—जुनून के अन्तर्गत कर बैठा—मैं तुम्हारा मुजरिम हूं रूपेश।"

"असली मुजरिम तो ये है 'शाही कोबरा', जिसने आपकी बहन का मर्डर किया—उसी मर्डर की वजह से आपको यह बीमारी हुई और आपके जुनून का शिकार माला बन गई।”

"मैं गाजियाबाद से बौखलाकर भागा और संयोग से सर्वेश के घर पहुंच गया, जिस तरह मैं पुलिस की नजरों से गुम हो गया था, उसी तरह साठे भी न जान सका कि मैं हत्याकाण्ड करने के बाद कहां गायब हो गया हूं—इसे यह चिंता सताए जा रही थी कि कहीं मेरी याददाश्त वापस न आ जाए—इस बीच 'शाही कोबरा' के नाम पर ही तुम सबसे काम लेता रहा—उधर पुलिस और साठे की नजरों से छुपा मैं सर्वेश के घर में रहा—विशेष और रश्मि से मुझे प्यार हो गया और उस दरिन्दे के खिलाफ मेरा दिल नफ़रत से भर गया। जिसने विशेष, रश्मि और बूढ़ी मां से उनके सहारे सर्वेश को छीना था।"

एक गहरी सांस लेने के बाद सिकन्दर ने कहा—“ऐसी अजीब बात है कि सर्वेश के हत्यारे से बदला लेने की कसम, सर्वेश का हत्यारा ही खा बैठा—विधि का विधान देखो कि सर्वेश बनकर मैं खुद ही अपने द्वारा की गई हत्या की इन्वेस्टिगेशन में जुट गया—अपने ही गैंग से टकराने और इसे नेस्तनाबूद करने मैं खुद निकल पड़ा—सर्वेश बनकर जब मैं 'मुगल महल' में आया तो मुझे देखते ही साठे चौंक पड़ा—मैँ उसे मिल गया था—यह सोचकर वह भी मुस्करा उठा कि सर्वेश का हत्यारा सर्वेश बनकर, सर्वेश ही के हत्यारे से बदला लेने निकला है...अब साठे को मुझसे छुटकारा पाने के लिए सबसे सरल रास्ता यह जान पड़ा कि वह मुझे माला की हत्या के जुर्म में फांसी पर लटका दे—अपने इसी उद्देश्य में सफल होने के लिए उसने सर्वेश के घर पुलिस भेज दी—अब मेरी समझ में आ रहा है कि पुलिस और रश्मि को चकमा देने की स्कीम मेरे दिमाग में कहां से आ रही थी—आखिर था तो मैँ 'शाही कोबरा' ही—एक षडयन्त्रकारी दिमाग।"

"जब साठे का यह हमला भी नाकामयाब हो गया तो मुझे मारने का काम इसने रंगा-बिल्ला को सौंपा—उस मोर्चे पर भी इसे शिकस्त का ही मुंह देखना पड़ा—अब तक मिले सबूतों के आधार पर मुझे 'शाही कोबरा' होने का शक न्यादर अली पर हो गया—क्या जानता था की कमरा नम्बर पांच-सौ-पांच मैंने खुद ही अपने पिता के नाम बुक करा रखा है—एक ऐसा बेटा जो खुद 'शाही कोबरा' था, अनजाने में अपने पिता को 'शाही कोबरा' होने की गाली देता रहा—साठे ने उसी समय इस डर से कि कहीं न्यादर अली मुझे सिकन्दर होने का यकीन न दिला दे, मेरे डैडी की हत्या कर दी....अब तक मैं इसके लिए काफी परेशानियां खड़ी कर चुका था, अत: विशेष को किडनैप करके यहां लाने का

हथकण्डा अपनाया गया—उस बम के द्वारा साठे मुझसे छुटकारा पाना ही चाहता था कि कुदरत ने मुझे मेरी याददाश्त वापस लौटा दी और पासे पलट गए—कैसी अजीब बात थी कि एक गद्दार के कारण, सारा गैंग अपने ही चीफ को बम से उड़ाने जा रहा था—अस्पताल में होश आने से लेकर इस हॉल में बेहोश होने तक की घटनाएं मुझे उसी तरह याद हैं, जैसे कोई स्वप्न देखा हो।"

सिकन्दर चुप हो गया।

हॉल में खामोशी छाई रही, तब सिकन्दर ने ऊंची आवाज में पूछा—"अब मैं आप सब लोगों की राय जानना चाहता हूं—इस नमक हराम, गद्दार और विश्वासघाती साठे को क्या सजा दी जाए?"

सारा हॉल कह उठा—"इसकी एक ही सजा है—मौत।"

¶¶

"न...नहीँ सिकन्दर।" थम्ब के साथ बंधा साठे गिड़गिड़ा उठा—"मुझे बख्श दो, माफ कर दो—मैं पागल हो गया था।"

"जो बम तुमने कुछ ही देर पहले मेरे पेट पर बांधा था, अब वही तुम्हरे पेट पर बंधा है और देखो, उस बम से सम्बद्ध पलीते का यह सिरा मेरे हाथ में है—सभी लोगों की राय है कि इस सिरे को मैं खुद चिंगारी दूं।"

"ऐ...ऐसा मत करना सिकन्दर प.....प्लीज, ऐसा न करना।" अपने पेट पर बंधे बम को देखकर साठे पीला पड़ गया, बोला—"मुझे माफ कर दो।"

"क्यों साथियों, क्या इसका जुर्म माफ कर देने लायक है?" सिकन्दर ने ऊंची आवाज में पूछा।

एक साथ सभी ने कहा—"नहीं....नहीं।"

सिकन्दर ने लाइटर जलाया, पलीते के सिरे पर आग लगाते वक्त सिकन्दर के चेहरे पर पत्थर की-सी कठोरता थी, चिंगारी पलीते पर दौड़ी।

"न...नहीं...नहीं।" चिल्लाते हुए साठे के चेहरे पर साक्षात् मौत ताण्डव कर रही थी।

साठे के अलावा सिकन्दर समेत सभी खामोश खड़े थे, आंखों में दहशत-सी लिए वे सभी पलीते पर अपनी यात्रा पूरी करती हुई चिंगारी को देख रहे थे—वह ज्यों-ज्यों साठे की तरफ सरकती जा रही थी, त्यों-त्यों सभी के दिलों की धड़कनें बढ़ती चली गईं—चीखते हुए साठे की जुबान लड़खड़ाने लगी।

चिंगारी बम तक पहुंची।

सिकन्दर समेत सभी ने अपनी आंखें बन्द कर लीं।

'धड़ाम' एक कर्णभेदी विस्फोट।

साठे की चीख उसी विस्फोट में कहीं दबकर रह गई।

¶¶

विस्फोट के तीस मिनट बाद मंच पर खड़ा सिकन्दर कह रहा था—"मैंने साठे को क्यों मारा है—इसीलिए न कि उसने जिसके साथ बलात्कार करने की कोशिश की, वह मेरी बहन थी—जिनकी उसने हत्या की, वे मेरे अपने थे—और जब कोई मुजरिम हमारे किसी अपने को मारता है तो हम उससे बदला लेना अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझते हैं—यह नहीं सोचते कि जिन्हें हमने मारा है...वे भी किसी के अपने थे।"

सभी चकित भाव से सिकन्दर को देखते रह गए।

और एक बहुत ही घिनौने सच को सिकन्दर कहता चला गया—"हम सब भी उतने ही दोषी हैं, जितना साठे था और तुम सबसे बड़ा दोषी मैं हूं।"

"य...ये आप क्या कह रहे हैं 'शाही कोबरा'?"

"वही, जो सच है—और यह सच मुझे सर्वेश के घर से पता लगा है—उसके घर से, जिसे बीयर में जहर मिलाकर मैंने कीड़े-मकोड़े की तरह मार डाला—जिसे हम अपनी उंगलियों के एक इशारे पर मार डालते हैं—नहीं सोच पाते कि उसके पीछे वे कितने लोग हैं, जिन्हें हमने जीते-जी मार डाला है।"

गहरा सन्नाटा व्याप्त हो गया।

"उस छोटे-से परिवार में केवल एक महीना गुजारकर मुझे यह महसूस हुआ कि जिसने वीशू से उसका पिता, देवी-सी मासूम रश्मि से उसका पति और बूढ़ी मां से बुढ़ापे का सहारा छीना है, वह इंसान कभी नहीं हो सकता—पशु होगा, दरिन्दा होगा और इसीलिए मैंने सर्वेश के हत्यारे से बदला लेने की कसम खाई थी। आज पता लगा है कि वह पशु, यह दरिन्दा मैं खुद हूं—यह अहसास करके ही मुझे गुनाह की अपनी इस जिन्दगी से नफरत हो गई है, मैं 'शाही कोबरा' नाम के इस गैंग को हमेशा के लिए तोड़ता हूं।"

"श...शाही कोबरा!"

सिकन्दर के होंठों पर बड़ी ही जहरीली मुस्कान उभर आई, बोला—"फिक्र मत करो, दोस्तों—मैं न खुद को पुलिस के हवाले करने की सोच रहा हूं और न ही तुम्हें ऐसा

करने की सलाह दे रहा हूं—बस, यह गैंग खत्म कर रहा हूं—गैंग के पास जितनी भी दौलत है, वह सभी में तुम लोगों में बराबर-बराबर बांट दूंगा, इस विश्वास के साथ कि जहां तुम अपने परिवार के साथ आज रहते हो, कल वहां से बहुत दूर निकल जाओगे—मिले हुए पैसे से नई और शराफत की जिन्दगी शुरू करोगे, भूल जाओगे कि तुम किसी आपराधिक गैंग के सदस्य थे, कोई 'शाही कोबरा' तुम्हारा चीफ था।"

¶¶

वर्दीधारी गार्ड्स समेत सिकन्दर इस तहखाने से गैंग के सभी व्यक्तियों को अलविदा कहकर विदा कर चुका था। लूट की दौलत तहखाने में थी, उसने उसे सभी लोगों में बराबर बांट दिया।

अब तहखाने में वह था या बेहोश विशेष।

जेहन में उत्तेजित अन्दाज में अपने ही द्वारा कहे गए शब्द गूंज रहे थे—'मुझे पूरा हक है रश्मिजी—अगर सच्चाई पूछें तो सर्वेश के हत्यारों से बदला लेने का आपसे ज्यादा हक मुझे है, क्योंकि सर्वेश के नाम और परिचय ने मुझे शरण दी है—म...मैं जिसे यह नहीं मालूम कि मैं कौन हूं—मैं दर-दर भटक रहा था—दुनिया में कहीं मेरी कोई मंजिल नहीं थी—तब मुझे इस घर में, इस छोटी-सी चारदीवारी में शरण मिली। शरण ही नहीं, यहाँ मुझे बेटे का स्नेह मिला है—मां की ममता गरज-गरजकर बरसी है मुझ पर...और आप...आप कहती हैं कि इस घर की नींव रखने वाले के लिए मेरा कोई हक नहीं है—अरे कच्चा चबा जाऊंगा उन्हें जिन्होंने मेरे भाई को मारा है—वीशू को यतीम करने वालों की बोटी-बोटी नोच डालूंगा मैं—एक बूढ़ी मां से उसका जवान बेटा छीनने की सजा उन्हें भोगनी होगी।

मैं वीशू की कसम खाकर कह चुका हूं कि हत्यारों को आपने कदमों में लाकर डाल देना ही मेरा मकसद है—बदला आप खुद अपने हाथों से लेंगी।

अपने ही इन वाक्यों ने उसे इस कदर झिंझोड़ डाला कि—

'नहीं।' हलक फाड़कर चिल्लाता हुआ वह एक झटके से खड़ा हो गया और फिर फटी-फटी आंखों से चारों तरफ देखने लगा—कमरे की खूबसूरत दीवारें उसे मुंह चिढ़ाती-सी महसूस हुईं।

पसीने-पसीने हो गया सिकन्दर।

दृष्टि पुनः मासूम विशेष पर जम गई।

'पापा-पापा' —कहकर उसका लिपट जाना याद आया।

तभी उसके अन्दर छुपी आत्मा कहकहा लगाकर हंस पड़ी—'क्यों, क्या अपने ही कहे शब्दों पर आज तुम्हें शर्म आ रही है?'

'न...नहीं।' वह सचमुच बड़बड़ा उठा।

'तो फिर सोच क्या रहा है—उठ—वीशू को लेकर उस बेवा के पास जा—अपनी कसम पूरी कर—जो तूने किया है उसका प्रायश्चित तो करना ही होगा—खुद को उसके कदमों में डाल दे।'

'म...मैं जा रहा हूं।' पागलों की तरह बड़बड़ाते हुए उसने विशेष को उठाने के लिए हाथ बढ़ाए। फिर जाने क्या सोचकर बिना विशेष को लिए ही हाथ खींच लिए, तेजी के साथ बाहर वाले कमरे में अया। डैस्क के सामने पड़ी कुर्सी पर बैठकर उसने पुश बटन दबाए। परिणामस्वरूप एक टीoवीo स्क्रीन पर 'मुगल महल' के रिसेप्शन का दृश्य उभर आया।

वहां ढेर सारी पुलिस, इंस्पेक्टर दीवान और चटर्जी को देखकर सिकन्दर के मस्तक पर बल पड़ गए। वे डॉली के स्थान पर रखी गई नई काउण्टर गर्ल से कुछ बातें कर रहे थे। सिकन्दर ने जल्दी से एक अन्य स्विच बंद कर दिया।

अब वह काउंटर पर होने वाली बातें सुन सकता था।

काउंटर गर्ल कह रही थी—"मै आपसे कह चुकी हूं कि मुझे नहीं मालूम है कि इस वक्त मैनेजर साहब कहां हैं।"

"हमें कमरा नम्बर पांच-सौ-पांच चेक करना है।" चटर्जी ने कहा।

"क्यों?"

"हमें इन्फॉरमेशन मिली है कि इस होटल के नीचे कोई तहखाना है और वह तहखाना ही कुख्यात तस्कर 'शाही कोबरा' का हेडक्वार्टर है।"

"क्या बात कह रहे हैं आप?" काउन्टर गर्ल हकला गई।

उसकी आंखों में झांकते हुए चटर्जी ने कहा—"और वहां के लिए रास्ता कमरा नम्बर पांच-सौ-पांच से जाता है।"

"क...कमाल की बात कर रहे हैं आप—वह कमरा तो हमेशा इस होटल के मालिक न्यादर अली के नाम बुक रहता है।"

"उस कमरे को चैक करना इसीलिए और जरूरी हो जाता है।"

"ठ...ठहरिए...मैं आपके जाने की सूचना मालिक को देती हूं।" कहने के साथ काउण्टर गर्ल ने रिसीवर उठाया ही था कि क्रेडिल पर हाथ रखते हुए चटर्जी ने अपनी चिर-परिचित मुस्कान के साथ कहा—"कोई फायदा नहीं होगा, क्योंकि पिछली रात सेठ न्यादर अली की हत्या हो चुकी है।"

"क...क्या?" काउण्टर गर्ल मुंह फाड़े चटर्जी का चेहरा देखती रह गई।

इससे ज्यादा बातें सुनने की सिकन्दर ने कोई कोशिश नहीं की, वह यह तो नहीं समझ सका कि पुलिस यहां तक कैसे पहुंच गई थी, परन्तु जानता था कि चटर्जी बहुत काईयां था—कमरा नम्बर पांच-सौ-पांच चैक किए बिना अब वह लौटने वाला नहीं था और कमरे में पहुंचने के बाद रास्ता खोज लेने में भी उसे कोई दिक्कत नहीं होगी—अत: कोई खतरनाक निश्चय करके वह कुर्सी से उठा।

कमरे में मौजूद एक मजबूत सेफ के नम्बर सैट करके उसे खोला और एक टाइम बम हाथ में लिए, संकरी गैलरी से गुजरकर हॉल में पहुंचा। हॉल सूना पड़ा था।

सिकन्दर ने बम को एक थम्ब पर सेट किया, उसमें टाइम भरा और वापस स्क्रीन वाले कमरे में लौट आया—इस सारे काम में उसे करीब बीस मिनट लग गए थे—स्क्रीन पर रिसेप्शन का दृश्य अब भी मौजूद था, परन्तु वहां अब पुलिस नजर नहीं आ रही थी। कुर्सी पर बैठकर सिकन्दर स्क्रीन पर मौजूद दृश्य में परिवर्तन करने लगा—कुछ ही देर बाद कमरा नम्बर पांच-सौ-पांच का दृश्य उसके सामने था।

कमरा पुलिस और होटल के स्टाफ से भरा हुआ था। चटर्जी अपनी पैनी आंखों से फर्श को घूरता फिर रहा था। अचानक ही सिकन्दर ने एक बटन ऑन किया और भर्राहटदार आवाज में बोला—"हैलो इंस्पेक्टरा!"

चटर्जी सहित सभी चौंककर कमरे की दीवारों को घूरते नजर आए। शायद उन्हें उस स्थान की तलाश थी, जहां से आवाज आई थी। उनकी मन:स्थिति की परवाह किए बिना सिकन्दर ने कहा—"मैं 'शाही कोबरा' बोल रहा हूं।"

अचानक चटर्जी ने कहा—"क्या तुम हमारी आवाज भी सुन सकते हो?"

"जो कहना चाहते हो, कहो।"

"अब हम यहां से तुम्हें गिरफ्तार किए बिना लौटने वाले नहीं हैं।"

"यह जानकर तुम्हें हैरत होगी इंस्पेक्टर कि कुछ देर पहले ही यह गैंग हमेशा के लिए खत्म हो चुका है, जो 'शाही कोबरा' के नाम से तुम्हारी फाइलों में दर्ज था—अब तुम्हें कभी इस गैंग की तरफ से किसी वारदात की सूचना नहीं मिलेगी—रही मेरी बात—यानि 'शाही कोबरा' की बात सुनो, पन्द्रह मिनट बाद एक धमाका होगा और इस धमाके के साथ ही 'शाही कोबरा' हमेशा के लिए खत्म हो जाएगा।"

"अगर ये बचकाना चालें चलने के स्थान पर तुम खुद को हमारे हवाले कर दो तो शायद ज्यादा फायदे में रहोगे।"

"अगर तुमने मेरे शब्दों को 'बात' समझने की भूल की तो अपने साथ इन बेचारे ढेर

सारे बेकसूर पुलिस वालों को भी ले मरोगे।"

"क्या मतलब?"

"तहखाने में मैंने एक टाइम बम फिक्स कर दिया है, अब उसके फटने में केवल तेरह मिनट बाकी रह गए हैं, टाइम बम बहुत शक्तिशाली है—इतना ज्यादा कि जिस कमरे में तुम खड़े हो, शायद उसकी दीवारों में भी दरारें जा जाएं।"

"तुम बकते हो।"

"अपनी कसम इंस्पेक्टर, यह सच है। कसम इसीलिए खा रहा हूं ताकि तुम विश्वास कर लो और विश्वास इसीलिए दिलाना चाहता हूं के क्योंकि मैं बेकसूरों का खून बहाना नहीं चाहता—प्लीज, उस कमरे से बाहर निकल जाओ।" कहने के बाद वह उठा और तेजी से अन्दर वाले कमरे में पहुंचा—एक हैंगर पर लटके काले कपड़े उसने सूटकेस में रखे, दो मिनट बाद ही गोद में विशेष और सूटकेस को लिए वह कमरे से बाहर निकला, स्क्रीन पर उसने देखा कि चटर्जी आदि कमरा खाली कर रहे थे।

बम के फटने से पहले ही गुप्त गैराज वाले रास्ते से सिकन्दर को निकल जाना था और यह विश्वास भी उसे था कि गैराज में अभी तक उसकी कैडलॉक खड़ी होगी।

¶¶

विशेष को देखते ही रश्मि खुशी के कारण जैसे पागल हो गई—फफक-फफककर रोती हुई रश्मि ने उसे अनगिनत बार चूमा—बूढ़ी मां अलग पागल हुई जा रही थी। रास्ते ही में विशेष की चेतना लौट चुकी थी।

"दहशत के कारण वीशू को बुखार हो गया है—इसे डॉक्टर को दिखा लेना।" सिकन्दर ने कहा।

पहली बार रश्मि का ध्यान सिकन्दर की तरफ गया।

विशेष को बूढ़ी मां ने अपने कलेजे से लगा लिया।

कुछ देर तक आंखों में अजीब-से भाव लिए रश्मि खामोशी से उसे देखती रही और सिकन्दर का दिल किसी भारी कीड़े की तरह उसकी पसलियों पर चोट करता रहा।

बहुत ज्यादा देर तक वह रश्मि की चमकदार आंखों का सामना नहीं कर सका। सूनी मांग पर नजर पड़ते ही उसका चेहरा कागज-सा सफेद पड़ गया। दृष्टि स्वयं ही झुकती चली गई। रश्मि ने कहा—"मेरे वीशू की जान बचाने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद मिस्टर सिकन्दर।"

एक झटके से उसने चेहरा ऊपर उठाया। समूचा जिस्म ही नहीं बल्कि आत्मा तक सूखे पत्ते की तरह कांप उठी थी उसकी—या खुदा—रश्मि को कैसे पता लग गया कि मैं

सिकन्दर हूं—मुंह से बुरी तरह कांपते स्वर में पूछा—"सिकन्दर?"

"क्या तुम सिकन्दर नहीं हो?" उसे घूरती हुई रश्मि ने पूछा।

सिकन्दर की हालत बुरी हो गई, मस्तिष्क अन्तरिक्ष में चकराता-सा महसूस हो रहा था। जिस्म सुन्न, मगर फिर भी उसने पूछ ही लिया—"अ..आप यह कैसे कह सकती हैं?"

"एक बार फिर वही इंस्पेक्टर दीवान और चटर्जी आए थे।"

"फ...फिर?" सिकन्दर के प्राण गले में आ अटके।

"वे कह रहे थे कि तुम्हारा नाम सिकन्दर है—पिछली रात तुम अपने पिता न्यादर अली का खून करके आए थे—पुलिस को यह बयान न्यादर अली की कोठी के चौकीदार और एक नौकर ने दिया है।"

"व...वह झूठ है।"

"खैर।" एक ठंडी सांस भरने के बाद रश्मि ने कहा—"तुम क्या हो, मैं इस सवाल में और ज्यादा उलझने की जरूरत महसूस नहीं करती—इस वक्त केवल इतना ही जानती हूं कि तुम मेरे वीशू को बचाकर लाए हो और इसीलिए आगाह कर रही हूं कि पुलिस तुम्हें ढूंढती फिर रही है, चटर्जी के पास तुम्हारे खिलाफ पूरे सबूत भी हैं।"

"क...कैसे सबूत?"

"रुई के गोदाम में उन्हें दो लाशें मिली हैं। एक बिल्ला की...दूसरी डॉली की—चटर्जी का ख्याल है कि वे दोनों हत्याएं तुमने की हैं।"

"तुम तो जानती हो रश्मि कि यह गलत है, डॉली को मैंने नहीं मारा—हां, बिल्ला जरूर मेरे द्वारा फेंके गए चाकू से मरा है।"

"वह चाकू तुमने अपने बाएं हाथ से ही फेंका होगा न?"

"हां।"

"अब वे तुम्हारे बाएं हाथ की ही उंगलियों के निशान लेने की फिराक में हैं—यह एक ठोस सबूत उनके पास है, जिसके आधार पर वे यहां आसानी से डॉली का हत्यारा भी तुम्हें ही साबित कर देंगे, उधर न्यादर अली की हत्या के सिलसिले में तो उनके पास दो गवाह भी हैं।"

सूखे रेत पर पड़ी मछली की-सी अवस्था हो गई उसकी, बोला—"प...प्लीज रश्मि—कम-से-कम तुम मुझ पर ये व्यंग्य बाण न चलाओ।"

"बेशक—यह कहने का हक तुम्हें है, क्योंकि तुम मेरे बेटे को बचाकर लाए हो और

केवल इसीलिए बता रही हूं कि पुलिस के इतना सब कहने के बावजूद भी मैंने तुम्हारे बारे में उन्हें कुछ नहीं बताया था, परन्तु इंस्पेक्टर चटर्जी बहुत काईयां है—उसने वह पत्र पकड़ लिया जो रूपेश यहां छोड़ गया था और उसे पढ़ने के बाद, बिना मेरे बताए ही वह शायद सब कुछ समझ गया था।"

अब सिकन्दर की समझ में पुलिस के 'मुगल महल' तक पहुंच जाने का रहस्य आ गया। अन्दर-ही-अन्दर चीखता रह गया वह। समझ नहीं पा रहा था कि क्या करे। तभी रश्मि ने पूछा—"क्या मैं जान सकती हूं कि इतने सारे गुण्डों के बीच से तुम वीशू के साथ-साथ खुद को भी सुरक्षित कैसे निकाल लाए?"

"छोड़ो रश्मि, जो हुआ, उसे दोहराने से कोई लाभ नहीं है।" सिकन्दर बात को टालता हुआ बोता, "बस यूं समझ लो कि पुलिस के वहां पहुंचने से पहले ही मैं 'शाही कोबरा' के सारे गैंग को खत्म कर चुका था।"

रश्मि के हलक से गुर्राहट-सी निकली—"'शाही कोबरा'?"

"वह अभी जिन्दा है।"

"कहां है?" खूनी और चट्टानी स्वर—ऐसा कि सुनकर सिकन्दर के रोंगटे खड़े हो गए।

अपने दिलो-दिमाग को काबू में रखकर वह बोला—"मेरी कैद में है।"

"तुमने उसे मुझे सौंप देने का वादा किया था।"

"सौंप दूंगा, मगर...।"

"मगर?"

एक पल चुप रहा सिकन्दर, रश्मि की आंखों में झांकता रहा, मगर उसकी सख्त दृष्टि का सामना नहीं कर सका वह। अत: घबराकर नजरें झुका लीं—खुद को सामान्य दर्शाने की कोशिश में चहलकदमी करता हुआ बोला—"मैं कुछ पूछना चाहता हूं।"

"क्या?"

"'शाही कोबरा' ने जो कुछ किया है, अगर वह आज अपने पश्चाताप की आग में सुलग रहा हो, क्या तब भी तुम उसे गोली मारना
पसन्द करोगी?"

रश्मि हिंसक-सी गुर्रा उठी—"पश्चात्ताप की आग में जलना उस दरिन्दे की सजा नहीं है, सजा उसे मेरे रिवॉल्वर से ही भोगनी होगी।"

सिहर उठा सिकन्दर, बोला—"सर्वेश की हत्या करने के बाद अगर 'शाही कोबरा' ने

तुम पर या इस पूरे परिवार पर कुछ एहसान किया हो तो?"

एकाएक ही रश्मि की आंखों में शंका के साए उभर आए। यह अजीब-सी दृष्टि ते सिकन्दर को घूरती हुई बोली—"उस कमीने ने भला मुझ पर क्या एहसान कर दिया है?"

"मान लो कि आज वीशू उसी की बदौलत यहां जीवित पहुंचा हो?"

बड़ा ही कठोर स्वर—"क्या मतलब?"

"अगर वह न चाहता तो सचमुच इतने बड़े गैंग के बीच से मेरे लिए वीशू को निकालकर लाना नामुमकिन था। उसने ना केवल मुझे और वीशू को वहां से सुरक्षित निकाला, बल्कि खुद ही अपने सारे गैंग और हैडक्वार्टर को नष्ट भी कर दिया।"

"फिर भी मेरी नजरों में उसका गुनाह कम नहीं हो जाता।" रश्मि ने पूरी दृढ़ता के साथ कहा—"अगर वह यह सोचता है कि तुम्हारे मुंह से इस सूचना को मुझ तक पहुंचाकर मेरे प्रतिशोध की आग से बच सकेगा तो यह उसकी मूर्खतापूर्ण कल्पना है। उससे कह देना मिस्टर, रश्मि नाम की विधवा उस सौदागर से सुहाग की जान का सौदा बेटे की जान से नहीं करेगी—मैंने उनकी मौत का बदला लेने की कसम खाई है और हर हालत में अपनी कसम पूरी करके रहूंगी।"

रश्मि के शब्दों से कहीं ज्यादा उसके लहजे की दृढ़ता ने सिकन्दर के होश फाख्ता कर दिए। यह समझने में उसे देर नहीं लगी कि हकीकत खुलने के बाद एक क्षण भी रश्मि उसे जीवित नहीं छोड़ेगी, बोला—"तब ठीक है, मैं उसे तुम्हारे हवाले कर दूंगा।"

"कब—कहां?"

"आज ही रात, दस बजे—प्रगति मैदान में।"

बेलोच स्वर में हाथ फैलाकर रश्मि ने कहा—"मेरा रिवॉल्वर।"

जेब से रिवॉल्वर निकालकर रश्मि को देते वक्त जाने क्यों सिकन्दर का दिल बहुत जोर से कांप उठा था, शायद यह सोचकर कि इसी रिवॉल्वर से रात के दस बजे वह खुद मरने वाला है, मनोभावों को काबू में करके बोला—"मेरे ख्याल से 'मुगल महल' से निराश होने के बाद पुलिस वापस सीधी यहीं आएगी, अत: मेरा यहां रहना ठीक नहीं है।"

"बेशक तुम जा सकते हो, मगर दस बजे प्रगति मैदान में तुम भी पहुंचोगे न?"

"मैं मिलूं न मिलूं, मगर 'शाही कोबरा' तुम्हें जरूर मिलेगा रश्मि।" कहने के बाद वह मुख्य द्वार की तरफ बढ़ा, फिर जाने क्या सोचकर बोला—"वीशू को डॉक्टर के यहां जरूर ले जाना—उसे बहुत तेज बुखार है।"

रश्मि ने उल्टा सवाल किया—"क्या मैं पूछ सकती हूं कि बाहर खड़ी कार किसकी

है?"

"श.....'शाही कोबरा' की।" एक झटके से कहने के बाद वह निकल गया।

¶¶

सिकन्दर के समूचे जिस्म पर चुस्त लिबास था, चेहरे पर उसी लिबास के साथ का नकाब—प्रगति मैदान के बाहर वाली लाल बारहदरी में बने बहुत-से थम्बों में से एक के पीछे खड़ा था वह—दूर-दूर तक हर तरफ खामोशी छाई हुई थी।

चांदनी छिटकी पड़ी थी—आकाश पर चांदी के थाल-सा चन्द्रमा मुस्करा रहा था। थम्ब के पीछे छुपे सिकन्दर ने मुख्य द्वार की तरफ देखा, कहीं कोई न था।

प्रगति मैदान के चौकीदार को वह पहले ही बेहोश करके एक अंधेरे कोने में डाल चुका था। सिकन्दर ने रिस्टवॉच में समय देखा।

दस बजने में सिर्फ पांच मिनट बाकी थे।

सिकन्दर के दिल की धड़कनें बढ़ने लगीं—जाने कौन उसके कान में फुसफुसाया —'पांच मिनट, सिर्फ पांच मिनट बाकी रह गए हैं सिकन्दर—हाथ में रिवॉल्वर लिए रश्मि आएगी—तुझे उसके सामने जाना होगा—वह तुझे मार डालेगी।"

सिकन्दर पसीने-पसीने हो गया।

लोहे वाला मुख्य द्वार धीरे से खुला।

नजर मुख्य द्वार की तरफ उठी तो दिल 'धक्क्' की आवाज के साथ एक बार बड़ी जोर से धड़का और फिर रबड़ की गेंद के समान उछलकर मानो उसके कण्ठ में आ अटका —वह रश्मि ही थी।

चांदनी के बीच, सफेद लिबास में इसी तरफ बढ़ती हुई वह सिकन्दर को किसी पवित्र रूह जैसी लगी—हां, रूह ही तो थी वह—ऐसी रूह, जो उसके प्राण लेने आई है —खामोश। रश्मि चौकन्नी निगाहों से अपने चारों तरफ देखती धीरे-धीरे उसकी तरफ बढ़ी चली जा रही थी। विचारों का बवंडर पुनः सिकन्दर के कानों के आसपास चीखने-चिल्लाने लगा, आत्मा चीख-चीखकर कहने लगी—तेरे मरने का समय आ गया है सिकन्दर, यहां इस थम्ब के पीछे छुपा क्यों खड़ा है—बाहर निकल यहां से—उसके सामने पहुंच—अगर बहादुर है तो सीना तानकर खड़ा हो जा उसके सामने—क्योंकि तेरे गुनाहों की यही सजा है।

फिर किसी अजनबी शक्ति ने उसे थम्ब के पीछे से धकेल दिया—शराब के नशे में चूर-सा वह लड़खड़ाता हुआ चांदनी में पहुंच गया। उसे अचानक ही यूं अपने सामने प्रकट होता देखकर एक पल के लिए तो रश्मि बौखला-सी गई, परन्तु अगले ही पल

अपने आंचल से रिवॉल्वर निकालकर तान दिया।

कंपकपाकर सिकन्दर किसी मूर्ति के समान खड़ा रह गया।

रश्मि उसके काले लिबास पर चमकदार गोटे से जड़े 'कोबरा' को देखते ही सख्त हो गई, मुंह से गुर्राहट निकली—“तू ही 'शाही कोबरा' है?"

"हां।" सिकन्दर की आवाज उसके कण्ठ में फंस गई।

रश्मि के संगमरमरी चेहरे पर सचमुच के संगमरमर की-सी कठोरता उभर आई, आग का भभका-सा निकला उसके मुंह से—"तुम ही ने सर्वेश को मारा था?"

"हां।"

"फिर इतनी आसानी से खुद को मेरे हवाले क्यों कर रहे हो?"

रश्मि के इस सवाल का जवाब 'हां' या 'नहीं' में नहीं दिया जा सकता था, और जिस सिकन्दर के मुंह से आतंक की अधिकता के कारण 'हां' भी पूरी तरह ठीक न निकल रहा हो, वह भला एकदम से इस सवाल का जवाब कैसे दे देता?

उसने कोशिश की, परन्तु आवाज कण्ठ में ही गड़बड़ाकर रह गई—तेज हवा से घिरे सूखे पत्ते-सा उसका जिस्म कांप रहा था, जिस्म ही नहीं, जेहन और आत्मा तक—आंखों के सामने अंधेरा छाया जा रहा था, खड़े रहना मुश्किल हो गया—अपनी तरफ तने रिवॉल्वर को देखकर भला ऐसी हालत किसकी न हो जाएगी?

सिकन्दर अभी इस अन्तर्द्वन्द से गुजर ही रहा था कि रश्मि की गुर्राहट गूंजी —"जवाब क्यों नहीं देता, इतनी आसानी से खुद को मेरे हवाले क्यों कर रहा है?"

और उस क्षण मरने से डर गया सिकन्दर।

बिजली की-सी गति से घूमा और किसी धनुष के द्वारा छोड़े गए तीर की तरह एक तरफ को भागा।

उसे भागते देख रश्मि की आंखें सुलग उठीं।

‘धांय-धांय।' उसने दो बार ट्रेगर दबा दिया।

. मगर निशाना साध्य नहीं था अतः गोलियां बेतहाशा भागते हुए सिकन्दर के दाएं-बाएं से निकल गईं और उसी पल भागता हुआ सिकन्दर बुरी तरह लड़खड़ाया—गिरते-गिरते बचा वह।

रश्मि की दृष्टि उसके जूते की घिसी हुई एड़ियां पर पड़ी। फायर करने तक का होश न रहा—रिवॉल्वर ताने किसी सफेद स्टैचू के समान खड़ी रह गई थी वह। कानों में

अपने ही कहे गए शब्द गूंज रहे थे—'तुम्हारे दोनों जूतों की एड़ियां घिस गई हैं। शायद इसीलिए आंगन पार करते समय कई बार लड़खड़ा गए, मेरी सलाह है कि एड़ियां ठीक करा लो, वरना कहीं मुंह के बल गिर पड़ोगे।'

¶¶

कैडलॉक को स्वयं ड्राइव करता हुआ सिकन्दर अब प्रतिपल प्रगति मैदान से दूर होता चला जा रहा था। उस वक्त उसके चेहरे पर कोई नकाब नहीं था।

कैडलॉक उसने लारेंस रोड की तरफ जाने वाली सड़क पर डाल दी—अपने बंगले के पिछले हिस्से में जाकर उसने कैडलॉक रोकी—दूर-दूर तक खामोशी छाई हुई थी। उसका अपना बंगला सन्नाटे की चादर में लिपटा खड़ा था।

सिकन्दर ने कैडलॉक में पड़े सूटकेस से शीशा काटने वाला एक हीरा तथा पेन्सिल टॉर्च निकालकर गाड़ी 'लॉक' कर दी—एक ही जम्प में चारदीवारी के पार 'धप्प'—की हल्की-सी आवाज के साथ बंगले के पिछले लॉन में गिरा।

दो मिनट बाद ही वह ग्राउण्ड फ्लोर पर स्थित एक कमरे की खिड़की का शीशा काट रहा था—शीशा काटने के बाद कटे हुए भाग में हाथ डाला और चिटकनी खोल ली।

अगले पल वह कमरे में था।

पैंसिल टॉर्च के क्षीण प्रकाश में ही यह दीवार के साथ जुड़ी नम्बरों वाली एक मजबूत सेफ के नज़दीक पहुंच गया।

सेफ न्यादर अली की थी—हालांकि सिकन्दर ने इसे पहले कभी नहीं खोला था, परन्तु नम्बर जरूर जानता था—नम्बर मिलाकर उसने बड़ी सरलता से सेफ खोल ली।

सेफ नोटों की गड्डियों और पुराने कागजात से अटी पड़ी थी।

तलाश करने पर सिकन्दर को उसमें से एक हफ्ते पहले की 'डेट' का "बॉण्ड पेपर" मिल गया। उसकी आंखें किसी अन्जानी खुशी के जोश में चमक उठीं।

फिर अचानक ही सिकन्दर के हाथ एक ऐसी डायरी लग गई, जिस पर शब्द 'व्यक्तिगत' लिखा था...जाने क्या सोचकर सिकन्दर ने डायरी उठा ली।

डायरी से एक फोटो निकलकर फर्श पर गिर पड़ा।

यह किसी बहुत ही खूबसूरत युवा लड़की का फोटो था। उत्सुकता के साथ सिकन्दर ने फोटो उठा लिया।

फोटो को ध्यान से देखते ही वह चौंक पड़ा।

उसे लगा कि यह फोटो सर्वेश की मां की युवावस्था का है और यह ख्याल आते ही सिकन्दर के जेहन में बिजली-सी कौंध गई।

उसने पलटकर फोटो की पीठ देखी, वहां लिखा था—"मेरे दिल की धड़कन सावित्री।" और सिकन्दर अच्छी तरह जानता था कि यह
राइटिंग उसके डैडी न्यादर अली की है।

सिकन्दर ने जल्दी से डायरी खंगाल डाली।

अपने पिता और सावित्री नामक सर्वेश की मां के बहुत-से प्रेम-पत्र थे उसमें—सावित्री का एक पत्र यूं था—

'तुमने तो शादी कर ली न्यादर, लेकिन मैं हिन्दू ही नहीं बल्कि सावित्री भी हूं—वह, जो एक जीवन में किसी एक ही पुरुष को अपना पति मानती है। हालांकि अपना तन मैंने तुम्हें कभी नहीं सौंपा, परन्तु मन से तुम्हें ही पति स्वीकार कर चुकी हूं, अत: दूसरी शादी कभी नहीं करूंगी।

तुम बेवफा निकल गए न्यादर—हजार कसमें खाने के बाद भी तुम मजहब की दीवारों को फांदकर मुझे अपना नहीं सके—इतना ही नहीं, शादी भी रचा ली तुमने—यह भी न कर सके कि यदि सावित्री से शादी नहीं हो सकती तो किसी से भी न करते—मैं तुम्हें माफ नहीं कर सकी—जिस दिन तुमने शादी की, उसी दिन मैंने तुम्हें बेवफाई की सजा देने का निश्चय कर लिया था—मैंने सोच लिया था कि जिस दिन तुम्हारी पत्नी पहले बच्चे को जन्म देगी, चोर बनकर उसे चुरा जाऊंगी और पालूंगी।

मगर विधि शायद सब कुछ सोचने के बाद ही विधान लिखती है। मुझे सूचना मिली है कि तुम्हारी पत्नी ने जुड़वां बच्चों को जन्म दिया है, भगवान ने खुद ही फैसला कर दिया।

एक तुम्हारा, एक मेरा।

आखिर ये लम्बी जिन्दगी काटने के लिए मुझे भी तो कोई सहारा चाहिए—पति के रूप में न सही, बेटे के रूप में तुम्हारा बेटा ही सही—एक नारी होने के नाते जानती हूं कि तुम्हारी पत्नी पर क्या गुजरेगी, फिर उस बेचारी का कोई दोष भी तो नहीं है, दोष तो सिर्फ इतना कि वह भी एक नारी है और तुम जैसे पुरुषों की करनी को भरने की तड़प सदियों से बेगुनाह नारी को ही तो सहनी पड़ती है। मेरा ऐसा करना दो कारणों से जरूरी है।

पहला, मुझे जीने का सहारा चाहिए—कुछ तो ऐसा होना ही चाहिए, जिससे तुम्हें अपनी बेवफाई का हमेशा अहसास रहे। मैं जानती हूं कि यह पत्र अपनी पत्नी को दिखाने की हिम्मत तुममें नहीं है—सारी जिन्दगी उस बेचारी को यही कह-कहकर ठगते रहोगे कि तुम नहीं जानते कि बच्चे को कौन उठा ले गया। मैं तुम्हें कभी नहीं मिलूंगी।

—तुम्हारी सावित्री।

¶¶

अपनी आत्मा के चिल्लाने की आवाज वह साफ सुन रहा था—'सर्वेश तेरा भाई था सिकन्दर—अब तेरी समझ में उसके हमशक्ल होने का रहस्य आया—वह तेरा भाई था, जिसे तूने मार डाला कुत्ते—जलील-कमीना है तू—अपने ही भाई को मार डाला तूने....देखा…ऊपर वाले की लाठी कितनी सख्त है?

वह बड़बड़ा 'उठा—"म...मगर अब में क्या करूं?"

'वहीं जा—उसी छोटे-से घर की चारदीवारी में तुझे सुकून मिलेगा।'

"म...मगर रश्मि तो मुझे मार डालेगी।"

'हुंह—मरने से अभी तक डरता है?' आत्मा व्यंग्य कर उठी—'मौत से यूं भागते हुए तुझे सुकून नहीं मिलेगा।'

जीने की ललक पहली बार बिल्कुल स्पष्ट होकर उभरी—'म....मगर मैं मरना नहीं चाहता, मरने का साहस नहीं है मुझमें।'

'चल यूं ही सही—मगर ये पुष्टि तो तुझे करनी ही होगी कि बूढ़ी मां का नाम सावित्री है या नहीं—रश्मि के पति—वीशू के पिता और अपने भाई की हत्या का पश्चाताप तो करना ही होगा—अपनी सारी दौलत तुझे वीशू के नाम करनी है—कागज उसे सौंपने तो वहां जाना ही होगा।'

यह बड़बड़ाया—'म...मुझे जाने में क्या है—रश्मि बेचारी क्या जाने कि मैं ही 'शाही कोबरा' हूं।'

¶¶

रश्मि के कानों में एकाएक वह शब्द गूंज रहा था, जो 'मुगल महल' से लोटने पर युवक और विशेष ने कहा था—अब हर शब्द का अर्थ उसकी समझ में आ रहा था—इस निश्चय पर पहुंचने के बाद वह खुद हैरान थी कि वही युवक 'शाही कोबरा' है।

अपने कमरे में बिस्तर पर लेटी वह छत को घूरती हुई यह समझने का प्रयास कर रही थी कि जब मरने के लिए वह खुद को पेश कर चुका था तो ऐन मौके पर भाग क्यों खड़ा हुआ? अत्यधिक ही तेजी के साथ जेहन में एक सवाल कौंधा—"क्या वह फिर यहां आएगा?

'हां, आ सकता है—यह सोचकर कि मैं भला क्या जानूं कि वह नकाबपोश जाने किस भ्रम का शिकार होकर यहां जरूर आ सकता है।'

'अगर आ गया तो?'

सोचते-सोचते रश्मि के रोंगटे खड़े हो गए—उत्तेजना के कारण लेटी-लेटी ही कांपने लगी वह। चेहरा सख्त हो गया और बड़बड़ा उठी—अगर वह इस बार यहां आ गया तो इस घर के दरवाजे से बाहर उसकी लाश ही निकलेगी।'

तभी मकान के मुख्य द्वार पर सांकल जोर से बज उठी।

रश्मि बिस्तर से लगभग उछल पड़ी—जिस्म के सभी मसामों ने एक साथ ढेर सारा पसीना उगल दिया—उत्तेजना के कारण थर-थर कांप रही थी वह—'क्या वही कमीना आया है?'

'हां, इतनी रात गए और यहां आ भी कौन सकता है?'

विशेष गहरी नींद सो रहा था।

बाहरी दरवाजे की सांकल एक बार पुन: बजी।

'आ रही हूं कुत्ते—अपनी मौत का दरवाजा खटखटा रहा है तू।' बड़े ही भयंकर स्वर में बड़बड़ाती हुई रश्मि ने सिरहाने से रिवॉल्वर निकालकर ब्लाउज में ठूंस लिया और उसे आंचल से ढांपकर आगे बढ़ गई।

¶¶

'कैडलॉक' वह ऐसे स्थान पर छुपा आया था, जहां सहज ही किसी की नजर नहीं पड़ सकती थी और वक्त पड़ने पर उसके जरिए वह देहली पुलिस की पकड़ से बहुत दूर निकल सकता था—हां, एक सूटकेस जरूर उसके हाथ में था।

तीसरी बार सांकल खटखटाने के लिए हाथ बढ़ाया ही था कि दरवाजा खुल गया और सामने ही खड़ी संगमरमर की प्रतिमा उसे नजर आई। कई पल तक एक-दूसरे के सामने वे खामोश खड़े रहे। सिकन्दर महसूस कर रहा था कि इस वक्त रश्मि के मुखड़े पर बहुत सख्त भाव थे, परन्तु उनका बिल्कुल सही कारण वह नहीं समझ पाया।

चौखट पार करके उसने दरवाजा अन्दर से बन्द कर लिया। रश्मि की तरफ पलटता हुआ धीरे से बोला—"मुझे दुख है रश्मि कि दो फायर करने के बावजूद भी तुम उसे मार नहीं सकीं।"

"क्या तुम यह जानते हो?"

"हां।"

"कैसे?" रश्मि ने एक झटके से पूछा—"मेरा मतलब, क्या तुम भी वहीं थे?"

"हां।"

"नजर तो वहां आए नहीं?"

सिकन्दर ने अजीब-से स्वर में कहा—"मैं वहीं था—तुम्हें नजर न आया तो इसमें मेरा क्या दोष?"

मन-ही-मन रश्मि बड़बड़ाई कि मुझे तू बहुत अच्छी तरह नजर आ चुका है कुत्ते... मगर प्रत्यक्ष में उसने कहा—" तुम वहीं थे तो भागते हुए 'शाही कोबरा' को पकड़ा क्यों नहीं?

"'शाही कोबरा' को न मैंने पेश किया था और न ही पकड़ सका।"

"क्या मतलब?"

"पश्चाताप की आग में झुलसते हुए 'शाही कोबरा' ने मरने के लिए तुम्हारे सामने खुद को खुद ही पेश किया था, परन्तु शायद ऐन वक्त पर मौत से डरकर भाग खड़ा हुआ।"

"बहुत कायर निकला तुम्हारा 'शाही कोबरा'।"

यूं कहा सिकन्दर ने—"मौत से ज्यादा बहादुर शायद कोई नहीं है।"

"खैर, मुझे पूरा विश्वास है कि अब वह भागकर कहीं न जा सकेगा—बहुत जल्दी ही मेरी गोली का निशाना बनना होगा उसे।"

"तुम उसे पहचान कैसे सकोगी?"

"हुंह!" व्यंग्य, धिक्कार और जहर में बुझी मुस्कान के साथ रश्मि ने कहा—"एक बार रश्मि जिसे देख लेती है, उसे पहचानने में कभी भूल नहीं करती—मैंने उसे भागते हुए देखा है और मैं विश्वास के साथ कहती हूं कि 'चाल' से ही मैं उसे पहचान लूंगी।"

पसीने छूट गए सिकन्दर के। दिमाग में बिजली के समान गड़गड़ाकर यह वाक्य कौंधा कि कहीं रश्मि जान तो नहीं गई है कि मैं ही 'शाही कोबरा' हूं?

घबराकर सिकन्दर ने विषय बदल दिया—"वीशू कैसा है?"

"डॉक्टर की दवा के बाद अब ठीक है।"

सिकन्दर ने महसूस किया कि वह वाक्य रश्मि ने दांत सख्ती भींचकर बोला है—एक-एक शब्द को चबाकर—और यह अन्दाज उसकी वर्तमान उत्तेजक स्थित का द्योतक है। रश्मि इतनी उत्तेजित क्यों है?

जवाब में पुनः वही सवालरूपी शंका घुमड़ उठी।

अचानक ही रश्मि ने सवाल दागा—'अब तुम यहां क्यों आए हो?'

एक पल के लिए गड़बड़ा-सा गया सिकन्दर। अगले ही पल संभलकर बोला —"मु....मुझे तुमसे कुछ जरूरी बातें करनी हैं।"

"कैसी बातें?" स्पष्ट स्वर।

थोड़ा हिचकते हुए सिकन्दर ने कहा—"वे बातें किसी कमरे में हों तो बेहतर है।"

रश्मि ने मन-ही-मन सोचा कि ठीक है, तुझे कमरे के अन्दर ही गोली मारनी उचित होगी—यहां चांदनी का मद्धिम प्रकाश है, वहां भरपूर प्रकाश होगा—मैं मरते वक्त तेरे चेहरे पर उभरने वाले भावों को स्पष्ट देख सकूंगी कमीने—तू अभी तक रश्मि को मूर्ख समझता है—हमेशा की तरह इस वक्त भी ठग रहा है मुझे—मगर अब तू उल्टा ठगा जाएगा—मैं ठगूंगी तुझे—ऐसा कि सात जन्मों तक तुझे याद रहेगा।

वे उस कमरे में पहुंच गए, जिसमें सिकन्दर रहा करता था, रश्मि ने लाइट ऑन की —एक-दूसरे को भरपूर अंदाज में देखा उन्होंने। उसे घूरती हुई रश्मि ने पूछा—"बोलो, क्या बात कहना चाहते थे?"

"म...मैं मांजी का नाम जानना चाहता हूं।"

प्रश्न सुनकर वाकई चौंक पड़ी रश्मि—"क्यों?"

"यूं ही।"

"इस अजीब-से प्रश्न की कोई वजह तो होगी?"

"वजह मैं आपको बाद में बता दूंगा, प्लीज—पहले आप नाम बताइए।"

"सावित्री।"

पहले से शंका होने के बावजूद भी सुनकर सिकन्दर के दिलोदिमाग को एक झटका-सा लगा। बड़ी तेजी से उसके चेहरे पर भाव परिवर्तित हुए। इस परिवर्तन को नोट करके अन्दर-ही-अन्दर रश्मि चौंक पड़ी, अधीर होकर उसने कहा—"अब तुम्हें वजह बतानी है।"

"प्रगति मैदान से मैं सेठ न्यादर अली की कोठी पर गया, यह पुष्टि करने कि जब सभी लोग मुझे सिकन्दर रहे को हैं तो कहीं मैं वास्तव में सिकन्दर ही तो नहीं हूं।"

"किस नतीजे पर पहुंचे?"

"वहां पहुंचने के बाद जहां मुझे विश्वास हो गया कि मैं सिकन्दर ही हूं—वहीं एक और बहुत हैरतअंगेज रहस्य पता लगा।"

"कैसा रहस्य?"

"यह कि सर्वेश मेरा भाई था, जुड़वां भाई।"

"क...क्या?' रश्मि अनायास ही उछल पड़ी और फिर अचानक ही बड़ी तेजी से उसके जेहन में विचार कौंधा कि अब यह जालसाज मुझे ठगने के लिए एक बिल्कुल ही नया प्वाइंट लाया है, चेहरा एकदम सख्त हो गया—"खुद को सर्वेश होने का विश्वास न दिला सके तो अब हमशक्ल होने का लाभ उनका जुड़वां भाई बनकर उठाना चाहते हो?"

"न...नहीं रश्मि, प्लीज—इसे झूठ मत समझो—इस रहस्य ने खुलकर मेरे अन्दर जैसे उथल-पुथल मचा दी है—ऐसी कसक पैदा कर दी है, उसे केवल मैं ही महसूस कर सकता हूं। इसे देखो—यह मेरे पिता न्यादर अली की व्यक्तिगत डायरी है।"

सिकन्दर ने जेब से डायरी निकालकर उसकी तरफ बढ़ा दी।

रश्मि ने डायरी ली।

पन्द्रह मिनट बाद वह पूरी तरह जान गई कि सिकन्दर झूठ नहीं बोल रहा है। एकाएक ही उसके जेहन में विचार उभरा कि यह जानने के बाद इस दरिन्दे की हालत क्या हुई होगी कि इसने अपने ही भाई की हत्या कर दी है?

बड़ी ही कठोर दृष्टि से उसे घूरती हुई रश्मि बोली—"तो तुम सिकन्दर हो, मेरे पति के भाई?"

"हां—मैंने खुद भी इस डायरी को देखने के बाद जाना है।"

उसे कातर दृष्टि से देखती हुई रश्मि ने पूछा—"तो फिर इसमें इतना उदास होने की क्या बात है?"

सिकन्दर ने एक-एक शब्द को चबाया—"हां, इसमें किसी उदास होने जैसी कोई बात नजर नहीं आएगी, तुम्हें भी नहीं रश्मि, म..मगर मैं ही जानता हूं कि जब से यह रहस्य खुला है, तब से मेरे दिल पर क्या गुजर रही है—मुझे हैरत है रश्मि कि अभी तक मैं पागल क्यों नहीं हो गया हूं।"

रश्मि दांत भींचकर गुर्राई—"हो जाएगा दरिन्दे, पागल भी हो जाएगा तू।"

"क.....क्या मतलब?" सिकन्दर रश्मि के इस परिवर्तन पर उछल पड़ा।

एक झटके से रश्मि ने रिवॉल्वर निकालकर उस पर तान दिया, गुर्राई—"तुझमें अब भी यह कहने की हिम्मत नहीं है कुत्ते कि सर्वेश की हत्या तूने ही की थी।"

"र...रश्मि।" सिकन्दर की आंखें फट पड़ीं।

"मैं जानती हूं कमीने कि 'शाही कोबरा' तू ही है।" चेहरे पर असीम घृणा लिए रश्मि गुर्राती चली गई—"तेरे जूते की एड़ियां अभी तक घिसी हुई हैं, प्रगति मैदान में भी लड़खड़ा गया था तू।"

हैरत के कारण सिकन्दर का बुरा हाल हो गया, आंखें फाड़े रश्मि को देखता ही रह गया था—जिस्म और आत्मा सूखे पत्ते की तरह कांप उठीं, चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं —अपने ठीक सामने उसे साक्षात् मौत नजर आई।

एकाएक ही रश्मि खिलखिलाकर हंस पड़ी।

सिकन्दर हक्का-बक्का रह गया।

पागलों की तरह हंसने के बाद रश्मि ने कहा—"मरने से तू अभी तक डरता है, हत्यारे—देख, जरा अपनी आंखों के आईने में अपने सफेद चेहरे को देख—कैसा निस्तेज पड़ गया है—जैसे जिस्म में खून की एक भी बूंद न हो—लाश के चेहरे से भी कहीं ज्यादा फीका।"

सिकन्दर की हालत बयान से बाहर थी।

उसी तरह खिलखिलाती हुई रश्मि ने कहा—"डरता क्यों है कुत्ते, मैं तुझे मारूंगी नहीं।"

सिकन्दर की आंखों में हैरत के भाव उभर आए।

"यह बात तो मेरी समझ में अब आई है कि मौत तेरे जुर्मों की उचित सजा नहीं है —ब.....बहुत देर से समझी कि तुझे जीवित छोड़ देना, मार देने से हजार गुना सख्त सजा है—जा, मैं तुझे नहीं मारती।" कहने के साथ रश्मि ने रिवॉल्वर एक तरफ फेंक दिया।

"र...रश्मि।"

"अगर मार हूं तो तू केवल एक क्षण के लिए तड़पेगा और अपने पति के हत्यारे को इतनी आसान सजा देकर मैं उनकी खाई हुई कसम का अपमान नहीं करूंगी—नहीं कह सकती कि तू समझेगा या नहीं—मगर मैं समझती हूं कि तुझे जीवित छोड़कर मैंने अपनी कसम पूरी कर ली है, उनके हत्यारे से बदला ले लिया है मैंने—तुझे जीवित रहना होगा, यह सोच-सोचकर पश्चाताप की आग में सुलगते रहना होगा तुझे कि तू अपने भाई का हत्यारा है।" कहने के बाद वह मुड़ी और सिकन्दर को कुछ भी कहने का अवसर दिए बिना हवा के तीव्र झोंके की तरह कमरे से बाहर निकल गई।

सिकन्दर अवाक्-सा खड़ा रह गया।

¶¶

अपने कमरे में सर्वेश के फोटो के सामने हाथ जोड़े खड़ी रश्मि कह रही थी—म...मैँ अकेली हूं प्राणनाथ—बहुत अकेली हूं मैं—और तुमने बहुत बड़ी दुविधा में फंसा दिया मुझे—वह तुम्हारा हत्यारा है, तुम्हारा ही भाई भी और यह भी सच है कि तुम्हारे लाल को प्राणों की बाजी लगाकर बॉस के चंगुल से निकालकर लाया था वह...ऐसा कोई सलाहकार भी मेरे पास नहीं है, जो यह राय दे सके कि तुम्हारी यह अबोध गुड़िया उसके साथ क्या सुलूक करे—अगर उसे मार देती तो हो सकता है, तुम मुझसे नफरत करने लगते। कहते कि मेरे भाई को क्यों मारा तूने और बदला न लेती तो शायद यह कहते कि तू मेरी लाश पर खाई गई कसम का बदला भी न ले सकी रश्मि।"

कमरे में खामोशी छाई रही, सर्वेश मुस्करा रहा था।

दीवानी-सी रश्मि कहती चली गई—नहीँ जानती सर्वेश कि मैंने गलत किया है या सही, तुम्हारी इस नादान गुड़िया के छोटे से दिमाग ने जो निर्णय किया, वही मैंने अपना लिया—नहीं जानती कि वह कमीना जिसे जिंदगी से बहुत ज्यादा मोह है, मेरे द्वारा बख्श दिए जाने को सजा समझेगा भी या नहीं, परन्तु रश्मि को पूरा विश्वास है कि वह चाहे जहां रहे, पश्चाताप की जो आग उसके दिल में सुलग रही है, वह उसे जलाकर राख कर देगी।"

¶¶

सिकन्दर एक कागज पर अपने मनोभावों को उतार रहा था। उसने लिखा—"अगर मैं किसी काल्पनिक उपन्यास का आदर्श नायक होता रश्मि, तो जरूर लिखता कि तुम्हारी दी हुई सजा ने मुझे अंदर तक झकझोंर डाला है और मैं तुमसे चीख-चीखकर मौत की भीख भी मांगता—तब भी तुम मुझे न मारतीं तो दहाड़ें मार...मारकर रोता और कहता कि नहीं रश्मि, मुझे इतनी सख्त सजा मत दो—पश्चाताप की आग में सुलगने के लिए अब मैं जी नहीं सकता—प्लीज, मुझे मार डालो।

"मगर न मैंने ऐसा कुछ किया है और न ही लिखूंगा-क्योंकि सचमुच मेरे मन में ऐसी कोई भावना नहीं है—मैँ बिल्कुल आम आदमी हूं—स्वार्थी—वह, जो अपनी ही नजर से पूरी तरह गिर जाने के बावजूद भी मरना नहीं चाहता—दरअसल आदर्श भरी बातें करना जितना आसान है, अमल करना उतना ही कठिन।

"मुझे जीवित छोड़कर अपनी समझ में तुमने मुझे 'सजा' दी है—मगर मैं कहता हूं कि मुंहमांगी मुराद मिल गई है मुझे—मेरे उन्हीं प्राणों को बचा दिया है तुमने, जिन्हें बचाने के लिए प्रगति मैदान में मैं भागा था और जिन्हें बचाने के लिए मैंने अपने 'शाही कोबरा" होने की हकीकत तुम्हें खुद नहीं बताई। जीवनदान मिलने पर मैं खुश हूँ में सारी भाग—दौड़ इसी के लिए कर रहा था।

"सम्भव है कि इन शब्दों को पढ़कर तुम्हें मुझसे कुछ और नफ़रत हो जाए या मुझे जीवित छोड़ देने के अपने फैसले पर तुम्हें गुस्सा जाए, मगर जब तुम यह पढ़ रही होगी,

तब तक मैं तुम्हारे रिवॉल्वर की रेंज से बहुत दूर निकल चुका होऊंगा।

"स्वीकार करता हूं कि मैंने जो घृणित जुर्म किए हैं...वे अक्षम्य हैं, परन्तु फिर भी मरने की मेरी कोई इच्छा नहीं है—मेरे मरने से न तुम्हारा पति वापस मिलेगा, न वीशू का पापा और न ही मेरा भाई—फिर मैं क्यों मरूं?

"हां, जो किया—उसके प्रायश्चित के रूप में मैं अपनी सारी चल-अचल सम्पति वीशू के नाम किए जा रहा हूं—इस आशय का बॉण्ड पेपर मैंने तैयार कर दिया है—सर्वेश के बदले में जो कुछ मैं तुम्हें दिए जा रहा हूं, मेरी नजर में वह सर्वेश से कुछ ज्यादा ही है। कम हरगिज नहीं—यही मेरा प्रायश्चित है।

"तुम खीर बहुत अच्छी बनाती हो। सुबह के खाने में तुमसे उसकी मांग करूंगा और वह खाने के बाद मैं इस शहर ही से नहीं, बल्कि इस मुक्त के कानून की पकड़ से भी बहुत दूर निकल जाऊंगा, विदेश में जा बसूंगा—मुझे पूरा विश्वास है, मैं वहीं अपनी बाकी जिदगी पूरी तरह सुरक्षित और खुशहाल बना लूंगा पश्चाताप की जिस आग की बात तुम करती हो, कम-से-कम मैं इस बॉण्ड पेपर पर साइन करने के बाद अपने अन्दर कहीं महसूस नहीं कर रहा हूं—इतना सब कुछ दिए जा रहा हूं कि खुश तो तुम हमेशा रहोगी और वीशू भी पढ़-लिखकर बड़ा आदमी बनेगा।"

¶¶

सुबह, विशेष के माध्यम से जब रश्मि के पास सिकन्दर की 'खीर' वाली डिमांड गई, तब एक पल को तो रश्मि के तन-बदन में आग लग गई—सोचा कि देखो इस ढीठ हत्यारे को। सब कुछ स्पष्ट हो जाने के बावजूद भी खीर मांग रहा है।

जी चाहा कि सिकन्दर को कच्चा चबा जाए।

अभी जाए और गोलियों से भून डाले उसे। विशेष पर चिल्ला पड़ने के लिए उसने मुंह खोला ही था कि दिमाग के जाने किस कोने ने कहा—"क्या कर रही है रश्मि, तेरा यह व्यवहार तो उसे सुकून दे देगा...चोट तो उसे तब लगेगी जब सारे काम उलटे हों—उसकी आशाओं के विपरीत-उसे तेरे द्वारा खीर बनाए जाने की कोई उम्मीद नहीं होगी, तू बना देगी तो वह तड़प उठेगा-यह सोचकर कि आखिर सर्वेश की विधवा क्यों मेरी खातिर कर रही है—ये पहेली उस कमीने की समझ में नहीं जाएगी।'

यही सब सोचकर वह किचन में चली गई।

उधर सिकन्दर आराम से टांगें फैलाएं रेडियो पर प्रसारित होने वाले समाचार सुन रहा था। उस वक्त वह चौंका, जब रेडियो पर कहा गया—"इंस्पेक्टर चटर्जी ने अपनी सूझ-बूझ से तस्करों के एक सदस्य रूपेश को गिरफ्तार कर लिया है और रूपेश 'शाही कोबरा' के बारे में सब कुछ बता चुका है—रूपेश के अनुसार 'मुगल महल' के मालिक न्यादर अली का लड़का सिकन्दर ही 'शाही कोबरा' है—सिकन्दर अभी तक फरार है और

पुलिस ने उसे जिंदा या मुर्दा पकड़वाने के लिए एक लाख रुपए इनाम देने की घोषणा की है।" इतना सुनते ही सिकन्दर ने जल्दी से रेडियो बन्द कर दिया।

एकाएक ही उसकी पेशानी पर चिंता की लकीरें उभर आईं—सारी रात उसने जागकर गुजारी थी, विशेष रूप से भारत से निकलने की स्कीम बनाने के चक्कर में—स्कीम उसने बना ही ली थी, परन्तु समाचार सुनने के बाद अचानाक ही गड़बड़ होती-सी महसूस हुई। जाहिर था कि पुलिस पूरी सरगर्मी से उसे तलाश कर रही होगी—फिर भी सिकन्दर हार मानने वाला नहीं था। अपने दिमाग को उसने पुलिस का घेरा तोड़कर निकलने की किसी स्कीम को सोचने में लगा दिया।

काफी सोचने के बाद उसने एक स्कीम तैयार कर ली।

तभी विशेष थाली ले आया—थाली में रोटियां और सब्जी भी थी—सिकन्दर के दिल में वैसी कोई भावना नहीं उभरी, जिसकी कल्पना करके रश्मि ने खाना तैयार किया था।

रोटी आदि से सिकन्दर को कोई मतलब नहीं था। यह गपागप खीर खाने लगा और साथ ही सोचता जा रहा था कि पुलिस के घेरे को तोड़कर किस तरह भारत से बाहर निकलना है। सामने बैठे उसे विचित्र नजरों से देख रहे विशेष ने कहा—"वाकई आप मेरे पापा नहीं हो सकते।"

ठहाका लगाकर हंस पड़ा सिकन्दर—"तुम बिल्कुल ठीक समझ रहे हो वीशू बेटे, मैं सचमुच तुम्हारा पापा नहीं हूं।"

विशेष मासूम आंखों से उसे देखता रहा।

जाने क्या सोचकर सिकन्दर ने तकिए के नीचे से बॉण्ड पेपर निकाला और वीशू को देता हुआ बोला—"जाओ वीशू—यह अपनी मम्मी को दे दो।"'

विशेष ने बॉण्ड पेपर लिया और कमरे से बाहर निकल आया।

रश्मि आंगन में ही थी—विशेष ने जब बॉण्ड पेपर उसे दिया तो वह चौंक पड़ी। अभी उसका एक भी शब्द नहीं पढ़ पाई थी कि मुख्य द्वार के बाहर ब्रेकों की तीव्र चरमराहट के साथ एक पुलिस जीप रुकी। रश्मि दरवाजे की तरफ लपकी।

जीप से कूदकर चटर्जी तेजी के साथ अन्दर आता हुआ बोला—"सिकन्दर कहां है?"

"व...वह भला अब यहां क्यों जाएगा" रश्मि ने जल्दी से कहा।

"झूठ मत बोलिए, हमें सूचना मिली है कि रात वह यहां आया था।" चटर्जी ने रश्मि को घूरते हुए सख्त लहजे में कहा। इस बीच इंस्पेक्टर दीवान भी दरवाजा पार कर

चुका था, बोला—" उसे बचाने के लिए बार-बार नाटक कर रही हैं—याद रखिए कि अब वह कुख्यात
मुजरिम 'शाही कोबरा' है और अगर आपने हमारी मदद न की तो हम आपको गिरफ्तार करने के लिए विवश हो जाएंगे।"

रश्मि के कुछ कहने से पहले ही विशेष बोल पड़ा—"आप झूठ बोलकर अपने ऊपर पाप क्यों चढ़ाती हैं, मम्मी, 'शाही कोबरा' उस कमरे में है।"

"व...वीशू।" रश्मि हलक फाड़कर चीख पड़ी..."तुझे कब पता लगा कि वह 'शाही कोबरा' है?"

"मेरे सामने सब बदमाशों ने उसे 'शाही कोबरा' कहा था।"

चटर्जी और दीवान उस कमरे की ओर दौड़ पड़े, जिधर विशेष ने इशारा किया था। जबकि विशेष ने रश्मि के कान में कहा—"अब पुलिस को पापा का हत्यारा जिंदा नहीं मिलेगा मम्मी, मैंने उसकी खीर में जहर मिला दिया है।"

"ज...ज़हर?" रश्मि के कण्ठ से चीख निकल गई।

नन्हें विशेष ने मासूम स्वर में कहा—"मेरे पापा को उसने जहर ही तो दिया था।"

"त..तेरे पास जहर कहां से आया?"

"डॉक्टर अंकल के क्लिनिक से चुरा लाया था।"

तभी कमरे की तरफ से चटर्जी की आवाज आई— "अरे यह तो मर चुका है दीवान।"

गुस्से से तमतमाती हुई रश्मि ने अचानक ही विशेष के गाल पर जोरदार चांटा मारा। विशेष एक चीख के साथ उछलकर दूर जा गिरा, जबकि उस पर लात और घूंसे बरसाती हुई रश्मि चीख रही थी—"यह सब करने के लिए तुझे किसने कहा था नासपीटे —नीच, तूने मेरी सारी तपस्या भंग कर दी—उस कुत्ते को इतनी आसान मौत देने के लिए तुझसे किसने कहा था—जा, मेरी आँखों के सामने से गारत हो जा।"

¶¶